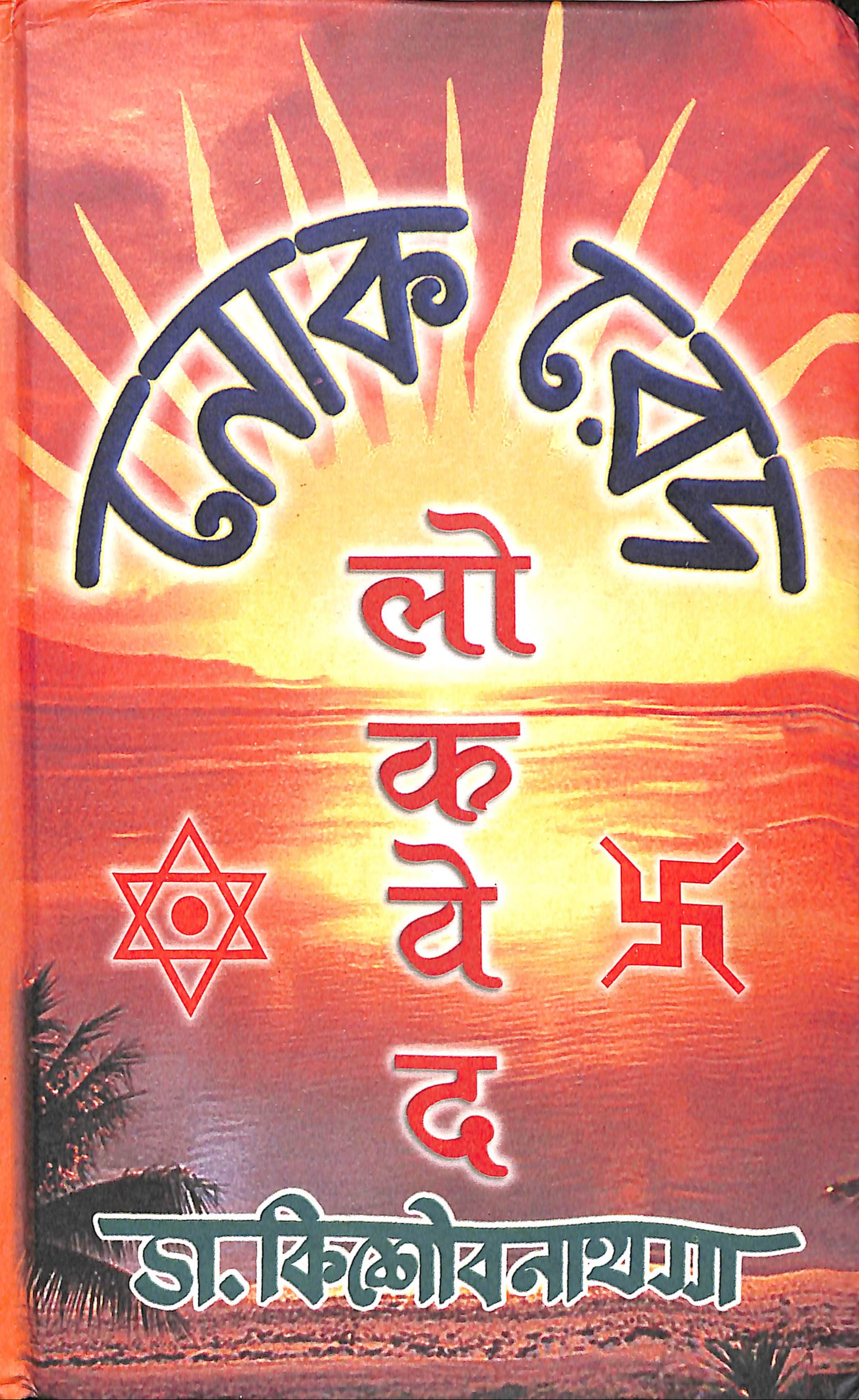
লোক বেদ

लोकवेद

ডা. কিশোরনাথ ঝা



লোক বেদ
लोकवेद
ডা. কিশোরনায়ণ

लोकवेद

लेखक
डॉ० किशोर नाथ झा
पूर्व प्रवाचक
गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद

२००९ ई०

कीर्तिन्यास इलाहाबादक आर्थिक अनुदानसँ प्रकाशित

प्रकशक / लेखक
डॉ० किशोर नाथ झा

लोकवेद

दोसर संस्करण : ५०० प्रति (२००९)

पुस्तक प्राप्ति स्थान
किशोर नाथ झा
ग्राम – बिट्ठो, पो० सरिसब-पाही, जि० मधुबनी – ८४७४२४ (बिहार)

मूल्य : १५० रु०

मुद्रक
एकडेमी प्रेस
दारागंज, इलाहाबाद – २११००६

समर्पण



हमरा हेतुक तन मन धनसँ सतत रहथि सन्नद्ध
प्रथमहि दर्शनसँ भए गेला हमरासँ संबद्ध।
तजि गेला अधरस्तहिँ हमरा अकस्मात् गोविन्द
शरण देत के आब हन्त! छथि मीनाक्षी चिरनिन्द।
लोकवेद श्रद्धा कुसुमाञ्जलि हुनकहि, अश्रुक संग
अर्पित अछि, मन पड़ए अकारणबन्धुक बहुत प्रसङ्ग।

- किशोरनाथ झा

भूमिका

सम्मान्य आचार्य डॉ० किशोरनाथ झाक रचित **लोकवेद** पोथी १९९४ इसवी मे छपल छल आ ओ हमरा एक प्रति देने छलाह। हम ओहि विषयमे अनेक सुझाव लिखि इलाहाबाद पठाए देने छलियनि। संयोग अएलैक – एहि पोथीक दोसर संस्करणक अवसर पर लेखक महाशय हमर भेंट कए ई समाचार जनबैत कहलनि जे अहाँक सुझावकेँ हम सुरक्षित रखने छी आ एहि खेप तकर उपयोग कए रहल छी। अहाँ सँ अनुरोध जे एहि पोथीकेँ पुनरीक्षित कए एक भूमिका लिखि दी'। ओ प्रूफ देखल प्रति पठाए देलनि। हम यथामति यथाशास्त्र ओ यथाव्यवहार कतिपय संशोधन एहिमे हुनक अनुमतिसँ कएल अछि, परन्तु जे स्थल हुनक भावना सँ लागल अछि अथवा जतए बहुत काट-छाँट करए पड़ैत ततए छोड़ि देल। यद्यपि एहेन स्थल कम अछि, मुदा ताहिमे हमर सम्मति नहि अछि जकर उल्लेख आगाँ कए रहल छी।

लोकवेद समाजक लेल सभखन उपयोगमे आबएबला ग्रन्थ थिक। संस्कृतमे लोक शब्दक अर्थ भुवन (संसार) होइछ – स्वर्गलोक, मर्त्यलोक, पाताललोक। पतञ्जलि **महाभाष्यमे** लिखने छथि – "अभ्यन्तरोऽहं लोके, न त्वहं लोक:" – 'हम लोकक अन्तर्गत छी, हम लोक नहि छी'। परन्तु मैथिलीमे 'हम लोक छी' से कहल जाइछ। तदनुसार एहि अर्थकेँ कम-बेशी कए प्रयोग भए रहल अछि – लोक माने आदमी, पत्नी, समाङ, समाज, जनसमूह, भुवन इत्यादि। प्रस्तुत पोथीक नाममे लोकसँ समाज एवं वेदसँ धार्मिक शास्त्र अभिप्रेत अछि। तदनुरूपे एहिमे शास्त्रीय एवं सामाजिक व्यवहार पर प्रकाश देल गेल अछि। अपन विधि-व्यवहारकेँ लोक विसरि रहल अछि, विज्ञ लोकक कमी भेल जा रहल अछि। एहना स्थितिमे सर्वसाधारणक भाषामे एहिसबकेँ प्रकाशित करब अत्यावश्यक थिक, जाहिसँ अपन संस्कृतिक रक्षाक संग लोकक जिज्ञासाक समाधान भए सकत।

उपर्युक्त सन्दर्भकेँ ध्यानमे राखि प्रस्तुत पोथीमे मिथिलाक समाजमे प्रचलित सांस्कृतिक आचार व्यवहारक सम्बन्धमे पर्याप्त परिश्रम कए विषय विवेचित भेल अछि। धार्मिक परम्परा, सनातन धर्म, वर्णाश्रमव्यवस्था, नित्यकृत्य, उपनयन विवाह आदि संस्कार, वर्षकृत्य (साल भरिक व्रत पावनि), पूजा, गोसाउनि, दीक्षा इत्यादि विषयमे लोकक स्वाभाविक जिज्ञासाक समाधान देल गेल अछि। एहि मान्य एवं प्रतिष्ठित आचार्यक लिखल ई पोथी 'लोकवेद' अपना सभक सांस्कृतिक दस्तावेज रूपेँ उपयोगमे आओत, से विश्वास अछि। एकरा पढ़ि सामाजिक सांस्कृतिक व्यवहारमे उपस्थित समस्याक स्वयं समाधान ताकल जाए सकैछ आ से सामान्य लोकहुक द्वारा भए सकत। पोथीक उपादेयता सदिखन होएत। तेँ प्रत्येक घरमे ई राखल जाएत, से आशा अछि।

एहि पोथीमे कतोक ठाम हमरा वक्तव्य अछि, जकरा संक्षेपमे पाठकक हेतु उपस्थापित करैत छी –

(१) लेखक महोदयक धारणा अछि जे अनेक वर्षें सम्पन्न होमयबाला कर्म चूड़ाकरण-उपनयन-वेदारम्भ-समावर्तन केँ एकहि दिनमे सम्पन्न करब मैथिलनिबन्धकारक उदार दृष्टि थिक'। परन्तु ई बात बहुत प्राचीन ग्रन्थमे अछि। गृह्यसूत्र ओ पुराणादिमे एकहि दिनमे एहि सभ कर्मक अनुष्ठानक निर्देश अछि – "कामं तु याज्ञिकस्य" – यज्ञकर्ता अपन सुविधानुसार समावर्तन कए लेथि। "चूड़ाकार्या यथाकुलम्" इत्यादि। एहिना वर्षक अन्तमे कर्तव्य सपिण्डीकरण सहित बारहोमासक मासिकश्राद्धकेँ द्वादशाहे दिन कर्तव्यक विधान पुराणसभमे अछि –"द्वादशाहः प्रशस्यते"। तेँ हमर मत अछि जे कोनो सुधारवादी विचारककेँ एहि सभक दृष्टान्त पर **मनमाना कोनो कर्मक कालकेँ कम नहि करबाक चाही**, अपि तु कोनो ऋषिवचनक आधारे पर निर्णय कर्त्तव्य थिक।

(२) लेखक महोदय म०म० हर्षनाथझाकृत संस्कारदीपक ग्रन्थक आधार पर कहैत छथि जे विवाहक अधिकारमे 'पितृतः सप्तमीं त्यजेत्' – एहन वचनकेँ म०म० महेशठाकुर (१५५० ई०) बदलि 'भजेत्' पाठ दए एक पीढ़ीक छूट कए देलनि'। हम एहिसँ सहमत नहि छी। कारण, सप्तमीकन्याक परिणय ऋषिलोकनिक वचने सँ भए रहल अछि। संस्कारदीपकमे सप्तमीपरिणय विष्णुपुराण ओ मार्कण्डेय पुराणसँ अनुमोदित अछि, जे एहि 'लोकवेदक' टिप्पणीमे सेहो अछि। पाँजिक पोथीक आरम्भिक काल (१३०० ई०)मे 'छठि'

त्यागक उल्लेख अछि आ सप्तमीपरिणयक प्रचुर व्यवहार भेटैछ।

(३) कन्यादानमे वर लेअएबाक हेतु 'सार' जाइत छथि, से केवल सोतिपुराक व्यवहार थिक। आन वर्गक ओहिठाम दू चारि प्रतिष्ठित व्यक्ति एहि हेतु जाइत छथि।

(४) एहि पोथीमे अनेक ठाम लिखल अछि जे तीन पुरुष (पिता, पितामह, प्रपितामह)सँ उपरका पुरषा 'विश्वेदेव' कहबैत छथि। वस्तुतः विश्वेदेव श्राद्धक रक्षा कएनिहार देवता थिकाह, पितर नहि। प्रत्येक तीन पीढ़ीक एक विश्वेदेवगण होइत छथि, जेना – आभ्युदयिक श्राद्धमे – (१) माता–पितामही–प्रपितामहीक एक विश्वेदेव, (२) पिता–पितामह–प्रपितामहक एक विश्वेदेव ओ (३) मातामह–प्रमातामह–वृद्धप्रमातामहक एक विश्वेदेव। सर्वप्रथम एही तीनू केँ आवाहन कए, तकर बादे पितरक आवाहन होइछ। 'विश्वेदेवा दश स्मृताः' एहिवचनक अनुसार हिनक संख्या १० अछि, तेँ सदा बहुवचने प्रयुक्त होइछ। तीन पुरुषसँ ऊपर चारिमसँ छठम धरि 'लेपभाजः' कहबैत छथि।

(५) 'तिनदिना अशौच' प्रकरणमे – "जाहि व्यक्तिक पितामह वा मातामहक सन्तानमे रहिऐक वा जे रहए, ताहि व्यक्तिक निधनमे अशौच लागए" – ई बान्धवाशौचक व्याख्या त्रिपुरुषसापिण्ड्यनिमित्तक थिक। एकर विस्तृत व्याख्या **हमर ग्रन्थ "शुद्धिकौमुदी"** (संस्कृत)मे देल अछि।

(६) 'श्राद्धक अधिकारी' प्रकरणमे एगारह ब्राह्मण भोजनमे पिण्डदानक संख्याक हिसाब करब उचित नहि बुझि पड़ैछ। एकादशाह दिन दशगात्र पिण्डदान १० एवम् आद्यश्राद्धक एककेँ जोड़ि लेखक महाशय एगारह पुराए लैत छथि, मुदा अस्थिसंचयक पिण्ड लगाए बारह भए जाइत छनि। तेँ एकादशाह–द्वादशाहक विषयमे शास्त्रोक्त "दशाधिकान् ब्राह्मणान् भोजयेत्" एहि वचनसँ दशाधिक पदेँ प्रथमोपस्थित एगारहे ब्राह्मणकेँ भोजन देल जाइछ। एहिना उपनयनमे "अष्टौ ब्राह्मणान् भोजयेत्" एहि वचनक अनुसारे आठ ब्राह्मणकेँ भोजन कराओल जाइछ।

(७) लेखक महोदय मुख्यतया नैयायिक छथि। तेँ स्वभावतः कतहु ओहि शास्त्रक प्रचलित शब्द आबि गेल छनि, मुदा से बड़ थोड़ ठाम। यथा पृ० १८९ नान्तरीयक (अनिवार्यरूपसँ जुड़ल)।

एहिना म०म० शङ्कर मिश्रक 'गौरीदिगम्बर प्रहसन'मे न्यायशास्त्रक अनेक रूढ़ शब्द सहजरूपें प्रयुक्त भेल अछि – "प्रमितमभिधत्से तर्कितं वा"? – (प्रामाणिक कहैत छी कि अन्दाजिये?), इत्यादि।

ई सब तँ विवेचनीय वस्तु थिक आ से प्रत्येक ग्रन्थमे विद्यमाने रहैछ। **ताहिसँ एहि ग्रन्थक उपादयेतामे कमी नहि आबि सकैछ।** एतेक व्यापक विषयकेँ एहि पोथीमे समेटि जनोपयोगी वस्तुकेँ अपना भाषामे लिखि परिष्कृत प्रकाशित कय आचार्य किशोरनाथझा एक महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादित कएलनि अछि। एहि लेल ई समाजक अभिनन्दनीय थिकाह।

०९.०९.०९ ई० **पं० (डॉ०) शशिनाथ झा**

दीप गाम

प्राचार्य एवं व्याकरणविभागाध्यक्ष,
का०सिं०द० संस्कृत विवविद्यालय,
दरभङ्गा

❑❑

लेखकीय

श्री १०८ जगदम्बाक अनुग्रह आ प्रसादसँ 'लोकवेद'क दोसर संस्करण पाठकवृन्दक हाथमे अर्पित करैत अत्यधिक प्रसन्नताक अनुभव भए रहल अछि। एकर पहिल संस्करण १९९४ ई०मे प्रकाशित भेल छल, जकर प्रकाशन खर्च बलहा (मधुबनी)क निवासी आब स्वर्गीय, पण्डित नित्यानन्द झा (पञ्चमुखी हनुमान मन्दिर, फूलगली, भूलेश्वर, मुम्बईक पुजेगरी) वहन कएने छलाह। ओ हमर समवयस्क सुहृद तथा हमर पिताक शिष्य छलाह तथा पुण्यक कार्य करबामे उत्साह तथा रुचि रखैत छलाह। एहि तरहक पुस्तक लिखबाक जखन तखन आग्रहो करैत रहैत छलाह।

ई पुस्तक हमरासँ लिखबौलैन्हि हमर प्रयाग प्रवासकालक अभिभावक इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष एवं प्रोफेसर आब स्वर्गीय, डा० जयकान्त मिश्र, जे आजीवन मैथिलीक प्रति समर्पित रहने मैथिलीमे आचार व्यवहारक, पावनितिहारक, व्रत पूजाक प्रामाणिक ग्रन्थ समाजकेँ देबाक आग्रही छलाह। तेँ एहन पुस्तक लिखबाक प्रेरणा, उत्साह दैत रहैत छलाह। लिखल भेला पर स्वयं दृष्टिपूत कए संशोधन, परिवर्धन आ परिवर्तनो करबैत छलाह।

हिनक पिता प्रातःस्मरणीय महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र जखन मिथिला संस्कृत शोध संस्थान दरभंगाक पहिल निदेशक भए प्रयागसँ दरभंगा अएलाह तखन कहियो १९५३-५४ ई०मे 'लोकवेद' विषय पर एकसय पृष्ठक आलेख प्रस्तुत करबाक प्रतियोगिता आयोजित कएने छलाह। अनेक विद्वान उक्त संस्थानक छात्र प्रतिभागी रहथि, किछु गोटे पुरस्कृतो भेलाह। उक्त आलेख सभ अन्वेषण कएलहु उपलब्ध नहि भए सकल तथापि डा० जयकान्तमिश्रक परामर्शें एहि ग्रन्थक नाम 'लोकवेद' राखल गेल। डा० मिश्रहिसँ उपर्युक्त कथो

सुनल अछि।

हमरा सभक सनातन धर्मक अनुगामी छी। जकर आधार वेद, पुराण तथा आगम अछि। तेँ मुख पृष्ठपर ओहि तीनूक प्रतीक देल गेल अछि।

पुस्तक छपला पर हमर अपन छोट पित्ती (छोटका काका) आब स्वर्गीय, विशिष्ट वैद्य पण्डित सीताराम झा सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ि कहलैन्हि जे ग्रन्थ तँ उपादेय भेल अछि, मुदा बूझि पड़ैए अगुताइमे फरमाइसी कार्य कएलहुँ अछि। आगाँ जँ अवसर हो तँ स्वयं विचारि कए संशोधन कएकें प्रकाशित कराएब। हमरा विश्वास अछि जे एहि संस्करणकेँ देखि ओ स्वर्गहुमे रहि दिव्य आशीर्वाद अवश्य देताह।

एहि ग्रन्थक सधि गेलापर मित्रलोकनिक आग्रहसँ पुनः प्रकाशनक अवसरमे हमरा पर अहैतुकी अनुग्रह रखनिहार सम्मान्य पण्डित श्री गोविन्द झा एकर मार्गदर्शन आ संशोधनक अनुग्रह कएलैन्हि। तेँ किछुओ जँ ग्रन्थमे गुणाधान भेल हो तँ एकर श्रेय हुनकहि छैन्हि। हम हुनका प्रति सतत अपन प्रणामाञ्जलि समर्पित करैत छी।

धर्मशास्त्रीय आचार विचारक प्रसंग समाजमे पूर्ण प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी दिल्लीक 'भाषा सम्मान'सँ सद्यः सम्मानित हमरा सुलभतया उपलब्ध डा० शशिनाथ झा (अध्यक्ष एवं आचार्य, व्याकरण विभाग, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा) हमर निवेदन मानि एकर भूमिका लिखबाक अनुग्रह कएल अछि, तदर्थ हुनक हम आभारी छी। संगहि कृतज्ञ छी इलाहाबादक 'कीर्तिन्यास'क जे एहि संस्करण सम्पूर्ण व्ययभार उठाओल अछि।

हमर अनवधानता तथा अज्ञानतासँ भाषा, विषय तथा प्रस्तुतिमे भेल त्रुटि समूहक परिमार्जन स्वविवेकसँ पाठक कए हमरा क्षमा करताह। कहल छैक – 'क्षमासाराः हि साधवः'। गुणदोष शिवक चन्द्र आ विष जकाँ यदि व्याप्त रहए तँ पाठक वृन्द शिव भए गुण ग्रहण करताह आ विषकेँ कण्ठ मध्यहि राखि लेताह –

गुणदोषौ बुधो गृह्णन्निन्दुक्ष्वेडाविवेश्वरः।

शिरा श्लाघते पूर्वं परं कण्ठे नियच्छति।।

से हमरा विश्वास अछि। कोनो लेखक जानि बूझिकए त्रुटि नहि करैत

अछि। लेखककेँ बूझल रहैत छैक जे विश्वमे प्रत्येक पाठक दूटा आँखि राखि कोनो विषयक नीक जकाँ निरीक्षण करैत अछि तथापि लेखनमे त्रुटि भए जाइत छैक – नवीन वाचस्पति मिश्र कहैत छथि – 'को न मुह्यति वचः पथे चरन्' उदयनाचार्य आत्मतत्त्वविवेकक उपसंहारमे एकटा पद्य लिखलैन्हि अछि जे हम ई नहि चाहैत छी जे क्यो बिनु बुझने हमर ग्रन्थक प्रशंसा करए। आन्हर जँ चित्रक एक सय खेप प्रशंसा करत तँ की ओहिसँ चित्रकार (शिल्पी)क प्रकर्ष होएतैक? किन्तु बुझनुक लोक जँ निन्दो करताह तँ हमरा प्रसन्नते होएत, हेतु जे ओ दोष देखिके ओकर उद्घाटन द्वारा निन्दा करताह।

नास्य श्लाघामकलितगुणः पोषयन् प्रीतये नः
कोऽन्धैश्चित्रस्तुतिशतविधौ शिल्पिनः स्यात् प्रकर्षः।
निन्दामेव प्रथयतु जनः किन्तु दोषान् निरूप्य
प्रेक्ष्यांस्तथ्यस्खलितकथनं प्रीणयदेव भूयः।।

आचार्य उदयन एहि पद्यकेँ जाहि भावसँ लिखने हथि हम एकर अभिधावृत्तिअहिसँ ज्ञात अर्थक ग्रहण करैत छी।

सुधीजनक स्नेहाधीन, विनीत

बिट्ठो **किशोरनाथ झा**

कार्तिकी पूर्णिमा २।११।२००९ ई०

❑❑

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

❑❑

लोक वेद

पहिल परिच्छेद

मङ्गलाचरण

श्रीकुलदेवी इष्टदेवता जननि तारिणी चरणक ध्यान
करिअ भक्तिसँ आँजुर भरि लए सुरभित भावकुसुम अम्लान।
कल्याणप्रद वैद्यनाथ बाबाक कृपासँ होएत पूर्ण
ई निबन्ध निर्विघ्न, पुराबथि शरणागतक मनोरथ तूर्ण।।

पिता कृष्णमाधव नैयायिककेँ देखल करइत सत्कर्म
श्रील अनन्तलाल ठाकुर गुरुवरसँ सीखल जे किछु धर्म।
तकरहि सबकेँ राखल क्रमसँ भावी सन्ततिकेँ उपकार।
होएत, प्रगतिक युगमे रहनहुँ नहि विसरत क्यो विधि व्यवहार।।

व्यवहारक पुस्तक मिथिला मे संस्कृत भाषामे लिपिबद्ध
से नहि बुझने रहि जाइछ मन बहुतक जिज्ञासासंबद्ध।
संस्कृति–संरक्षणक संग अछि जिज्ञासाक शान्तिओ इष्ट
पाठक आलोचक पर निर्भर श्रमक सफलता सदा अदृष्ट।।

धार्मिक परम्पराक किछु ज्ञातव्य विषय

सनातनधर्म

मूल भारतीय धर्म 'सनातनधर्म' कहल जाइत अछि। सनातनक अर्थ होइछ सभ दिनसँ अर्थात् परम्परासँ जे चल आबि रहल अछि। प्राचीनतम ज्ञानराशि वेदसँ एहि धर्मक उद्भवक कारणें ई 'वैदिकधर्म' सेहो कहबैत अछि, हिन्दुओ धर्म इएह थिक। वैयक्तिक आचार, सामाजिक व्यवहार (रीति–रेवाज ओ नीति–निर्णय) तथा भावनागत कोनो कोनो वैशिष्ट्य एहि धर्मक परिचायक होइत अछि।

वर्णव्यवस्था

लोकयात्राकेँ सुखद बनएबाक हेतु समाजक मध्य क्षमताक अनुसार काज बाँटल गेल। जे ज्ञानक विकासक भार उठओलनि से 'ब्राह्मण' कहओलनि। हुनका लोकनिक काज भेल अध्ययन आ अध्यापन द्वारा विद्याक प्रसार आ' उन्नयन तथा जीविकाक साधन भेल धार्मिक अनुष्ठान (यज्ञ, पूजापाठ आदि) करब कराएब आ ताहिमे दक्षिणा ओ दान लेब। जे लोकनि पालन-पोषणक (रक्षा, शान्ति आ' सुख- सुविधाक) भार उठओलनि से 'क्षत्रिय' कहओलनि। हिनक कार्य भेल समाजपर शासन ओ सुरक्षा आ' जीविकाक साधन भेल प्रजासँ प्राप्त कर । जे लोकनि धन धान्यादिक उत्पादन तथा वितरणक भार उठओलनि से 'वैश्य' कहओलनि। हिनकालोकनिक जीविकाक साधन भेल अपन उत्पादनक विक्रयसँ तथा वाणिज्यसँ भेल आय। जे लोकनि उत्पादन, पालन-पोषण आ' विद्या एहि तीनू क्षेत्रमे अपन-अपन श्रम, शिल्प आ कौशल लगओलनि, हिनका लोकनिक जीविकाक साधन भेल पारिश्रमिक वेतन, से 'शूद्र' कहओलनि। आजुक सन्दर्भमे देखी तँ राज्यक विधायक लोकनि ब्राह्मण भेलाह; मन्त्रीलोकनि क्षत्रिय, टाटा, बिड़ला आदि वैश्य आ हिनका लोकनिक अधीन सेवा कएनिहार चपरासीसँ-मुख्य सचिव धरि आ कारखानाक प्रबन्धकसँ मजदूर धरि सभ शूद्र अर्थात् श्रमजीवी।

एकरा दोसरो तरहेँ कहल जाइत अछि जे आब समाज वर्गमे बाँटल भेल देखैत छी। सुधीवर्ग, अध्यापकवर्ग, किरानीवर्ग, औफिसरवर्ग, अभियन्तावर्ग, डाक्टरवर्ग तथा चपरासीवर्ग आदि।

एतए ई बुझबाक थिक जे चारू वर्ण वा सभ वर्ग मिलिए कए समाजक गठन कए सकैत अछि। ई वर्णसमूह परस्पर एक दोसरक परिपूरक रूपमे मान्य अछि। एहिमेसँ कोनो एकक अभाव भेलापर समाज मूक, आ पङ्गु भए स्वरूपहिक रक्षा नहि कए पाओत। अतः सभक आवश्यकता सभकेँ परस्पर अवश्य होइत छैक से बुझबाक थिक। क्यो ककरहुसँ घटिकए वा बढ़िकए नहि अछि। अपि तु समाजमे सभक समाने मूल्य स्वीकार्य थिक। *भगवद्गीता* सेहो कण्ठतः एकर पुष्टि करैत अछि –

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।

एहिना स्त्री ओ पुरुषहुक कार्यक्षेत्र बाँटल अछि। लोकयात्रा रूप रथक पहिया ओ घोड़ा जकाँ दूनूक रहब गृहस्थ जीवनमे देखल ओ मानल गेल अछि। एकक अभावमे– विधवा वा विधुरक जीवनमे– गृहस्थीक विशृङ्खलताक अनुभव क्यो कतहु कए सकैत अछि। आभ्यन्तर दृढ़ता यदि गृहिणीक द्वारा संभव छैक तँ बाह्य दृढ़ता पुरुषक प्रयासेँ होइत छैक।

आश्रमव्यवस्था

समाजक जीवन–काल चारि भागमे बाँटल गेल–ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ ओ सन्न्यास। विद्या वा जीविकाक साधनक संग स्वास्थ्यक अर्जन ब्रह्मचर्याश्रमक मुख्य कर्तव्य रूपमे निर्दिष्ट अछि। विवाह कएला पर गृहस्थाश्रममे लोक प्रवेश करैत अछि। घर बनाए जीवन–यापनक योग्यता अर्जित भेलापर विवाह कएलासँ सुखमय जीवनक आशा, विश्वास ओ संभावना रहैत छैक। अर्थक उपार्जन, सन्तानक उत्पादन, कुटुम्ब (परिवार) क भरण, धर्मक आचरण ओ यथाशक्ति सामाजिक दायित्वक पूर्ति गृहस्थाश्रमक मुख्य कर्तव्य होइत अछि। तृतीय आश्रम वानप्रस्थमे घरक भार (गृहस्थी) उत्तरसाधक–सन्ततिकें–सौंपि स्वयं परोपकार ओ परलोक साधनामे लगबाक थिक। स्वतः सांसारिक भोग–विलासक प्रति उदासीनता मोनमे उदित होइत छैक। अन्तिम आश्रम सन्न्यासमे सांसारिक बन्धनसँ सर्वथा छुटबाक ओ आमरण आत्म–चिन्तन दिशि उन्मुख रहबाक थिक।

एहि चारू आश्रम–धर्मक अनुपालनसँ मोनक निर्मलता, पारिवारिक सुखशान्ति ओ परलोकक सुख–सौविध्य सुनिश्चित होइत अछि। मुदा ध्यान रखबाक थिक जे कलियुगमे दुइएटा आश्रमक विधान कएल गेल अछि। वानप्रस्थ ओ संन्यास वर्जित अछि। गृहस्थाश्रमहिमे रहैत घरक भार सन्तति पर सौंपि चित्तक निर्मलताक हेतु अध्यात्मदिशि उन्मुख रहब ओ देवाराधनक संग रामायण, महाभारत ओ भागवत वा अन्य पुराणक अध्ययन–प्रवचनसँ कालयापन करबाक विधान अछि, जाहिसँ घर ओ मोन दूनूक तुष्टि ओ शान्ति संभव छैक। इएह कारण छैक जे गृहस्थाश्रमकेँ मनुस्मृतिमे प्रधान आश्रम कहल गेल अछि, आन तीनू आश्रम ओही पर ओङठल रहैत अछि[१]।

---

१. **यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।**
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।। (मनुस्मृति ६/९०)

भारतीयक उदारभावना

भारतीयक ई उदार भावना श्लाघनीय थिक, जे सम्पूर्ण वसुन्धरेकें कुटुम्बक-परिवारक-दृष्टिसँ देखैत छथि। **वसुधैव कुटुम्बकम्** मानि सभक कल्याणक प्रार्थना ईश्वरसँ करैत छथि। **सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते** आदि *दुर्गासप्तशतीक* पद्य एकर साक्षात् उदाहरण अछि। *यजुर्वेदक* **आब्रह्मन् ब्राह्मणो** आदि मन्त्रसँ मिथिलामे दूर्वाक्षत लए आशीर्वाद देबाक विधान एही अभिप्रायकें बुझबैत अछि।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

एतए चारिम चरणक एकवचन ओ अन्य तीन चरणक बहुवचन पद मार्मिक, महत्त्वपूर्ण ओ उपर्युक्त कथाक पोषक अछि।

मुदा एतहि बुझबाक थिक जे पापक दायित्व वैयक्तिके मानल गेल अछि आओर पुण्यक फल स्त्री-पुत्रादिमे बाँटल भए जाइत अछि। तैं प्रायश्चित्त वैयक्तिके अनुष्ठित होइछ आओर पुण्यकार्यमे सभक उत्साह रहैत अछि।

ईश्वरसँ समस्त चराचरकेँ नियन्त्रित रहने एकक अधिकार-क्षेत्रमे दोसरक प्रवेश वर्जित कहल गेल अछि। किन्तु दोसराक कल्याण हेतु त्याग पूर्वक भोगक विधान एहि वैदिक धर्मक मूलमे निहित अछि। *ईशावास्य उपनिषदक* वचन एतए स्मरणीय अछि –

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।

मूलमे एही भावनाक रहबाक कारणें *उपनिषद* मे-मैत्री, करुणा, मुदिता ओ उपेक्षा भावक प्रचार कएल गेल, जे पछाति बौद्ध-आचारमे परिगृहीत भए अधिक पल्लवित भेल। सभक प्रति निःस्वार्थ मैत्री, अपन ओ आनक भेद छोड़ि सभक दुःख दूर करबाक प्रयास, सभक सुखमे सुखक अनुभव ओ सभक प्रति आत्मीयताक भाव लए उत्कृष्ट सामाजिक दृष्टि राखब, सनातन संस्कारक विना सम्भवे नहि छैक। जीव मात्रक प्रति इएह भाव राखब उचित ओ विहित थिक।

ऋणशोधन

एक आओर भावना सनातन धर्मावलम्बीक आदरणीय ओ परिशीलनीय अछि – देवता, पितर, ऋषि ओ समाजक प्रति ऋणबोध तथा ओहिसँ उद्धार

होएबाक प्रयास। यद्यपि – **ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत्** एहि *मनुवचनमे* तीनिए गोट ऋणक उल्लेख भेटैत अछि तथापि पछाति सामाजिक ऋणक स्वीकृतिसँ एकर चारि प्रकार मान्य अछि।

एतए देवतासँ पञ्च महाभूत तथा एकर अधिष्ठातृ देवता सूर्य, गणपति अग्नि, अम्बिका ओ शिव पञ्चदेवताक रूपमे स्मार्त धर्मावलम्बी द्वारा सर्वप्रथम पूजित होइत छथि। कतहु कतहु गणपतिक स्थानमे केशवक उल्लेख पञ्चदेवताक रूपमे भेटैत अछि।

शिवं भास्करमग्निं च केशवं कौशिकीमपि।

मनसानर्चयन् याति स्वर्गलोकादधोगतिम्।। (कालिकापुराण)

एतए ई बुझबाक थिक जे मिथिलामे दिनमे सूर्यादि पञ्चदेवताक ओ रातिमे सूर्यक अस्त भेलापर गणपत्यादि पञ्चदेवताक पूजा मैथिल लोकनि करैत छथि। *पुराण*मे सुनैत छी जे सूर्य ओ गणेश परमसत्ता ईश्वरक रूपमे प्रतिपादित छथि ओ दूनूमे तादात्म्यो कहल गेल अछि। अन्य प्रान्तमे अग्निक स्थानमे गणेशकें मानि सूर्यसँ पृथक् देवताक रूपमे हुनक पूजा होइत अछि। *शब्दकल्पद्रुम*मे कहल अछि –

आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं हरिं तथा।

पञ्चदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।।

कल्याणक उपासना अङ्कमे कोन भूतक अधिष्ठाता कोन देवता थिकाह से कहल गेल अछि–आकाशक विष्णु, अग्निक महेश्वरी, वायुक सूर्य, पृथिवीक शिव ओ जलक गणेश अधिष्ठातृ देवता थिकाह।

आकाशस्याधिपो विष्णुरग्नेश्चैव महेश्वरी।

वायोः सूर्यः क्षितेरीशः जीवनस्य गणाधिपः।।

प्रत्येक व्यक्ति मलमूत्रादिक त्याग द्वारा तथा आनों कतोक प्रकारें परिवेश–वातावरण कें अवश्य दूषित करैत अछि, तें पञ्च महाभूत रूप देवताक ऋणसँ प्रत्येक प्राणी अवश्य ग्रस्त होइत अछि। यज्ञ–यागक अनुष्ठान ओ इनार–पोखरि तथा बान्ह–सेतुक निर्माण आदि 'इष्ट ओ पूर्त' रूप धर्माचरण कएलापर, एहि ऋणसँ उद्धारक विधान शास्त्रमे कहल गेल अछि। अतएव चिरकालसँ एहि कार्यसभमे सम्पन्न लोकक उत्साह ओ तन मन धनसँ प्रवृत्ति देखल जाइत

अछि।

शरीर, मोन ओ व्यक्तित्वक निर्माणमे माता-पिताक पूर्वज ओ अग्रजक हाथ अवश्य रहैत छैक। अपन सन्तानक लालन-पालन, विद्यार्जन ओ जीवननिर्माण हेतु निरन्तर जागरूकता ओ चिन्ता प्रत्येक माता-पिता ओ पूर्वज-अग्रजक देखल जाइत अछि। अतः प्रत्येक व्यक्तिपर पितरक ऋण रहैत छैन्हि। एहिसँ मुक्ति हेतु यथासमय श्राद्ध, एकोद्दिष्ट, पार्वण, नान्दीश्राद्ध, आ ताहि निमित्त ब्राह्मण भोजन ओ प्रतिदिन तर्पण आदि कएल जाइत अछि। ई वंशक उन्नतिक साधन ओ पितरक सदिच्छाक पूर्तिसँ हुनक तुष्टि रूपमे विहित, प्रसिद्ध ओ मान्य अछि। जीवित गुरुजनक वचनपालन ओ परिचर्या कएलापर एहि ऋणसँ मुक्तिक प्राप्ति शास्त्रमे निर्दिष्ट अछि। जीवैतमे बात सूनब, मुइलापर श्राद्ध करब ब्राह्मण भोजन कराएब, ओ गयामे पिण्डदान करब पुत्रक-सन्तानक-कर्तव्य रूप मे निर्दिष्ट अछि।

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरि भोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता।।

ई सुनल अछि जे प्रत्येक व्यक्तिकेँ पूर्वज ऋषिवृन्दक सञ्चित ज्ञानराशि उत्तराधिकारमे भेटैत छैक, से लइएके संसारमे प्रवेश कए लोक अपन जीवनयात्राक पथिक होइत अछि। फलतः ओहि ज्ञानक उद्भावक ऋषिवृन्दक ऋण प्रत्येक व्यक्तिपर रहिते छैक। एहि ज्ञानक संवर्धन-अभिवर्द्धन द्वारा प्रचार-प्रसार रूप संरक्षणसँ तथा सत्पात्रकें एकर दानसँ एहि ऋणक परिशोध होइत अछि। अतः विद्याक अध्ययन, अध्यापन तथा ग्रन्थलेखन आदि दिशि प्रवृत्त होएब धर्मबुद्धिओसँ आवश्यक थिक। श्रीहर्ष महाकवि एहि दिशि संकेत करैत *नैषध महाकाव्यमे* कहने छथि – **अधीतिबोधाचरणप्रचारणैः** से सहृदय समाजमे विदिते अछि।

चतुर्भिश्च प्रकारैः विद्या उपयुक्ता भवति आगमकालेन, स्वाध्याय कालेन, प्रवचनकालेन, व्यवहारकालेन – चारि प्रकारसँ विद्याक उपयोग होइत अछि। गुरुमुखसँ अधिगत करब, स्वयं अध्ययन करब, शिष्यकेँ पढ़ाएब आ जीवनमे ओकर व्यवहार करब से *महाभाष्यक* पस्पशाह्निकमे उक्त अछि। तेँ ई परम्परासँ आएल सनातन तथ्य मानबाक थिक। *महाभारत* अध्ययनक प्रशंसामे कहैत अछि –

परिनिष्ठितकार्यो हि स्वाध्यायेनैव ब्राह्मणः।
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते।।

अज्ञात एवं असंबद्ध लोकक सेवाक आवश्यकता जीवनमे करवन ककरा पड़तैक से क्यो नहि जनैत अछि। एहि तरहक लोकक बिनु सेवा लेने संसारमे रहबे कठिन छैक। तखन अरोस-पड़ोसक सर-सम्बन्धिकक सहयोग-सेवा नहि लेबए पड़त से कहब कठिने नहि असंभव अछि। कहबी छैक जे समाजमे बाहर गामक डोमहुक काज एक दिन अवश्य पड़ैत छैक। एहिमे उऋृण होएबाक लेल कोनो ने कोनो तरहें समाजक, सर-संबन्धीक तथा अरोस-पड़ोसक यथासंभव सेवा अवश्य कर्तव्य थिक।

स्वाध्याय (शास्त्र अध्ययन), सन्ध्या, तर्पण, पञ्चदेवताक पूजा, हवन, भूतबलि ओ अतिथिसेवाक संग शवयात्रामे-दाहसंस्कारमे-भाग लेब, नोतपुरब, श्राद्ध, विवाह ओ उपनयन आदिमे तन, मन, धनसँ यथासंभव उपस्थित रहब समाजक ऋृणसँ मुक्तिक उपाय मानल गेल अछि।

पञ्च महायज्ञक परिपालन

आत्मकल्याण ओ लोकमंगल रूपमे शास्त्रनिर्दिष्ट पञ्च महायज्ञ परिपालनीय थिक। मनुक कहल अछि –

महायज्ञैश्च यज्ञैश्य ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।

पञ्च महायज्ञ थिक देवयज्ञ (हवन), भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेव अर्थात् पशुपक्षीकें यथाविभव अन्न देव), पितृयज्ञ (तर्पण), ब्रह्मयज्ञ (अध्यापन), आओर नृयज्ञ (अतिथि सत्कार)। ब्रह्मयज्ञे कतहु ऋषियज्ञ कहल गेल अछि –

देवभूतपितृब्रह्ममनुष्याणामनुक्रमात्।
महासत्राणि जानीयात् त एव हि महामखाः।।

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतः नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।। (मनुस्मृति ३/७०)
श्राद्धं वा पितृयज्ञः स्यात् पित्रोर्बलिरथापि वा। (छन्दोगपरिशिष्ट)

अन्यत्रो कहल अछि जे एकरे शब्दान्तर थिक –

स्वाध्यायेनार्चयेदृषीन् होमैर्देवान् यथाविधि।
पितृन् श्राद्धैर्नृनन्नैर्भूतानि बलिकर्मणा।।

पञ्चैतान् यो महायज्ञान् न हापयति शक्तितः।
स गृहेऽपि वसेन्नित्यः सूनादोषैर्न लिप्यते।।

गृहस्थीमे चूल्हि, सिलौट, बाढ़नि, उखरि ओ घैलची आदि स्थानमे जीवजन्तु असावधानीमे मारल जाइत छैक, तज्जन्य पापसँ बाँचि सकैत छी, जँ ई पञ्च महायज्ञ यथाशक्ति करैत रही–सैह उपर्युक्त वचनक अर्थ थिक –

पञ्च सूना गृहस्थस्य चूल्लीपेषण्युपस्कराः।
कण्डनी चोदकुम्भश्च वध्यते यांस्तु वाहयन्।।

आस्तिकता

ईश्वरक अस्तित्व माननिहार आस्तिक तथा ओकरा नहि माननिहार नास्तिक कहल जाइत छथि। अवधेय अछि जे प्राचीनकालमे ईश्वर उपासनाक विषय छलाह दार्शनिक चिन्तनक नहि। तें दार्शनिक सूत्रमे ईश्वरक विरल उल्लेख देखैत छी। योगदर्शन ओ न्यायदर्शनमे, दूनूठाम प्रसङ्ग अएने ईश्वर चर्चित अवश्य भेल छथि।

वेदकें प्रमाण माननिहार आस्तिक ओ वेदकें नहि माननिहार नास्तिक कहबैत छथि।

शिवपुराण कहैत अछि जे जहिना एतए सुकर्म ओ दुष्कर्मक फल सुख दुःख होइत अछि तहिना स्वर्गहुमे अर्थात् दोसरो लोकमे होइत छैक–इएह बुद्धि आस्तिकता कहबैत अछि।

यथेहास्ति सुखं दुःखं सुकृतैर्दुष्कृतैरपि।
तथा परत्र चास्तीति मतिरास्तिक्यमुच्यते।। (४५५।२।६०।)

चिन्तन ओ अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्य तथा लक्ष्य प्राप्तिक हेतु पथक वैविध्य

एहि सनातन धर्मक असाधारण वैशिष्ट्य अछि जे प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन चिन्तन हेतु ओ चिन्तित मतक अभिव्यक्तिक हेतु स्वतन्त्रता छैक। अत एव अनेक सम्प्रदाय, अनेक दर्शन, अनेक पन्थ ओ अनेक उपासना चिरकालसँ भारत भरिमे पसरल अछि। दीर्घकालसँ ईश्वरवादी शैव, पाशुपत, लिङ्गायत, वैष्णव एवं शाक्त आदि दर्शनक संग निरीश्वरवादी सांख्य, मीमांसा ओ लोकायत

(चार्वाक) आदि दर्शनो समान रूपसँ मान्यता पओने अछि। रामानुज, माध्व, निम्बार्क, वल्लभ आदि वैष्णव दर्शनक संग रामानन्दमत, कबीरपन्थ ओ गुरुनानकमत आदि सन्त सम्प्रदाय अपन-अपन क्षेत्रमे समान आदर-भाजन अछि। आत्मकल्याण वा लोककल्याण रूप एकहि उद्देश्यक पूर्ति हेतु परस्पर विरुद्धो विभिन्न मत ओ विभिन्न आचार मानल गेल अछि, जे भारतहिक भूमिमे सम्भव अछि। वैदिक कर्मकाण्ड, तान्त्रिक वामाचार, पाशुपतक भस्मसँ त्रिपुण्ड्र धारण, वैष्णवक ऊर्द्धपुण्ड्र, बौद्धक आचार, जैनक विचार आदि चिन्तनधारा, सम्प्रदायक वैविध्य, पुरुषार्थ चतुष्टयैक, ताहूमे अपवर्गहिक साधन रूपमे प्रसिद्ध ओ व्यवहृत अछि। फलतः एतए प्रत्येक व्यक्ति कोनो प्रकारक आचार ओ विचारक प्रति आस्था वा धर्म, विचार वा दर्शनक प्रति सहिष्णु वा उदासीन देखल गेल अछि। चिन्तन ओ ओकर अभिव्यक्तिक स्वातन्त्र्यक संग पथक विविधता रहलहुपर कोनो एक पथपर आरूढ़ भए एक उद्देश्य वा लक्ष्यक उपलब्धिए काम्य ओ सम्भव होइत अछि।

आचार ओ विचारमे परिष्कार

देश, काल ओ पात्रक अनुसार आचार ओ विचारमे संशोधन, परिवर्तन ओ परिवर्धनक संग ग्रहण ओ त्यागहुक उदाहरण भारतक इतिहासमे सभ समयमे प्रायः भेटैत रहल अछि। कोनो समय छलैक जखन जन्महिसँ ब्राह्मणत्व ओ क्षत्रियत्व आदि जातिक निर्धारण होइत छल। *महाभारतक* कालमे व्यक्तिक गुण ओ कर्मक अनुसार जातिक निर्धारण कएल जाए लगलैक। तें **चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः** *गीतामे* भगवान कहलैन्हि अछि। जाति-पाँति नहि माननिहार बौद्ध ओ जैन धर्मावलम्बियो लोकनि गुणानुरूप ब्राह्मण्यवाद मानैत आएल छथि। सनातन धर्ममे तँ जन्मसँ क्षत्रिय रहलहु पर ऋषि विश्वामित्र ओ शुनक आदिकेँ ब्राह्मण मानल गेल अछि। एकर विपरीत जन्मसँ ब्राह्मण रहलहु पर जमदग्नि, भरद्वाज, परशुराम, द्रोण, कृप ओ अश्वात्थामा शिक्षा ओ जीविकासँ क्षत्रिय धर्मक अनुपालन जीवनभरि कएलैन्हि। हिनका सभक चरित कथमपि ब्राह्मणत्वक आदर्श नहि मानल जाएत।

सनातनधर्मक मूलस्त्रोत ओ संस्कारक महत्व

सनातनधर्मक मूलस्त्रोत थिक श्रुति (वेद) ओ तकर स्मरण-अनुसरण करबाक कारण धर्मशास्त्रकेँ स्मृति कहल जाइछ, प्रधान स्मृतिग्रन्थ अठारह अछि, तकरा अनुसार व्यवस्थित सनातन धर्मकेँ 'स्मार्तधर्म' कहल जाइत

अछि। एकरा संग *धर्मसूत्र*, *गृह्यसूत्र*, *पुराण*, *महाभारत*, *रामायण* ओ *आगम* सेहो *स्मृतिए* जकाँ प्रमाण मानल गेल अछि। *महाभारत* वा *पुराण* ककरहु हीन वा अपांक्तेय नहि मानैत अछि। अनुलोम ओ प्रतिलोम विवाह आदि-कालहिसँ प्रचलित अछि। मुदा सवर्ण विवाह - समान जातिक अनुरूप कुलक कन्याक संग विवाह-सभ दिन सम्मान्य रहल अछि। धर्मशास्त्रमे आठ प्रकारक जे विवाहक विवरण[1] अछि। तकर आलोकमे सब तरहक-सात्त्विक, राजस ओ तामस -यौन संबन्ध अवश्य स्वीकृत छल ओ अछि। वसिष्ठ सन ब्रहर्षि चाण्डालकन्या अक्षमालासँ विवाह कएल। पराशरक संबन्धें दाशकन्या सत्यवती कुमारि अवस्थामे भगवान वेदव्यास सन प्रसिद्ध महात्माक जन्म देल। पुरुपक संग भेलाक वादो ओहि कन्याक कन्यात्वक रक्षा ओ पुनर्विवाह प्राचीनहु कालमे मान्य भेल आओर महाराज शान्तनु एहि सत्यवतीक सङ्ग विवाह कएल जे सामाजिक मान्यता पओलक। एहिना सूतकन्या सुदेष्णाक संग मत्स्यराज विराटक विवाह ओ कर्णक गुप्तरीतिसँ जननी कुमारी कुन्तीक पाण्डुक संग विवाह भेलहु पर कन्याक रूपमे ओ स्मरणीय छथि।

एहिना बारह प्रकारक पुत्र[2] सनातन धर्मावलम्बी समाज द्वारा स्वीकृत अछि। जाहिमे अविवाहिता महिलाक 'कानीनपुत्र'हुक स्थान छैक। क्षेत्र, बीज वा बीजीमेसँ जे किछु दोषयुक्त हो, संस्कार द्वारा ओकर दुष्प्रभावक निराकरण कए समाजमे सन्तानकें प्रतिष्ठित करबाक विधान कएल गेल

---

१. ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः।। (मनुस्मृति, ३/२१)
ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस तथा पैशाच विवाहक ई-आठ प्रकार मनु कहलैन्हि अछि। मिथिलामे प्राजापत्य विवाहक विधान अछि-
सहोभौ चरतां धर्ममिति वाचानुभाष्य च।
कन्याप्रदानमभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधिः स्मृतः।। (मनुस्मृति ३/३०)

२. औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृत्रिम एव च।
गूढोत्पन्नोऽपविद्धश्च दायादा: बान्धवास्तु षट्।।
कानीनश्च सहोढश्च क्रीतः पौनर्भवस्तथा।
स्वयंदत्तश्च शौद्रश्च षड् दायादबान्धवाः।। (मनुस्मृति ९/१५९-६०)

अछि। *मनुस्मृति*मे स्पष्ट कहल गेल अछि जे गर्भाधान आदि संस्कार द्वारा सन्तानपर माए बापक दोष दूर होइत छैक। संस्कारसम्पन्न जातक स्वाध्याय, व्रत, होम, दान, वंशरक्षा, पञ्च महायज्ञ तथा ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ सम्पादित कए अपनामे ब्रह्मप्राप्तिक योग्यता अर्जित कए लैत[1] अछि। सत्यवतीक पूर्वपक्षक पुत्र कृष्णद्वैपायन बीजानुगुण विप्रोचित संस्कारहिक बलें ब्राह्मण ओ वेदव्यास भए प्रतिष्ठित आ सम्मान्य भेलाह। पुनश्च एही सत्यवतीक द्वितीय पक्षक पुत्र चित्राङ्गद ओ विचित्रवीर्य बीजानुगुण क्षत्रियोचित संस्कार पाबि क्षत्रिय मानल गेलाह। कुन्तीक कानीनपुत्र (विवाहसँ पूर्वकालिक-कन्या वयसक पुत्र) कर्ण क्षत्रियोचित गुणसँ सम्पन्न रहितहुँ पालन-पोषण कएनिहार सूत (सारथि) क संस्कार पाबि, क्षत्रियोचित संस्कारक अभावमे क्षत्रिय नहि मानल गेलाह, सूतपुत्र कहओलैन्हि। एम्हर पाण्डुक संग विवाहिता कुन्तीक क्षेत्रज पुत्र युधिष्ठिर आदि संस्कार पाबि श्रेष्ठ क्षत्रिय मानल गेलाह ओ पिताक लालन-पालन तथा स्वीकृति पाबि सम्मानित जीवन बिताओल, सम्पूर्ण भारतवर्षक शासक सम्राट् भेलाह।

संस्कारक परिचय

प्रसङ्गवश एतए संस्कारक परिचय आवश्यक अछि। आत्मकल्याण वा लोकल्याणक हेतु जे शुभ आचरण कएल जाए से 'संस्कार' थिक। दू तरहें ई शुभकारक होइत अछि अशुभ वा अमंगलक हँटओने तथा शुभ वा मंगलक आधाने-संग्रहें।

अशुभं नश्यते सम्यक् शुभं हि प्रतिपद्यते।
कल्याणनिधिराख्यातः संस्कारस्तेन कर्मसु।।

एकर पुष्टि वृद्धवाचस्पतिमिश्रक *भामती* व्याख्यासँ होइत अछि। जतए मलापनयन ओ गुणाधानक भेदसँ संस्कारक दू प्रकार कहल गेल अछि। यथा घरकेँ झाड़ब बहारब मलापनयन थिक और धूप द्वारा सुवासित एवं दीप

---

१. **गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौडमौञ्जीनिबन्धनैः।**
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते।।
स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।। (मनुस्मृति २/२७-२८).

आदिसँ प्रकाशित करब गुणाधान। तें एक शब्दमे माँजब आ साजब संस्कार थिक। शरीर, मन, कर्म, वचन ओ जीवन-यापनक साधनमे सर्वत्र एहि संस्कारसँ लाभ होइत अछि । उपनयन वा विवाहक पूर्व दिन बरुआ वा कन्याक देहपर उबटन लगाए शरीरक मलापनयन कएल जाइत अछि। पुनश्च स्नान कराए वस्त्र ओ अलङ्करण आदिसँ सुसज्जित कएला पर गुणाधान होइत अछि। ककरो अहित चिन्ता कौखन नहि करब, अनुचित आचरणसँ मोनकेँ विरत राखब मोनक संस्कार कहाओत। वचनक संस्कार थिक सत्य, प्रिय ओ सरल कथन, मिथ्या, अप्रिय (कठोर) ओ कुटिल कथन अशुभकर मानल गेल अछि। शास्त्रमे कहल छैक जे काँसाक धोअल पखारल थारी बाटीमे भोजन कएने आयु, बल, आरोग्य ओ कीर्तिक अभिवर्धन होइत छैक। ताम्र कलसमे राखल जल पीलासँ स्वास्थ्यपर नीक प्रभाव पड़ैत छैक। ऐंठ ओ बासि खएला पर रोग होएबाक भय ओ सन्देह बनल रहैत छैक, मुदा टटका ओ गरम भोजन स्वास्थ्यक परम अनुकूल होइत अछि-ई संस्कारहिक प्रभाव थिक।

आइ काल्हि शिष्ट समाजमे दस एगारहटा संस्कार व्यवहारमे देखल जाइत अछि। नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, कर्णवेध, अक्षरारम्भ (खड़ी देव), चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह आओर अन्त्येष्टि। मिथिलामे सामवेदीक छन्दोगपद्धति ओ शुक्ल यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखाक वाजसनेयीपद्धति एहि संस्कार सभक सम्पादनार्थ उपलब्ध अछि। आन वैदिक शाखाक ब्राह्मण मिथिलामे प्रायः नहिएँ जकाँ छथि।

आत्मगुणक महत्त्व

गौतम स्मृतिक आठम अध्यायमे चालिस प्रकारक संस्कारक उल्लेखक[१]

---

१. गर्भाधान, पुसंवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन (चूडाकरण), उपनयन, चारि वेदव्रत, स्नान, सहधर्मचारिणीसंयोग, पञ्चयज्ञानुष्ठान (देवयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, भूतयज्ञ ओ ब्रह्मयज्ञ, देवपूजा, श्राद्ध-तर्पण, अतिथिसेवा, बलिवैश्वदेव ओ स्वाध्याय), अष्टकाश्राद्ध, पार्वणश्राद्ध (श्रावण, आग्रहायण, चैत्र ओ आश्विनक), सात पाकयज्ञसंस्था अग्न्याधान, अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास्य, निरूढपशुबन्ध, सौत्रामणि, →

संग आठ आत्मगुणहुक महत्त्व ओ विवरण देल गेल अछि। दया, क्षमा, अनसूया, शौच, आयासराहित्य, मङ्गलकामना, अकार्पण्य ओ अस्पृहा–ई आठ आत्मगुण कहल गेल अछि। गौतमक दृष्टिएँ चालिसो संस्कारसँ सम्पन्न व्यक्ति एहि आठ आत्मगुणक नहि रहला पर ब्रह्म–प्राप्तिक अधिकारी नहि होइत छथि। एहि आत्मगुणक रहलापर उक्त संस्कारक कमो रहलासँ व्यक्ति ब्रह्मप्राप्तिक अधिकारी भए जाइत छथि। *मनुस्मृति*मे कहल गेल दश प्रकारक धर्मक लक्षण[1] एहि आत्मगुणहिक दिशि संकेत करैत अछि।

स्मार्तधर्म

वैदानुमत *स्मृति* ओ *पुराणक* अवलम्बन कए जाहि आचरणक विधान कएल गेल अछि, शिष्टजन द्वारा परिगृहीत सैह आचरण 'स्मार्त धर्म' कहबैत अछि। *मनुस्मृतिमे* निर्दिष्ट दश प्रकारक धर्म, आत्मगुणक महत्त्वक प्रसंग एतए टिप्पणीमे उल्लिखित भेल अछि। बहुत एहनो आचरण अछि, जकर स्मृतिवचन उपलब्ध अछि ओ शिष्टक सम्मत अछि, मुदा ओकर समर्थक *श्रुतिवचन* उपलब्ध

→

सप्तहविर्यज्ञसंस्था, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम सात सोमसंस्था।

'गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनजातकर्मनामकरणान्नप्राशन (निष्क्रमण) चौलोपनयनं चत्वारि वेदव्रतानि स्नानं सहधर्मचारिणीसंयोगः पञ्चानां यज्ञानामनुष्ठानं देवपितृमनुष्यभूतब्रह्मणानामेतेषाञ्चाष्टकापार्वणश्राद्धश्रावण्याग्रहायणीचैत्राश्वयुजीति सप्तपाकयज्ञसंस्था अग्न्याधेयमग्निहोत्रदर्शपौर्णमासावाग्रहायणं चातुर्मास्यनिरूढ–पशुबन्धसौत्रामणीति सप्तहविर्यज्ञसंस्था अग्निष्टोमोऽत्यग्निष्टोम उक्थः षोडशिवाजपेयोऽतिरात्राप्तोर्याम इति सप्त सोमसंस्था इत्येते चत्वारिंशत् संस्काराः।

अथाष्टावात्मगुणा दया सर्वभूतेषु क्षान्तिरनसूया शौचमनायासो मङ्गलमकार्पण्यमस्पृहेति यस्यैते न चत्वारिंशत् संस्कारा न वाष्टावात्मगुणा न स ब्राह्मणः सायुज्यं सालोक्यं च गच्छति। यस्य तु खलु संस्काराणामेकदेशोऽप्यष्टावात्मगुणा अथ स ब्रह्मणः सायुज्यं सालोक्यं च गच्छति गच्छति।

१. **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।**
धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।६।९२।
धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य आओर अक्रोध कें धर्म कहल गेल अछि।

नहि अछि। एहन परिस्थितिमे उक्त स्मृति वचनक अनुकूल *श्रुतिक* कल्पना करबामे स्मार्तधर्मावलम्बी पएर पाछू नहि करैत छथि। कोनो कार्यक आरम्भमे मंगलक आचरण कएल जाइत अछि, ओकर प्रतिपादक *श्रुतिवचन* अनुपलब्ध रहलहुँ अनुमेय अछि। एतए *स्मृतिसँ* केवल *स्मृतिग्रन्थे* नहि, अपि तु *स्मृतिक* संग *धर्मसूत्र,धर्मसंहिता* एकरा सभक व्याख्या–ग्रन्थ एवं परवर्तीकालक धर्मशास्त्रीय *निबन्धावली* आदियो अभिप्रेत अछि। एहिसँ भिन्न *पुराण, आगम, महाभारत* तथा *रामायण* आदि सेहो स्मृतिक प्रतिष्ठा पाबि एतए प्रमाण रूपमे व्यवहृत भेल अछि। अट्ठारह *पुराण*[1] आ ओतबे *उपपुराणक* संग्रहसँ *पुराण* साहित्यहुक परिमाण विशाल भए जाइत अछि। प्रत्येक पुराण कम वा बेसी प्रत्यक्षरूपें वा परोक्षरूपें *महाभारत, रामायण* तथा *स्मृति* सभक संग संबद्ध अवश्य अछि। *महाभारत* कहैत अछि जे इतिहास ओ पुराण वेदविद्याक परिवृद्धिकारक थिक – **इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।**

रामायण, महाभारत ओ *पुराणकें* वैदिक एवं वेदोत्तर कालिक भारतीय आचार–विचारक एवं शिष्टता–सभ्यताक विश्वकोष कहल जाए सकैत अछि।

कर्मकाण्ड ओ ज्ञानकाण्डक–वैदिक आचार विचारक स्वरूपकें देश ओ कालक विपरीत प्रभावसँ बँचबैत सुरक्षित रखबाक भार धर्मशास्त्रक ऊपर अएलैक, से बूझि पड़ैए। फलतः वैदिक कर्मकाण्डमे व्यतिक्रमक नियन्त्रक ई धर्मशास्त्र डेग–डेग पर विधि तथा निषेध बुझेबामे तत्परता देखबैत अछि।

---

१. **मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।**
अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्।।
मत्स्य, मार्कण्डेय, भविष्य, भागवत, ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, वायु, वराह, वामन, विष्णु, अग्नि, नारद, पद्म, लिङ्ग, गरुड़, कूर्म तथा स्कन्द महापुराण प्रसिद्ध अछि। शिवपुराणोक महापुराणेमे गणना अछि।
उपपुराणसँ सनत्कुमार, नरसिंह, शिवधर्म, आश्चर्य, कपिल, वामन, ब्रह्माण्ड, कालिका, माहेश्वर, साम्ब, मारीच, भार्गव, पराशर, मानव, देवी, देवीभागवत, नन्दिकेश्वर ओ पद्म पुराणक चर्चा अछि। एहिसँ अतिरिक्त विष्णुधर्मोत्तर, महाभागवत, बृहद्धर्म तथा वासुकि पुराण सेहो प्रकाशित अछि।

स्मृतिकार

धर्मशास्त्रकारक-स्मृतिप्रणेताक-बृहत् नामावली, *याज्ञवल्क्यसंहिता*मे लगभग बीस गोट ऋषिक नाम, उल्लिखित अछि। यथा मनु[१], अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप ओ वशिष्ठ। अन्यत्र आनो स्मृतिकारक उल्लेख भेटैत अछि। जेना लौगाक्षि, व्याघ्र, गर्ग, गार्ग्य, नाड़ीजंघ, पुलह, पुलस्त्य, भृगु, गौतम, जैमिनि, सुमन्तु, ऋष्यशृङ्ग, यज्ञपार्श्व, कौथुम, बैजवाप, मैत्रायणीय, पारस्कर, गोभिल, शाट्यायन, प्रचेता, लोमश, देवल, जमदग्नि, प्रजापति, विश्वामित्र, पैठीनसि, पितामह, बोधायन, छागलेय, जाबाल, च्यवन, मरीचि, कश्यप, नारद, शुनःपुच्छ, कार्ष्णाजिनि, व्याघ्रप्राद, शौनक, कण्व तथा जातुकर्ण।

पराशरस्मृतिओ मे किछु हेरफेरक संग हिनका सभक नाम देखैत छी। मेधातिथि, गोविन्द तथा कुल्लूक भट्ट आदि मनुस्मृतिक व्याख्याकार प्रसिद्ध छथि। विश्वरूप ओ विज्ञानेश्वर आदि *याज्ञवल्क्यस्मृति*क आओर माधव *पराशरस्मृतिक* व्याख्याकार भेलाह। ई लोकनि मूल ग्रन्थक तात्पर्य बुझेबाक संग-संग तात्कालिक उपस्थित अनेक नव समस्याक समाधानो अपन प्रतिभा ओ बुद्धिक बलें कएलैन्हि अछि। अतः उक्त व्याख्या सभक स्वतन्त्रो रूपमे महत्त्व मान्य थिक। आइओ परिस्थितिक अनुसार ओहिं स्मृति सभक नव व्याख्या प्रस्तुत करबाक अपेक्षा अछि।

वैदेशिक शासकक समयमे राजनैतिक उत्थान-पतनक क्रममे सनातन धर्ममे-परम्परासँ अबैत आचारमे-ह्रास ओ व्यतिक्रमक संग नव आचारक ग्रहण स्वाभाविक अछि। एकर प्रभावसँ आत्मरक्षाक उपायक क्रममे कूर्मवृत्ति[२]क अवलम्बन कए स्मार्त निबन्धक रचना कएल गेल। *संहिताग्रन्थ* सबमे धर्मशास्त्रीय विषयक विचारक क्रममे राजकृत्यहुक विचार देखैत छी। मुदा

---

१ मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः।
यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती।।
पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ।
शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रवर्तकाः।।

(याज्ञवल्क्यस्मृति, उपक्रम भाग).

२ काछु जकाँ अपन अंग समेटि लेब।

परवर्ती धर्मशास्त्रक *निबन्धमे* राजनीतिसँ अस्पृष्ट शुद्ध धर्मशास्त्रीय विषयक विचार देखैत छी। तें राष्ट्रक नीतिमे धर्मशास्त्रक उपादेयता सम्प्रति विचारणीय भए गेल अछि।

धर्म शब्दक अर्थ

धर्मक अनेक अर्थ रहलहु पर धर्मशास्त्रमे धर्म पदक अर्थ होइत अछि आचरण। जे क्रिया स्वरूप बुझबाक थिक। अंगरेजीक ड्यूटी तथा मैथिलीक कर्तव्य पद एतए धर्मक हेतु व्यवहारतः उपयुक्त अछि। एहन कर्तव्य जाहिसँ तन, मन, धन ओ आत्माक अभ्युदय हो धर्मक परिभाषा भए सकैत अछि।

जाहि कार्यकेँ करबामे वा कएला पर लाजक अनुभव हो से अधर्म वा अधलाह थिक आओर जाहि कार्यक कएलासँ चित्त प्रसन्न हो सैह धर्म थिक, ई सनातन धर्मक विशेषता छैक। यथा मार्कण्डेय पुराणमे कहल छैक

यच्चापि कुर्वतो नात्मा जुगुप्सामेति पुत्रक।
तत्कर्तव्यमशङ्केन यन्न गोप्यं महामुने।।

जाहि कार्यमे मोनमे दुविधा होइत रहए ओतए समाजक बूढ़ पुरानकें पूछि निर्णय कए कार्य करी वा अपना जे मोन मानए से करी। इएह तात्पर्य मोनमे राखि *मनुस्मृति* धर्मक चारि प्रकार कहल अछि –

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्रहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

सनातनधर्मक मूलक विवरण *वायुपुराण* मे एना देल गेल अछि–अद्रोह, अलोभ, मनोनिग्रह, भूतदया, तपस्या, ब्रहचर्य, सत्य, कठोर व्यवहार नहि करब, अर्थात् मृदुव्यवहार, क्षमा ओ धैर्य सनातन धर्मक मूल थिक।

अद्रोहश्चाप्यलोभश्च दमो भूतदया तपः।
ब्रह्मचर्यं तथा सत्यमनुक्रोशः क्षमा धृतिः।।
सनातनस्य धर्मस्य मूलमेतद् दुरासदम्। (५७०।१६।)

धर्मशास्त्रीय निबन्धक रचना

प्रत्येक प्रान्तक जागरूक विद्वान् लोकनि उपर्युक्त *धर्मसंहिता* ओ *पुराण* आदि आकर ग्रन्थक आलोकमे देश, काल ओ पात्रक अनुकूल स्वतन्त्र धर्मशास्त्रक *निबन्ध* रूपमे प्रणयन कएल। अत एव प्रत्येक प्रान्तक धर्मशास्त्रमे किछु–किछु

आचारगत भेद देखल जाइत अछि। उपस्थित समस्या सभक कालोचित समाधान एतए भेटैत अछि। मैथिल निबन्धकार लक्ष्मीधर (१२श०), श्रीदत्त उपाध्याय (१३श०), चण्डेश्वर ठाकुर, गणेश्वर ठाकुर, वीरेश्वर ठाकुर, रामदत्त ठाकुर (१४श०), विद्यापति ठाकुर, वाचस्पति मिश्र, पक्षधर उपाध्याय, पक्षधर प्रसिद्ध जयदेव मिश्र, शङ्कर मिश्र, रुद्रधर उपाध्याय, नरहिर उपाध्याय ओ मिसरू मिश्र (१५श०), द्वितीय वर्धमान उपाध्याय, केशव मिश्र, महेश ठाकुर, देवनाथ ठाकुर (१६श०), कल्याण शर्मा, उमापति उपाध्याय (१७श०) ओ गोकुलनाथ उपाध्याय, सचल मिश्र (१८श०), आदिक नाम एतए अवश्य उल्लेखनीय अछि, जे यथासमय अपन प्रतिभा ओ बुद्धिक बलें समाजकें आचारगत समस्याक समाधान दए मार्गदर्शन करैत रहलाह।

एहिना बंगाल, उड़ीसा, मध्यप्रदेश (वाराणसी आदि), गुजरात ओ दक्षिण प्रान्तक विद्वान् लोकनिक धर्मशास्त्र-*निबन्धावली* अपन-अपन देशाचारक अनुरूप ओ उपस्थित समयक अनुकूल निर्मित भेल आओर तदनुसार सनातन धर्मक रक्षा होइत रहल अछि। असम, पूर्व बङ्गालक चटगाँव, पश्चिम बंगालक मालदह ओ दिनाजपुर आदिमे कोनो ने कोनो तरहक मिथिलाक संबन्ध रहने मैथिल धर्मशास्त्रहिक अधिक अनुसरण होइत अछि।

कलिवर्ज्यक प्रसङ्ग

सनातन धर्मक अनुकूल नियमक दुरुपयोग तथा ओकर पालनमे शैथिल्य देखि बूझि पड़ैए धर्मशास्त्र मे कलिवर्ज्य[1] प्रकरण जोड़ल गेल। एहिमे कहल

---

१. अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्म्यमप्याचरेन्न तु।
समुद्रयात्रास्वीकारः कमण्डलुविधारणम्।।

द्विजानामसवर्णासु कन्यासूपयमस्तथा।
देवरेण सुत्तोत्पत्तिर्मधुपर्के पशोर्वधः।।

मांसदानं तथा श्राद्धे वानप्रस्थाश्रमस्तथा।
दत्ताक्षतायाः कन्यायाः पुनर्दानं परस्य च।।

दीर्घकालं ब्रह्मचर्यं नरमेधाश्वमेधकौ।
महाप्रस्थानगमनं गोमेधं च तथा मखम्।।

इमान् धर्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः।।

(बृहन्नारदीयपुराण २२/१२-१६)।

गेल अछि जे समुद्रयात्रा, संन्यासग्रहण, द्विजकेँ असवर्ण कन्यासँ विवाह, देओरसँ पुत्र जनमाएब, मधुपर्कमे पशुबध, श्राद्धमे मांसक व्यवहार, वानप्रस्थ आश्रम, वाग्दत्ता कन्याक अनका संग विवाह, दीर्घकाल धरि ब्रह्मचर्यक रक्षा, नरमेध, अश्वमेध ओ गोमेध यज्ञ तथा महाप्रस्थान (मरण) हेतु यात्रा कलियुगमे वर्जित अछि।

यद्यपि कलिवर्ज्य प्रकरणक पलपैतृक विधिक अनुकल्प मत्स्यसँ श्राद्ध करब–मिथिलामे आइओ परम्परासँ प्रचलित अछि। श्राद्धमे विहित ओ प्रशस्त ओल केराक व्यञ्जन, उड़ीदक बड़क व्यवहार मांसहिक अनुकल्प थिक मत्स्य (माछ) साक्षाते पितरकें अर्पित होइत अछि। तथापि उक्त प्रकरणमे उल्लिखित आन सभ विषय प्राय: मिथिलामे वर्जिते जकाँ अछि। एहिना मैथिलेतर धर्मशास्त्रमे कलिवर्ज्य प्रकरणक सन्न्यास आश्रमक स्वीकार मान्य ओ समादृत अछि, आन सभटा वर्जित अछि। फलत: ग्रहण ओ त्यागक प्रसङ्ग समयानुकूल ओ देशानुरूप धर्मशास्त्रीय विचार प्राय: सर्वत्र भारतमे प्रस्तुत कए धर्मशास्त्रकार लोकनि युक्तिपूर्ण विचारक स्वातन्त्र्य प्रदर्शन करबामे कतहु कहुखन संकोच नहि कएलैन्हि अछि।

एहि शताब्दक दोसर चरणमे मिथिला नरेशक विलायत यात्रा कएला पर एहि कलिवर्ज्य प्रकरणक समुद्रयात्राक स्वीकारकें केन्द्रबिन्दु मानि मिथिलामे खूब धार्मिक आन्दोलन पसरल। कतोक धर्मात्मा कुलीन ब्राह्मण लोकनि महाराजकें विधर्मी मानि मिथिलामे बसल बसाओल घर द्वारकें छोड़ि नेपाल राज्यक आश्रित भए ओतहि चास–बास कएलैन्हि। पछाति युगधर्मक प्रभावें, सामाजिक असुविधें ओ नेपाली सभक द्वारा कएल गेल उत्पीड़नसँ बाध्य भए ओ लोकनि क्रमश: मिथिला आपस अएलाह तथा आन्दोलनो क्रमश: शान्त भेल। आइ काल्हि तँ समुद्रमार्गें नहि जाए वायुयान सँ तीर्थयात्रा जकाँ विदेशयात्रा सौभाग्यक संवर्धक भेल अछि। आजुक परिप्रेक्ष्यमे महाराज द्वारा कएल गेल विलायतयात्रा हुनक दूरदृष्टिक परिचायक सिद्ध भेल। समाजकें साहस भेलैक। विदेश यात्राक विचिकित्सा दूर भेलैक, जाहिसँ बहुतोक जीवनमे अभ्युदयक पथ प्रशस्त भेलैक, भने मिथिलानरेश समयक प्रतिकूलतें तात्कालिक अपमानभाजन किछु लोकक दृष्टिमे तहिया भेल होथि।

हमरा जनैत कलिवर्ज्य प्रकरणमे समुद्रयात्राक उल्लेख प्राय: कारणान्तरसँ भेल होएत, जकर साक्ष्य इतिहासमे हमरा सभकें भेटैत अछि।

जलदस्युक अत्याचारें समुद्रयात्रीक धन, धर्म, इज्जति ओ प्राणधरिक संकट उपस्थित भए जाइत छलैक। तें कलिवर्ज्यमे एकरा सम्मिलित कएल गेल होएत। ठीक एकर सजातीय उदाहरण देवलस्मृतिमे भेटैत अछि, जतए विधर्मीक अत्याचारें कुलीन गर्भवती महिला प्रसवक बाद शुद्ध मानल गेल छथि।

धर्मशास्त्रमे समयानुकूल परिष्कार

मैथिल निबन्धकारक उदार दृष्टिकोणक उदाहरण संस्कारक क्षेत्रमे तीन ठाम तँ अवश्य दृष्टिगोचर होइत अछि। चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ ओ समार्वतन, ई चारि संस्कार जे भिन्न भिन्न वयसमे अनेक वर्षे (चारि बेरेँ) सम्पन्न होइत छल से चारू पछाति एकहि दिनमे होअए लागल।

रातिम

उपनयक चारिम दिन रातिम होइत अछि। ई समावर्तनहिक एक विधि थिक। ई विधि महिलालोकनि करैत छथि। किन्तु शास्त्रमे भेटैत अछि। आचार्य वरुआके तीन राति निरन्तर अपना लगमे रखैत छथि। एहि अवधिमे देवतालोकनि वडुआक दर्शन करए अबैत छथि। तेँ एहि अवधि मे वडुआ सूर्य केँ नहि देखैत छथि। बंगाल मे ई नियम एखनहुँ प्रायः प्रचलित अछि। चारिम दिन आचार्य वडुआ केँ ब्रह्मचर्यक नियमसँ मुक्त करैत छथि। वडुआक चुमाओन होइत अछि आ ओ विलौकी मङैत छथि। विलौकीसँ देवदर्शनक आशीर्वाद भेटबाक प्रसन्नता अभिप्रेत अछि।[1]

विवाहक प्रसंग

एहिना **पञ्चमात् सप्तमात् ऊर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा** याज्ञवल्क्यक एहि नियमक मानला पर अर्थात् मातृपक्षसँ पाँच पीढीक ओ पितृपक्षसँ सात पीढीक उपरक भिन्न गोत्रक कन्यासँ विवाहक विधान नियत कएला पर बहुत व्यक्तिकेँ विवाह योग्य कन्याक अनुपलब्धिमे अर्थात् अधिकारक

---

१. आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।।
(आथर्वणसंहिता)

संकीर्णतामे असंभव देखि विद्याक बलें मिथिला राज्यक उपार्जक महामहोपाध्याय महेश ठाकुर आदि अपना समयमे एतए एक पीढीक शिथिलता कए देल ओ वचन एना बनाओल गेल –

'मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं भजेत्'

जखन कि उक्त स्मृतिक अनुपालनमे **सप्तमीं त्यजेत्** पाठ संगत होइत अछि। आइ काल्हि एतेक विचार साधारण धर्मशास्त्रीक दृष्टिओपर नहि आबि पबैत अछि। मुदा एकर संकेत एहि शताब्दक आरम्भ धरि जीवित महामहोपाध्याय हर्षनाथझा अपन *संस्कारदीपक* मे कए गेल छथि।[१]

द्वादशाह कृत्य

तेसर कार्य द्वादशाह कृत्यक अछि। मासिक कृत्य साल भरि प्रतिमास कर्तव्य होइत छल। मुदा मिथिलामे वर्षभरिक सम्पाद्य कृत्य एकहि दिनमे कालक अपकर्ष (संक्षेप) कए सम्पन्न कए लेल जाइत अछि। जाहिसँ वर्षभरिमे

---

१ – द्रष्टव्य संस्कारदीपक (प० रामचन्द्र खनङ्ग सम्पादन, काशी संस्करण) पृ० ८५, पंक्ति एना छैक –

महामहोपाध्यायमहेशठक्कुरास्तु तत्तत्पाठमन्यथयित्वा पितृपक्षे सर्वत्र सप्तमीपरिणयमनुजानन्ति। तत्र च शिष्टसंवादमाचारं च प्रमाणयन्ति।

उद्वहेत् सप्तमादूर्ध्वं तदभावे तु सप्तमीम्।
पञ्चमीं तदभावे तु पितृपक्षेऽप्ययं विधिः।।

एकर पुष्टिमे विष्णुपुराणक ओ मार्कण्डेयपुराणक वचन उपलब्ध अछिः

पञ्चमीं मातृपक्षाच्च पितृपक्षाच्च सप्तमीम्।
गृहस्थ उद्वहेत् कन्यां न्याय्येन विधिना नृप।। (विष्णुपुराण)
उद्वहेत् पितृमात्रोस्तु सप्तमीं पञ्चमीं तथा। (मार्कण्डेयपुराण)

वर्धमान उपाध्याय ओ देवनाथठाकुर एकर विपरीत याज्ञवल्क्यक वचनक अनुसार वचनान्तरक उद्धरण दैत छथि –

वध्वाः वरस्य वा तात कूटस्थात् यदि सप्तमः।
पञ्चमी चेत्तयोर्माता तत्सापिण्ड्यं निवर्तते।।

एहिठाम कूटस्थसँ मूल अर्थात् बीजी पुरुष अभिप्रेत अछि।

सम्भावित विघ्न, अशौच वा रोगादिक कारणें वा कर्ताक अनवधानतें ओहि कृत्यक लोप नहि होइत अछि। वृद्ध कर्ताक कदाचित् देहान्त - महाविघ्न–भेलासँ संभावित ओकर लोप बाँचि जाइत अछि।

संस्कारमे एहन परिष्कार मैथिल निबन्धकारक उदार विचार ओ दूरदृष्टिक परिचायक अवश्य मानबाक थिक। एहिसँ परवर्ती समाज कर्तव्यच्युतो नहि कहौलक आओर कर्तव्यच्युतिक अवसरो नहि अएलैक। संगहि ईहो मानल जाइत अछि जे सालभरि अशौच रहने दिवङ्गत व्यक्तिक साक्षात् सन्तानक शुभकर्म–विवाह, उपनयन आदि नहि हो। तेँ पूजा–पाठ, सन्ध्यातर्पण आदि देवकर्मक अधिकारी रहितहुँ विवाहादिक अधिकारी ओ सभ नहि होइत छथि।

सनातन (स्मार्त) धर्मक संरक्षण ओ संवर्द्धनमे आचार्य शङ्करभगवत्पादक स्तुत्य अवदान

एहि सनातन धर्मक रक्षामे जगद्‌गुरु शङ्करभगवत्पादक (आदिशङ्कराचार्यक) योगदान सेहो अवश्य उल्लेखनीय अछि। लोकनायकक गुण लए शङ्करभगवत्पाद सनातन धर्मक रक्षार्थ आविर्भूत भेलाह। समस्त भारतवर्षक परिक्रमा कए जनताक मनोवृत्ति ओ सामयिक परिस्थितिसँ अवगत भए समयानुकूल दार्शनिक सिद्धान्त ओ शिष्ट समादृत सनातनधर्मक सुरक्षा ओ प्रचारमे तत्पर भेलाह आओर अपन प्रयासमे सफलतो अर्जित कएल। ई भारतवर्षक चारू दिशामे शङ्करमठक स्थापना कएल। जकर मुख्य उद्देश्य छलैक सनातन धर्मक रक्षा तथा एहि धर्मक प्रसंग समय समय पर उपस्थित समस्या ओ संशयक समाधान हेतु उचित व्यवस्था ओ शाङ्करवेदान्तक प्रमुखता दैत समस्त भारतीय विद्याक संवर्धन ओ सरंक्षण हेतु उपायक चिन्ता। ई मठ भारतीय जनताक हेतु कोनो विश्वविद्यालयसँ अधिक उपादेय सिद्ध भेल। ज्योतिष्पीठ बदरिकाश्रम, शारदापीठ शृङ्गेरी, गोवर्धनपीठ पुरी ओ द्वारकापीठक स्थापनासँ भारतक चारू दिशा बान्हल गेल। सभठाम पूर्ण शिक्षित, सर्वथा आस्तिक, उपासनामे पटु ओ वैदुष्य मण्डित अर्थात् जगद्‌गुरुक गरिमाक अनुरूप अपन प्रतिनिधि शङ्कराचार्यकें धर्मगुरुक रूपमे ओ प्रतिष्ठित कएल। काञ्चीक शङ्करमठ सेहो प्राचीनतम तथा आदिशङ्कराचार्य द्वारा प्रतिष्ठित अछि। ओहि मठक शङ्कराचार्य सभ दिन समाजमे सम्मानित रहलाह अछि।

हुनको इएह कार्यकलाप निर्दिष्ट अछि, जे आन शङ्कराचार्य हेतु कहल गेल अछि। जनश्रुतिक अनुसार मध्य देशक विद्याकेन्द्र काशीमे पाँचम वा छठम मठ ओ स्थापित कएने छलाह, मुदा किछुए दिनक बाद ओ लुप्त भए गेल। सुनल जाइछ जे ओहि मठक शङ्कराचार्य वाममार्गक अवलम्बन कए मठक मर्यादाकें भङ्ग करबा दिशि उन्मुख भेलाह। तेँ अन्य मठाधीश लोकनि हुनका पदच्युत कए देलैन्हि। पछाति प्रायः एहि शताब्दक उत्तरार्धमे श्रद्धेय स्वामी करपात्रीजीक प्रयाससँ सुमेरुपीठ नामे जगद्गुरुक एकटा मठ एतए स्थापित भेल, जकर पहिल शङ्कराचार्य भेलाह स्वनामधन्य कवितार्किकचक्रवर्ती महादेव शास्त्री। ई जीवनक सान्ध्यकालमे एहि पद पर प्रतिष्ठित कएल गेलाह, आओर लुप्त मठ पुनः संस्थापित भेल। आइ काल्हि स्वामी शङ्करानन्दजी एकर अधिष्ठाता छथि।

सनातनधर्मावलम्बी आदिशङ्कराचार्य विचारसँ अद्वैतवादी रहितहुँ व्यक्तिगत जीवनमे भगवती श्रीविद्याक शाक्ततन्त्रक दक्षिणाचारसँ उपासना करैत छलाह आओर ओहिसँ ओ सिद्धिओ लाभ कएल। हिनक पूजित 'श्रीयन्त्र' सुनैत छी जे काञ्चीक शङ्करमठमे परम्परासँ सुरक्षित अछि आओर ओहिठामक जगद्गुरु शङ्कराचार्य प्रत्यह ओकर सविधि पूजन-अर्चन करैत आबि रहल छथि।

आदिशङ्कराचार्य केवल मठहिक स्थापना नहि कएल, अपि तु प्रत्येक मठक कर्तव्यक निर्धारणो कएल। मठक परिचालन-सञ्चालन हेतु भौगोलिक अधिकार, सन्न्यासी वा ब्रह्मचारीक नाम, तीर्थ, परिग्रहणीय वेद एवं वैदिक महावाक्य आदिक निर्णयो कए गेलाह। स्वयं वा अधिकारी विद्वान्क सभाक द्वारा उपस्थित सामयिक समस्याक समाधान करबाक भार सेहो हुनका सभ पर सौंपि गेलाह। पछाति एकरे अनुकरण पर अनेक शैव ओ वैष्णव मठक स्थापना भेल, जे अनुकूल धर्मक प्रचारमे संलग्न भेल तथा एहिना जगद्गुरुक प्रतिष्ठाक संग कर्तव्यक अनुपालनमे सदा तत्पर रहल।

आदि शङ्कराचार्यक कृति सभ विचारक विशदता ओ उच्चतामे सर्वोपरि अछि। प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित उपनिषदक, भगवद्गीताक तथा वेदान्तसूत्रक भाष्यक संग वेदान्त दर्शनक अनेक प्रकरणग्रन्थ, शाक्त, शैव ओ वैष्णव

स्तोत्रावली आदि हिनक रचना सनातनधर्मावलम्बीक हेतु पथप्रदर्शक ओ अभ्युदयक साधन रूपमे प्रशस्त ओ विद्यमान अछि।

शङ्करभगवत्पादक समयमे देशक सामाजिक ओ राजनैतिक अवस्था चिन्तनीय छलैक। शैव, शाक्त ओ वैष्णव आदि सम्प्रदाय एक दोसराक विरोधी छल तथा एक सम्प्रदायहुक व्यक्ति परस्पर गोत्रकलहमे तेना लिप्त छल जे साधारण जनता दिशाहीन भेल जा रहल छल। विभिन्न वैदेशिक जाति ओ धर्म अपन प्रचार जोर शोरसँ कए रहल छल। अपना देशहुक नास्तिकमतवृन्द एहि सनातन धर्मक विरोधमे ताल ठोकि कए ठाढ़ छल। एहन कोनो शासन नहि छल जे सम्पूर्ण भारतकें एकसूत्रमे बान्हिकए एकर रक्षा कए सकए। फलतः सनातन धर्मक संस्थापन ओ संरक्षण हेतु वेदानुमत विविध सम्प्रदायकें एकसूत्रमे गाँथि कए ओकरा सुप्रतिष्ठित करब आवश्यक बूझि लोकनायक शङ्करभगवत्पाद एहि कार्यमे लगलाह आओर पूर्ण सफल भेलाह।

धर्मशास्त्रपर पक्षपातक निराधार आरोप

कहल जाइत छैक जे *धर्मशास्त्र* वा *पुराणमे* ब्राह्मण आदि उच्च वर्गक प्रति पक्षपात आओर शूद्रक प्रति निष्ठुरता कएल गेल अछि। अतः कतोकठाम मनुस्मृति आदि धर्मग्रन्थकें चौबट्टी पर जराओल जाए रहल अछि। मुदा ई विचारधारा सर्वथा अज्ञानमूलक थिक। शास्त्रक अभिप्राय नहि बूझिकए अपन पूर्वाग्रहसँ एहन धारणा बनाओल गेल अछि। जहिना भगवान् सूर्यक किरण सर्वत्र प्रकाश दैत अछि, ब्राह्मण ओ चाण्डालक घरपर समान रूपसँ पसरैत अछि तहिना भारतीय शास्त्र प्रत्येक व्यक्तिक केवल हितक अनुशासन वा उपदेश करैत अछि। गुण ओ कर्मक अनुसार वर्ग विभाजनक रूप आइओ देखल जाइछ। तें अध्यापकवर्ग, औफिसरवर्ग, किरानीवर्ग आदिक चर्चाक संग गृहस्थ (किसान) वर्ग ओ बनियाँ वर्ग आदि सुनल जाइत अछि, जे शास्त्रीय नहि लोकाचारमे व्यवहृत अछि।

ब्राह्मण आदि ऊँच वर्गक प्रति प्रमाद, कर्तव्यच्युति ओ अपराध भेला पर धर्मशास्त्रक अनुशासन जेहन कठोर अछि तेहन कठोर शूद्रक प्रति नहि अछि। जतए क्षमता देखि अधिकार देल जाइत छैक ततहि कर्तव्यक बोझहु तँ उघबाओल जाइत छैक। आँखि ताकि कए देखला पर *शास्त्रमे* लेशमात्रो विषमता नहि

भेटत। एकभगाह वा पूर्वाग्रहक दृष्टिसँ देखला पर विपरीत देखाएब स्वाभाविक, जाहिमे दृश्यक नहि द्रष्टाक दोष आकलनीय थिक।

महिला ओ शूद्रकें वेद पढ़बाक जे निषेधक चर्चा सुनैत छी सेहो अभिप्राय नहि बुझबाक कारणहिं भेल अछि। *महाभारतक* स्पष्ट निर्देश[१] अछि जे ब्राह्मण कें मुख्य श्रोता बनाकए वेदक अध्यापन करी। एहि अवसरमे यदि मेधावी शूद्र वा महिला वेद सुनथि वा बूझथि तँ क्यो दोषी नहि थिक, ने कोनो क्षतिए होइत अछि। शूद्रक वेदानुकूल आचरण निन्द्य नहि थिक अपि तु ऊँच उठएबाक कारणे प्रशंसनीय थिक[२]। ब्रह्मबन्धु ओ ब्राह्मणक जे भेद *भागवतपुराणमे* देखैत छी से की वैयक्तिक संस्कार ओ क्षमताक द्योतन नहि करैत अछि। ब्राह्मणकुलमे जन्म लेनिहार संस्कारहीन व्यक्तिए तँ 'ब्रह्मबन्धु' कहबैत छथि। इएह यदि संस्कार सम्पन्न रहैत छथि तँ ब्राह्मण होइत छथि। *ऐतरेय ब्राह्मणक* प्रवक्ता ऋषि ऐतरेय इतरा नामक दासीक पुत्र छलाह। मुदा अपन आचरणैक बलपर ऋषि भेलाह से जगद्विख्याते अछि।

पद्मपुराणक सृष्टिखण्डमे कहल छैक – जन्मसँ ब्राह्मण, संस्कारसँ द्विज ओ विद्याक अध्ययनसँ विप्र आओर तीनूक रहलासँ श्रोत्रिय कहबैत अछि –

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते।
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रियलक्षणम्।। (४३/१३४

आत्मगुणक महत्त्व *महाभारतमे* अनेकठाम भेटैत अछि –

---

१. **श्रावयेत् चतुरो वर्णान् कृत्वा ब्राह्मणमग्रतः।**
वेदस्याध्ययनं हीदं तच्च कार्यं महत् स्मृतम्।।

(शान्तिपर्व ३२६/४९)

२. **यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थितः।**
तं ब्राह्मणमहं मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विजः।।

(*महाभारत* ३/२१६/१४/)

धर्मव्याध उपाख्यानमे उपयुक्त गुण सम्पन्न शूद्रकें ब्राह्मण्यमे अधिकार स्वीकृत अछि। इतरा दासीक पुत्र महीदास सत्कर्महिक आधार पर ऐतरेय ब्राह्मणक मन्त्रद्रष्टा ऋषि ओ सभक पूज्य भेलाह।

श्रृणु यक्ष कुलं तात न स्वाध्यायो न च श्रुतम्।
कारणं हि द्विजत्वे च वृत्तमेव न संशयः।।

(अरण्यपर्व ३/३१३/१०८/)

*आजगर*पर्वमे कहल अछि –

सत्यं दानं क्षमा शीलमानृशंस्यं तपो घृणा।
दृश्यते यत्र नागेन्द्र स ब्राह्मण इति स्मृतः।। ३/१३१/२१/)

महाभारत कहैत अछि जे अनेक अंशमे प्रत्येक मानव समान रहितहुँ तीन ठाम अवश्य असमान अछि–रूप, उद्यम ओ विद्याक वैभव रूप बुद्धिमे।

जात्या च सदृशाः सर्वे कुलेन सदृशास्तथा।
न चोद्योगेन बुद्ध्या वा रूपद्रव्येण वा पुनः।।

(शान्तिपर्व, अ० १०७)

अपि च *वेदक* कठोर अनुशासनसँ असुविधा देखि बुद्धिमान् समाज एहि भारतवर्षमे प्राचीने कालसँ समानान्तर *आगम शास्त्रक* प्रचार कएल अछि। जतए मानवमात्रकें समान अधिकार उपदिष्ट अछि आओर उपासनाक दुआरि सभक हेतु खुजल अछि, स्त्री ओ शूद्रक वर्जन नहि अछि। जाहिसँ देवताक सान्निध्य प्राप्ति ओ शुभसंस्कारसँ हृदयक परिष्कार आदि प्रत्येक मानवक हेतु सुलभ अछि।

भारतक प्राचीन विश्वकोष *पुराणसाहित्यकें* कहल जाए सकैत अछि, जे वेद ओ *आगमक* समन्वय कए अपन पथ प्रशस्त करैत लोकमे प्रसिद्धि ओ प्रचार पौलक अछि। अतएव स्मार्तधर्मावलम्बी हमरा सभ धर्मग्रन्थक नाम पर वेद, पुराण तथा आगम पर समान आस्था रखैत लोकयात्रामे प्रवृत्त होइत छी।

तान्त्रिकधर्म ओ उपासना

वेद ओ *पुराणसँ* भिन्न मुदा ओहि दूनूक समान्तराल एकटा धार्मिक साहित्य *तन्त्रपदें* एतए अभिप्रेत अछि। *मनुस्मृतिक* व्याख्याकार कुल्लूकभट्ट वेदहि जकाँ तन्त्रहुक महत्त्व मानैत छथि – **वैदिकी तान्त्रिकी चैव द्विविधा कीर्तिता श्रुतिः**। ई वचन *हारीतस्मृतिक* थिक। अति प्राचीन कालसँ अनेको लोकायत (नास्तिक दर्शन विशेष) धर्म एहि तन्त्रमे स्थान पाबि चुकल अछि।

विशेषज्ञ लोकनि तँ सिन्धु संस्कृतिमे तान्त्रिक आचार विचार देखैत छथि। तन्त्रशास्त्र वा तन्त्रमार्गक प्राचीन इतिहास लुप्ते जकाँ अछि, मुदा एकर प्रचार ओ प्रसिद्धि एहन रूढमूल अछि जे भारतक प्रत्येक प्रान्तमे कोनो ने कोनो प्रकारक तान्त्रिक साधना अवश्य प्रचलित अछि। वैष्णव, शैव, शाक्त तथा बौद्ध उपासना तन्त्रहिक प्रस्थानमे देखल जाइत अछि। शैवक जेना – वीरशैव, लिङ्गायत ओ पाशुपत भेद प्रसिद्ध अछि, प्रत्यभिज्ञा दर्शन स्वीकृत अछि। तहिना वैष्णवधर्मक, वैखानस ओ पाञ्चरात्र आगम मे निर्दिष्ट उपासना-पद्धति मान्य अछि। गुह्यसमाज ओ साधनमालामे बौद्ध लोकनिक तान्त्रिक उपासना भेटैत अछि, वज्रयानक मार्ग एतए प्रसिद्धे अछि। श्रीविद्या ओ आद्याक उपासना पद्धति शाक्त समाजमे विशेष देखैत छी, तखन सौर ओ गाणपत्यहुक सम्प्रदायक हेतु स्थान अवश्य सुरक्षित अछि, ई सभटा तन्त्रशास्त्रहिक विस्तार थिक।

व्यवहार ओ उपासनामे वैदिक, पौराणिक ओ तान्त्रिक पद्धतिक समन्वय एहि सनातनधर्ममे डेग डेग पर भेटैत अछि, केवल विश्लेषणक हेतु निर्मल दृष्टि चाही।

तान्त्रिक दृष्टिएँ पृथिवीकेँ तीन भागमे बाँटल गेल अछि – अश्वक्रान्ता, रथक्रान्ता ओ विष्णुक्रान्ता पृथिवीक भाग मानल गेल अछि। हमरा सभ स्नानक कालमे मन्त्र पढ़ैत छी –

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते महेश्वरि।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।

विन्ध्य पर्वतक पूर्वभागमे उत्तरें-दछिने समान रेखा खिचला पर ओहि रेखाक पूर्वभाग विष्णुक्रान्ता कहबैत अछि। ओही रेखासँ सम्बद्ध पश्चिमाभिमुख रेखा खिचला पर उत्तरभाग रथक्रान्ता ओ दक्षिणभाग अश्वक्रान्ता कहबैत अछि। प्रत्येक भूभागक चौंसठि-चौंसठि गोट तन्त्रग्रन्थ छलैक से सुनैत छी, मुदा कमे ग्रन्थ ओहि सूचीक प्रत्येक भागक सम्प्रति उपलब्ध अछि। उपलब्ध तन्त्र ग्रन्थ समूह उपर्युक्त चौंसठि ग्रन्थक सूचीक बहिर्भूते अछि।

तान्त्रिक ग्रन्थक नामक आधार पर शाक्त *तन्त्रक* प्रमुख चारिटा सम्प्रदायक स्पष्ट परिचय महाकालसंहिता प्रस्तुत करैत अछि। *डामरग्रन्थक* अनुसरण कापालिक करैत छथि। *यामलग्रन्थक* अनुसरण मौलेय करैत छथि। *भैरवभैरवीक* संवाद रूप *तन्त्रग्रन्थक* अनुसरण दिगम्बर करैत छथि आओर *शाबरतन्त्रक* अनुसरण

भाण्डिकेर। एहिसँ भिन्न एकटा पाँचम सम्प्रदाय अछि जे स्मार्तशाक्तसम्प्रदाय कहल जाए सकैत अछि। ई कट्टर तान्त्रिक नहि, अपि तु समन्वयवादी अछि। *महाकालसंहिता* एकरे सम्पोषक थिक। ई कहैत अछि जे वेदक अविरोधी तान्त्रिक आचार मान्य थिक –

वेदाविरुद्धं कुर्वन्ति यद्यदागमचोदितम्।
आगमादेशितमपि जहति श्रुत्यचोदितम्।।

* * * *

श्रुतिस्मृत्युदितं कर्म देव्युपासनमेव च।
उभयं कुर्वते देवि मदुदीरितवेदिनः।।

अनेक सम्प्रदाय रहने क्षेत्रविशेषमे प्रचलित अनेक उपासनाक पद्धति देखल जाइत अछि। पुनश्च देवताक प्राधान्य देखि अर्थात् उपास्यक आधारपर तन्त्रक विभाजन सेहो देखैत छी, शैवागम, वैष्णवागम ओ शाक्तागम आदि। प्रत्येक आगमक तत्त्वचिन्तन ओ दार्शनिक पक्ष भिन्न भिन्न अछि, जे सम्प्रदायक आकर ग्रन्थ सबमे उपलब्ध अछि। तन्त्रो वेदहि जहाँ अपौरुषेय अछि आओर चारि भागमे विभक्त अछि, ज्ञान, क्रिया, चर्या ओ योग। ज्ञानसँ दार्शनिक चिन्तन, क्रियासँ शिल्पशास्त्रीय विचार–मूर्ति ओ मन्दिरक निर्माण स्वरूप आदि, चर्यासँ बाह्यपूजाक विधि–विधान ओ योगसँ आन्तरपूजाविशेष अभिप्रेत अछि।

एतए सर्वथा ई बुझबाक थिक जे तन्त्र कहियो, वेदक विरोधी नहि रहल मुदा अपन रास्ता अलग कएकेँ बनओलक। कलियुगमे तान्त्रिक उपासना सहज ओ शीघ्रफलद कहल गेल अछि। अतः एहि उपासनाक दिशि अधिक आकर्षण लोकक देखैत छी। एहिमे उपकरण ओ शुचिताक वैदिक विधि जकाँ आग्रह ओ अनिवार्यता नहि छैक। ओ रहलासँ नीक, नहि रहलासँ अधलाह नहि से बुझबाक थिक। प्रागैतिहासिक कालसँ तान्त्रिक उपासनाक प्रचलन देखैत छी। बङ्गाल, आसाम, मिथिला ओ नेपालमे एहि शाक्त उपासनाक प्रधानता अछि, ताहूमे काली ओ ताराक अधिक। काश्मीर, केरल ओ मध्यदेशमे श्रीविद्याक (त्रिपुरसुन्दरीक) उपासना अधिक अनुष्ठित होइत अछि। गुजरातक गोण्डल स्थानमे भुवनेश्वरीक उपासना शङ्कराचार्यक शिष्य पृथ्वीधराचार्यक समयसँ सुनैत छी। शङ्कराचार्यक परमगुरु गौड़पादाचार्यकृत श्रीविद्याक उपासना स्तोत्र प्रसिद्ध अछि। जहिना वैदिक गायत्री–मन्त्रक दीक्षा विधिवत् उपनयनक समयमे देल जाइत अछि तहिना तान्त्रिक बीजमन्त्रक दीक्षौक विधान अछि। बहुत ठाम

पौराणिक देवताक मन्त्रहुक दीक्षा लोक लैत अछि। सम्प्रति स्मार्तधर्मावलम्बीक आचरणमे वेद, पुराण ओ आगमक-तीनूक समन्वय वा सम्मिश्रण देखैत छी। पौराणिक कृत्य दुर्गापूजामे स्वस्तिवाचन, देवीसूक्त, ओ रात्रिसूक्तक पाठ, हवन, बलिप्रदान ओ स्तुति आदि यदि वैदिक विधि अनुष्ठित होइत अछि तँ न्यास, प्राणायाम, निशीथपूजा, कुमारि-भोजन ओ प्रतिमाक प्राणप्रतिष्ठा ओ शाबरोत्सव तान्त्रिक विधि मानल जाइत अछि। गङ्गादशहराक गङ्गास्नान ओ अन्य पर्वमे दान, ब्राह्मण-भोजन आदि पौराणिक धर्माचरण थिक। गायत्रीजप, सन्ध्यावन्दन ओ तर्पण आदि दैनिक कृत्य वैदिके विधि थिक। तन्त्रमे आचारहुक भेद देखैत छी- दक्षिणाचार ओ वामाचार आदि। सङ्गहि भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, उपकरणशुद्धि आदिओ दक्षिणाचारमे निर्दिष्ट अछि।

ई कहब असङ्गत नहि होएत जे साधक उपासक जाहि विधिसँ मनःपूत कए साधनामे प्रवृत्त होथि, ओही पद्धतिसँ साधना कए ओ अवश्य अभीष्टक प्राप्ति करैत छथि। तान्त्रिक साधनामे मुख्यतः गुरुपरम्परा ओ विश्वास अपेक्षित छैक। एकर उपदेश *परशुरामकल्पसूत्रमे* स्पष्टतः कएल गेल अछि, **सम्प्रदायविश्वासाभ्यां सर्वसिद्धिः**। गुरुक उपदेश विश्वासपूर्वक मानि तदनुसार उपासना कएलासँ अवश्य सिद्धिक प्राप्ति कएल जाए सकैत अछि। सम्प्रदायसँ गुरुपरम्परा ओ विश्वाससँ निःसन्दिग्ध मानसिक निश्चय अभिप्रेत अछि।

तान्त्रिक-साधनाक मुख्य वैशिष्ट्य

१. तान्त्रिक साधनाक कए गोट मुख्य वैशिष्ट्य लक्ष्य करबाक योग्य अछि। एतए साधनाक अधिकारी मानवमात्र होइत अछि, केवल द्विज नहि (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य नहि)।

'प्राप्ते तु भैरवीक्षेत्रे सर्वे वर्णाः द्विजोत्तमाः'

क उद्घोष एतए स्मरणीय अछि।

२. साधक स्वयं जेना जीवन यापन करैत होथि तहिना अपन इष्टदेवतौक जीवन बूझि हुनक सेवा करथि से *शास्त्रमे* कहल अछि –

यो हि यदन्नो भवति तदन्नास्तस्य देवताः।
तदन्नास्तस्य पितर एष धर्मः सनातनः।।

अथवा **इत्येवं वैदिकी स्थितिः** ई पाठान्तर चारिम चरणक अछि। अत

एव साधकक भेदसँ मांस–मदिराक अर्पण आओर फलरस तथा पायस बलिक रूपमे देब दूनू विधिए कोटिमे अबैत अछि।

३. तान्त्रिक उपासनामे 'पञ्च मकार'क मद्य, मांस, मत्स्य, मैथुन तथा मुद्राक उपयोग हेय वा निन्द्य नहि, अपि तु व्यापक दृष्टिएँ देखबाक ओ उदारमना भए विचारबाक थिक।

महाकाल संहिता मे वचन छैक –

परस्त्रीसङ्गमो मद्योपसेवा प्राणिघातनम्।
को हेतुर्नैव जानामि देवीप्रीतिकरा इमे।।

ठीक एकर विपरीत वसुधाराक कथा ओतहि अछि, जाहिमे एकरा सभक उपेक्षा ओ फलरस, पायसबलि ओ सात्त्विक-पूजाक विधान निर्दिष्ट अछि। मत्स्य, मांस, मदिरा, मैथुन ओ मुद्रा–पञ्चमकारक स्थूलरूप, पारिभाषिक रूप अनुकल्प तथा भावना तन्त्र सभमे निर्दिष्ट अछि। ज्ञानरूप तरुआरिसँ पुण्य तथा पापक बलि (नाश) कएला पर चित्तकें परमसत्तामे विलीन करब पारिभाषिक मांस–भक्षण वा मांसार्पण थिक। मोनक सङ्ग पञ्चेन्द्रियक (ज्ञानेन्द्रियक) निग्रह मत्स्यार्पण थिक। मूलाधारस्थ कुण्डलिनीक सहस्रारक सङ्ग सङ्गम मैथुन थिक आओर ओहिसँ सतत क्षरण होइत द्रव पदार्थक जिह्वाग्र द्वारा सेवन मधुपान थिक। पाप सन्ततिक नाशक ओ देवताकें प्रसन्न कएनिहार हस्तमुद्रा अंकुश आदि देवताक सान्निध्यकारक मुद्रा थिक। स्थूलरूपमे तँ मुद्राक अर्थ अर्पणीय मदिराक संग खाइबाला भूजल मांस वा भूजा थिक। उड़ीदक वर मांसक, करवीरपुष्पमे श्रीखण्ड चानन वा अपराजित फूलमे सिन्दूर मिलाएब मैथुनक, आदगुड़क मिश्रण वा तामाक वासनमे गाइक घी वा दूध मदिराक अनुकल्प कहल गेल अछि। एहिना मत्स्य ओ मुद्राक अनुकल्प तन्त्रग्रन्थ देखि बुझबाक थिक।

लोकरुचिकें दृष्टिमे राखि स्थूल, पारिभाषिक, अनुकल्प ओ भावनाक विधान एहि प्रसंग कएल गेल अछि। जनतामे सभक प्रवृत्ति ओ प्रकृति समान नहि देखल जाइत अछि। सात्त्विक, राजस ओ तामस–सभ प्रकृतिक लोक होइत अछि। अत एव पूजौक उपकरणमे विविधता कहल गेल अछि।

पञ्चमकारक दोसर अभिप्राय ईहो भए सकैत अछि जे असंयत ओ उच्छृङ्खल प्रवृत्ति पतनक कारण होइत अछि आओर मदिरा तथा मैथुन आदिक

सहज आकर्षण हठपूर्वक रोकल नहि जाए सकैत अछि। *भागवत* कहैत अछि–

लोके व्यवायामिषमद्यसेवा नित्यास्ति जन्तोर्नहि तत्र चोदना।

व्यवस्थितिस्तेषु विवाहयज्ञ-सुराग्रहैरासु निवृत्तिरिष्टा।।

स्मृति मे कहल अछि –

न मांसभक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने।

प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला।।

अतः हठसँ नहि किन्तु संयमसँ रोकब, सुशृङ्खल कए विषयक भोग नियमसँ कएला पर, ओकरा कल्याणप्रद बनएबाक प्रयास तन्त्र पद्धतिक भए सकैत अछि। संगहि अन्यत्र निन्दावचन एहि सभक सूनि एहि सबसँ स्वतः लोकक मोन विरत भए सकैत छैक। मैथुन हेतु पत्नीक नियम, पूजा ओ उत्सवेटामे मदिरा ओ मांसक उपभोगक नियमसँ बहुत दूर धरि निरर्थक जीवहिंसा ओ दुराचार अनाचारसँ विरति भए सकैत अछि।

४. विग्रह उपासना *आगमक* देन थिक, जे *पुराणमे* प्रसिद्धि ओ प्रचार पओलक। वैदिक उपासना *उपनिषद्मे* वर्णित अहंग्रहात्मक-आत्मज्ञानस्वरूप- अछि। आत्मज्ञानक उपाय श्रवण, मनन ओ निदिध्यासन उपनिषद्मे वर्णित अछि।

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः *बृहदारण्यक उपनिषदक* वचन अछि।

श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यः मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।

मत्त्वा च सततं ध्येय एते दर्शनहेतवः।।

ई *मानव उपपुराणक* वचन प्रसिद्ध अछि।

एतए विग्रह-उपासनाक माध्यमे प्रतीक उपासना, मानस-उपासना (अन्तर्याग) ओ निर्गुण वा नीरूप उपासनाक दिशि लोक अग्रसर होइत अछि। एहि उपासनामे शास्त्र पढ़ि कए नहि, अपि तु गुरुक उपदेश सूनि कए प्रवृत्त होएबाक चाही।

५. उपासनाक कोटि एतए निर्धारित कएल गेल अछि। बाह्यपूजा (बहिर्याग), मानसपूजा (अन्तर्याग) ओ योगविधिमे उत्तरोत्तरकें प्रशस्त मानल गेल अछि

आओर पूर्व-पूर्व ओकर सोपान रूपमे वर्णित अछि।

उत्तमो योगमार्गेण मध्यमो ध्यानसंश्रयात्।
पूजाध्यानादिभिर्ज्ञेयोऽप्यधमाराधनक्रमः।। (महाकाल संहिता)

एकरहु मूलमे लोकरुचिए अछि, जे विचित्र ओ विविध प्रकारक होइत अछि। सभ साधकक योग्यता ओ क्षमता एक रङ्ग नहि होइत छैक। अतः गुरु शिष्यक योग्यता ओ क्षमता देखि साधना-उपासनाक उपदेश करैत छथि। अभिप्राय ई छैक जे चित्तकें निर्मल कए देवता दिशि लगाएबे इष्ट छैक, ई जाहि उपायसँ होइक से कर्तव्य। अतः एतेक पथ देखाओल गेल, सम्प्रदाय चलाओल गेल तथा मत-मान्यता स्थापित भेल। जेना एकहि गन्तव्य पर दशो दिशासँ भिन्न-भिन्न पथें लोक अबैत अछि तहिना एक लक्ष्यक सिद्धि हेतु अनेक साधनामार्ग देखल जाइत अछि।

६. मिथिलामे शिव ओ शक्तिक आराधना प्राचीन कालसँ होइत आएल अछि। प्रत्येक व्यक्तिक कुलदेवता दश महाविद्यामेसँ कोनो विद्या अवश्य होइत छथि। दश महाविद्यासँ काली, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, वगलामुखी, धूमावती, मातङ्गी ओ कमला अभिप्रेत छथि। हिनका सभक उल्लेख सिद्धविद्याक रूपमे *मुण्डमाला तन्त्र*मे तथा अन्यत्र भेटैत अछि। *बृहद्धर्मपुराण* ओ *महाभागवतपुराण*मे हिनक उद्भवकथा क्रमशः छत्तीस तथा आठम अध्यायमे वर्णित अछि। भगवान् विष्णुक दश अवतारक संग एहि दश महाविद्याक तुलनात्मक तादात्म्यो एतए स्थापित कएल गेल अछि। कलियुगमे तँ कहल अछि जे चण्डी (भगवती) आओर महेश्वर (शिव) अधिक सिद्धिप्रद होइत छथि –

कलौ चण्डीमहेश्वरौ।

एतए भगवतीमात्रक उपलक्षण चण्डी थिकीह से बुझबाक थिक। बूढ़ विद्वान्क मुँहे एहने कथा सुनल अछि।

७. सनातनधर्मक सबसँ विशेष बुझबाक विषय ई अछि जे एतए पराशक्ति वा ईश्वर माता-पिताक रूपमे, पति-पत्नीक रूपमे, भाइ-बहिनिक रूपमे, मित्रक रूपमे एतके दूर धरि जे अनुचरहुक रूपमे मान्य ओ पूज्य देखल-सुनल जाइत छथि। कोनो रूपमे रहि ओ उपासकक उपास्ये रहैत छथि। दयालुताक पराकाष्ठासँ हुनक सब स्वरूप प्रसिद्ध ओ प्रचलित अछि। आन धर्मक ईश्वर कष्ट सहौनिहार कदाचित् कठोर ओ उत्कट अनुशासनप्रिय देखल जाइत छथि।

हिनका सबसँ भारतक आगमिक वा पौराणिक देवता भिन्न छथि। उदयनाचार्य पिताक रूपमे ईश्वरकें *आत्मतत्वविवेकक* मंगलमे देखैत छथि। कालिदास *रघुवंश* मे जगतक माता-पिताक रूपमे पार्वती-परमेश्वरकें-गौरीशंकरकें-देखैत छथि। द्रौपदी भाइक रूपमे कृष्णकें देखैत छथि। अर्जुनक ओ मित्र थिकाह। मीराबाई 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' कहैत छथि। यशोदा, देवकी ओ कौशल्या बालकक रूपमे कृष्ण ओ राम कें देखैत छथि। भगवान् कृष्ण सुदामाक आओर श्रीराम सुग्रीवक मित्रे तँ छलाह। गोपीलोकनिक पतिओसँ बढ़ि कए कृष्ण छलाह, जे महारास रचाओल ओ गोपीवृन्दकें मुक्ति देलैन्हि। जगदम्बाक रूपमे कुमारिक पूजा ओ सधबाक पूजा सेहो देखैत छी। शिव महाकवि विद्यापति पर प्रसन्न भए हुनक अनुचर भेल छलाह। एतए **उगना रे मोर कतए गेलाह** नचारी स्मरणीय अछि। भागीरथी विद्यापतिक सम्मानमे चौमथ धाममे हुनक निकट अएलीह। तान्त्रिक प्रवर मदन उपाध्यायक परिचर्या जगदम्बा करैत रहथि से सुनैत छी। तपस्यासँ की नहि सम्भव अछि। दिलीपक गोसेवारूप व्रत कएला पर रघु सन पुत्रक प्राप्ति रघुवंशमे वर्णित अछि। हमर ईश्वर एतेक दयालु छथि जे अढरन ढरन पदें कहल सुनल जाइत छथि।

नवधा भक्तिक स्वरूप ओ उदाहरण

भक्ति *आगमशास्त्रक* देन थिक, वैदिक विचारधारामे भक्तिक स्थान नहि भेटैत अछि। एकर नौ गोट भेद *भागवतमहापुराणमे* कहल गेल अछि– श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्
इति पुंसार्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा

(*श्री मद्भागवत* ६/५/२३-२४)

परीक्षित भगवानक जीवन वृत्तान्त सुनलैन्हि, शुकदेव (व्यासपुत्र) हुनक कीर्तन कएलैन्हि, प्रह्लाद हुनक स्मरण कएलैन्हि, लक्ष्मी (भगवती) निरन्तर हुनक चरणसेवामे लागल रहलीह, पृथु महाराज हुनक पूजा करैत रहलाह, अक्रूर हुनक अभिवन्दन करैत रहलाह, हनुमानक दास्यभाव भगवान् रामक प्रति प्रसिद्धे अछि, सख्यभाव अर्जुनक जगत्प्रसिद्धे अछि आओर बलिक सर्वस्वदानपूर्वक आत्मनिवेदन *पुराणमे* कहल गेल अछि। एहि तरहें हम देखैत

छी जे नवो प्रकारक भक्तिसँ भक्त लोकनि मुक्त भए कृतार्थता प्राप्त कएल। प्राचीन पद्य एतए स्मरणीय अछि –

विष्णोस्तु श्रवणे परीक्षिदभवत् वैयासकिः कीर्तने
प्रह्लादः स्मरणे तदङ्घ्रिभजने लक्ष्मीः पृथुः पूजने।
अक्रूरस्त्वभिवन्दनेऽथ हनुमान् दास्ये सखित्वेऽर्जुनः।
सर्वस्वात्मनिवेदने बलिरभूत् मुक्तिर्नवानां फलम्।।

ई भक्ति आगम वा तन्त्रमे आविर्भूत भए *पुराणमे* खूब पसरल। वैदिक परम्परा ज्ञानक ओ कर्मक पक्षपाती रहितहुँ मूर्तिपूजाक वा भक्तिक प्रसङ्ग किछु नहि कहलक अछि। शृङ्गेरीक शङ्कराचार्य अनन्तश्रीविभूषित भारतीतीर्थजी रामक भक्तक नाम गनाए नवधा भक्तिक उदाहरण प्रस्तुत करैत निम्न पद्य कल्याणक रामभक्ति अंकमे लिखैत छथि –

धन्यो रामकथाश्रुतौ च हनुमान् वल्मीकभूः कीर्तने
सीता संस्मरणे तथैव भरतः श्रीपादुकासेवने।
पूजायां शबरी प्रणामकरणे लङ्काधिपो, लक्ष्मणो
दास्ये सख्यकृतेऽर्कजोऽप्युपहृतप्राणो जटायुः स्वयम्।।

रामकथा जतए होइछ भगवान् हनुमान ओतए अवश्य रहैत छथि। वाल्मीकि रामकथाक कीर्तन कएल तें रामायण हमरा सभक समक्ष अछि। सीता अनुक्षण भगवान् रामक स्मरण करैत रहलीह। भरत हुनक चरणपादुकाकें सिंहासन पर राखि राज्यक सञ्चालन साचिव्य बुद्धिएँ कएल। शबरी भगवानक आराधिका प्रसिद्ध छथि। विभीषण शरणागत भए हुनक वन्दना कएं लंकाक राज्य पाओल। सुग्रीवमे रामक मैत्रीभाव विदित अछि। लक्ष्मणक दास्यभाव ओ जटायुक रामक प्रति प्राणक अर्पण (आत्म निवेदन) रामायणहिसँ ज्ञात होइत अछि, तें एकरहु ध्यानमे राखि भगवानक वा अपन इष्टदेवताक अजस्र भक्ति कए आत्मोन्नतिमे लगबाक चाही से उपदेश हमरा सभक हेतु ग्रहणीय अछि।

उपसंहार

सनातन धर्मक विस्तृत इतिहासमे अनेक परिवर्तन, परिवर्धन ओ संशोधन समय समय पर परिस्थितिक अनुसार होइत रहल से सर्वजन स्वीकृत तथ्य हमरा सभक समक्ष विद्यमान अछि। मिथिलामे बहुविवाह प्रथाक सामाजिक स्वीकृतियोक समय छल ओ एक विवाहक प्रथो आइ सुचारू रूपें चलाए

समाज प्रसन्न अछि। एहिना अनेक परिस्थितिक भिन्न भिन्न उदाहरण तकला पर भेटत। एहि धर्मक मौलिक आधार तत्त्व वैदिक अवश्य अछि, जकर अनुपालन *स्मृति* ओ *पुराणक* द्वारा पुष्ट कए समाज करैत आबि रहल अछि आओर शिष्टसम्मत आचारक अनुष्ठानमे पूर्ण श्रद्धालु भए तत्पर अछि।

उत्थान पतन एहिमे होइत रहल मुदा समाज पूर्ण निष्ठासँ श्रद्धापूर्वक जागरूक भए एहि आचार–विचारक पालन कए गौरवक अनुभव करैत रहल। हमरा सभ वैदिकमन्त्र गायत्रीक अनुष्ठान करैत छी, जाहि मध्य इएह प्रार्थना निहित अछि जे हमरा सभक बुद्धिकें ईश्वर सत्कर्ममे लगाबथि। विवाहादि संस्कार वैदिके मन्त्रसँ सम्पन्न होइत अछि। व्रत अनुष्ठान *पुराणक* अनुसार चलैत अछि। साध्यानुसार देवता, पितर ओ प्राणिमात्रकें सेवा कए प्रसन्न ओ संतुष्ट करबाक प्रयास हम सब करैत छी। सूर्योपस्थान, तर्पण तथा बलि वैश्वदेवक इएह तात्पर्य अछि। अन्धकारसँ प्रकाश दिशि लए जेबाक, असत्‌सँ सत् दिशि लए जएबाक, प्रार्थना कए अपन अभ्युदयक प्रयत्न करब उचित ओ स्वाभाविक। **तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्‌गमय** *उपनिषद्* वचन एतए स्मरणीय अछि।

❑❑

दोसर परिच्छेद

पौरणिक ओ तान्त्रिक देवता

सनातन धर्मक आधार मुख्यतः *वेद*, *पुराण* तथा *आगम* मानल गेल अछि। वेदमे यज्ञ ओ यागक अनुष्ठान रूप कर्मकाण्ड वर्णित अछि। ओतए देवताक मन्त्रात्मके स्वरूप मान्य अछि आओर सेहो देवता पौराणिक वा आगमिक देवतासँ भिन्ने छथि। वैदिक देवतामे अग्नि, इन्द्र, वरुण, आदित्य तथा सोम आदिक गणना अछि।

वैदिक परम्परा मूर्त्तिपूजाक नहि अछि। तेँ वेद पर विश्वास करितहुँ आर्यसमाजसम्प्रदाय मूर्त्तिपूजाक कट्टर विरोधी देखल जाइत छथि। हिनका सभकेँ पुराण ओ आगम पर विश्वास नहि छैन्हि आओर सनातनधर्म तीनूक समन्वय कए ओकरा सभमे पूर्ण आस्था रखैत अछि। पौराणिक देवता ओ आगमिक देवता प्रायः समाने छथि, जनिक मूर्त्तिक कल्पना शास्त्रमे देखैत छी। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गौरी, गणेश दुर्गा, काली, तारा तथा त्रिपुरसुन्दरी आदि दश महाविद्या, राधा, श्रीकृष्ण, अर्धनारीश्वर, राम तथा सीता आदि एहि कोटिक देवता मानल गेल छथि। मिथिला की, भारतभरिमे उपासनाक ई त्रिवेणी (नैगमिक, आगमिक ओ पौराणिक धारा) चिरकालसँ प्रचलित अछि। तेँ 'सनातन' शब्दसँ अभिहित ओ परिचित अछि। वेदान्त आदि दर्शनक चिन्तन (आत्मोपासना) तथा यज्ञ–यागादिक अनुष्ठान क्रमशः ज्ञानकाण्ड ओ कर्मकाण्ड नैगमिक उपासनाक स्वरूप थिक। मूर्त्तिपूजामे भक्ति तथा विश्वास एवं जागतिक वस्तु नर–नारी, पशु–पक्षी, वृक्ष–लता, नदी–भूमि आदिमे देवत्वक आरोप एवं आराधनाक प्रधानता आगमिक उपासनामे देखैत छी। जेना नारीक सभ रूपक पूजा शाक्ततन्त्रमे विहित अछि। दुहिता रूपमे कुमारिपूजा, पत्नीरूपमे शक्तिपूजा, भगिनीरूपमे सधवापूजा आओर जननीरूपमे इष्ट (मुख्य) देवताक पूजा अदौसँ चलैत आबि

रहल अछि। एहिना गुरु, बटुक-भैरव, ब्राह्मण, ब्रह्मचारी ओ संन्यासीक आराधन एवं भोजन आदि विधि देखैत छी। गाइक पूजा, खंजन, चाष ओ नीलकण्ठक पूजा-प्रणाम, शिवावलि, वट-अश्वत्थ (बड़-पीपर)क पूजा, गंगा ओ पृथिवीक पूजा आदि सभटा आगमिके उपासना थिक। पितरलोकनिक श्राद्ध पार्वण आदि तँ हमरा सभक संस्कृतिक प्रधाने अंग थिक।

आपाततः बहुदेवतावादक धारणा एहिमे लक्षित होइत अछि। मुदा विचारला पर एकदेवतावादहिमे सभक पर्यवसान बूझि पड़ैत अछि। हेतु जे एक मात्र परमा शक्ति वा परमशक्तिमान् साधकक विविध विध अन्तःकरणमे अनेकरूपमे प्रतिविम्बित भए पूजित होइत छथि। तेँ परस्पर भेद नहि अपि तु अद्वैत वा अभेदेमे विश्वास जमैत अछि। शङ्कराचार्यक अद्वैतवादहिमे अहंग्रहोपासना वा विग्रहोपासनाक परिणति बुझबाक थिक। एक परम शक्तिमान् वा परमा शक्ति साधकक रुचि ओ प्रकृतिक अनुकूल भए अनेकरूपमे आराधित उपासित होइत छथि से बुझबाक थिक। तेँ शङ्कराचार्यक षट्पदीक ई पद्य एहिमे लगैत अछि –

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरङ्गः क्वचन समुद्रो न तारङ्गः।।

तथा

त्वं जननी जनकः प्रभुरच्युत त्वं च सुहृत् कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधिवहित्रम्।।

श्रीमद्भगवद्गीतामे अर्जुनक उक्ति एतए स्मरणीय अछि –

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च। (११।३९।)

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वेति।।

(११।४१।)

दश अवतार ओ दश महाविद्या

मीन, कच्छप, वराह (माछ काछु सूगर) वामन, नरसिंह, राम, बलराम, परशुराम, बुद्ध तथा कल्कि भगवान् विष्णुक अवतार मानल गेल छथि। श्री कृष्ण तँ साक्षात् भगवाने थिकाह – 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' भागवत कहैत अछि अर्थात् ओ अवतार नहि अवतारी थिकाह। धर्मक ह्रास भेला पर ओ

अधर्मक वृद्धि भेला पर धरतीक भार हल्लुक करबाक हेतु भगवान्क अवतार होइत अछि से भगवद्गीता मे कहल अछि –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

एहिना भगवतीक अवतारक निदान दुर्गासप्तशतीमे कहल गेल अछि –

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्।।

एकटा परमसत्ता परमेश्वरी दश महाविद्याक रूपमे आविर्भूत भए लोक कल्याणमे निरत छथि, जे क्रमशः काली, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, मातङ्गी, बगलामुखी, धूमावती ओ कमलाक नामसँ प्रसिद्ध छथि –

काली नः कुशलं करोतु सततं तारा तनोतु श्रियम्

दीर्घायुर्भुवनेश्वरी वितनुतां विघ्नं हरेत् षोडशी।

भैरव्यस्त्वशुभापहा रिपुकुलं सा छिन्नमस्ता हरेत्

मातङ्गी बगलामुखी च कमला धूमावती पान्तु नः।।

दश महाविद्याक अविर्भावक कथा ई छैक जे दक्ष प्रजापति यज्ञक आयोजन कए सती आ शिवकें–अपन बेटी जमाएकें–नहि बजौलैन्हि। परामर्श वा स्मरण दिऔला पर जमाइक निन्दा कएलैन्हि। एम्हर सती बापक घरमे शुभकार्यक आयोजनमे बिनु बजौनहुँ जएबा लेल उद्यता भए अपन पति (शिव)सँ आज्ञा मांगल। आज्ञा शिव नहि देलैन्हि ओ किछु वादविवादो पति-पत्नीमे भेलैन्हि। तखन लीलावश भगवती सती अपन दशविध रूपसँ दशो दिशाकेँ छेकि शिवजीकेँ आश्चर्यित ओ भयभीत कए देलैन्हि। ओएह दशोटा भगवतीक रूप दश महाविद्या कहबैत छथि। ई कथा भागवतमहापुराण (उपपुराण) ओ बृहद्धर्मपुराणक क्रमशः आठम ओ छत्तीसम स्कन्ध ओ अध्यायमे वर्णित अछि। जैं कि दश महाविद्या परमेश्वरीक स्वेच्छा कल्पित रूप थिक तैं हिनक मन्त्र पुरश्चरणक बिनहु सिद्धिदायक होइत अछि आओर ई सिद्धविद्योक रूपमे प्रसिद्ध छथि। मिथिलामे शाक्त दीक्षा दश महाविद्यैक लेल जाइछ। ताहूमे आद्या ओ द्वितीयाक साधक अधिक मैथिल होइत छथि। श्रीविद्याक वा अन्य विद्याक उपासनाक आपेक्षिक अल्पता मिथिलामे देखैत छी।

गोसाँउनिक पूजा

प्रत्येक गृहस्थक घरमे कुलदेवताक पूजाक परम्परा अछि। पीड़ीक रूपमे गोसाँउनिक स्थापना आओर कुलदेवताक रूपमे गोसाँउनिक पूजा होइत अछि। वैदिक, पौराणिक ओ तान्त्रिक मन्त्र एवं रीतिक सम्मिश्रण एहि पीड़ीक स्थापनामे होइत अछि।

हथिसार, घोड़सार, राजद्वार, संगम, समुद्र, गाइक बथान ओ चौबट्टी वा वल्मीक (दिवराक भीड़) एहि सात ठामक पवित्र माँटि, पंचरत्न, सुवर्ण तथा अन्य मांगलिक वस्तु माँटिक कड़ाहीमे संग्रह कए राखल जाइत अछि। भनसाघरक साधारणतः पछवाड़ि घरक दक्षिण पूर्व कोनमे चिनमाड़पर एहि पीड़ीक स्थापना कएल जाइत अछि। आओर एकर उपरका भाग देबालपर पिठारसँ ढौरि झालड़ि ओ आँचर-आरतक संग अष्टदल कमल नवग्रह आदि मांगलिक चिह्न सिन्दूरसँ अंकित कएल जाइत अछि। एहि कुलदेवताक पूजा घरक जेठ श्रेष्ठ महिला करैत छथि। पुरुषक अपेक्षा महिले द्वारा एहि गोसाँउनिक पूजा श्रेयस्कर बुझल जाइत अछि।

प्रायः ई कुलदेवता दश महाविद्या (काली, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातंगी ओ कमला)मेसँ केओ होइत छथि। ओना आनो-आनो देवता कुलदेवताक रूपमे स्वीकृत छथि। जेना धर्मराज तथा ज्वालामुखीक सेवक सेहो मिथिलामे भेटैत छथि। राम, कृष्ण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा तथा हनुमान् आदि पुरुषवर्ग देवता कुलदेवताक रूपमे नहि सुनल गेलाह अछि। होइतो होथि मुदा हमरा ज्ञात नहि अछि।

एहि गोसाँउनिक दैनिक पूजाक संग नैमित्तिक पूजा-पावनि तिहारक अवसर पर - कएल जाइत अछि। फलतः वर्ष भरि समय-समयपर विशेष आयोजन ओ उल्लाससँ हिनक पूजा कएल जाइत अछि। दशमी (नवरात्रि)क अवसरपर हिनका निमित्तेँ कुमारि भोजन कराओल जाइत अछि।

गोसाँउन घर

कोजागरा, सुखरात्रि, ओ देवोत्थानक साँझमे, कतहु-कतहु महाष्टमीक साँझ तथा गवहा (तुलाक) संक्रानतिक साँझमे सेहो गोसाँउन घर करबाक व्यवहार अछि। जे नैमित्तिक पूजाक अन्तर्गत होइत अछि। दश महाविद्याक

अन्तर्गत प्रसिद्ध पञ्च भगिनीमे अपन कुलदेवता जनिक जे रहैत छथिन्ह ताहिसँ विशेष महालक्ष्मीक पूजा एहि गोसाँउनिक व्याजेँ कएल जाइत अछि। गोसाउन घर करबाक अड़िपन (भूमिचित्र) विशेष प्रकारक बनाओल जाइत अछि, जे ओसाराक छोड़सँ भगवतीक शिरा तक रहैत अछि। एहि अरिपन (यन्त्र)मे देवताक आकर्षण आओर तामामे भगवती अन्नदा ओ टनटनी रुपैयामे भगवती धनदाक पूजा-प्रार्थना कएल जाइत अछि। सुनैत छी एकर मन्त्र छैक – 'अन्न धन लक्ष्मी घर आबथु ओ दरिद्रा बाहर जाथु।' शुकरातिक परातक जे भोर होइत अछि ओहि समयमे दरिद्रा केँ बहार करबाक हेतु सूप डेङेबाक व्यवहार अछि। आर्द्राक पातरि, नाग पंचमीक खीर घोरजाउर, वसन्तपंचमीक 'पू' तथा मेषसंक्रान्तिक सतुआनि पावनि तथा टटका बसिया बड़ी-पूरीक आयोजन ओ गोसाँउनिक भोग लगएबाक व्यवहार हिनक नैमित्तिक पूजाक अन्तर्गत अबैत अछि।

मुण्डन, उपनयन ओ विवाहक शुभ अवसर पर लड्डू-पायस भोग वा छागर बलिक विधान हिनक काम्यपूजा कहबैत अछि। एतबे नहि, कोनो मनोरथक सिद्ध होएबा लेल वा सिद्ध भेला पर सेहो साधारणतः पातरि-पायस बलि देबाक विधान अछि। जे हिनक काम्यपूजे थिक।

एहिना पितरक कर्म एकोद्दिष्ट, पार्वण तथा श्राद्धकर्मक अवसर पर एकटा फूट वासनमे अंकुरी, पान, मखान, केरा आदि राखल जाइत अछि जे 'गोसाँउनडाली' कहबैत अछि आओर से श्राद्धादि सम्पन्न कएलापर हुनका यथाविधि समर्पण कएल जाइत अछि।

आनठाम रहला पर श्राद्धादि कएलाक बाद उद्दिष्ट पूजा जकाँ "आत्मकुल देवतायै नमः" कहि ओकर उत्सर्ग कएल जाइत अछि।

मिथिलामे एहि गोसाँउनिक एतेक महत्त्व अछि जे सुवासिनी लोकनि सासुर जएबा काल वा सासुरसँ अएला पर गोसाँउनकेँ प्रणामेटा नहि करैत छथि, अपि तु हुनक आशीर्वाद स्वरूप गुआ-हरदि ओ दूबि-धानसँ खोंछि भरि हुनकासँ आज्ञा लएकेँ शुभयात्रा करैत छथि ओ अएला पर हुनका प्रणाम कए खोंछि झाड़ि कृतार्थ होइत छथि। (नैहरमे धानसँ ओ सासुरमे चाउरसँ खोंछि देल जाइत अछि।)

पुरुषो लोकनि इष्ट सिद्ध्यर्थ शुभ अवसरमे हुनका अवश्य प्रणाम कए यात्रा करैत छथि वा कोनो मांगलिक कृत्य संपन्न कएला पर हुनका प्रणाम

नियमतः अवश्य करैत छथि।

बालकक उपनयनक उद्योगक कागजकेँ (आयोजनक एक तरहक संकल्प) गोसाँउनिक शिरमे रखबाक व्यवहार अछि। सिद्धान्त कन्या वा वरक विवाहमे कराओल जाइत अछि। एहि अवसर पर सिद्धान्त करौलाक बाद गोसाँउनकेँ प्रणाम करबाक प्रथा अछि।

शुभ अवसरक आभ्युदयिक श्राद्ध, मातृकापूजा ओ श्रीक परिछब आदि विधि गोसाँउनिक घरहिमे कएल जाइत अछि।

नववधू द्विरागमन कए जखन अबैत छथि तखन गोसाँउनिकेँ प्रणाम कराए हुनका शयनकक्ष वा आश्रमक आन घरमे नहि लए गेल जाइत अछि। पहिल चारि दिन गोसाँउनिक घरहिमे नागमे रहि चारू दिन साँझमे वरक संग चुमाओन कराए हुनकासँ अक्षय सौभाग्यक आशीर्वाद प्राप्त करबाक हेतु हुनक सान्निध्येमे राखल जाइत अछि। एहि नागमे अखण्डदीप पातिलमे जराओल जाइत अछि जे सन्ततिक तथा ओकर रक्षाक अर्थात् वंशवृद्धिक कामनाक प्रतीक थिक। जाहि विशेष उद्देश्यक सिद्ध्यर्थ वधूकेँ निहुछि परिछि कए घर आनल जाइत अछि।

इष्टदेवता

गोसाँउनि एक वंशक एकेटा होइत छथि। मुदा इष्टदेवता एको परिवारक लोकक भिन्न भिन्न होइत छथि। एकर मुख्य कारण ई छैक जे प्रति व्यक्तिक राशिक नाम पर मन्त्र अँटाओल जाइत अछि आओर से सभक भिन्ने भिन्ने होइत छैक। मन्त्र अँटएबाक विधि कृत्यसारसमुच्चयमे पाँच-छह प्रकारक देखाओल गेल अछि। यथा अकथहचक्र, अकडमचक्र, सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि विधि, ऋणधनचक्र, नक्षत्रचक्र एवं राशिचक्र तथा भूततत्त्वचक्र आदि जे प्राचीन ग्रन्थ सबमे भेटैत अछि।

कोनो कुलमे इहो व्यवहार छैक जे कौलिके मन्त्र (एकेटा मन्त्र) सभकेँ देल जाइत छैक। तेँ कुलपरम्परासँ प्राप्त (कौलिक) एके इष्टदेवता सभक होइत छथि। आश्चर्य नहि जे ओएह देवता ओहि परिवारक कुलदेवतो होथि।

मिथिला शाक्त उपासनाक हेतु प्रसिद्ध अछि। तेँ सभ लोक अपन मातृवर्गक वा महिला गुरुजनक निकटतम ओ श्रेष्ठ सम्बन्धिकसँ मन्त्र लेबाक (शाक्त दीक्षाक) हेतु तत्पर रहैत छथि। उपनयने मुण्डन जकाँ शुभ संस्कारक रूपमे मन्त्र लेबाक व्यवहार अखनहुँ शिष्ट समाजमे मिथिलामे देखल जाइत अछि। महिला गुरुक अभावमे पुरुषो गुरुजनसँ मन्त्र लेल जाए सकैत अछि। मुदा मिथिलामे प्राशस्त्य महिले गुरुजनसँ मन्त्र लेबाक छैक।

गुरुपरम्परा

दीक्षाक प्रसंग एतबा कहब आवश्यक अछि जे एहि क्रममे बहुत ठाम गुरुपरम्परो देखल जाइत अछि। कोनो कुलविशेषक लोक कोनो कुलविशेषक गुरु होइत छथि। ओ 'गुरुआ घर' कहबैत अछि। एखनहुँ एहन गुरुआ घर सभ अछि, जे शिष्यक कुलमे उपनयनक अवसरमे आचार्य बनैत छथि ओ शाक्त मन्त्र देबाक समय गुरु बनैत छथि, तखन जँ समर्थ रहलाह तँ पौरोहित्यक निर्वाह एवं शिष्यक रुचिक अनुरूप संस्कृत विद्याक दानो करैत छथि।

हमरा जनैत प्रत्येक हिन्दू परिवारमे कोनो ने कोनो देवताक पारम्परिक आराधना चिरकालसँ होइत आबि रहल अछि। प्रत्येक हिन्दूक घरमे कोनो ने कोनो देवता स्थापितो अवश्य छथि। इतिहास साक्षी अछि, एकटा नैष्ठिक ब्राह्मण राजाक म्लेच्छ देश चल गेला पर वा म्लेच्छदेशीक संपर्क भेला पर ओकर राजसँ बाहर भए आन राज्यमे आवासक हेतु विदा भेलाह तँ बैलगाड़ी पर घर-गृहस्थीक सामान आदि लेलैन्हि, बालककेँ कनहापर चढ़ौलैन्हि। पुस्तकक पेटारी माथ पर लेलैन्हि आओर शालग्राम तथा नर्मदेश्वरक संपुट झोड़ामे लए कण्ठमे माला जकाँ लटकाए लेलैन्हि आओर तखन यात्रा कएल। तात्पर्य ई जे देवता, विद्या आ भावी पीढ़ीक वंशधर - एही तीनू महत्त्वपूर्ण वस्तुक संरक्षण अपना जिम्मा लेलैन्हि। अन्यथा प्रमाद पदे-पदे संभावित छलैन्हि। ई बात हमरा एकटा हस्तलेख पुस्तकक अन्तमे रिक्त स्थानक पूर्त्ति हेतु संस्कृतमे लिखल पद्यसभसँ बुझल भेल। दुःखक विषय जे ओहि पद्यसभकेँ उतारि नहि सकलहुँ, ने एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ताक ओहि पुस्तकैक अनुसन्धान राखल। तेँ देवताक आराधना-साधनामे जे उपदेश द्वारा वा पौरोहित्य द्वारा सहायता कएने छथि वा करैत छथि ओ गुरुक आसनपर बैसि पूर्ण आदर पबैत छथि। जकर विकृत अवस्था वा कतहु-कतहु स्वाभाविक अवस्था हमरा सभक समक्ष

'गुरुआघरक' रूपमे आबि रहल अछि।

मैथिल अधिकतर स्मार्त (स्मृतिक अनुगामी) होइत छथि। शाक्तो होइत छथि मुदा शाक्ते एकदमसँ कम होइत छथि। कट्टर शैव अथवा कट्टर वैष्णव तँ सभ दिनेसँ मिथिलामे कम छथि। महन्थक आश्रम सभ वैष्णवधर्मक प्रचारमे अग्रसर अछि मुदा अपेक्षाकृत अल्पता ओकर अवश्य आकलनीय थिक। तँ पञ्चदेवता (सूर्य, अग्नि, दुर्गा, शिव ओ गणेश), शालग्राम शिला, कृतमुख नर्मदेश्वर वा माँटिक महादेव, ब्रह्मा आ इष्टदेवताक पूजन सन्ध्या-तर्पणक संग मैथिल अवश्य करैत छथि। आब एहि बीसम शताब्दीक उत्तरार्धमे एहि तरहक पूजाक शिथिलता व्यवहारमे देखैत छी से किछु तँ समयक प्रभाव, किछु लोकक त्वरित गतिशील जीवन ओ भृत्यभाव आओर प्रमुखतः देवता-पितरक प्रति अनास्था आ तत्प्रयुक्त एकर विपरीत संस्कारक कारणेँ। जनिका आस्था छैन्हि ओ पूजा-पाठमे विश्वास कए श्रद्धासँ एकरा सभक अनुष्ठान करितहिँ छथि। बहुत गोटए प्रदोष समयमे नियमतः पार्थिव शिवलिंगक पूजा तथा सायंसन्ध्या करैत छथि। "कलौ चण्डी महेश्वरौ" पर मैथिलकेँ विशेष आस्था छैन्हि तँ मैथिलमे अपेक्षाकृत वैष्णव उपासनाक विरलता अछि। इएह भेल साधारणतः पूजाक स्वरूप।

पूजा

प्रतिमा, यन्त्र, दीप्त अग्निकुण्ड, शालग्राम अथवा पूर्ण कलशमेसँ कतहु एकठाम जाहि देवताक पूजा करब इष्ट हो ओहि देवताक मन्त्रसँ आवाहन कए प्राणप्रतिष्ठाक संग हुनक पूजा कए सकैत छी।

गृहपति अतिथि-अभ्यागतक जेना अपन विभवक अनुसार विविध रीतिसँ अपन स्वरूपक अनुरूप परिचर्या (स्वागत-सत्कार) उत्साह ओ प्रसन्नतासँ करैत छथि ओ स्वयं पछाति धन्य तथा कृतकृत्य होइत आत्मतुष्टि पबैत छथि। तहिना आराधक-साधक अपना क्षमताक-योग्यताक-अनुसार विविध विध उपचारसँ उपास्य देवताक आराधनमे लागल रहि सन्तोष तथा निश्चिन्तताक अनुभव करैत छथि। तें सामान्य उपचार पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय तथा पुनराचमनीय अभ्यागत ओ देवताकें समान रूपसँ अर्पित कएल जाइत अछि। (पएर धोएबाक जल-पाद्य, पीबाक जल-अर्घ्य, कुरुड़-आचमनक-जल आचमनीय, स्नानक सामग्री-स्नानीय, कहल जाइत अछि) एकर पद्धति शास्त्रमे

निर्दिष्ट अछि।

ई पूजा अनेक तरहक होइत अछि। लोक रुचिक आनन्त्यसँ पूजाक प्रकारमे विविधता स्वभाविक अछि। तखन देशाचार, कुलाचार, कालक प्रभाव, उपचारक वैविध्य ओ देवताक भेदसँ पूजामे विभिन्नतो देखैत छी।

कोनो साधक आडम्बरप्रिय होइत छथि। ओ तबक लगाओल पान, छोहारा, किसमिस आदि मेवाक नैवेद्य, केसरिया पायस आदि व्यय-साध्य वस्तुसँ नृत्य-गीत आदि विविध आयोजनक संग पूजा करैत छथि। आओर कोनो कोनो साधक फूल-चानन तथा अक्षतहुक सभक्ति समर्पण कए पूजा सम्पन्न करैत छथि तथा आत्मतुष्ट रहैत छथि। जाहि साधकक जे विभव ओ जतबाक कएने मनःपूत होइत छैन्हि ओ ओतेक अनुष्ठान अवश्य करैत छथि। आराध्यक तँ कहब छैन्हि जे नहि किछु जूड़ए तँ शुद्ध जल सभक्ति समर्पण कएने हम सन्तुष्ट होइत छी –

अभावे तोयभक्तिभ्यां सत्यं तुष्टा भवाम्यहम्।

(*महाकालसंहिता* : गु० ख०...)

एहिना किछु साधक एहनो छथि जे, जे किछु सांसरिक व्यवहारक वस्तु अछि सभटा सभक्ति अपन आराध्यकेँ समर्पित कए निश्चिन्त ओ प्रसन्न रहैत छथि। *महाकालसंहिता* मे महिला प्रसाधनक यावतो वस्तु एवं घर आश्रमक उपयोगी यावतो वस्तु भगवतीकें अर्पित करबाक निर्देश *गुह्यकाली खण्ड*क दशम ओ बारहम पटलमे देखैत छी।

हँ, तखन एतबाक अवश्य जे वित्तशाठ्य ओ आढ्यता एहि दूनूसँ बचबाक चाही। ओकातिसँ अधिक व्यय, वा प्रदर्शन वा आयोजन आढ्यता थिक। एहिना ओकातिसँ कम व्यय करब वित्तशाठ्य थिक। ई दूनू देवकर्म, पितृकर्म तथा लोकयात्रामे वर्जित अछि। तात्पर्य ई जे आराधक अपन स्वरूपकेँ देखैत यथासम्भव परिमाण ओ उत्कर्षक अनुसार नैवेद्य आदि उपकरणक व्यवहार पूजामे करथि। इएह कारण थिक जे लोकरुचिक ओ लोकविभवक रोचसँ पूजाक उपचारमे विविधता पूजाक पद्धति सभमे भेटैत अछि। पाँच, दश, सोलह, बत्तीस ओ चौंसठि उपचारमेसँ कोनो एक प्रकारक उपचार द्वारा पूजा सम्पन्न कएल जाए सकैत अछि।

पूजाक विभिन्न पद्धति

एहि देवता सभक पूजा दू प्रकारें अर्थात् दू पद्धतिएँ होइत अछि। आगमिक पद्धति ओ पौराणिक पद्धति यद्यपि पृथक्-पृथक् अछि तथापि वैदिक मन्त्रक प्रयोग दुनू पद्धतिमे भेटैत अछि। तान्त्रिक मन्त्र एवं रीति पौराणिक पद्धतिमे एवं पौराणिक मन्त्र आ रीति तान्त्रिक पद्धतिमे देखि दुनूक परस्पर समन्वय बुझैत छी। तान्त्रिक पद्धतिक अपेक्षा पौराणिक पद्धतिसँ पूजा करब सोझ छैक। ने न्यास, ने शुद्धि, ने हवन आवश्यक, केवल मनःशुद्धिक संग यथोचित पवित्रताक निर्वाहपूर्वक समन्त्र ओ सविधि भक्तिश्रद्धापूर्वक एतए उपचारार्पण आवश्यक मानल गेल अछि।

दीक्षा लेलाक बादे तान्त्रिक पूजाक अधिकारी लोक होइत अछि आओर पूजामे अनेक तरहक न्यासक (करन्यास, अंगन्यास आदि) विविध शुद्धिक (भूतशुद्धि, स्थानशुद्धि, द्रव्यशुद्धि तथा आत्मशुद्धि आदिक) संग पात्रस्थापन, उपचारार्पण, मुद्राप्रदर्शन आदि एहिमे आवश्यक छैक।

फूल चानन आदि उपकरणक समर्पण करबाक प्रसंग सेहो देवताक अनुसार भिन्नता देखल जाइत अछि। जेना शालग्राम पर अक्षत ओ रक्त चानन नहि चढ़ाओल जाए। साधारणतः लाल फूलसँ विष्णुक पूजा नहि हो मुदा लाल कमल हुनका हेतु प्रशस्त, तें अवश्य चढ़ैत छैन्हि। बेलपात शिवक हेतु प्रशस्त अछि। मुदा विष्णुक पूजा ओहिसँ नहि हो। आक धुथुरक फूल शिवक अत्यन्त प्रिय अछि, मुदा अन्य देवताकेँ नहि चढ़ाओल जाइत अछि। दूबि भगवती दुर्गाकेँ नहि चढाओल जाइत अछि। आन देवताकेँ चढैत छैन्हि। शिवकेँ शंखक जल आ गणेशकेँ तुलसी नहि चढ़ाबी। पूजाक आरम्भमे देवताक ध्यान आ अन्तमे जप तथा स्तोत्रपाठ दुनू पद्धतिमे तुल्यरूपसँ विहित अछि।

पूजाक आरम्भमे विघ्नशान्ति वा सिद्धिलाभक हेतु गणेशक पूजा कएल जाइत अछि। स्मार्तसम्प्रदायमे दिनमे सूर्यादि पञ्चदेवताक ओ रातिमे गणपत्यादि पञ्चदेवताक पूजा सबसँ पहिने अवश्य कएल जाइत अछि।

कोनो पूजामे मुख्य देवताक पूजाक संग हुनक अंग देवताक, परिवार देवताक तथा आवरण देवताक, हुनक वाहन ओ आयुध आदिक पूजा सेहो

होइत अछि। जेना राजाक स्वागतक संग हुनक परिचारक, पार्षद आदिक स्वागत करबाक व्यवहार अछि। सत्यनारायणक पूजामे संकल्प वाक्य जोड़बाक काल कहल जाइत अछि "सांग सायुध सवाहन सपरिवार साधिदैवत सप्रत्यधिदैवत आदि"। ई एही तात्पर्यक बोधक अछि। ई विषय सभ दुनू पद्धतिमे (तान्त्रिक ओ पौराणिक मे) भेटैत अछि।

उद्दिष्ट पूजा

कतहु कतहु प्रतिमा तथा यन्त्रक अभावमे सराइ वा पातपर अक्षत आओर जलसँ देवताक आवाहन ओ ध्यान कए हुनक उद्दिष्टो पूजा कएल जाइत अछि। एकर शाब्दिक अर्थ होइत अछि - पूज्य देवताक उद्देश्य कए कएल गेल पूजा। स्थापित देवता मन्दिरमे, ककरो घरमे प्रस्तरक वा काठक-मूर्ति रहैत छथि जनिक प्राणप्रतिष्ठा भेल रहैत छैन्हि।

नित्य, नैमित्तिक ओ काम्य पूजा

ई पूजा तीन प्रकार होइत अछि-नित्य, नैमित्तिक ओ काम्य। जाहि पूजाक नहि कएने पाप होइत छैक ओ कएला पर धर्म नहि से 'नित्य-पूजा' थिक। हेतु जे नित्य कर्मक एही तरहक लक्षण शास्त्र मे निर्दिष्ट भेल अछि। मुदा पूजाक प्रसंग हमरा जनैत ई लक्षण नहि लगबाक चाही। जेना गोसाँउनिक पूजा, पंचदेवता, शालग्राम, नर्मदेश्वर, पार्थिव शिवलिंग, कृतमुख ओ इष्टदेवताक पूजा। ई नहि कएने पाप अवश्य होएत आओर कएला पर पुण्यार्जनो होएत। हँ, विशेष पुण्यार्जन नहि होएत।

प्रातःकाल ओछाओन छोड़लाक बाद, रातिमे ओछाओन पर जेबाक काल धरि जे कृत्य साधक आराधक करैत छथि से नित्य पूजाक कोटिमे अबैत अछि। प्रातः स्मरण, देवता ओ गुरुक ध्यान, सांसारिक कार्य (लोकयात्रा) क सम्पादन हेतु देवतासँ अनुज्ञा ग्रहण, स्नान, चन्दनधारण, सन्ध्यावन्दन, तर्पण, पूजा, मन्त्रजप, स्तोत्रपाठ, बलिवैश्वदेव, गोग्रास, अतिथिसत्कार, कुटुम्बभरण, विश्राम, आरती ओ प्रणाम-प्रदक्षिणा आदि सभ किछु आत्मनिवेदनक संग पूजैक अंगरूपमे मानल जाइत अछि -

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम्
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।।

संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरः
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।

शिवमानसपूजा स्तोत्र – ४

ई श्लोक एवं शङ्कराचार्यक निम्न पद्य एकर पुष्टि करैत अछि –

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचनं
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशां
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम्।। (सौन्दर्यलहरी २७)

त्वद्वार्ता कथयामि देव यदहं साऽस्तु स्तुतिस्ते प्रभो
यद्भुञ्जे तव सन्निवेदनमथो यद्यामि सा प्रेष्यता।
यच्चान्तः स्वपिमि त्वदङ्घ्रि युगले दण्डप्रणामोऽस्तु मे
स्वामिन् यच्च करोमि तेन भगवान् विश्वेश्वरः प्रीयताम् ।।

(पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, २३।१५)

सामान्यतः पञ्चोपचारसँ, विभव रहने दशोपचार वा षोडश उपचारसँ नित्य पूजा करबाक व्यवहार अछि। आइ काल्हि फूल, चानन, अक्षत, यथासंभव दूबि, बेलपात, धूप, चीनी आदिसँ स्मार्त गृहस्थ साधारणतः पूजा करैत छथि। एहि संग गायत्रीक ओ इष्टमन्त्रक जप एकसए आठ वा एकहजार आठ बेरि अवश्य करैत छथि। एहिना महिला लोकनि कुलदेवताक, इष्टदेवताक, विषहरा ओ शीतलादेवी आदिक पूजा अपना घरक परम्पराक अनुसार करैत छथि। एहि संग सूर्यकेँ सविधि दण्ड-प्रणाम करब तथा यमपाश मुद्रासँ सूर्यकेँ प्रणाम कए सातटा अर्घ्य देबाक व्यवहार देखैत छी। एतए चर्चित मन्त्रक स्वरूप ई अछि–

जबाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

मैथिलक परम मान्यता अछि जे गायत्री मन्त्रक जप ओ *सप्तशती*क पाठसँ बढिकए आन अनुष्ठान नहि होइत अछि। आइ काल्हि *सप्तशतीक* पाठमे अर्गला, कील, कवच, शापोद्धार, रात्रिसूक्त, देवीसूक्त ओ नवार्णमन्त्र आदिक प्रचार देखैत छी। **अधिकं तु न तद्धानिकरम्** एहि सिद्धान्तक अनुसार ई ठीको थिक। मुदा बूझि पड़ैत अछि जे मिथिलामे पुरना रेवाज इएह छल होएतैक जे

शुद्ध तेरह अध्याय *दुर्गा सप्तशतीक* पाठ लोक करैत छल। एक दू सए वर्ष पुरान सप्तशतीक पुस्तक मैथिलक लिखल केवल तेरहे अध्यायबला भेटैत अछि। अर्गला, कील तथा कवच आदि ओहि पुस्तकमे नहि देखैत छी। सुनल अछि जे कोइलखक विशिष्ट विद्वान् बबुआजी मिश्र केवल तेरह अध्याय सप्तशती पाठ करैत छलाह। गुरुवर पण्डित महेश झा (गंगौली) सेहो एतबे पाठ करैत छलाह तथा एतबे करबाक उपदेश देने छथि।

लोकदेवताक पूजा

पौराणिक ओ तान्त्रिक देवताक अतिरिक्त लोकदेवताक पूजा समय-समय पर होइत रहैत अछि। जेना मलाह–कमला मैयाक (नदीक) पूजा करैत अछि। दुसाध सलहेसक पूजा करैत अछि। माइल (मालाकार) शीतलाक पूजा करैत अछि। यद्यपि ई पौराणिक देवता थिकाह, हिनक पौराणिक स्तोत्रक पाठ शिष्ट समाज द्वारा कएल जाइत अछि, तथापि हिनक पूजा ब्राह्मणो लोकनि मालाकारहिसँ करबैत छथि। गौरैयाक पूजा गुआर सभ करैत छथि। ब्रह्मक पूजा भगत करैत अछि। लोकदेवताक पूजाक तात्पर्य हमरा जनैत वीर पूजामे छैक। जाहि जातिक रक्षा जाहि वीर द्वारा कहियो भेलैक ओ जाति ओकर वीरताक पूजा करए लागल। इएह कालक्रमे ग्रामदेवता वा लोकदेवताक स्वरूप धए लेलक। एहन अनेक देवताक पूजा भारतक प्रत्येक अंचलमे प्रचलित अछि। सभक परिचय देब एहिठाम सीमित स्थानमे संभव नहि अछि। प्रत्येक जातिक लोकक देवता भिन्न–भिन्न होइत छथि। जे अपना–अपना परम्परासँ पूजित होइत छथि। इएह कारण थिक जे लोकदेवता वा ग्रामदेवता देश, काल ओ वर्गक भेदसँ अनन्त छथि। विषहराक स्थान वा आन देवताक गहवर आदिमे जे विभिन्न रीतिएँ पूजा होइत अछि से सभटा एहि कोटिक अछि।

पूजाक-उपासनाक-दार्शनिक पक्ष

उपासनामे दृढ़भक्ति ओ स्थिर (निश्चल) विश्वास अपेक्षित होइत छैक। गुरुक कहल रीतिएँ विश्वाससँ कएल गेल उपासना–पूजा–अवश्य सिद्धि प्रदान करैत अछि। परशुरामकल्पसूत्रमे कहल छैक – 'सम्प्रदायविश्वासाभ्यां सर्वसिद्धिः'। गजेन्द्रक आर्तनाद, द्रौपदीक आह्वान तथा प्रह्लादक विश्वासक प्रति की ककरहु सन्देह भए सकैत अछि। भगवान घट घटमे व्यापी छथि, सर्वत्र सर्वदा विद्यमाने

रहैत छथि, तें ओ सभ कृतार्थ भेलाह।

निष्कलुष मोने एकान्त भक्तिसँ सविधि वा अविधि कएल गेल पूजा अवश्य फलद होइत अछि। शिवमहिम्नस्तोत्र, देवीक अपराधक्षमापनस्तोत्र तथा विष्णु (नारायण) क आर्तत्राणस्तोत्र एकर स्पष्ट प्रमाण मानल जाए सकैत अछि।

सर्वशक्तिमान् परमसत्ताक (ईश्वर, ब्रह्म, आदिशक्ति, जे किछु कहियौक) समक्ष आत्मसर्पणक भाव अपेक्षिक छैक, जे अंशतः वा पूर्णतः सर्वत्र सर्वदा विद्यमाने रहैत छथि। चिन्मय, अद्वितीय, निष्कल (कलासँ रहित) आ अशरीरी ब्रह्म वा आदिशक्तिक रूपकल्पना उपासकक कार्यसिद्धि हेतु कएल जाइत अछि –

चिन्मयस्याद्वितीयस्य निष्कलस्याशरीरिणः।
उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना।। (कुलार्णवतन्त्र)

तेँ राम, कृष्ण, काली ओ हनुमानकेँ ओही परमसत्ताक रूप बुझबाक थिक।

देवताक आधिभौतिक रूपक उपासना हुनक आध्यात्मिक स्वरूप तक पहुँचबैक निमित्त कएल जाइत अछि।

'असत्ये वर्त्मनि स्थित्वा ततः सत्यं समीहते'।

भर्तृहरिक वाक्यपदीयक ई वचन एहूठाम लगैत अछि।

फलतः निष्ठावान् साधक द्वारा कएल गेल सविधि वा अविधि पूजा अवश्य फल दैत अछि। अश्रद्ध वा अनिष्ट व्यक्ति द्वारा केहनो विलक्षण उपचार वा आडम्बरसँ पूजा कएल जाए, सफल नहि भए सकैत अछि। अभक्त, असूया संपन्न, अजिज्ञासु, अनधिकारी ओ अपात्रकें विद्या वा मन्त्र नहि देवाक विधान अछि। निष्ठावानक हेतु *महाकालसंहिता* मे कहल अछि जे उपचारक अभावमे सभक्ति सर्वत्र सर्वदा सुलभ जलमात्रक अर्पणसँ भगवती सन्तुष्ट होइत छथि–

'अभावे तोयभक्तिभ्यां सत्यं तुष्टा भवाम्यहम्'

पूर्वजन्मक संस्कारहिक आधार पर देवताविशेषक आराधनामे लोक प्रवृत्त होइत अछि।

आगमिक प्रतिमापूजा वा यन्त्र आदि प्रतीक पूजाक तथा नैगमिक अहंग्रह-उपासनाक पर्यवसान एकहि ठाम होइत छैक और उदेश्यो एके छैक-ऐहिक सुखसमृद्धिक संग मोक्षक प्राप्ति अर्थात् पुरुषार्थचतुष्टयक सिद्धि। जहिना दार्शनिक चिन्तनक वैविध्य सांख्य, न्याय तथा मीमांसा आदिमे प्रतिफलित भेल अछि तहिना उपासनाक वैविध्य रुचि ओ प्रवृत्तिक भेदसँ देखल जाइत अछि। योगाभ्यास वा ब्रह्मचिन्तनक रुचि ओ प्रवृत्ति सभकें संभव नहि छैक। किन्तु स्थूलपूजा अधिक लोक साध्य अछि, तें ओकर सोपान रूप आरम्भिक प्रयास एकरा मानबाक शास्त्रमे उपदेश/निर्देश अछि।

असलमे सामर्थ्यक पूजा कएल जाइत अछि, जाहिसँ रक्षा होइक। तें ऊर्ध्वमुख अग्निकें सामर्थ्यशालीक प्रतीक मानि आहुति देवाक वा हुनका (अग्निकें) देवताक मुख मानबाक प्रथा अछि। लिङ्ग आ योनि पूजाक तात्पर्यो इएह अछि, ओ सृष्टिक प्रतीक जे थिक। लोकदेवताक रूपमे वीरपूजाक प्रसिद्धिओक कारण इएह थिक।

जहिना सीखल आ अभ्यासल शस्त्रक प्रयोगसँ आत्मरक्षाक संग दुष्टदलन संभव अछि और अनभ्यास वा विनु सीखल शस्त्रक प्रयोग आत्मघातक भए सकैत अछि तहिना विना निष्ठाक विना श्रद्धाक पूजा लोभ वा पापकर्मक समावेशसँ आत्मघाती भए जाइत अछि, तें सावधान भए एकचित्तसँ श्रद्धा ओ भक्तिपूर्वक पूजा कर्तव्य थिक।

निराकार सामर्थ्यक अनेकरूपता,अरूपता ओ विराट्रूपता प्रसिद्ध अछि, तखन चित्तक एकाग्रता हेतु नाम ओ रूपक कल्पना कएल जाइत अछि। एतहि बुझबाक थिक जे भारतीय वा मैथिल आचार ओ दर्शन आयुर्वेदसँ पूरा प्रभावित अछि। तें आत्मा ओ शरीरक परिपुष्टि हेतु हमर पूर्वजक आयोजन एवं जीवनमे ओकरा उतारि लेबाक कौशल हमरा सभकें हुनका समक्ष नतमस्तक एवं विस्मित अवश्य करैत अछि।

मोक्षक प्राप्ति यौगिक उपासना-योगसाधनासँ सम्भव छैक। तें ऋषि लोकनि योगसाधनामे प्रवृत्त होइत छथि। आन्तर पूजा (मानस पूजा) योगैक अभ्यास हेतु-उत्कट चंचल मनकें अधीनमे करबाक लेल - अनुष्ठित होइत अछि। इष्टदेवताक निरन्तर चिन्तनसँ मनोनिग्रह संभव छैक। अतएव एहि पूजामे मानसिके उपचारक विधान अछि। तान्त्रिक पूजामे बाह्य पूजाक संग-संग

मानस पूजो अनुष्ठित होइते अछि। न्यास, भूतशुद्धि ओ होम आदिमे आराध्य तथा आराधकमे ऐक्य भावनाक निर्देश देखैत छी। देवताक प्राण-प्रतिष्ठाक संग आराधकमे न्याससँ देवताक आरोप होइत अछि। सारांश ई जे बाह्यपूजो चित्तकेँ एकाग्र करबाक उपाय थिक, तें योगमार्गक उपासनाक बाट वा वेदान्त चिन्तनक अद्वैतभावनाक सीढ़ी सेहो थिक।

दोसर गप्प ई जे लोकरुचि, लोकप्रवृत्ति, साधनाक तारतम्य ओ साधकक क्षमता आदि अनेको कारणसँ परम लक्ष्यक प्राप्तिक अनेको बाट ऋषि-मुनि द्वारा निर्मित, निर्दिष्ट ओ प्रशंसित अछि, जाहिमे एकटा ई बाह्य पूजो थिक।

साधारण लोकक आशा-आकांक्षा ओ अधलाह प्रवृत्ति वा दुर्बलताक उपेक्षा वा हठपूर्वक प्रतिरोध नहि कए यथासम्भव क्रमशः ओकरा सभकें विशोधित करबाक व्यवस्थाक अन्तर्गत ई बाह्यपूजा अबैत अछि। अत एव एहि बाह्यपूजामे देश, काल, पात्र, उद्देश्य ओ पद्धतिक भेदसँ खूब विविधता भेटैत अछि। एकर स्थूल दृष्टिएँ तीनटा प्रकार देखैत छी-सात्विक, राजस ओ तामस। सात्विक पूजाक सामग्री अपनहि ढंगक अनुत्तेजक रहैत अछि।धीर ओ शान्त भावसँ अनुष्ठित होइत अछि।

आडम्बरपूर्ण सामग्रीसँ राजस पूजा होइत अछि। जेना तवक लागल पान, केसरिया पायस, काजू-किसमिस नैवेद्य, नृत्य-गीतादिक व्यवस्था आदि। तामस पूजामे तँ, एकरा सभक संग किछु उच्छृंखलतो देखैत छी। जेना लतासाधना, पशु तथा पक्षीक बलि एवं मदिरापान आदि। उत्तम कोटिक साधना योगक अंग प्राणायाम ओ ध्यान तँ एहिमे अनिवार्य रूपसँ समाविष्टे अछि। अतः एकर उपादेयतामे संशय नहि करबाक चाही।

प्रातःकाल ओछाओन छोड़लाक बाद, रातिकें ओछाओन पर जएबासँ पूर्व धरि जे किछु लोक-यात्राक हेतु कर्म करी ताहिमे भगवानक-अपन इष्टदेवताक-स्मरण कएलासँ अवश्य अभ्युदय होइत छैक, मनोरथ सिद्ध होइत छैक से संस्कार भारतीय चिन्तकक छैन्हि। अत एव पूजा दिनचर्याक अनिवार्य अंग थिक। एहिना भारतीय संस्कार एहन अछि जे जन्मसँ मरण पर्यन्त व्रत, उत्सव ओ अनुष्ठान-पूजापाठक संग उपनयन आदि संस्कारसँ, क्षेत्र, शरीर, आत्मा ओ अन्तःकरणक शुद्धि कए पवित्रतासँ लोक सन्तुष्टि लाभ करैत अछि तथा नियम-संयमसँ आत्मदुर्बलता पर विजय, मोनक ओ शरीरक इच्छा आकांक्षाक पूर्ति

मर्यादाक संग करैत कृतकृत्य होइत अछि। लोक मानव-सुलभ दोषसँ बचबाक चेष्टा करैत अछि-केओ किछु दूर धरि, केओ बहुत दूर धरि सफल भए अपन साधुताक परिचय दैत अछि। मानव सुलभ दोषक मर्यादाक संग परिपालनैक हेतु व्रत, उत्सव, संस्कार ओ पूजा आदि शुभकर्म सभक निर्देश भेल अछि।

आन देशक अपेक्षा भारतवर्षमे किछु भेद होएब स्वाभाविक अछि। आन देश केवल भोग-भूमिए थिक आओर भारतवर्ष कर्मभूमि प्रधान रूपें आओर भोगभूमि सामान्य रूपें अछि। तें एतए तपस्याक प्रधानता छैक। आओर तपस्यैक अंगरूपमे उपासना, आराधना, स्वाध्याय, व्रत,नियम, संस्कार, आचार-विचार, योग तथा जप सभटा परिपालनक हेतु विहित अछि। भारतीय संस्कृतिमे तपस्याक इएह महत्व छैक जे शृङ्गारक श्रेष्ठ कवि कालिदास सौभाग्यक देवता पार्वतीओसँ तपस्यैक द्वारा अभीष्ट पतिक प्राप्ति कराओल ओ चक्रवर्ती राजा दिलीपसँ गोसेवारूप तपस्या कराइयेकें पुत्रोत्सव मनबौलैन्हि। यक्ष प्रमादवश कर्तव्यच्युत भेलाह, शकुन्तला ऋषिक आदरमे प्रमाद कएलैन्हि तँ ओकर अशुभ फल भोगिए कए सुख-समृद्धि पओलैन्हि तथा कण्व ऋषि शकुन्तलाक दैवी प्रतिकूलताक शान्त्यर्थ सोमतीर्थ जाए अनुष्ठान कएल। जहिना आगिमे तपौला पर सोना निखरैत अछि तहिना भारतीय लोकनि तपस्यासँ आयु, बल, कीर्ति, वर्चस्व ओ वंशधर पाबि आत्मोन्नतिक लाभ करैत छथि।

तन्त्र, मन्त्र ओ यन्त्र

तन्त्र

तन्त्र मन्त्र ओ यन्त्रक प्रसङ्ग बहुत तरहक भ्रान्त धारणा लोकमे देखल जाइत अछि। जादू-टोना, भूत-प्रेत, झाड़ब-फूकब आदिए तन्त्र मन्त्रक अर्थ समाज बूझए लागल अछि। मुदा ई एक प्रकारक उदात्त ओ अवदात विद्या थिक, जकर अज्ञानेसँ एहन भ्रान्त धारणा सम्प्रति सभठाम पसरि गेल अछि। अतः क्रमबद्ध ओ सुव्यवस्थित परिचय एहि तीनूक संक्षेपमे एतए यथामति प्रस्तुत करबाक प्रयास कएल जाइत अछि।

तन्त्रपद शास्त्रमात्रक वाचक थिक। तें तन्त्रयुक्तिक-अर्थात् शास्त्रक अवगतिक 'साधनक' वा 'शास्त्रनिर्माणक प्रक्रियाक' वर्णन कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे भेटैत अछि। आयुर्वेदक चरकसंहिता तथा सुश्रुतसंहिता आदि आकर ग्रन्थहुमे

एकर विवरण भेटैत अछि।

'तन्त्र्यन्ते व्युत्पाद्यन्ते अपौरुषेयज्ञानराशिरनेनेति तन्त्रम्' एहि तरहेँ एकर व्युत्पत्ति वाचस्पतिमिश्र अपन तात्पर्यटीकामे कएल अछि। भट्ट कुमारिलक मीमांसाग्रन्थ तन्त्रवार्तिक नामहिसँ प्रसिद्ध अछि।

मुदा एहि पदक पछाति अर्थसङ्कोच भेलैक। आगम अर्थमे एकर अधिक प्रयोग होअए लागल। शाक्त आगमक प्रचार विशेष कए तन्त्रपदसँ भेल अछि। एतए दोसर तरहक व्युत्पत्तिगत अर्थ एहि पदक भेटैत अछि। कामिकागमक वचन छैक, तन्त्र ओ थिक जे तत्त्व ओ मन्त्रक सङ्ग प्राकरणिक विपुल अर्थक विस्तार करए और तन्त्रक प्रति आस्थावानक रक्षा करए।

तनोति विपुलानर्थान् तत्त्वमन्त्रसमन्वितान्।

त्राणं च कुरुते यस्मात् तस्मात् तन्त्रमितीरितम्।। (कामिकागम)

यद्यपि वाचस्पतिमिश्रक द्वारा निर्दिष्ट व्युत्पत्तलभ्य उपर्युक्त अर्थसँ एहि अर्थक कोनो विरोध नहि बूझि पड़ैत अछि तथापि ई व्युत्पत्ति अर्थक दृष्टिएँ आपेक्षिक संकुचित वा अव्यापक अवश्य कहल जाएत। किन्तु कोनो दृष्टिएँ असङ्गत एकरा नहि कहि सकैत छी। पदक व्युत्पत्तिनिमित्त एवं प्रवृत्तिनिमित्तक भेदें व्यापक ओ सङ्कुचित अर्थक समन्वय-सामञ्जस्य तँ कर्तव्ये थिक। उपास्य भेदसँ एहि तन्त्रमे भिन्नता अएलैक। अतः वैष्णवतन्त्र, शैवतन्त्र ओ शाक्ततन्त्र आदिक व्यवहारसँ पारस्परिक भेद बुझाओल जाए लगलैक।

एहि तन्त्रक विषय (प्रतिपाद्य) चारि चरणमे विभक्त कएल गेल अछि। ज्ञान, क्रिया, चर्या तथा योग।

चर्यामे परस्परभेदे गुरुपरम्पराक अविर्भाव कएलक, जे आगाँ सम्प्रदाय भेदक प्रदर्शनक समय अधिक स्पष्ट होएत। ओना उपास्यक वैविध्योसँ गुरुपरम्पराक भेद देखैत छी। सङ्गहि रुचिभेदहुकें उपासनाविधिक वैविध्यमे प्रधान कारण मानहि पड़त। क्यो यदि कालीक भक्त छथि तँ क्यो त्रिपुरसुन्दरीक। क्यो ताराक उपासक छथि तँ क्यो छिन्नमस्ताक। फलतः तन्त्रक तीन चरणक- ज्ञान, क्रिया ओ योगक प्रसङ्ग समानरूपमें सर्वत्र समादर एवं मतैक्य रहनहुँ चर्यामे परस्पर भेद वा वैविध्य देखल जाइत अछि।

एहि सबसँ भिन्न एकटा परम्परा अछि जे स्मार्तशाक्तसम्प्रदायक नामसँ

प्रसिद्ध तथा दक्षिणाचारक अनुगामी अछि। एतए वेदक अविरोधी आगमिक आचार-विचारक प्रश्रय देल गेल छैक। महाकालसंहिता एहि परम्पराकेँ मानैत अछि, तेँ अपनाकेँ ओ मध्यस्थ कहैत अछि –

'मदुक्तसंहितोक्तिज्ञाः मध्यस्थाः परिकीर्तिताः।'

एहि सम्प्रदायक प्रवर्तक हमरा जनैत आदिशङ्कराचार्य थिकाह, ओएह अपन *प्रपञ्चसार*मे एहि परम्पराक पद्धति सर्वप्रथम प्रदर्शित कएल अछि। *मेरुतन्त्र सोमशम्भुपद्धति*, *ईशानशिवगुरुदेवपद्धति*, *शारदातिलक*, *पुरश्चर्यार्णव*, *तन्त्रसार* तथा *ताराभक्तिसुधार्णव* आदि ग्रन्थ एहि सम्प्रदायक सम्पोषक मानल जाइत अछि। शङ्कराचार्यक पाँचो प्रसिद्ध मठमे शृङ्गेरी, काञ्ची, बदरिकाश्रम, पुरी तथा द्वारकामे श्रीयन्त्रपर श्रीविद्याक उपासना एहि सम्प्रदायक पद्धतिसँ अदौसँ प्रचलित अछि।

मन्त्र

तन्त्रमे मन्त्रक बड़ महत्त्व छैक। मन्त्रहिक रहस्यक उद्‌घाटन हेतु जेना तन्त्रक आविर्भाव भेल हो। *प्रपञ्चसार*मे आदि शङ्कराचार्य कहने छथि जे मणि मन्त्र ओ औषधिक प्रभाव अचिन्त्य होइत छैक अर्थात् ओकर विशेषता शब्दशः वर्णित नहि कएल जाए सकैत अछि। मन्त्रक व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ ई थिक- प्रत्येक प्राणीक द्वारा मननयोग्य, संसाररूप समुद्रक तरणक सुगम उपाय तथा आदिशक्ति स्वरूप होइत अछि मन्त्र –

मननात् सर्वभूतानां त्राणात् संसारसागरात्।
मन्त्ररूपा हि तच्छक्तिर्मननत्राणधर्मिणी।। (रत्नत्रय)

ईशानशिवगुरुदेवपद्धतिमे तथा अन्यत्र एकर संवाद भेटैत अछि –

मननत्राणधर्मित्वं वाचकं दैवतस्य तु।
यत्र तन्मन्त्रसंज्ञं स्यात् न तद्‌बीजेषु वा भवेत्।।

मननात् त्राणनाच्चैव मद्रूपस्यावबोधनात्।
मन्त्रमित्युच्यते ब्रह्मन् मदधिष्ठानतोऽपि वा।। (योगशिखाब्राह्मण)

एहि मन्त्रक सिद्धि कएल जाइत अछि, जे जपसँ सम्भव छैक। जपक अर्थ थिक मन्त्रक अर्थक निरन्तर भावना अर्थात् चिन्तन करब। योगसूत्र छैक 'तज्जपस्तदर्थभावनम्'। एहि जपमे गुणाधान अर्थात् उत्कृष्टता तखन अबैत

छैक, जखन अव्यग्र भए सन्तुष्ट एवं निश्चिन्तमने चुपचाप शुचि आचार पूर्वक मन्त्रार्थक चिन्तन कएल जाए, जे चित्तक एकाग्रतासँ सम्भव छैक। वैदिक मन्त्र गायत्रीक व्याख्यामे महर्षि व्यास ई कहने छथि –

मनःसोन्तोषणं शौचं मौनं मन्त्रार्थचिन्तनम्।
अव्यग्रत्वमनिर्वेदः जपसम्पत्तिहेतवः।।

तन्त्रशास्त्रमे कहल गेल अछि जे मन्त्रक उच्चारण अर्थात् जप ने शीघ्रतेसँ करी ने विलम्बेसँ, अपेक्षित समय अवश्य दिऐक, तैखन मन्त्र सिद्ध होइत छैक –

द्रुतमपीह न मन्त्रमुदीरयेत् हुतविधौ च तथैव जपादिके।
न च विलम्बितमिष्टमतः सदा द्रुतविलम्बितमेव हि सिद्धिदम्।।

(ईशानशिवगुरुदेवपद्धति)

एहि मन्त्रक सिद्धिसँ ऐहिक अभ्युदय एवं पारलौकिक निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष संभव छैक, तँ पुरुषार्थ चतुष्टयक साधक मन्त्र होइत अछि। कहलो गेल अछि –

'देवीपदाम्भोजयुगार्चकानां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव'।

एहि मन्त्रक यदि पुरश्चरण कर्तव्य हो तँ एकर शास्त्रोक्त दशविध संस्कार करब आवश्यक। जनन, जीवन, ताडन, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन ओ रक्षण मन्त्रक दशविध संस्कार शारदातिलकक द्वितीयपटलमे तथा अन्यत्र वर्णित अछि। निष्काम जप वा अपवर्गक कामनासँ कएल गेल जपमे मन्त्रक ई संस्कार अपेक्षित नहि अछि–एतहि सेहो प्रतिपादित अछि। एहिना मन्त्र छिन्न, रुद्ध तथा शक्तिहीन आदि उनचास गोट दोषसँ ग्रस्त रहैत अछि। अतः दोष मुक्तिओ पुरश्चरण हेतु मन्त्रमे अपेक्षित होइछ, जे शास्त्रविहित रीतिसँ करणीय थिक। शारदातिलकग्रन्थक दोसर पटलमे तथा अन्यत्र एकर विशद विवरण उपलब्ध अछि। फलतः केवल काम्यकर्ममे मन्त्रक शापमुक्ति वा दोषमोक्ष तथा दशविधसंस्कार आवश्यक अछि।

मन्त्र गुरुगम्य होइत अछि। तें ग्रन्थमे लिखित मन्त्र सामर्थ्यशाली नहि कहल गेल अछि। गुरुक प्रसादें सविधि कर्णगोचरे मन्त्र वस्तुतः मन्त्र थिक। तन्त्रालोकक व्याख्याता जयरथ स्पष्ट कहने छथि जे लिपिस्थित मन्त्र निर्वीर्य होइत अछि –

'लिपिस्थितस्तु यो मन्त्रः निर्वीर्यः सोऽत्र कल्पितः।

एकरे संवाद शारदातिलकक व्याख्यामे राघवभट्ट ग्रन्थान्तरक उल्लेख कए कहल अछि –

पुस्तकाल्लिखितो मन्त्रो येन सुन्दरि जप्यते।
न तस्य जायते सिद्धिर्हानिरेव पदे पदे।।

(४ पटल, उक्त ग्रन्थक द्रष्टव्य)

फलतः देवता गुरु ओ मन्त्रमे ऐक्यक भावना अपेक्षित छैक। 'गुरुदैवतमन्त्राणां' पदक प्रयोग तन्त्रमे बहुतठाम भेटैत अछि। जतए देहलीदीपकन्यायसँ गुरु आओर मन्त्रमे मध्यवर्ती देवताक समन्वयेसँ ऐक्य भावना शास्त्रानुकूल ओ उपासनानुरूप बूझि पड़ैत अछि। एहि मन्त्रक सिद्धि कएनिहार शास्त्रमे निर्दिष्ट बारह गोट धर्माचरणक पालन अवश्य करैत छथि– भूमिशयन, ब्रह्मचर्य, कम बाजब वा चुप्पे रहब, ककरहु पर मिथ्या दोषक आरोप नहि लगाएब, नित्य स्नान, हवन करब, क्षुद्रकर्मक त्याग, पूजा नित्य करब, दान करब, देवताक स्तुति करब, पर्वनिमित्तक विशेषपूजा करब, गुरु ओ देवतामे विश्वास राखब तथा निष्ठापूर्वक मन्त्रक जप करब –

भूशय्या ब्रह्मचारित्वं मौनं चाप्यनसूयताम्।
नित्यं त्रिसवनं स्नानं क्षुद्रकर्मविवर्जितम्।।

नित्यपूजा नित्यदानं देवतास्तुतिकीर्तनम्।
नैमित्तिकार्चनं चैव विश्वासो गुरुदेवयोः।।

जपनिष्ठा द्वादशैते धर्माः स्युर्मन्त्रसिद्धिदाः।।

– गौतमीयतन्त्र, १४ अध्याय।

ई मन्त्र सब कए तरहें कए प्रकारक मानल गेल अछि। महाकालसंहिता जप्य केँ मन्त्र और कोनो वस्तु अर्पण करबाक मन्त्रकेँ 'उपमन्त्र' कहैत अछि। प्रपञ्चसारसंग्रहमे पुरुष, स्त्री ओ नपुंसक भेदसँ मन्त्रक तीन प्रकार कहल गेल अछि। जाहि मन्त्रक अन्तमे स्वाहा होइक से स्त्रीमन्त्र कहबैत अछि, जाहि मन्त्रक अन्तमे नमः रहैक से नपुंसक मन्त्र कहबैत अछि आओर शेष पुरुष मन्त्र कहबैत अछि। ईशानशिवगुरुदेवपद्धति तथा शारदातिलकमे एकर स्पष्ट संवाद भेटैत अछि। शारदातिलकमे देवताक भेदसँ सेहो मन्त्रक प्रकार वर्णित

भेल अछि। पुरुष देवताक मन्त्र 'मन्त्र' कहबैत अछि और स्त्रीदेवताक मन्त्र 'विद्या' कहबैत अछि।

एतहि कहल गेल अछि जे पुरुष मन्त्रसँ उच्चाटन ओ वशीकरण आदि कएल जाइत अछि। स्त्रीमन्त्रसँ मोहन, उत्सादन आदि होइत अछि और अन्य कार्य नपुंसक मन्त्रसँ संभव अछि।

फलतः उपासनाक हेतु गुरुक द्वारा दीक्षाविधिसँ एहि मन्त्रक ग्रहण तथा गुरुक निर्दिष्ट पद्धतिसँ एकर सिद्धि कर्तव्य। जहिना शिक्षाक बिना विद्याक अधिगति संभव नहि छैक, तहिना दीक्षाक बिना मन्त्रहुक अधिगति असम्भव अछि। द्विजत्वलाभहेतु उपनयन संस्कारे जकाँ मिथिलामे तान्त्रिक दीक्षौक प्रचार-प्रसार अछिए। कोन देवताक मन्त्र कोन व्यक्तिक हेतु अधिक श्रेयस्कर एकर परिज्ञानक उपायो शास्त्रमे वर्णित अछि। सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि आदि विधिक संग अकडम चक्र, अकथहचक्र तथा ऋणधनचक्र आदिसँ एकर परिज्ञान खूब सुलभ अछि। कृत्यसारसमुच्चयक परिशिष्ट वा उपसंहारमे ई विधि सब नीकें बुझाओल गेल अछि।

एतए ज्ञातव्य जे देवी भागवतमे कहल अछि जे द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय ओ वैश्य) पहिने शाक्त होइत अछि तखन शैव वा वैष्णव, जकरा जे इष्ट रहैक से होइत अछि। हेतु जे वेदक माता आदिशक्तिस्वरूपा गायत्रीक उपासना द्विजमात्रक कर्तव्य कहल गेल अछि –

सर्वे शाक्ताः द्विजाः प्रोक्ताः न शैवाः न च वैष्णवाः।
आदिशक्तिमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम्।।

बृहद्योगियाज्ञवल्क्यमे कहल छैक जे आदिमे प्रणव ओ महाव्याहृतिकेँ जोड़ि अन्तमे पुनः प्रणव जोड़लाक बाद गायत्रीमन्त्र जपबाक थिक –

ओंकारः पूर्वमुच्चार्यो भूर्भुवः स्वस्ततः परम्।
गायत्री प्रणवश्चान्ते जपे ह्येवमुदाहृतः।।

यन्त्र

शाक्ततन्त्रमे यन्त्रकेँ देवताक शरीर और मन्त्रकेँ हुनक आत्मा कहल गेल अछि। अत एव यन्त्र मन्त्रमय होइत अछि, जाहिसँ शरीर ओ आत्माक परस्पर सम्बन्ध बनल रहए –

यन्त्रं मन्त्रमयं प्रोक्तं मन्त्रात्मा देवतैव हि।
देहात्मनोर्यथाभेदो यन्त्रदेवतयोस्तथा।। (शाक्तानन्दतरङ्गिणीक वचन)

यन्त्रपर देवताक पूजा प्रशस्त मानल गेल अछि–

सर्वेषामेव देवानां यन्त्रपूजा प्रशस्यते।

ई यन्त्र प्रत्येक देवताक भिन्न-भिन्न प्रकारक होइत अछि। सङ्गहि तत्काल निर्मित यन्त्र तथा स्थायी निर्मित यन्त्रमेसँ अन्यतरपर देवताक पूजा कएल जएबाक प्रथा अछि। गन्धर्वतन्त्रमे कहल छैक जे यन्त्रक बिना देवताक पूजा कएला पर आराध्य देवता प्रसन्न नहि होइत छथि –

विना यन्त्रेण चेत् पूजा देवता न प्रसीदति।

यद्यपि प्राणप्रतिष्ठासँ सम्पन्न प्रतिमाक पूजा मन्दिर तथा व्यक्तिगत घरमे देखल जाइत अछि तथापि यन्त्रक माहात्म्यप्रदर्शन हेतु उपर्युक्तवचनक सार्थकता बुझबाक चाही।

दोसर जे प्रतिमहुक समक्ष यन्त्र निर्माणक प्रथा देखल जाइत अछि। अपि च उद्दिष्ट पूजहुमे यन्त्रक व्यवहार देखले जाइत अछि। हमरा सभ साधारण साधक तँ यन्त्रकेँ देवताक स्वरूप ओ प्रतीक दुनू मानैत छी, जेना वेदान्तमे ओंकार ब्रह्मक स्वरूप एवं उपासनाक हेतु प्रतीक मानल गेल अछि। प्रतिमामे वा यन्त्रमे देवताक सान्निध्यक प्रसंग बहुत ठाम बहुत तरहें बुझाओल गेल अछि। जेना पुराण कहैत अछि –

गुरौ मनुष्यबुद्धिन्तु मन्त्रे चाक्षरबुद्धिताम्।
यन्त्रे मूर्त्यां शिलाबुद्धिं कुर्वाणो नरकं व्रजेत्।।

आगम कहैत अछि – विम्बक अभिरूपतासँ पूजाक विशेषतासँ तथा साधकक विश्वाससँ मूर्ति (प्रतिमा) वा यन्त्रमे देवताक वास भए जाइत छैन्हि।

आभिरूप्याच्च विम्बस्य पूजायाश्च विशेषतः।
साधकस्य च विश्वासात् सान्निध्यं देवता भजेत्।।

कर्मकाण्डक पक्षपाती मीमांसक अग्निमे देवताक आवास मानि हवन आदि करैत छथि, मनीषी लोकनि स्वर्गमे हुनक आवास मानैत छथि। प्रबुद्ध व्यक्ति प्रतिमामे आओर योगीलोकनि हृदयमे देवताक आवास मानैत छथि से

नरसिंहपुराण कहैत अछि –

अग्नौ क्रियावतां देवो दिवि देवो मनीषिणाम्।

प्रतिमासु प्रबुद्धानां योगिनां हृदये हरिः।।

असलमे जे जतए देवताक भावना करथि से ततहि देवताकें देखैत छथि, ई तात्पर्य बूझि पड़ैत अछि।

स्कन्दपुराण कहैत अछि – देवता काठ, पाथर वा माटिक प्रतिमामे नहि रहैत छथि अपि तु भावमे रहैत छथि। भावसँ जतए राखि देबैन्हि ओतहि ओ रहैत छथि। मन्त्र,तीर्थ द्विज, देव, दैवज्ञ, औषध तथा गुरुक प्रति लोकके जेहने भावना रहैत छैक ताही प्रकारक सिद्धि होइत छैक। गुरु तथा देवताक प्रति निश्छल ओ निश्चल भक्ति आओर मन्त्र तथा शास्त्रक प्रति विश्वास सिद्धिक बीज कहल जाइत अछि –

न देवो विद्यते काष्ठे पाषाणे मृत्तिकासु च।
भावेषु विद्यते देवो मन्त्रसंयोगसंयुतः।।
मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।
गुरौ च देवतायां च भक्तिरव्यभिचारिणी।
मन्त्रे शास्त्रे च विश्वासं सिद्धेर्बीजं विदुर्बुधाः।।

एहि यन्त्रक अनिवार्यता देखि तन्त्रमे कहल गेल अछि जे यदि कोनो देवताक यन्त्रक विवरण उपलब्ध नहि हो तँ अष्टदल कमल लीखि ओकर मध्य षट्कोण कर्णिका आओर बाहरमे चारि द्वारि ओ भूपुर दए यन्त्रक निर्माण करी तथा ओहि पर अभीष्ट देवताक पूजा करी।

अनुक्तकल्पे यन्त्रं तु लिखेत्पद्मं दलाष्टकम्।
षट्कोणं कर्णिकं तत्र वेदद्वारोपशोभितम्।।

ई यन्त्र दू प्रकारक होइत अछि – पूजनीय तथा धारणीय। देवताक पूजा जाहि यन्त्रपर कएल जाइत अछि से पूजनीय यन्त्र थिक आओर पूजापाठ आदि द्वारा संस्कार सम्पन्न कए सुवर्ण, रजत वा ताम्र आदि पत्रसँ झाँपि कए गरदनि वा बाँहिपर जे यन्त्र धारण कएल जाइत अछि से धारणीय यन्त्र थिक। शक्तिसङ्गमतन्त्रमे स्पष्ट कहल गेल अछि जे पुरुष–स्त्री तथा बालककें धारण कएला पर ई यन्त्र धारण

केनिहारकेँ सकल मनोरथ सिद्ध करैत अछि तथा आभूषणो होइत अछि –

पुरुषस्य तथा स्त्रीणां बालकानां विशेषतः।
धारणात् सिद्धिदं देवि यन्त्रं च भूषणं भवेत्।।

बृहत्तन्त्रसारमे यन्त्रधारणक विधि एना प्रतिपादित अछि –

सौवर्णे राजते पात्रे भूर्जे वा सम्यगालिखेत्।
अथवा ताम्रपट्टेन गुटिकीकृत्य धारयेत्।।

दीर्घकालसँ एहि यन्त्रपर भारतीयकें निश्चल विश्वास रहलैन्हि अछि, जकर साक्ष्य महाकवि कालिदासक असाधारण कृति अभिज्ञानशाकुन्तलक उपसंहारमे भेटैत अछि। शकुन्तलाक पुत्र भरतकेँ महर्षि कण्व एहन रक्षायन्त्र गरदनिमे बान्हि देने रहथि जे हुनक रक्षा तँ करितहिँ छल आनुषङ्गिक सुफल इहो देलक जे धारण कएनिहारक माए बापकेँ परस्पर मिलाए देलक।

तन्त्रमे जे यन्त्रक व्युत्पत्ति देल गेल अछि, ताहिसँ दू गोट बात सिद्ध होइत अछि। एक तँ यन्त्रमे बीज मन्त्रक समावेश रहने तथा आराधन होइत रहबाक कारणें देवताक सान्निध्य ओतए अवश्य रहैत छैक, दोसर ई जे अनेको प्रकारक उपद्रवसँ रक्षा करबामे यन्त्र सर्वथा समर्थ होइत अछि। कुलार्णवतन्त्रमे स्पष्ट कहल गेल अछि जे यम, भूत तथा प्रेत आदिक भयसँ रक्षा करबाक कारणें एकरा यन्त्र कहल जाइत अछि। काम तथा क्रोध आदि दोषसँ उद्भूत दुःखक प्रतिरोध करबामे सेहो ई पूर्ण समर्थ होइत अछि। एहि यन्त्रपर पूजित भए देवता प्रसन्न होइत छथि।

यमभूतादिसर्वेभ्यो भयेभ्योऽपि कुलेश्वरि।
त्रायते सततं चैव तस्माद् यन्त्रमितीरितम्।।

कामक्रोधादिदोषोत्थसर्वदुःखनियन्त्रणात्।
यन्त्रमित्याहुरेतस्मिन् देवः प्रीणाति पूजितः।।

श्रीतत्त्वचिन्तामणिमे एहि कथाक पुष्टि कएल गेल अछि। ओतए कहल अछि जे पूजन, ध्यान तथा धारणसँ यन्त्र पापक नाश ओ पैघसँ पैघो भयसँ रक्षा करैत अछि –

यमयत्यखिलं पापं त्रायते महतो भयात्।
साधकं पूजनाद् ध्यानात्तस्माद् यन्त्रं प्रकीर्तितम्।।

तान्त्रिक पूजा

साधारण पूजासँ भिन्न विशेषपूजा तान्त्रिक लोकनि करैत छथि। जकरा सभक साधारण परिचय एतए देल जाए रहल अछि। प्रमुखतया ई पूजा दू तरहें होइत अछि–दक्षणाचार ओ वामाचारसँ। दक्षिणाचारमे न्यास, ध्यान, शुद्धि, विघ्नापसारण, भूतशुद्धि, आसनशुद्धि, अर्पणीय वस्तुक शुद्धि आदि विषय पर जोड़ देल जाइत अछि। कवचपाठ आओर स्तुतिक प्रधानता एहिमे रहैत अछि। संभव रहने होम कएल जाइत अछि। ई पूजा दिनमे अथवा सायंकालहिमे सम्पन्न भए जाइत अछि। शंकराचार्यक प्रसिद्ध श्लोक एकर विधान कहैत अछि–

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।

जे वस्तु साधक अपने उपयोग करैत छथि सएह वस्तु ओ देवताकें अर्पित कए सकैत छथि वा करैत देखल जाइत छथि। एहि प्रसंग एकटा श्लोक प्रसिद्ध अछि –

यो हि यदन्नो भवति तदन्नास्तस्य देवताः।
तदन्नास्तस्य पितर इत्येवं वैदिकी स्थितिः।।

ई पद्य वाल्मीकिरामायण तथा महाकालसंहितामे उपलब्ध अछि।

एहि पूजामे एतबाक बन्धन मानबाक चाही जे आराधक साधक शाक्त दीक्षा लेने होथि तथा मन्त्रक जप करथि। दक्षिणाचारी साधक वेदमार्गक अनुसरण करैत पुराण प्रथाक अविरोधें तान्त्रिक रीतिसँ अपन इष्टक आराधना करैत छथि।

वामाचार पूजामे विशेष आडम्बर छैक। एहिमे 'देवो भूत्वा यजेद् देवीम्' – एहि सिद्धान्तक पालन होइत अछि। विविध न्यास द्वारा अपनामे देवताक आरोप बुद्धिपूर्वक कए देवीक आराधनामे साधक–आराधक लगैत छथि। 'न्यासस्तन्मयता बुद्धिः' मे ततपदसँ देवता परिगृहीत होइत छथि। एहिमे पञ्चमकारक (मत्स्य, मांस, मुद्रा, मैथुनओ मन्त्र)क प्रधानता, मृतचैल (शववस्त्र)क अर्पण, पशुबलि, दन्तमालासँ जप, विविध पात्रक (शक्ति, श्री, भोग, गुरु ओ

अर्घ पात्रक) स्थापना, अनंगगन्ध, स्वयम्भूकुसुम तथा रतिपुष्पक समर्पण, शिवा बलि, शक्ति वा भैरवक सहकार अवश्य अपेक्षित अछि। साधककें पूर्णाभिषिक्त होएब तथा पूजाक समय निशीथ ओ स्थान एकान्त होएब आवश्यक अछि।

एहि पद्धितिमे मण्डलार्चन (यन्त्रपूजा), प्रतिमापूजा, आवरणपूजा, शक्तिपूजा (लतासाधना वा दूतीयाग शब्दहुसँ ई कहल जाइत अछि) मुख्य वा अंगरूपमे आवश्यक ओ विहित अछि। एहि पूजा सभक रहस्य, उद्देश्य ओ प्रक्रिया स्वतन्त्र लेखक विषय रहने एतए केवल उल्लेख कएल अछि। हठसँ निवृत्त भेला पर ओकर स्थायित्व सन्दिग्ध रहने मोन ओ शरीरकें अशुभकर्मसँ विरत रखवालेल ओहि कर्मकलापकेँ प्रतिबन्धित कए मोनक विशोधन एकर तात्पर्य होइत अछि।

वामाचारसँ साधनाक क्रममे साधकक क्षमताक अनुसार पश्वाचार, वीराचार ओ दिव्याचारक विधान भेल अछि। जाहिमे साधक प्रविष्ट भए गुरुक निर्देश पाबि क्रमशः अपन साधनामे अग्रसर होइत छथि। कुलाचार, कौलाचार तथा समयाचार वामाचारहिक रूपमे व्यवहारमे मानल जाइत अछि।

कुमारिभोजन, बटुकभोजन, ब्राह्मणभोजन, सधवाभोजन आदि दुनू तरह आचार वा पूजामे प्रशस्त अछि। एकर अतिरिक्त बहुत तरहक प्रयोग तन्त्रमे भेटैत अछि, जकरा कएलासँ छोट-छोट ऐहिक सिद्धि भेटैत छैक। इएह टोना-टापर कहबैत अछि। जेना चौबट्टीक पूजा कएने छोट बच्चाक कानब बन्द भए जाइत छैक।

अड़िपन

भूमिचित्र अड़िपन माङ्गिलक कार्यक हेतु उपयोगमे अबैत अछि। एहिमे सिन्दूरक स्पर्श आवश्यक होइत अछि मुदा पिठारसँ ई लिखल जाइत अछि। मिथिलाक महिला लोकनि प्रासरिक अड़िपनक परिचय रखैत छथि। उपनयन, विवाह आदिमे मड़बा (मण्डप) पर नामान्तरें चौकीपर, मुण्डनमे भगवतीक घरमे ओ देवोत्थानक साँझ आङनमे तथा प्रत्येक माङ्गलिक कार्यमे भिन्न-भिन्न तरहक अड़िपनक प्रयोग होइत अछि। पुराणमे एकर उल्लेख अछि। स्व० पण्डित लक्ष्मीनाथ झाक पुस्तक 'मिथिलाकी सांस्कृतिक लोक-चित्रकला' मे एकर सविस्तर विवरण देल गेल अछि आओर व्याख्या सेहो कएल गेल अछि।

ओतहि कहल गेल अछि जे ब्रह्मपुराणमे एकर नीक जकाँ विवरण भेटैत अछि। तखन शुभकर्मनिर्णय, रुद्रधरक व्रतोद्यापनपद्धति आदिअहुँमे एकर चर्चा देखैत छी। बहुत गोटे एकरा 'अइपन' कहैत छथि, किन्तु म०म० बालकृष्णमिश्र अपन सम्पादित विद्यापति पदावलीमे अड़िपन शब्दक प्रयोग कएल तें हमहूँ ओही पदक प्रयोग कएल अछि। ओ लिखैत छथि –

अड़िपन देव मोतिमय हार, मङ्गलकलश करब कुचभार

चौंसठिकलाक अन्तर्गत ई आलेख्य कर्म कहाओत। उक्तकलाक विवरण एना भेटैत अछि – गीत, वाद्य, नृत्य, नाट्य, आलेख्य, तण्डुलकुसुमक परिष्कार, फूलक सेज, अधर रङब, मणिभूमिकाकर्म, ओछाओन सजाएब, उदकवाद्य, चित्रयोग रङ्ग आ तूलिकासँ चित्र बनाएब (फोटो खीचब), चित्रमालाग्रथन, शेखरापीडयोजना (घुनेश बनाएब), नेपथ्य योग (बेशभूषा), कर्णपत्रभङ्गि, सुगन्धयुक्ति, भूषण योजना, ऐन्द्रजाल, क्रौञ्चमार योग (कुरूपकेँ सुरूप बनाएब), हस्तलाघव, चित्रशाकापूपभुक्त विकार क्रिया, पानकरस, रागासव योजना, सूचीवयन कर्म, सूत्रक्रीडा, डमरू वीणावाद्य आदिक अभ्यास, प्रहेलिका, प्रतिमाला, दुर्वञ्चक योग, पुस्तकवाचन, नाटकाख्यायिकादर्शन, काव्यसमस्यापूरण, पट्टकीवेत्रबाण विकल्प, तर्क कर्म, तक्षण (काष्ठ शिल्प), वास्तुविद्या, रूपरत्न परीक्षा, धातुविद्या (यन्त्रशिल्प), मणिरागज्ञान, आकारज्ञान, वृक्षायुर्वेद योग, मेषकुक्कुट-लावकयुद्धविधि, शुकसारिकाप्रलापन, उत्सादन, केशमार्जन, आंगुरसँ अक्षर लिखब (अक्षरमुष्टिका), श्लोकतर्कविकल्प, देशभाषाज्ञान, पुष्पशकटिका-निमित्तज्ञान, यन्त्रमातृका, धारणमातृका, संवाच्य, मानसीकाव्यक्रिया, अभिधानविद्या, छन्दोज्ञान, क्रियाविकल्प, छलितकयोग, वस्त्रगोपनादि, दूतविशेष, आकर्षण क्रीडा, बालक्रीडनक, विशेषक, छेद्यक, तिलकादिरचना, वैनायिकी, वैयासिकी विद्याक ज्ञान ई ईश्वरतन्त्रमे चौँसठि कला कहल गेल अछि।

अधिवास, संकल्प ओ दक्षिणा

बहुतो देवताक अधिवास हुनक पूजाक अव्यवहित पूर्व दिनक साँझमे सविधि कएल जाइत अछि। जेना महालयाकें श्री १०८ दुर्गाक अधिवास होइत अछि। नित्यपूजाक (दैनिक पूजाक) अतिरिक्त काम्य पूजाक आरम्भमे (मुख्यतः काम्य पूजाक आरम्भमे) संकल्प वाक्य कहबाक ओ अन्तमे दक्षिणा देबाक विधान पद्धतिमे कएल गेल अछि। संकल्पक अर्थ थिक मानसिक निश्चय आ

तदर्थ समय, स्थान, व्यक्ति, उद्देश्य, देवता तथा कर्तव्य आदिक उल्लेखपूर्वक वाचिक निर्णय लए कार्यक आरम्भ। तें संकल्प वचनमे एकरहि सभक उल्लेख कएल जाइत अछि। आराधक ई संकल्प मानसिको कए सकैत छथि। मुदा जतए दोसर व्यक्ति द्वारा कार्य सम्पादन कराओल जाइत अछि, ओहिठाम वाचिक संकल्पवाक्य नितान्त अपेक्षित अछि। शास्त्रमे आत्मनेपदी ओ परस्मैपदी धातुक रूप देखलासँ तर्क होइत अछि जे दोसरासँ धर्मानुष्ठान करेबाक व्यवहार अति प्राचीनकालसँ आबि रहल अछि, अन्यथा दू तरहक धातुरूप अनुपपन्न जकाँ लगैत अछि। संकल्पवाक्यक महत्त्व सबसँ पैघ ई अछि जे संकल्प भेलाक बाद विघ्न-बाधा एहि संकल्पित अनुष्ठानमे नहि लगैत अछि। जेना अधपहरा, जन्माशौच वा आन अशुभ बातक उपस्थिति वा सूचना अनुष्ठानक बाधक नहि होइत अछि। एतए पूजाक उद्देश्यमे ऐश्वर्य, धन, कीर्ति, विद्या तथा सन्तति आदिक लाभ, आरोग्य, रोगमुक्ति वा पूजित देवताक प्रीति किछु कामना कहब आवश्यक होइत छैक। एहन पूजा उद्देश्य वा फल प्राप्तिक बादो कएल जाइत अछि आओर ओकर प्राप्ति हेतु पहिनहुँ विश्वासपूर्वक कए सकैत छी। एहि पूजाक अन्तमे ओकर पूर्णता हेतु दक्षिणा करबो आवश्यक छैक। दक्षिणाक द्रव्य (रुपैया-पैसा वा अन्न-वस्त्र वा सोना-चानी वा पशु जे विहित होइक) पुरोहित वा असगोत्र ब्राह्मणकेँ देबाक विधान अछि। असलमे दक्षिणा यज्ञक पत्नी थिकीहि से शास्त्रमे मानल गेल अछि। तेँ जहिना अग्नि अपन पत्नी स्वाहाक संग भए प्रसन्न होइत छथि तथा यज्ञमे अपन कर्त्तव्यक तत्परतासँ पालन करैत छथि, अतः यज्ञ-यागादिक मन्त्रमे स्वाहाक प्रधानता अछि, तहिना दक्षिणासँ यज्ञक पूर्णता होइत अछि। दक्षिणाक संग पाबि यज्ञ प्रसन्न होइत छथि। अन्यथा ओ कोनो कार्य करबाक क्षमता अपनामे नहि पबैत छथि। अग्निक संग स्वाहा, यज्ञक संग दक्षिणा आ' सपत्नीक यजमान द्वारा यज्ञक अनुष्ठान ओ यथावसर द्विज दम्पतीक पूजन गार्हस्थ्य धर्मक महत्त्व ओ गौरवकेँ द्योतित करैत अछि। संगहि एकरा प्रतीक बुझबाक चाही जे लोकयात्रामे दाम्पत्य अपेक्षित छैक। एकाकी व्यक्ति अपूर्ण रहैत अछि।

ई दक्षिणा तीन तरहक होइत अछि – कर्मांग दक्षिणा, अरिष्ट प्रशमनार्थ दक्षिणा (सकलारिष्ट) ओ कर्मक त्रुटि मार्जनार्थ दक्षिणा (भूयसी)। तें बहुत कर्ममे कर्मदक्षिणाक संग सकलारिष्ट ओ भूयसी दक्षिणाक निश्चित रूपसँ व्यवहार अछि। ई दुनू टा (संकल्प ओ दक्षिणा) मुख्यतः काम्यपूजाक अंग

थिक, नित्यपूजामे नहि देखैत छी। यद्यपि बहुतक विचारेँ ई दक्षिणा पुरोहितक पारिश्रमिक वा साम्मानिक राशियो मानल गेल अछि तथापि एहिसँ उपर्युक्त कथन बाधित नहि होइत अछि।

आवाहन विसर्जनक रीति

आराध्य देवताक आवाहन ओ विसर्जनक सेहो अनेक रीति अछि। उद्दिष्ट पूजामे प्रतिदिन आवाहन ओ विसर्जन कएल जाइत अछि। माटिक महादेव ओ चेकी महादेवक संग इएह व्यवहार अछि। यन्त्र वा स्थापित कलश पर जे आवाहन होइत अछि वा प्रतिमाक जे प्राण-प्रतिष्ठा कएल जाइत अछि-एकर दू-तीनटा प्रकार अछि। दैनिक आवाहन ओ विसर्जन, स्थायी वासक हेतु आवाहन आ तेसर सावधिक वास हेतु आवाहन। नवरात्रक समयमे श्रीदुर्गाक माँटिक प्रतिमाक वा कलश आदिक तीन दिन, दश दिन वा पन्द्रह दिनक हेतु जे आवाहन ओ प्राण-प्रतिष्ठा कएल जाइत अछि ओ सावधिक वास हेतु होइत अछि। एहिना कोनो अनुष्ठान विशेषमे देवताक सावधिक आवाहन कएल जाए सकैत अछि। यन्त्र तथा प्रतिमाक प्राण-प्रतिष्ठा ओ देवताक ओतए आवाहन साधक तीनू तरहेँ कए सकैत छथि। जेहन परिस्थिति ओ जेहन साधकक रुचि।

शालग्राम ओ नर्मदेश्वरक प्रतिदिन पूजा होइत अछि, मुदा हिनका सभक विसर्जन नहि होइत अछि। शालग्रामपर कोनो देवताक आवाहन ओ विसर्जनक संग काम्यकर्मार्थ पूजा कएल जाए सकैत अछि। केवल शिव ओ शक्तिक पूजा ओहिपर नहि होइत अछि। एहिना शिवलिंगपर कोनो शक्तिक पूजा कएल जाए सकैत अछि, से शास्त्रमे विहित अछि।

माँटिक प्रतिमाक तँ पूजाक पश्चात् यथावसर विसर्जन कएल जाइत अछि। मुदा मन्दिरमे स्थापित पाथरक, धातुक वा काठक प्रतिमाक एक दिन प्राण-प्रतिष्ठा कए आवाहन आदि विधि पूरा कए कतेको दिन धरि पुस्त दर पुस्त धरि पूजा चलैत रहैत अछि। एकरा सभक पूरा विवरण पद्धति सभमे भेटैत अछि। कोना कखन के कतए ककर प्राण-प्रतिष्ठा करथि-ई व्यवस्था *शास्त्र-पुराण* मे भेटैत अछि। संगहि इहो बात मानहि पड़त जे मूर्त्ति वा प्रतिमा वा यन्त्र ताधरि पूजाक योग्य नहि होइत अछि, जाधरि प्राण-प्रतिष्ठा वा देवताक आवाहन ओतए नहि भए जाइत अछि। तेँ प्रतिमामे देवताबुद्धि तखनहि करी यदि प्राण-प्रतिष्ठा ओ आवाहनादि सविधि ओतए भेल रहैक। विसर्जित देवताक माँटिक

प्रतिमा शोभा लेल क्यो घरमे राखि लेथि तँ ओ प्रतिमा वस्तुतः आराध्य वा प्रणम्य नहि होइत छथि। हमरा सभ देवताक फोटोक आराधना वा प्रत्यह प्रणाम करैत देखल जाइत छी से अनुचित नहि थिक। ओ चित्र आस्तिकताक संस्कारसँ देवताक विग्रह भए जाइत अछि। ई फरक ध्यानमे रखबाक चाही। संगहि प्राण-प्रतिष्ठा द्वारा सुप्रतिष्ठितो देवप्रतिमा यदि फूटि फाटि जाथि तँ हुनका जलप्रवाहक विधान अछि ओ पूजनीय नहि रहि जाइत छथि।

उपचार

इष्टदेवताक सान्निध्य प्राप्तिक उपाय 'उपचार' कहबैत अछि। उप-देवताक समीपमे, चारयन्ति-जे लए जाए से उपचार थिक। ई एकर व्युत्पत्तिसँ अर्थ सिद्ध होइत अछि। *ज्ञानमालातन्त्र*मे कहल छैक –

भक्त्या चैते कृता देवे साधकं देवसन्निधिम्।
चारयन्ति यतस्तस्मादुच्यन्ते ह्युपचारकाः।।
समीपे चारणाद् वापि फलानां ते तथोदिताः।

आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, काजर, नैवेद्य, आचमनीय तथा प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम-ई सोलह उपचार कहबैत अछि। मुख्य उपचार इएह थिक।

एही संग आवाहन, स्वागत, सन्निधापन, संस्थापन, सन्निरोधकरण, सम्मुखीकरण, सिन्दूर, आलता, पान, पादुका, छाता, पंखा, चामर, आरती, पुष्पमाला तथा आत्मनिवेदनकेँ जोड़ि देलासँ बत्तिस उपचार होइत अछि। कतहु-कतहुँ छत्तीस उपचार सेहो गनाओल गेल अछि।

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ओ पुनराचमनीय दश उपचार कहबैत अछि।

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय ओ चानन-पञ्चोपचार थिक (विवरण *महाकालसंहिता*सँ संगृहीत अछि)। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ओ नैवेद्य पञ्चोपचार थिक से धर्मशास्त्रक ग्रन्थ *कल्पतरु*मे कहल अछि।

आरती

आरतीक संस्कृत नाम आरात्रिक थिक। दीपमाला ऊपर नीचाँक क्रमसँ

राखि वा एकपंक्तिमे दीप सभकें सजाए आरती कएल जाइत अछि। अथवा एकोटा दीपसँ कार्य चलैत अछि। ई पूजाक विशिष्ट कृत्य थिक। कर्पूरदीप वा घृतदीप वा तिलक तेलक दीप वाद्यक संग प्रणामपूर्वक समर्पित कएने देवता (आराध्य) अधिक प्रसन्न होइत छथि, ई धारणा चिरकालसँ साधक लोकनिक बीच प्रचलित अछि ओ एकरा शास्त्रीयो विधानसँ पुष्ट कएल गेल छैक। मन्त्रहीन ओ अंगहीन पूजा आरती देखौला पर पूरा भए जाइत छैक। भगवान् विष्णुकेँ आरती देखौलासँ अन्धकारक नाश तँ होइतहि अछि, जे पुनर्जन्मो नहि होइत अछि। आरतीक दीप मिझौलासँ आन्हर होइ –ई दुनू गप्प शास्त्रमे कहल अछि। *महाकालसंहिता* मे विस्तारसँ एकर चर्चा भेल अछि।

थोड़ बहुत यथाज्ञात स्तोत्र पाठ आराध्य देवताक कएल जाइत अछि। एहिसँ अपन अभीष्ट प्राप्तिक प्रार्थना होइत अछि।

प्रार्थना ओ मन्त्रजप

एहिठाम ई नहि बुझबाक चाही जे केवल सभक्ति मन्त्रोच्चारणपूर्वक उपचारक समर्पण कएने पूजा सम्पन्न भए गेल अपि तु आरम्भमे ध्यान तथा अन्तमे मन्त्रक जप, स्तोत्रक पाठ तथा प्रार्थना पूजाक आवश्यके अंग थिक।

देवताक स्वरूप ध्यान श्लोक द्वारा उच्चारण कए करी वा मानस करी–ई साधकक रुचि ओ इच्छापर निर्भर करैत अछि आओर मन्त्र देवता रूपे स्वीकृत अछि। वेदमे तँ देवताक मन्त्रमये विग्रह मानल गेल अछि। आओर ओकर अनुकरण कही वा समर्थन कही, पुराण ओ आगमो कएलक अछि।

ध्यान रखबाक थिक जे हमरा सभक सनातनधर्मावलम्बीक प्रार्थना केवल आत्मकल्याणार्थ नहि होइत अछि अपि तु समस्त विश्वैक मंगल हेतु आचरित होइत अछि, जेना पुराणमे कहल अछि –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

नीक सभक होउक, आओर दुःख केओ नहि पाबओ। शुभ सभक होइक, अशुभ केओ नहि देखए। अभिप्राय ई जे जँ सभक शुभ होएतैक तँ सभमे प्रार्थिओ आबिए जएताह, ओहो शुभफलक भागी अवश्य होएताह। तेँ प्रार्थीकेँ अपन कल्याणार्थ पृथक् आयासक आवश्यकता नहि छैन्हि।

एहिना वैदिक प्रार्थना अछि 'आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्' आदि *यजुर्वेदक* मन्त्र अछि। जाहि मन्त्रक पाठ कए मिथिलामे दूर्वाक्षत लए आशीर्वाद देबाक व्यवहार अछि, ओहिमे सम्पूर्ण राष्ट्रहिक कल्याणक कामना कएल गेल अछि।

देवताक स्वरूपकीर्तने हुनक स्तुति थिक, जे स्तोत्र वा स्तव नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि। स्तव, स्तोत्र ओ स्तुतिमे बड़ कम भेद छैक अथवा भेद नहिए छैक। एकर अतिरिक्त शतनाम, सहस्रनाम तथा कवच आदिक पाठ सेहो कएल जाइत अछि। जाहिमे उद्देश्य ओ फलश्रुति कहल रहैत छैक।

भारतीय धारणा छैक जे अनागत दुःख हेय थिक। जे दुःख भोगल भेल, जे कष्ट सहल भेल ओ बीति गेल। जे कष्ट सम्प्रति भोगैत छी से भोग भइए रहल अछि। किन्तु आगू दुःख नहि हो एकर उपाय करबाक चाही। योगसूत्र एहि अभिप्रायसँ कहैत अछि '**हेयं दुःखमनागतम्**'। जीवनक संघर्षमय रहब स्वाभाविक मुदा परिणाम सुखकर ओ शुभप्रद होइक से ध्यान रखबाक थिक। संसारक अर्थ होइत अछि गतिशीलता आओर बिना संघर्षे गतिशीलता संभव नहि छैक। राम, कृष्ण, अर्जुन आदि महापुरुषक जीवन संघर्षमय रहितहुँ अन्तमे शुभप्रद ओ सुखकर भेलैन्हि। ई कोनो आदर्श महापुरुषक जीवनमे घटैत छैन्हि। मैथिलीमे कहबी छैक 'अन्त भला तँ सब भला'। इएह कारण छैक जे दुःखान्त नाटक दुःखान्त लोककथा भारतीय संस्कारक प्रतिकूल भए जाइत छैक।

सुखान्त लोककथा सभक अन्तमे बूढ़ि-पुरानि महिला लोकनि कहैत छथि जे जेहन पछाति भेलैक तेहन सभकेँ होउक आओर जेहन पहिने भेलैक से सातघर मुद्दइओकेँ नहि होउक। एतावता विश्वक कल्याण भावनाकेँ भारतीय संस्कारे मानबाक थिक आओर सांसारिक जीवन सभक संघर्षमय होइतहिँ छैक। संघर्षक स्वरूप भने भिन्न भिन्न होइक।

जपविधि

जप तीन प्रकारक होइत अछि - वाचिक, उपांशु ओ मानस। एहिमे उत्तरोत्तर प्रशस्त मानल गेल अछि। कम जोरसँ मुदा सावधान रहलापर अनकहु सुनबाक योग्य जपक मन्त्र वाचिक कहबैत अछि। अपन कर्णगोचर भेनिहार जपकालक मन्त्र उपांशु कहबैत अछि आओर मनहि मन मन्त्रक जप कएला पर अपनहुँ कर्णगोचर नहि भेलापर मानस जप कहल गेल अछि।

निजकर्णागोचरो यो मानसः स जपः स्मृतः।
उपांशुर्निजकर्णस्य गोचरः परिकीर्तितः।।

वाचिकस्तु जनैर्वेद्यस्त्रिविधो जप ईरितः।
उच्चैर्जपाद् विशिष्टः स्यादुपांशुर्दशभिर्गुणैः।।
जिह्वाजपाच्छतगुणः साहस्त्रो मानसः स्मृतः।।

(कृत्यसारसमुच्चयमे उल्लिखित विशुद्धेश्वरतन्त्रक वचन)।

गायत्री मन्त्रक जप ठाढ भए भूमिपर करी जलमे नहि, हेतु जे गायत्री अग्निमुखी मानल गेल छथि आ जल अग्निक विपरीत तत्व थिक –

कदाचिदपि नो विद्वान् गायत्रीमुदके जपेत्।
गायत्र्यग्निमुखी प्रोक्ता तस्मादुत्थाय तां जपेत्।।

ई गोभिलऋषिक वचन थिक।

ई जप मालापर कएल जाइत अछि। पितौंझिया (पुत्रञ्जीव), रुद्राक्ष, कमलाक्ष (बररी) तथा स्फटिक आदिक माला प्रशस्त अछि। पचास दानाक माला एकटा सुमेरु दए जपक हेतु मिथिलामे बनाओल जाइत अछि। हाथहु पर एकसय आठ बेरि जप कएल जाइत अछि।

अनामिकाक बिचला ओ निचला पोड़, कनिष्ठाक तीनू पोड़ नीचासँ, अनामिकाक उपरका पोड़, मध्यमाक ऊपरसँ तीन पोड़ ओ तर्जनीक निचला पोड़पर अँगूठा राखि दश बेरि जप होइत अछि। अधिक जपक हेतु ओही अन्तिम पोरसँ पहिल तक विलोमक्रमसँ दश बेरि जप करी। एहिना अनुलोम-विलोम क्रमसँ १०८ बेरि जप करी। एकर आवृत्ति गणनाक हेतु बामा हाथक आंगुरक एही क्रमें उपयोग कएला पर जप एकसए बेरि होइत अछि। पुनश्च आदि ओ अन्तक पोड़ छोरि आठ बेरि जप कएलासँ अष्टोत्तरशत जप होइत अछि। एहिसँ अधिक जप हाथ पर नहि करबाक शास्त्रक निर्देश अछि। अगस्त्यसंहितामे कहल अछि –

आरभ्यानामिकामध्यात् प्रादक्षिण्येन वै क्रमात्।
तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु।।

देवीभागवतमे एकर संवाद एना भेटैत अछि –

अनामामध्यमारभ्य अधोवामक्रमेण च।
तर्जनीमूलपर्यन्तं जपस्यैवंविधिः करे।।

श्रीक्रममे आओर अधिक स्पष्ट अछि –

अनामिकात्रयं पर्व कनिष्ठादित्रिपर्विका।
मध्यमायाञ्च त्रितयं तर्जनीमूलपर्वणि।।
तर्जन्यग्रे तथा मध्ये यो जपेत् स तु पापकृत्।।

वैदिक मन्त्रक जपक क्रम हाथपर कएलापर कने भिन्न होइत अछि। एहिमे मध्यमा आङुरक बिचला-निचला पोड़ छोड़ल जाइत अछि।

तर्जनीमध्यमानामा कनिष्ठा चेति ताः क्रमात्।
तिस्रोऽङ्गुल्यस्त्रिपर्वाणो मध्यमा चैकपर्विका।।
पर्वद्वयं मध्यमाया मेरुत्वेनोपकल्पयेत्।

नैमित्तिक पूजा

पर्वक समयमे विशेष-विशेष वस्तुसँ ओ विशेष रीतिएँ देवताक आराधना नैमित्तिक पूजा कहबैत अछि। तिथिकेँ वा योगकेँ निमित्त मानि उत्सवपूर्वक ई पूजा होइत अछि, तेँ नैमित्तिक कहबैत अछि। एहि पूजाक कएने अधिक फल होइत छैक तथा नहि कएने हानि नहि छैक। वर्ष भरिक पर्व (व्रत ओ पूजा) अपन-अपन देशाचारक अनुसार पञ्चाङ्गमे (पतरामे) वा आनो धार्मिक अनुष्ठानक पुस्तकमे गनाओल रहैत अछि, जे पावनि कहबैत अछि। जेना भादव कृष्ण चतुर्थीकेँ बहुलाक पूजा, कृष्णाष्टमीमे कृष्णक पूजा, भाद्र शुक्ल चतुर्थीकेँ चन्द्रपूजा (चौठ चन्द्र केवल मिथिलेमे प्रचलित अछि), सिद्धविनायकपूजा, विश्वकर्माक पूजा, इन्द्रक पूजा, अनन्तक पूजा, दुर्गाक पूजा, महालक्ष्मीक पूजा (कोजागरा) ओ (सुखरात्रिक दिन) कालीक पूजा, गोवर्धनपूजा, चित्रगुप्तपूजा, जगद्धात्रीक पूजा, सामाक पूजा आदि नैमित्तिक पूजा कहबैत अछि। आर्द्राक पातरि ओ सतुआइनिकेँ (मेष संक्रान्तिकेँ) नव गहूमक पूड़ी ओ केरावक बड़ी टटका, आ जूड़शीतल दिन बसिआ भगवती (गोसाँउनि) केँ भोग लगैत अछि।

ई सभटा पौराणिक देवता थिकाह। मिथिलामे एकटा कहबी छैक जे 'अएली बहुला देल पसारि, गेली सामा लेल उसारि' अर्थात् भादवसँ आरम्भ लए कार्तिक धरि ई पूजा सभ लगातार होइत अछि आओर ओकर बाद एहिमे विरलता आबि जाइत छैक। एहि पूजा सभक सामान्य परिचय आगाँ मासक क्रमसँ देल गेल अछि।

काम्यपूजा

फल प्राप्तिक इच्छासँ कएल गेल पूजा। अथवा ईप्सित फल प्राप्त भेला पर प्रतिश्रुत पूजा 'काम्यपूजा' कहबैत अछि। जेना खूब प्रसिद्ध, घर-घरमे प्रचलित सन्ध्या कालक कृत्य श्रीसत्यनारायण पूजा। सामग्रीक विविधता, कामनाक आनन्त्यक कारणे एहि तरहक पूजामे देखल जाइत अछि। ई पूजा तान्त्रिक ओ पौराणिक दुनू पद्धतिएँ कएल जाइत अछि। तान्त्रिक रीतिएँ सात्त्विक भावसँ कामना कए ओकर पूर्त्यर्थ सात्त्विक रीतिएँ अनुष्ठानमे प्रवृत्त भए सात्त्विक वस्तुक अर्पणसँ साधक पूजा सम्पन्न करैत छथि। किन्तु राजस वा तामस कामनासँ प्रवृत्त साधक तदनुरूप वस्तुक अर्पण करैत तदनुरूप पथें ओ रीतिएँ चलैत देखल जाइत छथि। सात्त्विक कामनाक अनुसार उज्जर फूल, पायस बलि, कन्द-फल-मूल नैवेद्य प्रशस्त अछि। मुदा राजस कामनाक अनुसार लाल फूल, लाल चानन, रात्रि पूजा आदिक विधान देखैत छी। मारण-मोहन आदि तामस कामनाक अनुरूप पशुबलि, कारी फूल, मद्य-मांस आदिक अर्पण ओ साधकक श्मशानवास आदि प्रशस्त अछि। तामसी पूजामे घृणा पर विजय करब साधकक हेतु प्रथम कर्तव्य अछि।

सारकथा ई जे कामनाक अनुरूप पूजाक सम्भार, उपचारक विधान, रीतिक निर्माण आदि सभठाम पद-पद पर वैविध्यक सविस्तर वर्णन पूजाक पद्धतिमे भेटैत अछि। एहिठाम स्पष्ट कहल गेल अछि जे उद्देश्यक सिद्ध्यर्थ तदनुरूप विहित पूजापद्धतिक परिपालन सर्वथा आवश्यक छैक। अन्यथा अनुष्ठान वैफल्यक संग विघ्नक एवं पहुँचल साधकक सिद्धिहानिक पूरा संभावना रहैत छैक।

काम्यपूजा नित्य एवं नैमित्तिक पूजासँ भिन्न होइत अछि। यद्यपि विशेष रीति वा उपचारक निर्देशसँ सामान्य रीतिओ उपचारक बाधक नहि होइत छैक तथापि पूजाक सम्भार (उपकरण) तथा बलिक अधिकतासँ पूजामे अन्तर होएब तँ स्वाभाविके छैक। उदाहरण जेना नित्य पूजामे तान्त्रिक साधकौक हेतु (कौलिकोक हेतु) शक्तिपूजा ऐच्छिक कहल गेल छैक मुदा नैमित्तिक वा काम्यपूजामे ओ अनिवार्य अंग भए जाइत छैक।

पौराणिक पद्धतिसँ काम्य पूजामे नियम-संयमक पालन पर विशेष ध्यान देल जाइत अछि। पूजा धरि सात्त्विके रीतिसँ होइत अछि। एहिमे सम्भारक

अधिकता देखैत छी आओर पूजामे तँ आडम्बर होइते अछि।

जाहि देवताक पूजा होइत अछि, हुनक अनुरूप विविध उपकरण जुटाओल जाइत अछि। जेना स्त्रीदेवता रहने षोडश उपचारक अतिरिक्त प्रसाधन सामग्री, आश्रमीवस्तु-पाकपात्रादिक-समर्पण कएल जाइत अछि। इएह काम्यपूजा शिष्ट लोकनि द्वारा 'अनुष्ठान' कहबैत अछि। तें एकर आदिमे संकल्प ओ अन्तमे दक्षिणा करब अनिवार्य अछि।

कुलदेवताक (गोसाँउनिक) नित्यपूजा, नैमित्तकपूजा ओ काम्यपूजा कएल जाइत अछि। नित्यपूजा प्रत्यह, नैमित्तिक पूजा उपर्युक्त अवसर सभमे ओ काम्यपूजा कबुला कएला पर जे पातरि देल जाइत अछि वा खीर लड्डू चढ़ाओल जाइत अछि, बलिप्रदान कएल जाइत अछि, से थिक।

गौरीक पूजा

कुमारि बाला गौरीक प्रतिमा वा सराइक सुपारी पर सिन्दूरसँ पूजा करैत छथि आ सधवा महिला पञ्च देवताक स्थानमे गौरीक पूजा करैथ छथि। महिला वर्ग विशेष कए कुमारि कन्या अक्षय सौभाग्य वा नीक घर-वरक कामनासँ सिन्दूरसँ बोरल सौंस सुपारीक गौरीक बुद्धिसँ अभुक्त रहि प्रत्यह प्रातः काल पूजा करैत छथि। बहुत ठाम गौरीक प्रतीमा (पित्तरिक) सेहो पूजित होइत छथि। कर्मभूमि एहि भारतमे तपस्याक प्रधानतामे भारतीय परम्परा विश्वास ओ आस्था रखैत अछि आओर ओकरे अन्तर्गत ई गौरीपूजाक आरम्भ शैशवकेँ पाटी लगाएब थिक-जे ई तपःसंस्कार शिशुक हृदयमे दृढ़तासँ प्रवेश करैक। शुभकर्मक शुभफल अवश्य भेटैत छैक-ई भावना एतए निहित अछि।

पार्थिवशिवपूजा

मिथिलामे पार्थिव शिवपूजा (माटीक महादेव बनाए पूजा) करबाक प्रथा चिरकालसँ प्रचलित अछि। दू तरहक महादेव बनाओल जाइत छथि गोटा ओ चेकी। गोटा भेल पैघ शिवलिङ्ग स्वतन्त्र बनाए पूजा कएल गेलाह ओ चेकीमे छोट-छोट एक सयक (दशक दशगुना कए) बनाए एकटा चेकी बनाओल गेलाह। नित्यपूजामे गोटा महादेव बनैत छथि आओर काम्यपूजामे गोटा तथा चेकी दूनू। एक लाख, सबा लाख, तथा एगारह हजार, महादेवक पूजामे चेकी

महादेव बनैत छथि। हिनकासँ पूर्व कृतमुखक पूजा करबाक विधान अछि से एतए विशेष बुझबाक थिक।

संकटक निवारण हेतु ओ विशेष अभ्युदयक हेतु पार्थिव शिवक पूजा मैथिल लोकनि करैत छथि। बहुत गोटे प्रदोष कालमे (साँझकें) सेहो गोटा शिवलिङ्गक प्रत्यह पूजा करैत छथि। 'कलौ चण्डीमहेश्वरौ' पर हिनका सभकें बहुत आस्था छैन्हि। तें दुर्गासप्तशतीक पाठ ओ पार्थिवशिवलिङ्गक पूजा मिथिलामे अधिक होइत अछि। शिवक पूजाकाल हुनक आठो मूर्तिक पूजन अच्छत-फूल-चानन लए वामावर्त क्रमसँ पूजितमहादेवक अग्निकोणसँ ईशानकोण धरि एना कएल जाइत अछि –

शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः। भवाय जलमूर्तये नमः। रुद्रायाग्निमूर्तये नमः। उग्राय वायुमूर्तये नमः। भीमायाकाशमूर्तये नमः। पशुपतये यजमानमूर्तये नमः। महादेवाय सोममूर्तये नमः। ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः। एहिमे सभ मन्त्रक आदिमे प्रणव लगेबाक चाही।

विशेष शिवपूजामे शिववासक विचार

जाहि तिथिमे पूजा करबाक हो ताहि तिथिकें द्विगुण कए आओर पाँच जोड़ि दिऐक, तखन सातसँ भाग दए जे शेष बाँचए ओकरा शिववास बुझबाक थिक। जँ एक-दू वा तीन शेष बाँचए तँ शुभ बुझी अन्यथा अशुभ। हेतु जे एकमे कैलास, दूमे गौरीक निकट और तीनमे बसहा पर ओ रहैत छथि। चारिमे सभामे, पाँचमे भोजन पर, छहमे खेलमे, सातमे श्मशानमे ओ रहैत छथि –

तिथिञ्च द्विगुणीकृत्य पञ्चभिश्च समन्वितम्।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासमुदीरयेत्।।

एकेन वासः कैलासे द्वितीये गौरिसन्निधौ।
तृतीये वृषभारूढः सभायाञ्च चतुर्थके।।
पञ्चमे भोजने चैव क्रीडायां च रसात्मके।
श्मशाने सप्तमे चैव शिववास इतीरितः।।

फल एना अछि –

कैलासे लभते सौख्यं गौर्यान्तु सुखसम्पदः।
वृषभेऽभीष्टसिद्धि; स्यात् सभा सन्तापकारिणी।।
भोजने च भवेत् पीडा क्रीडायां कष्टमेव च।
श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत्।।

उपसंहार

पूजाक प्रसंग एतेक जे कथा कहल गेल अछि ताहि संग एकटा विषय आओर ध्यान रखबाक थिक। साधना वा उपासनामे तारतम्यक वा कोटिक विचार कएला पर ई पूजा तेसर कोटिमे अबैत अछि। पहिल कोटिक उपासना थिक योग। कुण्डलिनी ओ संहस्रारक सम्मेलन वा सामरस्य। मध्यम कोटि वा दोसर कल्प थिक मानस पूजा। आओर तेसर वा अधम कल्प थिक ई बाह्य पूजा, जे परम लक्ष्यक पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम ओ मोक्ष) मे सर्वश्रेष्ठक अर्थात् मोक्षक उपलब्धिमे सोपानक (सीढ़िक) कार्य करैत अछि।

उत्तमो योगमार्गेण मध्यमो ध्यानसंश्रयात्।
पूजाध्यानादिभिर्ज्ञेयोऽप्यधमाराधनक्रमः।।

– महाकालसंहिता, कामकलाखण्डमे कहल अछि।

एहिठाम एक विषय दिशि संकेत करब आवश्यक अछि जे अधिकारिओक भेदसँ पूजाक उपचारमे तान्त्रिक लोकनि भेद करैत छथि। साधारणतया सोलह उपचार प्रसिद्ध एवं प्रचलित अछि। मुदा राजाक हेतु बत्तिस उपचारक विधान भेल अछि, अतएव एकरा राजोपचार कहल जाइत अछि। एहिना वाम ओ दक्षिण मार्गक उपचार पृथक्-पृथक् होइत अछि।

गुरुपरम्पराक-सम्प्रदायक-भेदसँ तथ आराध्यक भेदसँ सेहो पूजाक प्रक्रियामे भेद देखल जाइत अछि। श्रीविद्या (त्रिपुरसुन्दरी) ओ आद्या (काली)क पूजामे प्रक्रियाक अन्तर अछि।

❑❑

तेसर परिच्छेद

व्रत / उपवास ओ पावनि तिहार

व्रत ओ उपवास आदि, नियमक परिपालन थिक, जे पुण्यक साधन रूपमे मानल जाइत अछि। तें कहल छैक जे व्रत कएने धर्म होइत छैक। नीक संकल्प लए कएल गेल आचरण विशेषे 'व्रत' थिक। ई प्रवृत्ति रूप तथा निवृत्ति रूप–दुनू प्रकारक होइत अछि। इजोरियाक एकादशीमे फल भोजन आओर रविकेँ नोन नहि खाएब यथाक्रम प्रवृत्ति एवं निवृत्ति रूप व्रत थिक। उपवास एक साँझ वा दुनू साँझ, दिनमे नहि भोजन करब निवृत्त रूप व्रत थिक।

गत्यर्थक व्रज धातुसँ घप्रत्यय कए ज कें त आदेश कएला पर व्रत पद बनैत अछि। व्रतमे उपवासक प्रसंग भविष्यपुराणमे कहल गेल अछि जे दोषसँ बाँचल राखब ओ गुणक बास कराएब एकर उद्‌देश्य थिक –

उपावृत्तस्तु दोषेभ्यः यस्तु वासो गुणैः सह।
उपवासस्तु विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः।।

नीक संकल्प कए आहार छोड़ने मोन शान्त होइत छैक आओर मोनक शान्त भेला पर शुभ–अपन कल्याण–होइत छैक। कोनो प्रकारक भोग नहि कएने मोन शुद्ध ओ शान्त होइत छैक, जाहिसँ अधलाह आचरण आ अधलाह विचार विरत भए जाइत छैक।

वराह उपनिषद्‌मे कहल छैक जे परमात्माक संग जीवात्माक सम्मेलने उपवास थिक। परमात्माक निकटमे जीवात्माक वास ओकर व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ होइत अछि। आहार शुद्धिसँ सात्त्विक अन्तःकरणक वृत्तिक उदय होइत अछि, जाहिसँ ई संभव अछि तेँ उपवास आहार शुद्धिक पर्याय थिक। एहिसँ स्वभावतः वा अनुषंगतः शरीर शुद्धिओ होइत अछि। क्रमशः परम्परया आत्मशुद्धि भेलासँ उपर्युक्त उद्‌देश्य सिद्ध होइत अछि –

उप समीपे यो वासः जीवात्म-परमात्मनोः।
उपवासः स विज्ञेयो न तु कायस्य शोषणम्।। वराह उपनिषद्।

ई व्रत नित्य, नैमित्तिक एवं काम्यक भेदसँ तीन तरहक होइत अछि। एकादशीकेँ निराहार रहब, फलाहार करब ओ असिद्ध भोजन करब नित्यव्रत थिक। धर्मशास्त्रमे कृष्णाष्टमी ओ रामनवमी, नरक निवारण चतुर्दशी ओ देवात्थान एहि चारिटाक संग शिवरात्रि व्रत नित्ये मानल गेल अछि। चान्द्रायण आदि पाप कटबाक निमित्त कएल गेल व्रत नैमित्तिक कहबैत अछि। छठि आदिक व्रत काम्य थिक। 'आरोग्यं भास्करादिच्छेत्' एहि वचनक आधार पर आरोग्यक कामनासँ प्रधानतया आओर अन्यविध कामनासँ गौण रूपमे महिला-पुरुष आबाल वृद्ध ई व्रत करैत छथि।

नन्दिपुराणमे चारि गोट आचारणकें श्रेष्ठ व्रत मानल गेल अछि, जे जीवन भरि आचारणीय थिक। ब्रह्मचर्यक पालन (अपन स्त्रीक संग सहवास एहिमे शामिल अछि), अर्थशुद्धि ओ शरीर, मोनक शुद्धि (शौच), सत्य बाजव ओ माछ मांसक नहि खाएब श्रेष्ठ व्रत थिक।

ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्।
व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानिति निश्चयः।।

जे अनदिना शुचि-आचारसँ नहिओ रहैत छथि ओहो व्रतक परिपालनमे शुचि आचारक रक्षा ध्यानसँ करैत छथि। दू दिन पूर्व स्नान कए भोजन करैत एक दिन पूर्व हविष्य भोजन करैत छथि तखन दोसर दिन व्रत करैत छथि। नहा खाएब आओर अरबा अरबाइनि करबाक इएह तात्पर्य अछि। शूद्र समाजमे एकर चालि अधिक देखैत छी।

ई व्रत मानस ओ शारीर भेदसँ मोटामोटी दू तरहक होइत अछि। अहिंसा, सत्य भाषण, चोरि नहि करब, ब्रह्मचर्यक पालन आदि मानसिक व्रत थिक। ई सभ सामान्य व्रतक अन्तर्गत अबैत अछि। एके साँझ खाएब, नोन नहि खाएब, हविष्य खाएब, फले खाएब, दुनू साँझ नहि खाएब शारीरिक व्रत थिक। उपवास शारीरिक व्रत थिक। एहि संग मानस व्रतक परिपालन अनिवार्य रूपें अवश्य परिपालनीय अछि। उपवासक मुख्यतः तीनटा प्रकार प्रचलित अछि। एक दिन पूर्व एकभुक्त (एके बेर हविष्य भोजन) कए दोसर दिन (व्रतक दिन) दुनू साँझ नहि खाएब, जलो नहि पीअब व्रतक प्रथमकल्प थिक। दुनू साँझ निराहार

रहब व्रतक पूर्व दिनमे एकभुक्त नहि करब, ओकर दोसर कल्प भेल। एके साँझ दिन भरि निराहार रहि साँझमे भोजन करब, एकर तेसर कल्प भेल। ई नक्तव्रत कहबैत अछि। एकसंझामे दिनमे एक बेर भोजन आ' रातिमे भोजन नहि करबाक विधान रविक व्रतमे देखैत छी। एहि निराहार व्रतक समय एक बेरि धरि जल पीबाक छूट छैक। अनेक बेरि जल पीने तथा एको बेर पान खएने व्रतभंग भए जाइत छैक-असकृज्जलपानाच्च सकृताम्बूलचर्णवात्-ई वचन व्रतभंगक प्रसंग कहल अछि।

एतए निर्दिष्ट विधि व्रतभंग नहि कएनिहार कहल गेल अछि – जल, मूल, फल, दूध, हवि, ब्राह्मणक जे इच्छित वस्तु हो तथा गुरुक वचन ओ औषध। एतए गुरुक आज्ञा पाबि व्रतभंग कएनिहारो विधि अनुष्ठेय थिक। ओहिसँ व्रतभंग नहि होइछ। एहिना ब्राह्मणक इच्छासँ ओ कार्यकरी जे व्रतभंग कएनिहार थिक। किन्तु ओहिसँ व्रतभंग नहि होइछ –

अष्टौ तान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः।
हविर्ब्राह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम्।।

(कालसारमे उद्धृत वचन)

भविष्यपुराणमे कहल अछि – भूतभय, व्याधि, प्रमाद ओ गुरुक शासनसँ एकबेरि धरि व्रतभंग भेलापर ओ व्रतभंग नहि होइत अछि –

सर्वभूतभयं व्याधिः प्रमादो गुरुशासनम्।
अव्रतघ्नानि चोच्यन्ते सकृदेतानि शास्त्रतः।।

एहिना प्रतिनिधि द्वारा व्रत कराओल जएबाक प्रथा मिथिलामे अछि, जकर शास्त्रीय आधार उपलब्ध अछि। पैठीनसि ऋषिक वचन अछि –

भार्या पत्युर्व्रतं कुर्यात् भार्यायास्तु पतिर्व्रतम्।
असामर्थ्ये परस्ताभ्यां व्रतभंगो न विद्यते।।

स्कन्दपुराण कहैत अछि –

पुत्रं वा विनयोपेतं भगिनीं भ्रातरं तथा।
एषामभाव एवान्यं ब्राह्मणं विनियोजयेत्।।

आन स्मृतिमे कहल छैक –

पितृमातृपतिभ्रातृस्वसृगुर्वादिभूभुजाम्।

अदृष्टार्थमुपोषित्वा स्वयं च फलभाग् भवेत्।।

पितृमातृस्वसृभ्रातृगुर्वर्थे च विशेषतः।

उपवासं प्रकुर्वाणः पुण्यं क्रतुशतं लभेत्।।

दक्षिणा नात्र दातव्या शूश्रूषा विहिता हि सा।

व्रतमे बहुत गोटए नोन नहि खाइत छथि, बहुत गोटए सैन्धव नोन खाइत छथि, बहुत गोटए अन्न नहि खाइत छथि, बहुत गोटए फंलो नहि खाइत छथि, ई देखैत छी। जे जेहन मोनमे संकल्प कए व्रत आरम्भ करैत छथि ओ ओहन आचरण कए व्रतक परिपालन कए कृतकृत्य होइत छथि।

मिथिलामे दातमनि करब, नव कपड़ा पहिरब, सुगन्धित तेल-फुलेल आदि लगाएब, काजर करब, फूलमाला ओ चानन आदि करब व्रतक अवसरमे निषिद्ध नहि अछि। बंगालमे प्रायः ई सभ निषिद्ध अछि। एतए गरुड़पुराणक वचन मैथिलक हेतु प्रमाण अछि –

गन्धालंकारवस्त्राणि पुष्पमालानुलेपनम्।

उपवासे न दुष्यन्ति दन्तधावनमञ्जनम्।।

एहिना कतहु व्यासक वचन उद्धृत अछि –

दन्तधावनपुष्पाणि व्रतेऽपि स्युर्न दुष्यति।

अभिप्राय ई छैक जे व्रतक अधिकार सधवा-विधवा, कुमारि, वृद्धा सभ तरहक महिला एवं बालक, युवक, वृद्ध, गृहस्थ तथा विधुर आदि सभ तरहक लोक द्वारा अनुष्ठित होइत अछि। तँ सधवा यदि लाल कपड़ा पहिरथि शृंगार सज्जा द्वारा शरीर संस्कार करथि तँ ओ व्रतभंगक कारण नहि होइत अछि। गृहस्थ पुरुष यदि नव कपड़ा पहिरथि, दिव्य भव्य आकृति एवं सुगन्धित तेल-फुलेल लगाबथि तँ दोषाह नहि थिक। मुदा विधवा ओ विधुर यदि एना करथि तँ दोषाह थिक। हेतु जे ई सभ पारस्परिक आकर्षणक कारण रहने मनोविकार अवश्य उत्पन्न करैत अछि। आओर मोनहिक शुद्धिक लेल व्रतक विधान अछि। तँ धर्मशास्त्रकार लिखैत छथि – **तदेतत् सभर्तृकोपवासविषयम्।**

भविष्यपुराणमे छैक –

अञ्जनं च सताम्बूलं सिन्दूरं रक्तवाससी।

बिभृयात् सोपवासापि अवैधव्यकरं परम्।।

विधवा यतिमार्गेण कुमारी वा यदृच्छया।

अर्थात् सधवाक हेतु हुनक अनुरूप अंजन (काजर), सिन्दूर, लाल नूआ, पान आदि व्रतहुमे दोषावह नहि थिक। विधवाक हेतु संन्यासीक बाट एहि प्रसंगमे अपनएबाक थिक अर्थात् पान खाएब, काजर वा लाल वस्त्र पहिरब निषिद्ध अछि। कुमारि कन्या जे चाहथि से करथि अर्थात् बहुत आस्था रहैन्हि तँ उपभोगक वस्तुकें निषिद्ध मानथि, नहि तँ उक्त उपभोग वस्तुक व्यवहार कएनहुँ हुनक व्रत नहि टुटतैन्हि।

गर्भधारण कएनिहारि वा रजस्वला वा जन्माशौच-मरणाशौचमे पड़लि महिला अनकासँ व्रत कराए सकैत छथि। एहि तरहें बाधा भेलहु पर व्रतभंग नहि होइत अछि। पद्मपुराणमे कहल अछि –

गर्भिणी सूतिकादिश्च कुमारी वाथ रोगिणी।

यदाऽशुद्धा तदाऽन्येन कारयेत् प्रयता स्वयम्।।

ई व्यवहारो मिथिलामे सभठाम प्रचलित अछि। तखन ई व्यवहार केवल महिलैक हेतु नहि अपि तु पुरुषौक हेतु अछि। धर्मशास्त्रकार उक्त पद्मपुराण वचनमे लिंगकें अविवक्षित कहैत छथि तथा एकरा सामान्य नियम मानैत छथि।

व्रताधिकारक प्रसङ्ग वाचस्पत्यम् मे लिखल छैक जे महिला, वृद्ध आ बालककेँ अभिभावकक अनुमतिसँ ई सभ करबाक चाही। कन्या दशामे पिताक वा पितृस्थानीय जनसँ,विवाहिता भेला पर पतिक ओ वार्द्धक्यमे वा वैधव्यक दशामे पुत्र वा तत्स्थानीय व्यक्तिक अनुमतिसँ व्रतक अधिकार हिनका सभकें होइत छैन्हि। एहिना बालक ओ वृद्धक प्रसंग बुझबाक चाही। ओना आदरातिशयक कारणें कोनो अभिभावक एहि धर्मकार्यमे बाधक सामान्यतः नहि होइत छथि, तेँ अनुमतिक अपेक्षा व्यवहारमे नहि देखैत छी।

नैयायिक केशव मिश्र धर्मशास्त्रहुक निबन्धक प्रणयन कएने छथि। ओ अपन संख्यापरिमाणग्रन्थमे व्रतक नियम दश गोट गनाओल अछि, जे साधारणतः अवश्य परिपालनीय थिक। यथा – क्षमा, सत्य, दान, दया, शौच (मानसिक, वाचिक ओ शारीरिक शुद्धि) इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, अग्निहवन, सन्तोष ओ

अचौर्य (चोरि नहि करब) –

क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
देवपूजाग्निहवनं सन्तोषः स्तेयवर्जनम्।।
सर्वव्रतेष्वयं धर्मः सामान्यो दशधा स्मृतः।

ई व्रत वर्ष भरिमे बहुत रास यथासमय अबैत रहैत अछि। सभक उद्देश्य ओ विधि विधान अपन-अपन विशेषता रखैत अछि। हँ, स्मार्तक ई कृत्य शैव, शाक्त, सौर, गाणपत्य आदिक संग वैष्णव सम्प्रदायक समन्वयमे विश्वास करैत अछि। जेना साओनमे अशून्यशयनव्रत, सोमवारी व्रत, भादवमे कृष्णाष्टमीव्रत, हरिताली व्रत, कर्माधर्मा एकादशीव्रत, आश्विनमे जितियाव्रत, महाष्टमीव्रत, कार्तिकमे प्रतिहार षष्ठीव्रत (छठि), हनुमज्जयन्तीव्रत, देवोत्थानव्रत, वकपञ्चकव्रत, अगहनमे नवान्न पार्वण, रविव्रतक आरम्भ, विवाहपञ्चमी, माघमे मकर संक्रान्ति पर्व, नरकनिवारण चतुर्दशीव्रत, अचला सप्तमीव्रत, फागुनमे शिवरात्रिव्रत, चैत्रमे सप्ताडोरा, रामनवमीव्रत, वैशाखमे मेषसंक्रान्ति पर्व, रविव्रतक विसर्जन, अक्षयतृतीयाव्रत, जेठमे वड़िसाति (वटसावित्री व्रत), पञ्चाग्निव्रत (पचाइक), गङ्गा दशहराक पर्व ओ आषाढ़मे हरिशयनी एकादशीव्रत तथा रथयात्राक उत्सव विशेष उल्लेखनीय अछि।

एहिसँ अतिरिक्त भादवक अमावास्यामे कुश उखाडब, (कुशोत्पाटिनी अमावास्या), आश्विनक पितृपक्षकृत्य ओ गजच्छायायोग, मातृनवमीकृत्य माघक अमावास्याक गङ्गास्नान, होली, जानकीनवमी, अर्धोदययोग, हरिवासरयोग, वारुणीयोग आदिक व्रत, स्नानादि चन्द्र ओ सूर्यक ग्रहणकालिक कृत्यक विवरण सेहो अपेक्षित ओ अवश्य ज्ञातव्य अछि।

[वर्षभरिक कृत्य]

अशून्यशयनव्रत

लक्ष्मीसँ अशून्य रहैत छैन्हि शयन जनिक एहि व्युत्पत्तिसँ अशून्यशयन पदें भगवान विष्णु अभिप्रेत छथि। हुनक व्रत कएलासँ विधवा वा विधुर नहि होइ से मत्स्यपुराणमे कहल अछि। साओन वदि द्वितीयासँ कार्तिक वदि द्वितीया धरि चारि मास भगवानक पूजा, चारि वर्ष धरि कएल जाइत अछि, जाहिमे शय्यादानक विशेष विधान अछि। सोनाक भगवानक प्रतिमाक पूजा कएल

जाइत अछि, जे चारिम वर्ष निस्तारक समय पुरोहितकेँ देल जाइत छैन्हि। एहि पूजाक अधिकार माउगि पुरुष सभकें समान अछि। चन्द्रोदय कालिक द्वितीया एहि व्रतक हेतु प्रशस्त अछि। साँझ धरि ई पूजा व्रत चलैत अछि।

नागपूजा / मौनापञ्चमी ओ नागपञ्चमी

साओन वदि पञ्चमी मौनापञ्चमी कहबैत अछि। आजुक दिन दूध, धानक लाबा ओ आन पूजाक सामग्री लए पञ्चोपचार वा दशोपचारसँ मौन भए विषहरा भगवतीक–मनसादेवीक–पूजा कएल जाइत अछि। भगवती विषहरा केँ अर्पित कए खीर घोरजाउर प्रसादरूपमे भोजन कएल जाइत अछि। नीमक पात, अमताहा दाड़िम, पखुआ आ नेवो चिबाए थुकरल जाइत अछि, जाहिसँ वर्ष भरि कोनो तरहक विषक कुप्रभाव शरीर पर नहि पड़ैत छैक–ई लोकक विश्वास छैक। प्रातःकाल माँटिक थुम्हा बनाओल जाइत अछि और साँझमे साँपक विषनिवारक मन्त्रसँ अभिमन्त्रित अथवा साँपक भयनिवारक संकल्पपूर्वक धानक लाबा ओ माँटि आलयमे मौन भए छीटल जाइत अछि।

ई पूजा शुद्ध पञ्चमी जँ उपलब्ध नहि हो तँ षष्ठीसँ युक्त पञ्चमीमे करी किन्तु चतुर्थीसँ युक्त पञ्चमीमे नहि से स्मृतिक वचनक अनुसार *पर्वनिर्णय*मे कहल गेल अछि।

पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।
तस्यां तु तुषिता नागा इतराः सचतुर्थिकाः।।

माण्डर मूलक ब्राह्मण लोकनि श्रावण शूदि पञ्चमीकेँ एहिना ई पूजा करैत छथि। आन प्रान्तमे शुक्ल पक्षहिक पञ्चमी नागक पूजा हेतु विहित अछि। तेँ ई नागपञ्चमी नामसँ प्रसिद्ध अछि। ई लोकनि मण्डलभङ्गविधियो प्रायः करैत छथि जे 'मड़ड़भाँगब' मण्डल भङ्ग कहल जाइछ।

मधुश्रावणी

मधुश्रावणीक पूजाक आरम्भ अजुके दिनकेँ–मौनापञ्चमीके–कएल जाइत अछि जे साओन शूदि तृतीया धरि चलैत अछि।

एकर महत्त्व मिथिलामे अधिक देखल जाइत अछि। गौरीक सङ्ग नागक पूजा अक्षय सौभाग्यक कामनासँ नवविवाहिता महिला लोकनि करैत छथि। मौना पञ्चमीकेँ आरम्भ भए साओन शूदि तृतीयाकेँ ई कृत्य सम्पन्न होइत अछि।

तेरह दिन धरि नवविवाहिताकेँ लोकाचारानुरूप कथा श्रेष्ठ महिलावर्गक द्वारा सुनाओल जाइत अछि, सधवा लोकनिकेँ भोजन कराओल जाइत अछि। आजुक दिन नवविवाहित वरक उपस्थिति आवश्यक बुझल जाइछ। पतिक द्वारा अलङ्करणक उपहार नवविवाहिता पबैत छथि तथा सासुरपक्षसँ झमटगर भारो पठाओल जाइत छैक। मधुश्रावणीक भार मिथिलामे नामी अछि।

एतए बुझबाक थिक जे तृतीया तिथि यदि चतुर्थी तिथिसँ संबद्ध होइत हो तँ ओ अधिक प्रशस्त मानल गेल अछि। अन्यथा शुद्ध तृतीयोमे ई पूजा विहित अछि। यदि परिस्थिति वश ने शुद्धे ने चतुर्थीयुक्ते तृतीया उपलब्ध हो तखन विवशतामे द्वितायायुक्तो तृतीयामे ई पूजा अवश्य करी। अन्यथा पूजाक लोप भए जाएत।

आजुक दिन नव विवाहिताक दुनू ठेहुन पर टेमीसँ दागल जएबाक प्रथा मिथिलामे अछि। ई तान्त्रिक आचार मैथिल शिष्टद्वारा परिगृहीत भेल अछि। रुद्रयामलक वचन एहन भेटैत अछि –

श्रावणे नागपञ्चम्यां तृतीयायामथापि वा।

अङ्किता पट्टवर्तिभ्यां संस्कृता सर्वकर्मसु।।

मुदा सोतिपुरामे ई व्यवहार नहि अछि। बहुत ठाम सुनैत छी जे श्रीखण्ड चानन टेमीक द्वारा उक्तस्थल पर लगाए एहि विधिकेँ पूरा कएल जाइत अछि, दागल नहि जाइत अछि, मुदा ई क्वाचित्क अछि। ई एहन महत्त्वक अछि जे एहि अंकनक वा दागल गेलाक बाद ओ सुसंस्कृत भए सबटा लौकिक ओ धार्मिक कार्य करबाक अधिकारिणी होइत छथि। जेना ओ पद्य कहैत अछि।

सोमवती अमावास्या

*भविष्यपुराण*मे कहल छैक जे अमावास्या यदि सोमकेँ पड़ैक तँ महिला लोकनि अवश्य व्रत करथि। एहिसँ व्रती सात जन्म धरि पुत्र, पति ओ धनसँ परिपूर्ण रहैत छथि। विधवो यदि ई व्रत करथि तँ जन्मान्तरमे आजीवन सौभाग्यवती रहथि। साओनक सोमवारी अधिक प्रशस्त अछि। एहि सोमवती अमावास्यामे मासक नियम नहि छैक। कोनो मासमे ई योग भेला पर व्रत विहित अछि। एकर सुफल मुक्तिओ कहल गेल अछि –

सोमवत्याममायान्तु व्रतं कृत्वा सती भवेत्।

पतिपुत्रधनैः पूर्णा सप्त जन्मनि जन्मनि।।

विधवा चेत् करोतीदं न पुनर्विधवा भवेत्।

तस्मात् स्त्रिया सुभगया कर्तव्यं खलु मुक्तिदम्।।

रक्षाबन्धन

साओनक पूर्णिमाकें राखी भगवान् भगवतीकें अर्पित कए लोकमे बान्हल जएबाक प्रथा अछि। परम्पराक अनुसार गुरुजनसँ राखी बन्हाओल जाइत अछि। अपनासँ ज्येष्ठ राखी बान्हि आशीर्वाद करैत छथि। एकर मन्त्र प्रसिद्ध अछि –

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

आन प्रान्तमे बहिनि भाइकें राखी बान्हि अपन रक्षाक वचन लैत छथि। मुदा से मिथिलाक व्यवहार नहि थिक। नव लोक देखाउसिमे एकरा अपनाए रहल छथि से बहुत उचित नहि। कहल अछि जे –

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

ई पूर्णिमा उदय कालिक ग्राह्य थिक। यदि से उपलब्ध नहि हो तँ ई पड़ीब युक्त ग्राह्य थिक चतुर्दशीयुक्त नहि से *पर्वनिर्णय*मे कहल गेल अछि।

आजुक दिनमे वेदक अध्ययन आरम्भ कएल जाइत अछि। 'उपाकर्म' इएह कहबैत अछि। 'अध्यायोपाकृतिं कुर्यात्' आदि *प्रयोगपरिजात*मे शौनक ऋषिक वचन उपलब्ध अछि। एतए अध्याय पदक अर्थ वेद आओर उपाकृतिक अर्थ पढ़बाक उपक्रम थिक। गुरुपूर्णिमाक दिन (आषाढ़ी पूर्णिमा–व्यासपूर्णिमा) गुरुक पूजा कए छात्र एकमास अवकाश मनाए आजुक दिन प्राचीन कालमे अध्ययन आरम्भ करैत छलाह से ज्ञात होइत अछि। इएह हेतु छल होएतैक जे मिथिलाक पञ्चाङ्ग (पतरा) साओनसँ आरम्भ कएल गेल होएत। नववर्ष साओनसँ मानल जाए लागल होएत। अन्यथा नववर्षक आरम्भ चैत्रसँ मानबाक प्रथा शास्त्रसम्मत ओ आन प्रान्तमे मान्य अछि।

बंगालमे झूलन उत्सव एहि समयमे मनाओल जाइत अछि। भगवानक युगल मूर्ति राधाकृष्ण वा सीताराम पालना पर झुलाओल जाइत छथि। एकर

देखाउँसिमे मिथिलामे ओ अन्यत्रहु ई झूलन उत्सव सात-आठ दिन धूमधामसँ मनाओल जाइत अछि।

बम्बईमे (पश्चिम भारतमे) आजुक दिनमे समुद्रपूजा कएल जाइत अछि। नारिकेल ओ पुष्पादिसँ ओ पूजित होइत छथि। अतः नारिकेल पूर्णिमा ई कहबैत अछि।

दक्षिण प्रान्तमे उपाकर्मक प्रधान रूपेँ परिपालन होइत अछि। नव जनौ पहिरि सन्ध्यावन्दन, ऋषितर्पण ओ वेदारम्भ कएल जाइत अछि। उत्तर भारतहुमे एकर प्रचार मध्यदेशमे अधिक ओ मिथिलामे कम अछि।

बहुलापूजा

भाद्र कृष्ण चतुर्थीकेँ बहुलाक पूजा कएल जाइत अछि। सन्ततिक प्रति वात्सल्य ओ सत्यनिष्ठा हिनक कथासँ बूझल जाइत अछि। जहिना सत्य पूजा नारायणक रूपमे कएलासँ लोक सफल मनोरथ होइत अछि, तहिना बहुला नामे धेनुक (गाइक) पूजा करबाक ओ कथा सुनबाक प्रथा मिथिलामे छल आ अछि। *इतिहास समुच्चय*मे भीष्म युधिष्ठिरक संवाद रूपमे ई कथा वर्णित अछि, जे शिष्ट द्वारा मिथिलामे व्यवहृत ओ मान्य भेल। ऐहिक शुभ ओ सुखक सङ्ग पारलौकिक शुभ सुखक कामना संकल्पवाक्यमे कएल जाइत अछि। पञ्चदेवता, विष्णु, गौरी, कुलदेवता, रोहितपर्वत, चन्द्रसेन, सोमिलगोप, कामरूपी व्याघ्र तथा बहुलाक (धेनुक) पूजा यथाविभव पञ्चोपचार वा दशोपचारसँ कए कथा सूनि गोग्रास देल जाइत अछि और यजमान (पूजक) यवान्न भोजन करैत छथि। चौदह वर्षधरि ई पूजा कए एकर उद्यापन कएल जाइत अछि।

एतए ध्यान देवाक विषय ई अछि जे *पर्वनिर्णयक* अनुसार चतुर्थी जाहि दिन मध्याह्नधरि वा मध्याह्नमे पड़ैत होइक ताहि दिन ई पूजा कर्तव्य थिक। दू दिन यदि एहन स्थिति होइक तँ पूर्व दिनहिमे ई पूजा करी अर्थात् तृतीयायुक्त चतुर्थीमे करी पञ्चमीयुक्त चतुर्थीमे नहि।

उद्यापन

संकल्पित व्रत पूरा कएला पर ओकर उद्यापन कएल जाइत अछि। जे संकल्प कएल ओकर निर्वाह भेल, एतदर्थ आत्मतृप्ति ओ मनस्तोषक अभिव्यक्ति हेतु एक दिन शुभ मुहूर्तमे निर्दिष्ट पद्धतिक अनुसार ई विधि अनुष्ठित होइत

अछि। एहिमे दान, ब्राह्मणभोजन तथा अहोरात्र देवाराधन चलैत अछि। उद्यापनक बाद ओहि व्रतमे स्वेच्छा रहैत छैक करी वा नहि करी। उद्यापन यज्ञे जकाँ अनुष्ठेय होइत अछि। तें एकादशीक यज्ञ वा कोनो व्रतक यज्ञ कहने ओकर उद्यापने अभिप्रेत रहैत अछि। संकल्पित व्रतक उद्यापन आवश्यक मानल जाइत अछि।

कृष्णजन्माष्टमी

भादव वदि अष्टमीकेँ श्रीकृष्ण भगवान्‌क जन्म भेलैन्हि तें हुनक जन्मोत्सव आजुक दिनमे मनाओल जएबाक प्रथा अछि, जे चिरकालसँ भारतभरिमे मनाओल जाइत अछि।

धर्मशास्त्रमे एहि पर्वक प्रसंग बहुत विचार कएल गेल अछि। पूजाक प्रधानता मानी कि व्रतक। कखन व्रत विहित अछि कखन पारणा करी आदि। मैथिल लोकनि एकरा नित्यव्रत मानैत छथि। एकदिन पूर्व एकभुक्त कए दुनू साँझ उपवास, केवल दिन भरि नक्तव्रत कए अर्थात् निराहार रहि साँझमे फलाहार ओ भात छोड़ि रोटी भोजन आदि व्रतक अनुकल्प करैत छथि। ठाम ठाम प्रतिमा बनबाए धूमधामसँ व्रत वा पूजा कएल जाइत अछि वा झाँकी दर्शन प्रस्तुत होइत अछि।

कृष्णाष्टमी व्रत दू टा होइत अछि वा दू प्रकारें मनाओल जाइत अछि – जन्माष्टमीव्रत आओर जयन्तीव्रत। केवल अष्टमीकें 'जन्माष्टमी वा कृष्णाष्टमी' कहल जाइत अछि। इएह यदि रोहिणी नक्षत्रसँ युक्त होइत अछि तँ प्रशस्त मानल जाइछ। मध्यरात्रिक अष्टमी 'जयन्ती' कहबैत अछि। दूनू व्रत करणीय थिक। *स्कन्दपुराण* आदिमे जयन्तीव्रतक माहात्म्य विशेषरूपमे कहल गेल अछि। ई जयन्ती यदि सोम वा बुध दिनकें पड़ैक तथा नवमीयुक्त हो तँ अधिक प्रशस्त होइत अछि।

सूर्योदयसँ चन्द्रोदय पर्यन्त अर्थात् भिनसरसँ निशीथ राति धरि यदि अष्टमी रहैक आओर निशाभाग रातिमे रोहिणी नक्षत्रक योग होइक तँ निःसन्देहरूपमे ओहि दिन जयन्तीव्रत वा जन्माष्टमी व्रत करबाक थिक। तिथिक प्रधानता जन्माष्टमीमे आओर रोहिणी नक्षत्रक योगक प्रधानता जयन्तीमे कहल गेल अछि। रोहिणी नक्षत्रक यदि योग नहि होइत रहैक किन्तु अष्टमी रहैक तँ ओहि दिन जन्माष्टमी व्रत तँ होएबे करए, जयन्तीओ व्रत करबाक चाही। अन्यथा ई

व्रते लुप्त भए जाएत। ई कथा मिथिलाराज्योपार्जक म०म० महेश ठाकुर *तिथितत्त्वचिन्तामणि* मे कहलैन्हि अछि।

यदि पूर्व दिनमे सप्तमीसँ युक्त अष्टमी होइक और निशाभाग रातिमे रोहिणी नक्षत्रक योग होइक, दोसर दिन अष्टमी रहैक मुदा रोहिणीक योग नहि रहैक, ओहि समयमे, तँ पूर्व दिनहिमे रोहिणी नक्षत्रयोगक अनुरः व्रत करी। यदि दूनू दिन रोहिणी नक्षत्रक योग रहैक तँ दोसर दिन तिथि ओ नक्षत्र भेटला पर व्रत करी। यदि रोहिणी नक्षत्र उपलब्ध नहि हो तँ निशाभाग राति धरि जहिया अष्टमी होइक तहिया व्रत करी। यदि उदय कालमे अष्टमी रहैक आओर अधिक काल नवमी रहैत तँ ओहि दिन नवमीयुक्त अष्टमीकें प्रशस्त मानि व्रत करी।

एहि व्रतक पारणा यवान्नसँ दोसर दिन उक्त तिथि ओ नक्षत्रक वितला पर वा कोनो एकक बितला पर कर्तव्य थिक।

मैथिल लोकनि आबालवृद्ध माउगि पुरुष सभ ई व्रत करैत छथि। मैथिल धर्मशास्त्रकार आजुक दिनकें पूजाक प्रधानता ओ व्रतक गौणता कहैत छथि मुदा व्यवहार एकर विपरीत अछि।

कुशी अमावास्या (कुशोत्पाटनी अमावास्या)

भादवक अमावास्याकें कुश उपारबाक व्यवहार अछि। आजुक दिनमे उखारल कुश वर्ष भरि कार्यमे अबैत अछि। आन मासक अमावास्याक उखारल कुश मास भरि, पूर्णिमाक उखारल पन्द्रहदिन आओर तत्कालो उखारि कुशसँ ओहि दिन कार्य कए सकैत छी। आदेश दए कें बेटो भातिजसँ कुश उखरबाओल जाइत अछि। ओना पितृजीवीकें कुश उखारबाक अधिकार नहि होइत छैक। पिताक अछैत बालक कुश नहि उखारैत अछि, ने पितृकृत्ये कोनो कए सकैत अछि।

श्मशानभूमिक, बाटपरक, यज्ञभूमिक, पिण्डदानक स्थानक, अपवित्र जे स्थान होइक, आसन ओ शयन जतए क्यो करैत होइक – एहि छओ सात ठामक कुश नहि उपाड़ी।

कुश उपारबाक मन्त्र अछि, जे ओहि दिन लोक व्यवहार करैत अछि –

'ओं कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा।

देवपितृहितार्थाय त्वां समुत्पाटयाम्यहम्।।

ओं कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः।

कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।। ओ हूँ फट्'।।

यदि दू दिन अमावास्या पड़ैक तँ उदयकालिक अमावास्या एहि हेतु ग्राह्य थिक।

हरितालीव्रत

भाद्रशुक्ल तृतीयाकें भविष्योत्तर पुराणमे कहल गेल हरितालिका व्रत महिला समाजमे प्रसिद्ध अछि। दिनभरि उपवास कए साँझमे फलाहार वा भोजन नक्तव्रत, दूनू साँझ उपवास कए प्रातःकाल पारण वा दूनू साँझ फलाहार सेहो अनोन आदि अनेक कल्प व्रतक देखैत छी। साँझमे गौरीशंकरक पूजो कएल जाइत अछि। हरिताली भगवती गौरीक नाम छैन्हि। कथामे कहल छैक जे –

'आलीभिर्हरिता यस्मात् तस्मात् सा हरितालिका'

ई व्रत शुद्ध तृतीयामे करी अथवा तृतीया जहिया चतुर्थीसँ युक्त हो तहिया करी, द्वतीया युत तृतीयामे नहि करी। यदि ई दुनू उपलब्ध नहि हो तखन व्रतलोप नहि हो, तँ ओकर रक्षार्थ द्वितीयासँ युक्तो तृतीयामे व्रत करी, मुदा करी धरि अवश्य।

चौड़चन - चतुर्थी (चौठ) चन्द्रक पूजा

भादव शूदि चतुर्थीकँ चन्द्रक पूजा मिथिलानरेश हेमाङ्गद ठाकुर द्वारा केवल मिथिलहिमे प्रचारित भेल से सुनैत छी। ई नीक ज्योतिषी छलाह हिनक कृति *'ग्रहणमाला'* प्रसिद्ध अछि। हिनका एहि दिनमे विशेष शुभफल उपलब्ध भेलासँ ओ एहि पावनिक प्रचार अपन राज्यमे कएलैन्हि।

आन प्रान्तमे आजुक दिन चन्द्रमाकँ कलङ्क लागल छैन्हि तँ हुनक निरादरार्थ चन्द्रमापर ढेपा पाथर फेकल जाइत अछि। किन्तु मिथिलामे आजुक दिन चन्द्रक पूजा प्रशस्त मानल जाइत अछि।

मनकामना सिद्ध भेलापर वा सिद्धिक उद्देश्यें दिनभरि निराहार रहि साँझमे विविध प्रकारक पूड़ी पकवानक सङ्ग फल ओ दहीक छाँछी हाथ उठाओल जाइत अछि। नव माटिक वासनमे पौड़ल दही सुस्वादु भेलासँ नामी अछि। स्कन्दपुराणक अनुसार एहि पूजाक पद्धति ओ कथा निर्दिष्ट भेल अछि ।

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।

सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः।।

एहि मन्त्रक द्वारा स्यमन्तकमणिक उपाख्यानक स्मरणसँ फल लए चन्द्र दर्शन कएला पर चतुर्थी चन्द्रक दर्शनजन्य पापक क्षय होइत छैक। ई कथा *ब्रह्मपुराणमे* धात्रेयीक द्वारा उपदिष्ट अछि। इएह मूल भेल मिथिलाक एहि पूजाक।

ई चतुर्थी जहिया साँझमे उपलब्ध हो तहिया करी से *पर्वनिर्णयमे* कहल गेल अछि।

एहि दिनमे सिद्धविनायकक पूजा सेहो कएल जाइत अछि। ईहो पौराणिके देवता थिकाह तथा हिनक माहात्म्य शास्त्र पुराणमे विघ्नविनाशक ओ सिद्धिदाताक रूपमे वर्णित अछि। गुजरात ओ महाराष्ट्रमे गणेशपूजा धूमधामसँ अनेक दिन धरि अनुष्ठित होइत अछि। एकर पद्धति मिथिलामे भेटैत अछि।

ऋषिपञ्चमी ओ अगस्त्यकें अर्घ्यदान

ब्रह्माण्डपुराणक अनुसार भाद्रशुक्ल पञ्चमीकें सप्तर्षिक पूजा तर्पणक विधान अछि ओआर पूर्णिमाके अगस्त्यकें अर्घ्य देवाक विधान अछि। पद्धति वा वर्षकृत्यमे एकर वैदिक मन्त्र ब्राह्मणक हेतु ओ पौराणिक मन्त्र अन्य वर्णक हेतु निर्दिष्ट अछि। मुदा सम्प्रति एकर प्रचार समाजमे कम अछि। *पतरा, पर्व-निर्णय* तथा *धर्मशास्त्रक* ग्रन्थमे एकर विवरण भेटैत अछि।

अनन्तक पूजा

भादव शूदि चतुर्दशीकेँ *भविष्यपुराणक* अनुसार अनन्तक पूजा कएल जाइत अछि। ई पूजा आरम्भ कएला पर चौदह वर्ष धरि अवश्य कर्तव्य थिक। मिथिलामे कतेक लोक आजीवन ई पूजा करैत छथि। अशेष पापक क्षय, विविध ऐहिक सुख एहि पूजासँ उपलब्ध होइत छैक। पाटक डोराक वा जनौक अनन्त बनाए लोक हुनक पूजा कए बाँहि पर बन्हैत अछि। रक्षाकवच जकाँ एहि अनन्तपर लोककेँ विश्वास छैक, तेँ ओही भावनासँ ई धारण कएल जाइत अछि। पुरुषैक द्वारा ई पूजा कएल जाइत अछि। *पर्वनिर्णयक* अनुसार ई चतुर्दशी उदयकालिक लेबाक चाही तेँ पूर्णिमायुक्त चतुर्दशी पूजाक काल भए सकैत अछि, त्रयोदशीयुक्त चतुर्दशी नहि से बुझबाक थिक। ओना शुद्ध चतुर्दशी जँ एहि दिनमे रहैक तखन तँ कोनो प्रकारक विचिकित्सा संभवे नहि।

× × × × ×

भादव शूदि पड़ीवके विश्वकर्माक पूजा शिल्पी लोकनि करैत छथि आओर राजा लोकनि भादव शूदि द्वादशीके इन्द्रक पूजा करैत छलाह, मुदा राज्यक नहि रहला पर ई पूजा लुप्ते जकाँ भए गेल छल। आब पुनः एकर प्रचार भए रहल अछि

बहुत गोटे भादव शूदि अष्टमी के–जे राधाष्टमीक नामसँ विख्यात अछि–लक्ष्मीक पूजा ओ व्रत आरम्भ करैत छथि।

पितृपक्ष-अपरपक्ष

आश्विन कृष्णपक्षमे पन्द्रहो दिन तर्पण ओ पार्वण करी। सभ दिन पार्वण सम्भव नहि हो तँ पञ्चमीसँ अमावस्या धरि, वा अष्टमीसँ अमावस्या धरि, वा दशमीसँ अमावस्या धरि वा जाहि दिन पिताक क्षयतिथि रहए ताहि दिन पार्वण अवश्य करी। इहो सम्भव नहि हो तँ परिवारमे जे गुरुजन दिवङ्गत भेल होथि, हुनका सभक क्षयतिथिमे यथाविधि एक, तीन वा पाँच वा अधिक ब्राह्मण भोजन कराबी। *ब्रह्मपुराण* तथा *अत्रिस्मृतिमे* एकर विधान भेटैत अछि।

दिवङ्गता महिला वर्गक निमित्त मातृनवमीके ब्राह्मण भोजन कराबी। एहि समयमे गया जाए पिण्डदान करब अधिक प्रशस्त अछि।

जितियाव्रत

भविष्यपुराण मे पुत्रक दीर्घायुक कामनासँ एहि व्रतक विधान कएल गेल अछि। आश्विन कृष्ण अष्टमीकेँ दूनू साँझ उपवास कए प्रातः काल पारणाक विधान अछि। एहि पावनिमे माछ मरुआ सधबा लोकनि मिथिलामे जितियाव्रतसँ एक दिन पूर्व अवश्य खाइत छथि तथा भोरमे ओठगनक–चूड़ा दही चीनी आदि खाएल जएबाक–प्रथा अछि। लोकोक्ति छैक –

'जितिया पावनि बड़ भारी, धिया पुताकें ठोकि सुताबथि अपने खाइथि भरि थारी।"

ई व्रत खण्डित नहि हो–एकर विशेष ध्यान राखल जाइत अछि। बंगाल तथा मिथिलामे एकर कथा एके रंग जकाँ अछि। एहि तिथिमे योग विशेष भेला पर षड़जितिया मनाओल जाइत अछि, जे अधिक प्रशस्त होइत अछि। *भविष्यपुराण*मे एकर प्रतिपादक वचन एना अछि –

इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्

पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका।

शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः।

तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया।।

ई अष्टमी प्रदोषकालमे जहिया पड़ैक तहिया व्रत करी। दू दिन यदि प्रदोष कालमे पड़ैक तँ दोसर दिन व्रत करी, पूर्व दिनमे नहि करी। दूनू दिन यदि प्रदोष कालमे नहि पडैक, तखन उदयकालमे जहिया अष्टमी पड़ैक तहिया व्रत करी ओ नवमीमे पारणा करी। ई व्रत महिला द्वारा अनुष्ठित होइत अछि। ई सभ बात *तिथिनिर्णय*मे शुभङ्करठाकुर नीकें लिखने छथि।

गजच्छायायोग

आश्विन कृष्ण त्रयोदशीके मघाक चन्द्रमा रहला पर गजच्छाया योग कहबैत अछि। एहिमे पार्वणश्राद्ध विहित अछि। जेठपुत्र जकर जीवैत छैक से पिण्डदान नहि करथि आओर सबटा करथि। एहिमे मधु, घृत ओ पायससँ श्राद्ध विहित अछि –

अश्वयुक्कृष्णकामे च मघास्विन्दौ करे रविः।

यदा तदा गजच्छाया श्राद्धे पुण्यमवाप्यते।।

मघायां पिण्डदानेन ज्येष्ठः पुत्रो विनश्यति।

सोऽस्माकं कुले जायाद् यो नो दद्यात् त्रयोदशीम्।

पायसं मधुसर्पिर्भ्यां वर्षासु च मघासु च।।

वर्षासँ एतए आर्द्रास्थसूर्य अभिप्रेत अछि, ओहू समयमे पार्वणक विधान अछि।

दुर्गापूजा

आश्विन मासक महत्त्व दू कारणें-पितर ओ देवताक पूजाक अवसर लाभ–मानवाक थिक। पहिल पक्ष (कृष्णपक्ष) एकर पितृपक्ष कहबैत अछि। एहि पक्षमे पितरक क्षयतिथिमे पार्वण करबाक विधान अछि ओ ब्राह्मण भोजन पितरक निमित्त कराओल जाइत अछि। कृष्णपक्षक नवमीतिथि मातृनवमी कहबैत

अछि। कोनो तिथिमे माए पितिआइनिक स्वर्गवास भेल रहओ हुनका सभक निमित्त ब्राह्मण भोजन मातृनवमीएके कराओल जाइत अछि। अमावास्या महालया कहबैत अछि, जाहि दिन भगवतीक अधिवास होइत छैन्हि ओ पितरलोकनिक विसर्जन। पार्वण ओ ब्राह्मण भोजनसँ सन्तुष्ट भए अपन सन्तानकें आशीर्वाद दए पितर लोकनि यथास्थान जाइत छथि।

दोसर (शुक्ल पक्ष) देवीपक्ष कहबैत अछि। आश्विन शुक्ल पड़ीवके कलशक स्थापन, जयन्तीक बीजवपन आदि विधि कएल जाइत अछि। भगवती दुर्गाक नौ दिन सविधि पूजा, दुर्गासप्तशतीक पाठ, ओ इष्टदेवताक विशेषपूजा, कोनो मन्त्रक सिद्ध्यर्थ ओकर पुरश्चरण आदि कएल जाइत अछि। भगवती दुर्गाक पूजा धूमधामसँ सोल्लास मनाओल जाइत अछि। *महाकालसंहिता* तथा *देवीभागवतक* अनुसार भागवान् राम रावणक वध अन्यथा नहि देखि अकालमे भगवतीकें प्रबोधित कए हुनक पूजा आरम्भ कएल आओर सफल मनोरथ भेलाह। तेँ दशमीके विजयदशमी कहल जाइत अछि। विजयदशमीके कोनो दिशि यात्रा कएला पर अवश्य सिद्धिलाभ होइत छैक-ई मैथिलक धारणा छैन्हि। तेँ एहि दिनक यात्रा प्रशस्त अछि आओर यात्राक नामसँ सेहो ओ दिन कहल जाइत अछि। मिथिला बङ्गाल ओ आसाममे मान्यता छैक जे भगवती दुर्गा नौ दिन धरि नैहरमे रहि दशम दिन सासुर जाइत छथि। तेँ जतए मिथिलामे माँटिक दुर्गाक प्रतिमा बनाए पूजल जाइत छथि ओतए हुनका दूबि धान ओ सुपारी हरदिसँ खोंछि भरि यात्रा दिन विदा कएल जाइत अछि। *महाकालसंहिता*मे कहल छैक जे भगवती कहैत छथि-हमरा आनन्दित देखि जे आनन्दित होइत अछि ओ जीवन भरि आनन्दित रहैत अछि आओर हमरा आनन्दित रहला पर जे आनन्दित नहि होइत अछि ओ कहियो आनन्दित नहि होइत अछि –

ममानन्दे सदानन्दः सदानन्दो भविष्यति।

ममानन्दे निरानन्दः निरानन्दो भविष्यति।।

तेँ दशमीक उल्लास ओ धर्माचरण अपन स्वतन्त्र महत्त्व ओ वैशिष्ट्य रखैत अछि। कुमारिभोजन, छागबलि ओ पूजा-पाठ दर्शनीय ओ मननीय होइत अछि। अधिक कालव्यापी उत्सव जकाँ सबसँ पैघ पूजा इएह होइत अछि।

यद्यपि नवरात्र (दुर्गापूजाक अवसर) चारिटा वर्ष भरिमे कहल गेल अछि। आषाढ़ शुक्ल पक्ष, आश्विन शुक्ल पक्ष, माघक शुक्लपक्ष ओ चैत्रक

शुक्लपक्ष। तथापि एहिमे प्राचीनतम वासन्तीए नवरात्र (चैत्रक नवरात्र) थिक, जे आश्विनहिक नवरात्र जकाँ मनाओल जाइत अछि। आन नवरात्र गौण अछि। आपामर प्रसिद्ध नवरात्र वा दशमी आश्विनहिक अछि। महाष्टमीकें एहि दशमीमे लोक दुर्गाक प्रीत्यर्थ उपवास व्रत करैत अछि आओर गोसाँउन घर साँझमे कएल जाइत अछि। यात्राक दिन (विजयदशमी) बूढ़ पुरान लोक जयन्ती काटि भगवान्-भगवतीकेँ अर्पित कए अपनासँ वयसें छोटकेँ आशीर्वाद स्वरूप टीकमे वा माथपर ओ जयन्ती बन्हैत छथि। ओकर मन्त्र ई अछि –

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तु ते।।

महाष्टमी व्रत

आश्विन शुक्ल अष्टमी 'महाष्टमी' कहबैत अछि। आजुक दिनमे कुलदेवता ओ इष्टदेवताक निमित्त हुनक प्रीत्यर्थ कुमारि भोजन ओ पातरि देल जएबाक प्रथा अछि। मिथिलामे दुर्गाक प्रीत्यर्थ आजुक दिन उपवासो महिला लोकनि करैत छथि मुदा धर्मशास्त्रमे पुत्रवानक हेतु ई व्रत नहि करबाक विधान अछि, जकर मूल अन्वेषणीय अछि। *पर्वनिर्णय*मे विहारी ग्रामवासी मीमांसक कृष्णेश्वर झा एहन निर्णय लिखल अछि आओर एकर पुष्टि *महाकालसंहितहुक* वचनसँ होइत अछि।

आजुक दिनमे गेरुसँ भगवानक पएर दुआरिपर अष्टदल कमलक संग लिखल जाइत अछि। जे व्रत करैत छथि हुनका ई ध्यान रखबाक चाहिएन्हि जे सप्तमीयुक्त अष्टमीमे व्रत नहि करथि अपि तु शुद्ध अष्टमीमे वा नवमीयुक्त अष्टमीमे करथि।

कोजागरा - लक्ष्मीपूजा

आश्विनक पूर्णिमाक साँझमे महालक्ष्मीक पूजा ओ गोसाँउन घर कएल जाइत अछि। अंकुरी, पान, मखान, मिश्री, केरा, नारिकेर आदि नैवेद्यक रूपमे समर्पित कए प्रसाद रूपमे परिवारमे बाँटल जाइत अछि। ई कर्तव्य घरक प्रमुख महिला द्वारा सम्पादित होइत अछि। जहिना मधुश्रावणीमे बेटीक सासुरसँ भार अबैत छैक तहिना कोजागारक भार बेटाक सासुरसँ अबैत छैक। एहि दिनक साँझमे नवविवाहितक चुमौन 'अभिनन्दन' आशीर्वाद गामक-समाजक लोक

करैत छथि आओर पान, केरा, नारिकेर, मखान आ मधुर, पकवान लए आनन्दित उल्लसित होइत छथि। *पर्वनिर्णयक* अनुसार जाहि दिन साँझ ओ निशीथ रातिमे पूर्णिमा होइक ताहि दिन कोजागरा मनाबी। यदि पूर्व दिनक निशीथ राति मे आ परदिनमे साँझमे पड़ैक पूर्णिमा तँ पूजाकालक अनुरोधें परदिनमे मनाबी, यदि च पूर्व दिनक निशीथमे पूर्णिमा रहैक ओ पर दिनक साँझमे नहि रहैक तँ पूर्वदिनहिमे मनाबी।

हनुमज्जयन्ती

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशीके हनुमानजीक जन्म भेल छैन्हि। तेँ हुनक जयन्ती मनाओल जाइत अछि। *वायुपुराणमे* कहल छैक –

आश्विनस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी।
मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिवः।।

एहिठाम अमावास्यान्त मासक गणना कएला पर पहिने शुक्लपक्ष भेला पर पछाति कृष्णपक्ष होइत छैक। तदनुसार ई आश्विन पद कार्तिकपरक बुझबाक थिक।

सुखरात्रि (शुकराती) – दीपावली कालीपूजा

सुखरात्रिके दीपावली सेहो कहल जाइत अछि। दीपमालासँ आलयकेँ सजाए अन्धकारकें हँटाओल जाइत अछि तथा लक्ष्मीक पूजा तथा गोसाँउनघर कएल जाइत अछि। आजुक दिनक साँझमे उल्का (ऊक) फेरल जाइत अछि, जकर उद्देश्य छैक पितर लोकनिकेँ इजोत देखाए स्वर्गक बाट देखाएब, जेना उल्का भ्रमणक मन्त्रसँ ज्ञात होइत अछि –

'शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः।
उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।।
अग्निदग्धाश्च ये जीवाः येऽप्यदग्धाः कुले मम।
उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्।।
यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये।
उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।।'

इएह थिक उल्का-भ्रमणक मन्त्र।

सुखरात्रि जहिया अमावास्या प्रदोष (साँझ) मे पड़ैक तहिया करी। यदि दू दिन प्रदोष कालमे अमावस्या पड़ैक तँ पूर्वदिन पूजादि नहि कए परदिनमे करी। यदि कोनो दिन प्रदोष समयमे अमावास्या नहि पड़ैक और दू दिन अमावस्या रहैक तँ परदिनहिमे मनाबी - ई निर्णय *पर्वनिर्णय*मे कएल गेल अछि।

आजुक रातिमे श्री १०८ भगवती कालीक पूजा धूमधामसँ कएल जाइत अछि। बुझबाक थिक जे काली ओ दुर्गाक पूजा पौराणिक ओ तान्त्रिक दुनू पद्धतिएँ प्रचलित अछि। आराधक अपन प्रवृत्ति ओ रुचिक अनुसार श्रद्धापूर्वक कोनो एक पद्धतिसँ पूजा करैत छथि। ई पूजा जहिया निशीथ भाग रातिमे अमावस्या पड़ैत छैक तहिया कएल जाइत अछि।

पचीसी खेलाएब ओ जूआ खेलाएब आजुक दिनमे प्रशस्त अछि। लोकक प्रवृत्ति अधलाहो दिशि रहैत छैक, जाहि मध्य जूआक खेल अछि, ओकरा हँटाएब संभव नहि छैक किन्तु विशोधन - संशोधनसँ कम करब संभव छैक। अतः वर्षमे दू एक दिन एहि खेलक छूट देल गेल होएतैक -ई हमरा मोनमे होइत अछि।

आन प्रान्तमे दिवाली (दीपावली) सँ दू दिन पूर्व क्रमशः धनतेरस ओ रूप चौदस (धनत्रयोदशी ओ रूपचतुर्दशी) मनएबाक प्रथा अछि। धनतेरसके कमसँ कम नव वर्तन किनबाक साधारण प्रचार छैक। मुदा मिथिलाक संस्कारमे ई नहि अछि। आन प्रान्तमे दिवालीकेँ धानक लाबा बतासा नवका चूड़ा भगवतीकेँ चढ़ाए आपसमे बाँटल जाइत अछि मुदा मिथिलाक व्यवहार एहन नहि अछि। यक्षपूजाक विधान एहि अवसरक प्राचीन कालमे देखैत छी। यक्षक प्रतिमा तथा यक्षपूजाक विधि उपलब्ध होइत अछि मुदा मिथिलाक संस्कार एहन नहि अछि।

चारिटा प्रमुख पावनि चारू वर्णक क्रमशः प्रधान कृत्यरूपमे देखैत छी। श्रावणी पूर्णिमाक कृत्य ब्राह्मणक हेतु, दुर्गापूजा क्षत्रियक हेतु, दिवाली (सुखरात्रि) वैश्यक हेतु ओ होली शूद्रक हेतु प्रधानरूपें आ द्विजक हेतु सामान्यरूपें परिगृहीत अछि।

गोवर्धनपूजा

गोवर्धनपूजा कार्तिक शुदि परीवकेँ विहित अछि मुदा मिथिलामे एहि पूजाक रेवाज नहि अछि। एहि दिन अन्नकूटक व्यवहार अछि, जे विविध प्रकारक अन्न छप्पन भोग भगवान् भगवतीकेँ अर्पित होइत अछि।

आजुक दिनमे गोपूजा कएल जाइत अछि। पखेव मनाओल जाइत अछि। मालजालकेँ आरोग्यक कामनासँ तेलमरीच नाक दऽ के पियाओल जाइत अछि। मादक द्रव्य पशुक औषधिसँ निर्मित काँड़ि पिआओल जाइत अछि। पशुकेँ नव गरदामी ओ घण्टी देल जाइत छैक और देह पर लाल रंगक थप्पा दए ओकर शृङ्गार कएल जाइत छैक। एहि पूजाक कएने सन्तति, पशुधन तथा राजाक अभिवृद्धि समृद्धि होइत छैक से शास्त्रमे निर्दिष्ट अछि। नारदक वचन *कृत्यसारसमुच्चय*मे एना उद्धृत अछि –

या कुहू प्रतिपन्मिश्रा तत्र गाः पूजयेन्नृप।
पूजनात् त्रीणि वर्धन्ते प्रजा गावो महीपतिः।।

एहिसँ ईहो ज्ञात भेल जे ई शुद्ध परीवक अभावमे अमावास्यायुक्त परीवमे विहित अछि द्वितीयायुक्त परीवमे नहि।

भ्रातृद्वितीया-भाइक पूजा / चित्रगुप्तपूजा

कार्तिक शुक्ल द्वितीयाक महत्त्व दू तरहें अधिक अछि। एक तँ भाइक पूजा बहिनिक द्वारा कएल जाइत अछि। भाइ छोट रहथु वा पैघ, हुनक पूजा बहिनि हाथ पएरमे सिन्दूर पिठार श्रीखण्ड चानन लगाए, कुम्हरक फूल, लवङ्ग, अड़ाँची, पानक पात सुपारी ओ जल हुनक हाथमे दए 'नोत' दैत छथि। भाइ बहिनिकेँ यथाशक्ति उपहार दैत छथि ओ हुनक अन्न खाए हुनका संन्तुष्ट करैत छथि। ई विधि पौराणिक थिक जे भ्रातृद्वितीयाक नामसँ प्रसिद्ध अछि। सूर्यक कन्या यमुना अपन भाइ यमकेँ नोति पारस्परिक मंगलभागिनी भेलीह से कथा *पुराण*मे भेटैत अछि।

दोसर एहि दिनमे कायस्थ लोकनि चित्रगुप्तक पूजा करैत छथि, जे दुआति पूजाक नामसँ प्रसिद्ध अछि। लेखन सामग्री कलम दुआतिक (मोसिदानी) पूजा विधिपूर्वक उल्लाससँ कायस्थ लोकनि करैत छथि।

प्रतीहारषष्ठी व्रत (छठि)

प्रतीहार पदक दूटा अर्थ कएल गेल अछि। एकटा तँ संवादवाहक दोसर सूर्यक रथ। नीक समदिया जेना कार्यक साधक होइत अछि तहिना ई व्रत कएला पर लोक सफल मनोरथ होइत अछि। दोसर जे जेना प्रतिहार रथपर सुखसँ बैसल जाइत अछि तहिना एहि व्रतक कएने भगवान सूर्य प्रसन्न ओ सुखी होइत छथि।

ई व्रत सप्तमी युक्त षष्ठीमे करी किन्तु पञ्चमीयुक्त षष्ठीमे नहि करी। सूर्यक पहिल अर्घ ओहि दिन दिऐक जहिया उदयकालमे कनियों काल षष्ठी रहैक और पछाति सप्तमीओ भए जाइक न क्षति नहि। यदि निर्विवाद रूपसँ षष्ठी रहैक तखन तँ कोनो विचारे नहि करी। दोसर दिन उदयकालमे सप्तमी रहला पर दोसर अर्घ दिऐक, अष्टमी भए जाइक तँ चिन्ता नहि करी से मैथिल धर्मशास्त्रक निर्णय अनेकठाम भेटैत अछि।

ई सूर्यक पूजा थिक। साँझमे षष्ठीके पहिल अर्घ आओर प्रातःकाल सप्तमी के दोसर अर्घ देल जाइत अछि। जएह वस्तु साँझमे अर्पित होइत अछि सएह भिनसरोमे से विशेष बात ध्यान देबाक थिक। आरोग्य लाभ एहि व्रतक मुख्य उद्देश्य अछि, 'आरोग्यं भास्करादिच्छेत्' एहि तरहक पुराण वचन अछि। तखन सामर्थ्यशाली देवता भक्त साधक पूजक केर सभटा मनोरथ पुरबितहिँ छथि। ई पूजा काम्य ओ नैमित्तिक दूनू थिक। स्कन्दपुराणक अनुसार ई व्रत नियम निष्ठाक संग कियो कए सकैत अछि। जाति वा वर्गक बन्धन नहि छैक। महिला-पुरुष सब एकर अधिकारी छथि। बिहारभरिमे मिथिलामे तँ सहजहिं एहि पूजाक प्रचार सर्वाधिक अछि आओर धूमधाँमसँ कएल जाइत अछि। आन प्रान्तमे एकर अल्पता देखैत छी। प्रतीहारक लक्षण एना अछि जे ओकर पदार्थ बुझबैत अछि –

इङ्गिताकारतत्त्वज्ञो बलवान् प्रियदर्शनः।
अप्रमादी सदा दक्षः 'प्रतीहारः' स उच्यते।।

प्राचीन कालमे राजाक दरबारमे प्रतिहारी महिला नियुक्त कएल जाइल छल, जे हुनकासँ आगन्तुकक हेतु समय लए दुनू कें मिलबैत छल, तहिना ई व्रत कार्य साधक होइत अछि। एहि अभिप्रायसँ एहि पर्वक महत्त्व ख्यापनार्थ प्रतिहारषष्ठी नाम राखल गेल।

कृत्यसारसमुच्चयक व्याख्यामे सम्मान्य पण्डित गंगाधर मिश्रक अभिप्राय ईहो अछि जे सूर्य विम्बमे षष्टिका (साठि) देवीक आवाहन पूजन होइत अछि।

गोपाष्टमी

कार्तिक शुक्ल अष्टमीमे गोपूजाक विधान देवी भागवतमे (स्कन्ध ४ मे) भेटैत अछि। आजुक दिनमे गोपूजा, गोग्रास, गाइक प्रदक्षिणा, गाइक अनुगमनसँ सकल मनोरथ सिद्ध हो से कहल गेल अछि। मुदा एकर प्रचार कम अछि।

जगद्धात्रीक पूजा

कार्तिक शुक्ल नवमी 'अक्षयनवमी' कहबैत अछि। आजुक दिन कएल गेल पूजाक फल अक्षय होइत अछि। जगद्धात्री भगवतीक सविधि पूजा सप्तमीसँ दशमी धरि चारि दिन विहित अछि जे दशमीक उत्सव जकाँ कतहु कतहु मनाओल जाइत अछि। मुदा एकर आब विरलता देखैत छी।

देवोत्थान एकादशीव्रत

कार्तिक शूदि एकादशीकेँ देवोत्थानव्रत कएल जाइत अछि। आषाढ़ शूदि एकादशी देवता लोकनि सुतैत छथि, भाद्र शुदि एकादशीके ओ सब करौट फेरैत छथि और आजुक दिनके भगवान् जगैत छथि। तें ई तीनू एकादशी क्रमशः हरिशयनी, पार्श्वपरिवर्तिनी-कर्माधर्मा आ देवोत्थाननामसँ वा प्रबोधनी नामसँ प्रसिद्ध अछि। एहि तीनू एकादशीमे व्रत करबाक विधान अछि। एहि दिन सबमे अन्न खाएब वर्जित अछि। साओनसँ कार्तिकधरि चारि मास चातुर्मास्य व्रतक विधान अछि जे कतहु एकहि ठाम रहि अनुष्ठेय थिक। शुभ कार्यक हेतु ई समय निषिद्ध मानल जाइत अछि। अत एव वैवाहिक कथावार्ता एहि समयमे बूढ़पुरान लोक नहि करैत छथि।

मिथिलामे प्रबोधनी-देवोत्थान-एकादशीके दिनभरि उपवास कए साँझमे फलाहार करबाक व्यवहार अधिक प्रचलित अछि। क्यो-क्यो एक दिन पूर्व एकभुक्त कए दुनू साँझ निराहार रहि भिनसरमे पारण करैत छथि से सम्पूर्ण व्रत कहबैत अछि।

बीच आङनमे सिन्दूर पिठारसँ गृहस्थीक यावतो वस्तुक अड़िपन देल जाइत अछि आओर पीढ़ी पर कुशियारक घर बनाए ओहिमे पूजा कए भगवान् केँ उठाओल-जगाओल-जाइत अछि। ओकर मन्त्र ई अछि -

ओं ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः।
प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।।
मेघा गता निर्मूलपूर्णचन्द्रः शारद्यपुष्पाणि मनोहारणि।
अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व, जागृष्व च लोकनाथ।।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते।
त्वया चोत्थीयमानेन उत्थितं भुवनत्रयम्।।

ई जँ शुद्धतिथि उपलब्ध नहि हो तँ द्वादशीयुक्त एकादशीमे व्रत करी दशमीयुक्त एकादशीमे नहि। हेतु जे ओ निषिद्ध अछि। मुदा व्रतलोपक भयें ओहो अगत्या पक्षमे करबाक थिक।

बकपञ्चक

देवोत्थान एकादशीसँ पौर्णमासी पर्यन्त निरामिषे भोजन करबाक संकल्प ओं तदनुरूप आचरण वा फलाहारे करबाक संकल्प 'बकपञ्चक' व्रत कहबैत अछि। सुनैत छी जे एहि पाँच दिनमे बको माछ खाएब अपन सहज आहार छोड़ि दैत अछि। तें एकरा बकपञ्चकव्रत कहल जाइत अछि। *नन्दिपुराण*मे भीष्मपञ्चक एकर नाम कहल गेल अछि।

सामाक पूजा

सामा चकेबाक (काँच माँटिक निर्मित पक्षी, पशु आदि सामा ओ ओहिमे मानव प्रतिमा बनाए यदि आबामे पका देल जाए तँ चकेबा) पूजा कार्तिकी पूर्णिमाकेँ सम्पन्न कएल जाइत अछि। ई सामा जाम्बवती कृष्णक कन्या थिकीह। शकुन्त पक्षीक रूपमे हिनक पूजा भाइक कल्याण कामनासँ महिला लोकनि करैत छथि। नव धानक शीशसँ हिनक पूजा साँझमे गीत गाबि कएल जाइत अछि। भातृद्वितीया दिनसँ ई बनब आरम्भ होइत अछि। पूर्णिमा दिन चूड़ा दही गूड़ हिनका भोग लगाए प्रसाद परिचारिका वर्गमे बाँटल जाइत अछि। बाटो बहिनो चौबट्टी पर राखल जाइत छथि, सामाक अदला बदली मैथिलीएमे प्रसिद्ध मन्त्र पढ़ि कएल जाइत अछि। ई सभटा कार्य महिला वर्गक द्वारा अनुष्ठित होइत अछि। रातिमे अरोस परोसक महिला एकत्र भए ढोल ढाकक संग खूब गीतनाद कए आङनक बाहर बाड़ी व चौमासमे चुगिला वृन्दावन जराए एहि पूजाक समापन करैत छथि, पछाति भाइसँ सामा फोडेबाक ओ हुनका जलपान करएबाक व्यवहार अछि। रातिमे जहिया पूर्णिमा पड़ैत छैक तहिया ई पूजा अनुष्ठित होइत

अछि। सम्भव थिक जे अपन भाइ साम्बक कल्याणार्थ सामैक द्वारा ई पूजा आरम्भ भेल हो।

रविव्रतक आरम्भ

वृश्चिकक संक्रान्ति भेला पर शुक्लपक्षक रवि दिनमे ई व्रत टेकल जाइत अछि–आरम्भ होइत अछि आओर मेष संक्रान्तिमे शुक्लपक्षक रविके ई व्रत सौंपल जाइत अछि। एहिमे एकसंझा–एक साँझ एकाहार–क विधान अछि। मिथिलाक महिला समाजमे ई व्रत अधिक प्रचलित अछि। एहि व्रतक समाप्ति वैशाख शुक्लपक्षमे मलमासहुमे करबाक विधान अछि। वृषक संक्रान्ति सौंपबाक हेतु वर्जित अछि। दोसर वैशाखक शुक्लपक्षमे वृष संक्रान्तिक संभावना रहैत छैक।

हरिसौं पूजा

नीक घर वर प्राप्तिक कामनासँ मिथिलाक कुमारि लोकनि द्वारा कार्तिक शूदि पड़ीबसँ अगहन शूदि पड़ीब धरि एक मास ई पूजा अनुष्ठित होइत अछि। ई गौरीक पूजा थिक। *वाल्मीकि रामायण* मे उल्लिखित अछि जे ई व्रत जगज्जननी सीता कएने छलीह से सुनैत छी। *ब्रह्मवैवर्तपुराण*मे एहि व्रतक यथाविधि अनुपालनसँ शुभेटा फल भेटैत छैक से एहि व्रतक कथाक आशय ज्ञात होइत अछि, संगहि आशीर्वादक महत्त्व सेहो प्रतिपादित अछि। ई कथा ओ व्रत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कही तँ अत्युक्ति नहि थिक तथा अपनामे बहुतरास रहस्य समेटने अछि सेहो ज्ञातव्य थिक।

विवाहपञ्चमी

विवाह पञ्चमी अग्रहण शुक्ल पञ्चमीके मानल गेल अछि। आजुक दिनके जनकपुरमे सीताक विवाहक उत्सव मनाओल जाइत अछि। आजुक दिनमे स्नान, दान ओ यात्राक माहात्म्य *रुद्रयामलतन्त्र*मे वर्णित अछि।

नवान्न पार्वणविधि

वर्षमे पाँच दिन पार्वण करबाक विधान अछि – नव धान भेला पर, नव यव भेला पर, नव गम्हरी भेला पर, आओर नव जलक वर्षा भेला पर। एहिसँ अतिरिक्त पितृपक्षमे एकटा विहित अछि। नवान्न, यवान्न, नवोदक, नवकृष्णल ओ पितृपक्षक पार्वण कहबैत अछि।

पार्वण श्राद्ध असिद्ध अन्नसँ चिकससँ बनल पिण्ड द्वारा सम्पन्न होइत अछि। नौ गोट पितरकें उद्देश्य कए पार्वण श्राद्ध होइत अछि। पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही, मातामह-प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह। एहि सँ उपरका पीढ़ीक दूनू कुलक पितरकेँ विश्वेदेव कहि तीन गोट विश्वेदेवकेँ पिण्ड देल जाइत अछि। वृद्ध प्रपितामह आदि चारिम पुस्तसँ यद्यपि 'लेप भागभुजः' कहबैत छथि सातम पुस्तधरि तथापि पिण्डदानकालमे विश्वेदेवरूपमे हुनका पिण्डदेल जाइत अछि। मातामहक संग हुनक धर्मपत्नी छथन्हि से मानि हुनका पृथक् सँ पिण्ड नहि देल जाइत अछि। अभिप्राय ई छैक जे हमरा सब जे किछु नव लैत छी से देवता ओ पितरकेँ अर्पित कएलाक बादे, हुनक अनुज्ञा आशीर्वाद पाबिए कए, तेँ नवान्न पार्वण ओ हवन कएलाक बाद ब्राह्मण भोजन कराइए कए स्वयं सपरिवार प्रसन्नतासँ ग्रहण करी। नव अन्नक प्राप्ति उत्सवक विषय होइत अछि। गृहस्थक परिश्रमक पुरस्कार वा पारिश्रमिक वा साफल्ये तँ एहिमे निहित अछि। तँ सुख बाँटि देला पर द्विगुणित होइत छैक एहि भावनासँ ई अनुष्ठान सम्पाद्य थिक। दुःख कहला पर कम होइत छैक, बाँटि देला पर घटैत छैक से लोकमान्यता छैक। तँ दुर्दिनमे जिज्ञासा करबाक विधान समाजमे प्रचलित अछि।

मकरसंक्रान्ति

मकरसंक्रान्तिकेँ माघभरि लोक प्रातःस्नान करैत अछि। उड़ीदक दालि ओ चाउर, तिलबा, चुल्लौर आदि दान करैत अछि। विष्णुप्रीत्यर्थ एकाध ब्राह्मण भोजन करबैत अछि। विभव रहने गोदान, ऊनीवस्त्र ओ कम्बल आदि दान, सुवर्णदान, वस्त्रदान आदि लोक करैत अछि। खिच्चरि खएबाक व्यवहार अछि। आजुक दिनमे भगवान्-भगवतीकेँ खिच्चड़ि चुल्लौर तिलबा चढ़ाओल जाइत अछि। प्रयागक कल्पवास मैथिल लोकनि अजुके दिनसँ आरम्भ करैत छथि। गंगासागरक स्नान आजुक दिन प्रशस्त रहने ओतए खूब पैघ मेला लगैत अछि।

बहुत ठाम दिनमे चूड़ा दही चुल्लौर आदि भोजन होइत अछि आओर रातिमे खिच्चरि खाएल जाइत अछि आओर बहुत ठाम चुल्लौर तिलबा चूड़ा दही जलपान कए दूपहरक भोजन विन्यस्त खिच्चरिसँ सम्पन्न होइत अछि।

संक्रान्तिक दिन दानक अवसरमे दिन तिथि ओ कालक उच्चारण जे संकल्प मे कएल जाइत अछि, ताहिमे मकरसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याह ओ पुण्यकालक

उल्लेख होइत अछि। तँ पुण्यकालक प्रसंग जिज्ञासा स्वाभाविक। एहि प्रसंग म०म० मुकुन्दझावक्सी *पर्वनिर्णय*मे एना व्यवस्था कहैत छथि।

दिनमे रविक संक्रम भेला पर ओहि संक्रम कालसँ दशघड़ी पूर्व दशघड़ी बाद धरि पुण्यकाल होइत अछि। आधा रातिसँ पूर्व रविक संक्रमण भेलापर ओहि रातिक पूर्व दिनक उत्तरार्धमे आओर आधा रातिक वाद संक्रमण भेलापर उत्तर दिनक पूर्वार्धमे पुण्यकाल होइत अछि। ठीक मध्यरातिमे जँ संक्रमण होइक तँ पूर्व दिनक उत्तरार्ध ओ पर दिनक पूर्वार्ध पुण्यकाल होइत अछि। यदि संक्रमणकालमे जे तिथि रहैक से पूर्व दिनहुमे रहैक तँ बीच रातिओमे संक्रमण भेलापर पूर्व दिनहिक उत्तरार्धमे पुण्यकाल मानी। सब संक्रान्तिमे समाने व्यवस्था मिथिलामे मान्य अछि। वृद्ध वसिष्ठक वचन एतए प्रमाण होइत अछि। जे एना अछि –

अह्नि संक्रमणे पुण्यमहःकृत्स्नं प्रकीर्तितम्।
रात्रौ संक्रमणे भानोर्दिनार्धं स्नानदानयोः।।
अर्धरात्रादधस्तस्मिन् मध्याह्नस्योपरि क्रिया।
ऊर्ध्वं संक्रमणे चोर्ध्वमुदयात् प्रहरद्वयम्।।

तुषारी पूजा

माघ भरि कुमारि कन्या तुषारी पुजैत छथि। कौआ डकबासँ पूर्वहि ई पूजा कएल जाइत अछि और एकर निस्तार अर्थात् समापन जाहि वर्ष विवाह होइत छैक ताही वर्ष होइत छैक। तीन तरहक अड़िपन उजर, लाल आ पीयर क्रमशः उत्तर, पूर्व ओ पश्चिम दिशामे देल जाइत अछि, जे गौरीक अड़िपन कहबैछ। अन्तिम दिन एहि अड़िपनमे वृद्धि होइत अछि। तीस तीसटा लाल, उजर ओ पीयर अड़िपन पड़ैत अछि। घैल, छनननी ओ सरबामे अहिहवक फर तथा पू सधवा सबमे बाँटल जाइत अछि। सत्त्वगुण, रजोगुण ओ तमोगुणक प्रतीक ओ तीनू रंगक अड़िपन कहल जाए तँ अनुपयुक्त नहि बूझि पड़ैए, संगहि बृहस्पति ओ शुक्र रूप सौम्य ग्रहक प्रतीक उजर, पीयर अड़िपन थिक और प्रत्यक्ष देवता सूर्यक प्रतीक लाल अरिपन थिक। इहो किछु लोक कहैत छथि जहिना उत्कट गर्मीक समय जेठमासमे पञ्चाग्निव्रत (पचाइक) विहित अछि तहिना उत्कट जाड़क समय माघ मासमे तुषारी पुजबाक विधि अछि। ई तपस्याक स्वरूपे व्रत वा पूजा मानबाक थिक, जकर पाटि कुमारि कन्योकेँ लगाओल जाइत अछि।

*तारार्चनचन्द्रिका*मे कहल अछि जे भगवती गौरी तुषारकर (किरण) सँ सुन्दर लगैत छथि–

तुषारकरपूर्णाङ्गी तुषारकरसुन्दरी।
तुषारकरतुल्यास्या तुषारांशुसमानना।।

एहि पूजा सबमे जे विधि विधान अछि ओ नीक पतिएटा लेल नहि, अपि तु नीक अर्थात् स्वस्थ ओ भाग्यशाली सुसंस्कृत सन्तान लाभहुक निमित्त, गार्हस्थ्य जीवनक-दाम्पत्यक-सौमनस्यौक हेतु अनुष्ठेय मानल गेल अछि, से जँ पूजाकेँ ध्यानसँ देखबैक तँ स्वतः बूझि पड़त। एतए ओ सब विस्तारसँ कहबाक अवसर नहि अछि।

अर्द्धोदय योग – महोदय योग

श्रवणा सूर्यक योग ओ व्यतीपात योग यदि पूस ओ माघक अमावास्या मे होइक तँ अर्धोदय योग कहबैत अछि आओर कोनो एकटाक योग जँ उक्त अमावास्या युगलमे होइक तँ महोदय। एहि योगमे गङ्गास्नान ओ दानक महत्त्व कहल गेल अछि। ई योग सब बहुत बहुत दिन पर अबैत छैक –

श्रवणार्कव्यतीपातैरमा चेत् पौषमाघयोः।
अर्धोदयः स विज्ञेयः किञ्चिन्न्यूने महोदयः।।
अर्धोदये तु सम्प्राप्ते सर्वं गङ्गासमं जलम्।
यत्किञ्चिद्दीयते दानं तद्दानं मेरुसन्निभम्।।

नरकनिवारणचतुर्दशी व्रत

नारदसंहिता तथा *लिङ्गपुराण*क अनुसार ई व्रत मिथिलामे अनुष्ठित होइत अछि। दिन भरि निराहार रहि रातिमे अन्नग्रहण कएल जाइत अछि। साँझ मे शिव-पार्वतीक पूजा होइत अछि। एहि व्रतक हेतु प्रदोषव्यापिनी तिथि ग्राह्य थिक अर्थात् साँझू पहर जहिया चतुर्दशी पड़ैक तहिया करी। अमावास्यायुक्त करी त्रयोदशीयुक्त नहि करी। अगत्या पक्षमे त्रयोदशी युक्तो करी, जँ शुद्ध चतुर्दशी वा अमावास्यायुक्त उपलब्ध नहि हो। अन्यथा व्रतक लोप भए जाएत। केरावक साग आजुक दिनमे मिथिलाक गृहस्थलोकनि रुचिसँ आयोजन कए खाइत छथि।

मौनी अमावस्या / कुम्भयोग

माघक अमावस्याकेँ मौन भए गङ्गा आदि पवित्र नदीमे स्नान करबाक विधान पुराणमे देखैत छी तथा प्रयागमे आजुक दिनमे स्नानार्थीक भीड़ त्रिवेणीमे होइत अछि। मौन भए पवित्र नदीमे स्नान पुण्यार्जनक साधन मानल गेल अछि। वैशाखमे हरिद्वारमे, साओनमे गोदावरी तटमे नासिकमे, कार्तिकमे उज्जैनमे आओर माघमे प्रयागमे कुम्भ योग लगैत अछि। मुदा ई पावनि मैथिलक वा गृहस्थक नहि अपि तु नागा बाबजी सभक पाबनि थिक। ओ लोकनि धूमधामसँ एकरा मनबैत छथि। मैथिलधर्मशास्त्रमे कुम्भक चर्चा कमे अछि बल्कि नहिए अछि।

वसन्तपञ्चमी - सरस्वतीपूजा

माघ शुक्ल पञ्चमीके सरस्वतीक पूजा मिथिलामे धूमधामसँ कएल जाइत अछि। विद्यालय, महाविद्यालय, संस्थान, छात्रावास ओ विद्वान् लोकनिक, भक्त लोकनिक घरमे यथाविभव हिनक पूजा होइत अछि। मालपूआ ओ पूक संग आमक मज्जर, पलासक फूल, यव ओ गहूमक शीष सरस्वतीकेँ अर्पित कएल जाइत अछि। स्वनामधन्य डॉ० सर गंगानाथ झा अपन घरमे हिनक पूजा प्रति वर्ष अवश्य धूमधामसँ करैत छलाह। एहि अवसर पर हुनक बालक लोकनि मित्रमण्डलीक सहयोगें संस्कृत नाटकक मञ्चन करैत छलाह।

आजुक दिनसँ वसन्तक आविर्भाव मानल गेल अछि। जे फागुनक पूर्णिमा दिन तक चैलत अछि। विद्यापतिक वसन्त रागक गीत – "विकसल वकुल कुन्द किंशुकवन, कोकिल पंचम गाव रे", राय वसन्तक चुमाओनक गीत – "अभिनव पल्लव बइसक देल" आदि गाओल जाइत अछि। तेँ अबीर गुलाल लगएबाक प्रथा आइसँ आरम्भ होइत अछि। समतुरियाक मुँह आ माथ पर तथा गुरुजनक पैर पर अबीर राखल जाइत अछि। गुरुजन यदि माथमे अबीरक टीका कए देथि तँ ओकरा हुनक प्रसाद बुझबाक चाही तथा हुनका प्रणाम कए ओकरा स्वीकार करी। भगवान्-भगवतीकेँ अबीर चढ़ाए प्रसाद रूपमे ओकर व्यवहार परिवारमे करबाक थिक। आजुक दिनकेँ बहुतो गोटे 'श्रीपंचमी' कहि लक्ष्मीक पूजा करैत छथि। एहि प्रसंगमे शिष्टक ई वचन उद्धृत करैत छथि –

माघे सिते चतुर्थ्यां तु वरमाराध्य च श्रियः।
पञ्चम्यां कुन्दकुसुमैः पूजा कार्या समृद्धये।।

एहिठाम वरसँ गणेश अभिप्रेत छथि आओर श्री अर्थात् लक्ष्मी प्रसिद्ध लेल जाइत छथि आओर ई पूजा नैमित्तिक कहाओत, हेतु जे समृद्धि प्राप्ति ओकर फल कहल गेल अछि।

गौड़ धर्मशास्त्रकार रघुनन्दन श्रीपदक सरस्वती अर्थ कए सरस्वतीक पूजाक शास्त्रीयता सिद्ध करबाक आयास अपन *तिथितत्त्व* मे कएल अछि। जखन कि *कृत्यतत्त्व*मे ई आजुक दिनमे लक्ष्मी ओ सरस्वती दुनू देवताक पूजा करबाक आदेश ओ व्यवस्था देल अछि। व्याडिक अनुसार श्रीपदक अनेक अर्थ होइत अछि –

लक्ष्मीसरस्वतीधीत्रिवर्गसम्पत्विभूतिशोभासु।

उपकरणवेशरचना पुष्पविधासु च श्रीरिति प्रथिता।।

रघुनन्दनसँ प्राचीन स्मृतिनिबन्धकार बृहस्पति रायमुकुट अपन *स्मृतिरत्नहार*मे लिखैत छथि जे पाश्चात्यक मतें श्रीक अर्थ सरस्वती होइत अछि, तेँ एहि दिनमे सरस्वतिएक पूजा करबाक थिक। गोविन्दानन्द कविकंकणाचार्यक मते आजुक दिनमे सरस्वतीक पूजा ओ अनध्याय बंगाल प्रान्तक लोकाचाररूपमे प्रसिद्ध अछि। एकरा ओ शास्त्रीय नहि मानैत छथि। मैथिल लोकनिकेँ बहुतठाम गौड़देशक धर्मशास्त्रकारसँ मतभेद रहितहुँ सरस्वतीक पूजा आजुक दिनमे करबाक प्रसंग पूरा समन्वय ओ सहमति छैन्हि से बूझि पड़ैत अछि। *पर्वनिर्णय*मे म०म० उमेशमिश्रक लेखसँ ज्ञात होइत अछि जे *देवीभागवत*क अनुसार आजुक दिनमे सरस्वतीक पूजा कएल जाइत अछि। ओतए आजुक दिनमे एहि पूजाक विधान कएल गेल अछि।

आजुक दिनमे वसन्तक संग रति ओ कामदेवक पूजाक विधान *पुराण* सभमे भेटैत अछि। अनन्तदेवक *स्मृतिकौस्तुभ*मे श्रीपंचमीकेँ कामदेवक पूजाक तथा महोत्सव मनेबाक निर्देश अछि। एहि महोत्सवक दू प्रकारक उद्देश्य भए सकैत अछि–एकटा तँ ई जे आजुक दिनमे कामदेव स्वयं भस्म भइओ कए शिवक तपोभंग कएल, जकर उद्देश्य देव समाजक शुभ कल्याणे छल, अधलाह किछुओ नहि। अन्यथा तारकासुरसँ देवता सभकेँ त्राण नहि छलैन्हि। तेँ ओ पूज्य थिकाह। स्वयं अनंग भइयो कए ओ अपन समाजक शुभ कल्याण कएल। दोसर जे पूजित भए पूज्य पूजककेँ संयमित करथि। सच्चरित्र बनाबथि, कामान्धता दूर करथि। संयमित सुरतमे प्रवृत्त करथि। दुराचार अनाचारसँ विरत करथि।

द्वितीय वाचस्पतिमिश्र अपन *कृत्यमहार्णव*मे श्रीशब्दक लक्ष्मी अर्थ कए लक्ष्मीएक पूजाक हेतु संकेत कएल अछि। आओर चतुर्थीयुक्त पञ्चमी शुद्ध पञ्चमीक अभावमे मान्य कहल अछि।

मिथिलाक आचारमे आजुक दिनमे 'हर' क पूजा होइत अछि। लांगल-पद्धति-शिराउरक संग संबन्ध रहने 'सिर पंचमी' कहि मैथिल गृहस्थ आजुक दिनमे 'हर' ठाढ़ करैत छथि ओ हरक पूजा करैत छथि।

यद्यपि सिरपंचमी श्रीपंचमीएक विकृत वा अपभ्रष्ट रूप थिक तथा धान्यलक्ष्मीक प्रति आदरभावहिक स्वरूप हरक पूजाक विधान संभव अछि। बिना हल संचालने धान्य-लक्ष्मीक अस्तित्व कहाँ। तैँ सिर पंचमी दुनू रूपमे सङ्गते अछि - शुद्ध सिर पंचमी रहओ वा श्रीपंचमीक विकृतरूप। मिथिलाक हेतु हरक पूजाक इहो कारण भए सकैत अछि जे हरे जोतला पर जनक सन ज्ञानी दार्शनिक राजा कन्या रूपमे सीता सुकुमारिकेँ पौने छथि।

सिर अथवा हरकेँ चलाए अग्रिम वर्षक धान्य-धनक शुभशकुनसँ परीक्षो करब-एहि दिनमे मैथिल गृहस्थक हर ठाढ़ करबाक उद्देश्य रहल हो। *मत्स्यपुराण*मे छैक जे लक्ष्मी आदि आठटा शरीर धारण कए सरस्वती हमर रक्षा करथि -

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।

एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति।।

बूझि पड़ैए जे लक्ष्मी ओ सरस्वती - दुनू प्रमुख देवताक पूजा मिथिलामे वा भारतक पूर्वांचलमे प्रचलित भेल होएत। पंचमी तिथिक संग श्रीक सम्बन्ध रहने आराधककेँ पंचश्री अर्थात् पाँचटा श्रीक प्राप्ति होइत छैन्हि।

१. मुखश्री- अर्थात् विपुल विद्या, बुद्धि ओ कान्तिक वृद्धि, २. धनश्री - धन धान्यसँ धैर्य आ धर्मक वृद्धि, ३. राज्यश्री - राजकीय सुख-सम्मान, सौभाग्य, सुयश तथा सम्पत्तिक वृद्धि। ४. जयश्री- विपुल विजय ओ बलक वृद्धि तथा ५. गृहश्री- सत्कुलीना सुशीला सुन्दरी गृहिणीक प्राप्ति।

बहुत गाटे बंगाली लोकनिक देखादेखी अजुका दिनकेँ सरस्वतीक दिन मानि शिशुक अक्षरारम्भो करबैत छथि। ओना मिथिलामे 'खड़ी देबाक' अक्षरारम्भक दिन शुद्धक समयमे तकला पर भेटैत छैक। मुदा ई अत्याधुनिक प्रचलन थिक। बंगालहुमे सभ एहि तरहक धारणा नहि रखैत छथि। हमरा जनैत ई आधुनिक

होइतहुँ कोनो अधलाहो प्रवृत्ति नहि भेल। नवीन प्रथा रहितहुँ अनुकरणीय थिक। आजुक दिनकेँ अनध्याय मानबे प्रत्युत कोनादन जकाँ शास्त्रीय आधार रहित लोकाचार मात्रक कारणे विचारणीय लगैये। पवित्र तिथि पुण्यकालसँ युक्त तँ ई अवश्य अछि।

मिथिलामे शारद नवरात्रक समय षष्ठीसँ नवमी धरि चारि दिन मिथिलाक बूढ़-पुरान लोक सरस्वतीशयनक अनुष्ठान करैत छलाह से परम्परासँ सुनैत आएल छी। तथा ओहि चारि दिनकेँ अनध्याय मानबाक प्रथा आइओ काल्हि प्रचलित अछि। कतहु शारद नवरात्रक समयमे सरस्वतीपूजा प्रचलितो हो से सम्भव अछि, मुदा जे धूमधाम वसन्तपंचमी दिन सरस्वती पूजाक मिथिलामे एखन देखि रहल छी से तँ ओहि समयमे नहिए होइत अछि। लगैए जेना दुर्गापूजाक महोत्सवमे एहि पूजाक क्रम समा गेल हो। फलतः ओकर अस्तित्व शास्त्रमे तथा किंवदन्तीमे परम्परा रूपमे बाँचल अछि।

यद्यपि मूर्ति प्रथासँ पूर्व पुस्तक-कलम आदिक पूजा प्रचलित रहल होएत। अतः आइ-काल्हि सेहो पोथी-कलमक पूजा कएल जाइत अछि। बूढ़ बुढ़ानुसक मुँहें सुनैत छी जे कोनो कोनो ठाम धर्मग्रन्थमे कलम-दुआतक पूजाक ओ सारस्वत उत्सव करबाक विधान आजुक दिनमे उल्लिखितो अछि।

वर्तमान समयमे मिथिला, आसाम, बंगाल तथा उड़ीसामे सरस्वतीक मृन्मयी प्रतिमा खूब प्रचलित अछि। आजुक दिनमे एहि सभ प्रान्तमे आस्तिक लोकनि विशेष रूपसँ अनध्याय मनबैत छथि। लिखब-पढ़ब नहि करैत छथि। वर्ष भरिक सारस्वत अनुष्ठानक योजना बनाए ओकर कार्यान्वयनक सत्संकल्प लैत छथि।

मुदा मिथिलामे साधारणतः आस्तिक लोक कुलदेवताक नैमित्तिक पूजा 'पूआ 'पू' आदिक संग अवीर ओ आमक मञ्जरीसँ करैत छथि। पुरुषवर्ग इएह पकवान आदि भगवान् शालग्रामकेँ अर्पित करैत छथि। सरस्वतीक पूजा मिथिलामे आजुक दिनमे पड़ोसी प्रान्त बंगालक प्रभावसँ उन्नैसम शतकक अन्त वा बीसम शतकक आदिसँ आरम्भ भेल हो से हमरा बूझि पड़ैए।

अचलासप्तमी व्रत

माघक इजोरिया पक्षक सप्तमी माकरी सप्तमी, माघी सप्तमी, रथसप्तमी

ओ अचला सप्तमीक नामसँ प्रसिद्ध अछि। आजुक दिनमे प्रातःस्नान ओ अनोन खएबाक प्रथा मिथिलाक परम्परामे अछि। स्नानक विधि ओ मन्त्र विशेष अछि–

सातटा बैरक पात, सातटा आकक पात, सातटा चिरचिरी (अपामार्ग) क पात, सातटा यवक पात लए सूपसँ वा कोनियाँसँ अरुणोदय कालमे सात बेरि माथपर लोक सभ जल ढारैत छथि। बहुत गोटे सात-सातटा बैरक ओ आकक पात मात्र लए स्नान करैत छथि। स्नानक मन्त्र ई अछि –

यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु।
तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी।।
एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्।
मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातं च यत्पुनः।।
इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके।
सर्वव्याधिसमायुक्तं हर माकरि सप्तमि।। इति।।

पुनः सूर्यकें अर्घ्य देबाक मन्त्र ई अछि –

ओं जननी सर्वभूतानां सप्तमी सप्तसप्तिके।
सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्तये।।

*मत्स्यपुराण*मे छैक जे मन्वन्तरादिमे सूर्य अजुके दिनमे रथ प्राप्त कएल। तेँ एहि तिथिक "रथसप्तमी" नाम पड़लैक –

यस्मान्मन्वन्तरादौ च रथमाप दिवाकरः।
माघमासस्य सप्तम्यां तस्मात् सा 'रथसप्तमी'।।

धर्मशास्त्रकार विष्णु कहने छथि –

सूर्यग्रहणतुल्या हि शुक्ला माघस्य सप्तमी।
अरुणोदयवेलायां तस्यां स्नानं महाफलम्।।
अरुणोदयवेलायां शुक्ला माघस्य सप्तमी।
गंगाया यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।
प्रयागे यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।।

ठीक इएह बात शिष्टवचनक उद्धरण दैत वाचस्पतिमिश्र *कृत्यमहार्णव*मे कहलैन्हि अछि –

सूर्यग्रहणतुल्या हि शुक्ला माघस्य सप्तमी।

तस्यां स्नानं च दानं च महापातकनाशनम्।।

अरुणोदयवेलायां तस्यां स्नानं महाफलम्।

*कृत्यसारसमुच्चय*मे एहि सन्दर्भमे अमृतनाथ कहैत छथि जे दू दिनमे यदि अरुणोदय कालमे सप्तमी रहैक तँ पहिलुके दिनमे स्नान करबाक थिक। हेतु जे स्नानमे अधिककालव्यापी सप्तमी अपेक्षित अछि।

यदि पहिल दिन दू दण्ड षष्ठी रहैक आ पछाति सप्तमी भए जाइक तँ पहिले दिन षष्ठीमे सप्तमीक प्रवेश कराए अरुणोदयकालमे स्नानादि कर्तव्य थिक। धर्माशास्त्रकार विष्णु एहि तरहक निर्णय देने छथि –

अचला सप्तमी दुर्गा शिवरात्रिर्महामखः

द्वादशी वत्सपूजायां सुखदा प्राग्युता सदा।।

अरुणोदयकालक निर्णय *देवीभागवत*मे एना कएल गेल अछि –

चतस्त्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते।।

पञ्च पञ्च उषःकालः सप्त पञ्चारुणोदयः।

अष्ट पञ्च भवेत् प्रातः शेषः सूर्योदयो मतः।।

एहि व्रतक ओ आजुक दिनमे प्रातःकालक स्नानक महत्त्व मिथिलामे अधिक मानल गेल अछि। सूर्यक व्रतमे क्षार ओ लवणक भोजन निषिद्ध अछि। दूध सभकेँ पर्याप्त मात्रामे सुलभतया उपलब्ध होएब कम संभव तेँ गुड़खीरक व्यवहार आजुक दिनमे साधारण परिवारमे कएल जाइत अछि। बहुत बूढ़ पुरान लोक कहैत छथिन्ह जे भगवान् सूर्यकेँ गुड़खीर अधिक प्रिय छैन्हि। तेँ इएह खएबाक थिक। एहिमे ऊपरसँ दूध मिलाओल जाइत अछि आ अपन कथाक युक्तिमे कहैत छथिन्ह जे – 'छठि पाबनिक खरना गुड़खीरे लए कए जाइत अछि।'

सम्पन्न लोक दम्पतिभोजन, ब्राह्मणभोजन, तिल कम्बल आदि दान सेहो करैत छथि जे विशेष फलद कहल गेल अछि। भोरमे निर्धूम आगि पजारि स्नान

कएनिहारकें प्रसन्न करबाक सेहो विधान अछि। मुदा ई माघ भरि यदि करी तँ आओर नीक। ओ असलमे माघमासहिक कृत्य थिक।

*ब्रह्मपुराण*मे एहि सप्तमीक प्रसंग कहल छैक जे माघ शूदि सप्तमीकेँ पूषा नामक महारवि कश्यपसँ जन्म प्राप्त कएल। तेँ हुनक पूजा तथा उपवास (व्रत) जितेन्द्रिय भए करबाक चाही। अर्घ, पुष्प, धूप, दीप तथा मनोनुकूल भोजन सामग्री, नृत्य-गीत-वाद्य आदिसँ ब्राह्मणभोजन, हवन तथा तर्पणसँ भगवान् सूर्यकेँ आराधित ओ प्रसन्न करबाक चाही। ई कथा *कृत्यमहार्णव*मे द्वितीय वाचस्पति मिश्र द्वारा उद्धृत अछि –

शुक्लायां माघसप्तम्यां पूषा नाम महारविः।
आदित्यः कश्यपाज् जज्ञे सहस्त्रकिरणो महान्।।
तस्मात् तं पूजयेत् तत्र सोपवासो जितेन्द्रियः।
अर्घैः पुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैर्भक्ष्यैर्मनोरमैः।।
गीतैर्नृत्त्यैस्तथा वाद्यैर्होमैर्ब्राह्मणतर्पणैः।
अष्टम्यां च पुनर्भक्ष्यैः पूज्यो मधुघृतप्लुतैः।।

भीष्म अष्टमी

*पद्मपुराण*मे कहल अछि जे माघशुक्ल अष्टमीकें भीष्मक तर्पण कएला पर सन्ततिलाभ होइत छैक आओर *महाभारत*मे कहल अछि जे एहि तर्पणक कएला पर वर्षभरिक ज्ञाताज्ञात पाप कटि जाइत अछि –

माघे मासि सिताष्टम्यां सलिलैर्भीष्मतर्पणम्।
श्राद्धं च ये नराः कुर्युस्ते स्युः सन्ततिभागिनः।। – पद्मपुराण
शुक्लाष्टम्यां तु माघस्य दद्याद् भीष्माय यो जलम्।
संवत्सरकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।। – महाभारत

ई दूनू पद्य *पर्वनिर्णय*मे कहल अछि।

तर्पणक मन्त्र ई अछि –

वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च।
अपुत्राय ददाम्येतत् सलिलं भीष्मवर्मणे।।

वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च।

अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।

आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।।

शिवरात्रिव्रत (शिवराति)

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशीके शिवरात्रिव्रत मनाओल जाइत अछि। अहोरात्र उपवास वा दिनभरि उपवास कए भिनसरमे पारण वा साँझमे भोजन कएल जाइत अछि। एकर प्रचार मिथिलामे एतेक अधिक अछि जे नित्यव्रते जकाँ अनुष्ठित होइत अछि।

प्रदोष तथा निशीथमे चतुर्दशी जहिया पड़ैत छैक तहिया ई व्रत मान्य थिक। यदि पहिल दिन निशीथमे आ दोसर दिन केवल प्रदोष कालधरि चतुर्दशी रहैक तँ पूर्व दिनहि मे व्रत करी। यदि पूर्व दिनमे निशीथक बाद चतुर्दशी पड़ैक आओर दोसर दिन निशीथसँ पूर्व काल धरि चतुर्दशी पड़ैक तखन दोसरे दिन व्रत करी। चौदह वर्ष धरि ई व्रत कएला पर एकर उद्यापन कएल जाइत अछि।

बहुत ठाम शिवमन्दिरमे रातिक चारू पहरमे पूजा कएल जाइत अछि, जाहिमे दूध, घृत ओ मधुसँ शिवलिङ्गक अभिषेक विहित अछि। नृत्य, गीत ओ जागरण कएल जाइत अछि।

बूढ़ पुरानक मुँहसँ सुनल अछि जे शिवसँ बढ़ि कए देवता नहि छथि, अश्वमेधसँ बढ़ि कए यज्ञ नहि होइछ आओर शिवरातिसँ बढ़िकए व्रत नहि होइछ।

मिथिलाक मान्यताक अनुसार शिवपार्वतीक विवाहक उपलक्ष्यमे ई व्रत अनुष्ठित होइत अछि। ईहो सुनैत छी जे लिङ्गक रूपमे शिव आजुक दिनमे आविर्भूत भेल छथि। अजुके दिनमे शिव विषपान कएने छथि। एकटा कथा छैक जे पार्वती कहलखिन्ह जे हमर सहयोग बिना अहाँ किछु नहि कए सकैत छी। ताहि पर शिवजी रुष्ट भए कार्ये सब छोड़ि देल। परिणाम ई भेलैक जे सम्पूर्ण पृथिवी अन्धकाराच्छन्न भए गेलैक। भयभीत पार्वती देवगणक संग तखन शिवक आराधना आजुक दिनकेँ कएल। तेँ ई व्रत ओ पूजा प्रशस्त मानल गेल।

एकटा दुराचारी व्याध भूखेँ प्यासें तबाह भए बेलक गाछतर विश्रामक हेतु बैसल छल। ओतहि शिवलिङ्गो एकटा स्थापित छलैक। गाछसँ बेलपात ओ एक बिन्दु ओस खसलैक जे एहि व्याधक शरीरक स्पर्श कए शिवलिङ्ग पर स्वतः पड़लैक तकर फल दिनक माहात्म्यें ओहि व्याधकेँ शिवलोक दिवङ्गत भेलापर भेटलैक–ई कथा बंगालमे प्रसिद्ध अछि।

होलिकादाह

होलिका नामक राक्षसी तपोबलसँ भगवान् शिवकेँ प्रसन्न कए वर प्राप्त कएने छल, किन्तु दुराचारिणी छल आओर समाजक उत्पीड़न करैत छल। तेँ भगवान् विष्णु ओकरा मारि देलैन्हि, मुदा शिवजीक आज्ञासँ होलिकादाह उत्साह पूर्वक उत्सव रूपमे मनाओल जाए लागल। एकर चिता–भस्म शरीरमे लगौला पर शुभ होइछ–ई कथा *भविष्यपुराण*मे कहल गेल छैक।

दन्तकथा छैक जे प्रह्लादकेँ कोड़ामे बैसाए होलिका जरएबाक व्यवस्था हिरण्यकशिपुक आज्ञासँ कएलक मुदा ओ स्वयं जरि गेलि आओर भगवानक भक्त प्रह्लाद बाँचि गेलाह। तहियासँ ई उत्सव मनाओल जाए लागल। भारतक अधिक भागमे ई पर्व मनाओल जाइत अछि। दक्षिण भारतमे एकर प्रचार कम अछि। उड़ीसामे दोलयात्रा आजुक दिन अनुष्ठित होइत अछि।

भगवानकें दोल पर बैसाए यात्रा कराओल जाइत अछि। एहिमे भगवानपर ओ परस्पर लोकपर सिन्दूर अवीर छीटल जाइत अछि। एहि पर्वक अधिक प्रचार अछि। समाजक सभ वर्गक लोक एहिमे भाग लैत अछि। नवअन्न (रबीक फसल भेलासँ) ई उत्सव मनाओल जाइत अछि। नवका गहूमक मालपुआ, माछ, मांस, ओ विशिष्ट भोजनक संग भाङ्क सेवन शिष्ट समाजहुमे प्रचलित अछि।

पूर्वमे मिथिलामे पूर्णिमा दिन धरि–होली जरएबासँ पूर्वधरि–रंग अवीरक खेल होइत छल जे वसन्त पञ्चमीसँ आरम्भ होइत रहए। ओकर बाद चैतावर (चैती) गाओल जाइत छल, एक दिन धुरखेल होइत छल। मुदा आब होलिकादाह सम्पन्न भेलाक बादे आन प्रान्तक प्रभावें वा अनुकरणें रंग अवीरक एक दिन खेल होइत अछि। आजुक साँझमे फगुआक चुमाओन नवदम्पतिक होइत अछि। होलिकादाहकें सम्मत जरएबाक प्रथा सेहो सुनल जाइत अछि। पुरान वर्षक

समाप्ति ओ नववर्षक आरम्भ मानि गतवर्ष जे गेलाह हुनका (वर्ष कैं) जराओल – एहि भावनासँ सम्वत पद सम्मत पदें कहल जाइत अछि। उत्तर प्रदेशमे गला मिलबाक प्रथा प्रचलित अछि। आपसी वैरभावकें छोड़ि सबसँ सब गला मिलैत छथि, दोस्ती कायम करैत छथि। ठीक इएह भावना इएह भाव इएह आचरण विजयदशमीकें बंगाली समाजमे अनुष्ठित होइत अछि। मुदा मिथिलामे एकर रेवाज नहि अछि।

होलिकादाह प्रदोष कालमे जहिया पूर्णिमा रहैक तहिया करी भद्रामे होलिकादाह निषिद्ध अछि। तें दू दिन यदि प्रदोष कालमे पूर्णिमा पड़ैक तँ दोसरे दिन होलिका दाह कएल जाए।

सपता विपता

ई संपदा ओ विपदाक अपभ्रंश रूप थिक सपता विपता। होलीक परात नववर्षक आरम्भमे सूर्यक पूजा कए सातटा लाल पीयर रंगक डोरा बाँहि पर बान्हल जाइत अछि, जे वर्ष भरि परिवारमे शुभ सम्पन्नता रहए। कथामे छैक जे एकटा रानी ई स्वयं बन्हलन्हि आओर अपन पतिकेँ (राजाकें) बन्हबाक हेतु देलखिन्ह। मुदा राजा ओकर अवहेलना कएल तँ कष्टमे परलाह। पुनः एहि डोरक बन्हलासँ सुख शान्ति भेटलैन्हि। तँ वर्षारम्भमे ई सप्तडोरक बन्धन अनुष्ठित होइत अछि, जे छमाही सूर्यव्रतक समापनमे वैशाखक शुक्लपक्षक रविमे छोड़ल जाइत अछि।

अवधेय अछि जे वैदिक परम्परा ओ ज्योतिष सिद्धान्तक अनुसार चैत्रहिसँ नववर्षक आरम्भ होइत अछि। मैथिल वेदाध्ययनक अपन परम्परासँ संस्कारवश साओनमे वर्षारम्भ मानल अछि। तँ सपता विपताक कथाक संगति बैसैत अछि।

एहि व्रतक बहुत प्राचीनता वा शास्त्रीय प्रसिद्धिक अभाव रहनहुँ तीन चारि सय वर्षसँ अन्दाजन अवश्य प्रचलित अछि। पुरान पञ्चाङ्ग सबमे एकर उल्लेख देखैत छी।

रामनवमी व्रत

चैत्र शुक्लपक्षमे वासन्ती नवरात्र मनाओल जाइत अछि। भगवती दुर्गाक पूजा आश्विनैक दूर्गापूजा जकाँ सम्पादनीय कहल गेल अछि। चैत्र शूदि नवमीके भगवान् रामचन्द्रक जन्मदिन सेहो मनाओल जाइत अछि। एहि उद्देश्यें व्रत ओ

पूजा रामचन्द्रक कर्तव्य थिक। *ब्रह्मपुराण*मे एहि व्रतक विधान देखल जाइत अछि, जकर कएलासँ ब्रह्महत्या आदि महापातकोसँ लोककेँ मुक्ति भेटैत छैक, मोक्षरूप परम पुरुषार्थक प्राप्ति होइत छैक। एक दिन पूर्व एकभुक्त कए दुनू साँझ निराहार रहि प्रातः काल पारण करी ओ भगवान् रामक पूजा करी – ई पहिल कल्प भेल। नक्तव्रत कए दिन भरि निराहार रहि साँझमे फलाहार वा अन्नाहार करी – ई दोसर कल्प भेल। भात खाएब छोड़ि रोटी खाइ–ई तेसर कल्पक व्रत भेल, जकर प्रचार अधिक अछि। ई व्रत नित्यव्रत जकाँ मान्य अछि। एकर अधिकारी महिला, पुरुष, विप्र, शूद्र सब होइत अछि।

ई नवमी मध्यदिन धरि जहिया पड़ैक तहिये व्रत करी। दू दिन जँ मध्यदिन धरि नवमी पड़ैक तँ दोसरे दिन व्रत करी। अष्टमीयुक्त नवमी एहि व्रतमे विहित नहि अछि। एहि नवमीकेँ यद पुनर्वसु नक्षत्र पड़ैत होइक तँ आओर नीक थिक। स्मृतिवचन छैक –

चैत्रशुक्ला तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि।

सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यतमा भवेत्।।

चैत्रशुक्ल अष्टमीकेँ दू टा धार्मिक अनुष्ठान विहित अछि, पञ्चाङ्ग (पतरा) मे एकर उल्लेख भेटैत अछि। मुदा सम्प्रति मिथिलामे एकर प्रचार नहि अछि। (क) ब्रह्मपुत्र नदीमे स्नान ओ अशोक कलिकापान। ब्रह्मपुत्र नदीमे स्नान कएलासँ पापक नाश ओ ब्रह्मपदक प्राप्तिक उल्लेख एकर संकल्पमे कएल जाइत अछि। आओर (ख) अशोककली के पीसिकए पान कएल जाइत अछि, जाहिसँ वर्ष भरि शोक नहि होइत अछि। ई कथा *तिथितत्त्वचिन्तामणि*मे कहल गेल अछि –

वारुणी, महावारुणी ओ महामहावारुणी योग

चैत्र कृष्ण त्रयोदशीके वारुणी योग कहल गेल अछि। एहि तिथिमे गङ्गास्नान कएने एक सय सूर्यग्रहणमे कएल गेल स्नानक सुफल भेटैत छैक। इएह तिथि यदि शनि दिनके पड़ैक तँ महावारुणी कहबैत अछि। एक कोटि सूर्य ग्रहणक स्नानक सुफल एहि योगमे गङ्गास्नानक कहल गेल अछि। इएह तिथि ओ दिन यदि शतभिषा नक्षत्रसँ युक्त हो तँ महामहावारुणी कहबैत अछि। एहिमे गङ्गस्नान कएलासँ आओर अधिक फल कहल गेल अछि –

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी।
गङ्गायां यदि लभ्येत शतसूर्यग्रहैः समा।।

शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता।
गङ्गायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।।

शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि।
महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्।।

घाँटो-(घण्टाकर्ण)क पूजा

एहिना वैशाखमे घाँटोक पूजा होइत अछि। ओहो भाइएक कल्याण कामनासँ पूजल जाइत अछि। तेँ केवल महिले समाज द्वारा अनुष्ठित होइत अछि। पूजाक बाद घाँटो भाइसँ फोराओल जाइत अछि तथा भाइकें जलपान कराओल जाइत अछि। असलमे ई घाँटो (घण्टाकर्णक) अपभ्रंश थिक। घण्टाकर्ण शिवक पारिषद थिकाह। शिवपुराणमे वचन छैक –

'घण्टाकर्णो गणः श्रीमान् शिवस्यातीव वल्लभः'।

ई खूब पैघ वीर छलाह। तें भाइसँ घाँटो फोड़ेबाक तात्पर्य जे हुनके सन वीर–पराक्रमी भाइ होथि। शीतलाक प्रकोपसँ बचबाक लेल हिनक पूजा कएल जाइत अछि।

मिथिलामे मेष संक्रान्तिसँ एक दिन पहिने मासान्तकें ओ स्थापित होइत छथि। भाँटिक फूल हिनका प्रशस्त छैन्हि। पहिल दिन हिनका फुटहा, दोसर दिन सतुआ आ तेसर दिन बासि बड़ी–पूरी चढ़ाओल जाइत अछि आओर मासादिएकें हिनक विसर्जन होइत अछि। घाँटो माटिक बनाओल जाइत अछि। एक–डेढ़ इंच लम्बा गोलाइ नेने डमरुक आकृतिक ई बनाए सातटा घाँटो बैसाए पूजल जाइत छथि। कतहुसँ सुनल अछि जे हिनका प्रणाम करबाक मन्त्र एना अछि –

घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधिविनाशन।
विस्फोटकभयप्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल।।

किछु लोकक कहब छैन्हि जे प्रणाम मन्त्रक अनुसार एहि समयमे वातावरणक प्रभावें कोदबा दामस आदि विस्फोटक रोग ओ विसूचिका रोगक प्रशमनार्थ दैविक उपाय रूपमे ई पूजा अनुष्ठित होइत अछि।

ई पूजा एही रूपमे बङ्गालहुमे मनाओल जाइत अछि। ओतए ई घेंटू कहबैत छथि।

मेष संक्रान्ति (जूड़ शीतल)

मिथिलामे मेष संक्रान्तिक महत्त्व अधिक अछि। मृत पितर लोकनिक ओ अपन शुभ सुखार्थ सतुआ, यव, जलभरल घैल, पंखी आदि दान कएल जाइत अछि। सतुआइनि पावनि इएह कहबैत अछि, आजुक दिन टटका बड़ी-पूड़ी भगवान् भगवतीके चढ़ाओल जाइत अछि। गलन्तिका-सच्छिद्र घट-तुलसी गाछक ऊपर तथा शिवलिङ्ग पर राखल जाइछ जे ठोपे ठोपे जल ओहि धर्मवृक्ष तथा शिवलिङ्ग पर खसैत रहैक। परात भने बसिया भात, बड़ी ओ पूड़ी भगवतीकें चढ़ाओल जाइत अछि। खूब भोरे बूढ़ महिला ठंढा जल छोटक माथ पर आशीर्वाद रूपमे छिटैत छथि। शुभशान्तिक कामनासँ चूल्हिकेँ विश्राम देल जाइत अछि। बसिये वस्तु खाएल जाइछ वा ईंटा जोड़ि चूल्हि बनाए किछु उदरपूर्त्यर्थ भनसा घरक बाहर बनैत अछि। आजुक दिन जूड़शीतल पाबनि लोक मनबैत अछि। पानि माटि देह पर सभकें सभ दैत छैक 'शाबरोत्सव' मनाओल जाइत अछि। कुश्तीक आयोजन होइत अछि। शिकार खेलएबाक प्रथा अछि।

अक्षय तृतीया व्रत

वैशाख शूदि तृतीयाके गौरीक प्रीत्यर्थ व्रत कएल जाइत अछि। अहोरात्र निराहार रहब, नक्त व्रत-एक साँझ निराहार रहब, फलाहार करब महिला समाजमे प्रसिद्ध अछि। वर्ष भरिमे चारिटा तृतीया गौरीक व्रतरूपमे अनुष्ठित होइत अछि। वैशाख, जेठ, साओन ओ भादवक शुक्ल पक्षक तृतीया (अक्षय, रम्भा (पञ्चाग्नि-पचाइक), मधुश्रावणी ओ हरितालिका) प्रसिद्ध अछि।

ई अक्षय तृतीया शुद्ध यदि उपलब्ध नहि हो तँ चतुर्थीयुक्तमे व्रत करी, द्वितीया युक्तमे नहि। अगत्या पक्षमे, व्रतक लोपे यदि अन्यथा होइत रहैक तँ द्वितीयायुक्त तृतीयो व्रतक हेतु ग्राह्य थिक।

आजुक दिनमे गङ्गास्नानक विशेष माहात्म्य धर्मशास्त्रमे कहल अछि। आजुक दिन अक्षयतृतीया व्रत महिला लोकनि एहि उद्देश्यें करैत छथि जे भगवती गौरी हुनक सौभाग्यकें अक्षय राखथि।

आजुक दिनमे कएल गेल दान यवान्न, यवक सातु,पंखी (बीअनि), जलपूर्ण घट, सुवर्ण, गाय आदि अक्षय पुण्य फल दैत छैक। तें दानो करबाक विधान शास्त्रमे कएल गेल अछि। पितृपार्वणहुक विधान मिथिलाक धर्मशास्त्रमे देखल अछि जाहिसँ अक्षय तृप्ति पितर पबैत छथि।

मिथिलामे बेलक वा चीनीक सर्बत लोक पिअबैत छैक – ई व्यवहार देखैत छी।

*पुराण*क अनुसार सत्ययुगक आरम्भ एहि तिथिके भेल अछि। परशुराम केँ अर्घ्य एही तिथिके देल जाइत अछि।

जानकी नवमी

*भविष्यपुराण*क अनुसार वैशाख शूदि नवमीकें भगवती जानकीक जन्म भेलैन्हि, तेँ ई तिथि जानकीनवमीक नामे प्रसिद्ध अछि। एहि प्रसंग *पर्वनिर्णय*मे पण्डित माधव झा शास्त्री नीक विचार कएल अछि। जानकीक व्रत ओ पूजाक विधान आजुक दिनमे कएल गेल अछि। मुदा एकर प्रचार-प्रसार कम भेल।

जेहन प्रशस्त गृहस्थ जीवन भगवती गौरीक देखैत छी तेहन सीता, रुक्मिणी वा लक्ष्मीक नहि। तेँ बूझि पड़ैए एहि व्रतक ओ पूजाक प्रचार कम भेल हो। 'सीताक जनम वियोगहिं बीतल' कहबी रहने केयो हुनकासन जीवनक कामना प्रायः नहि करैत अछि। एहि दिन 'मैथिली दिवस' मनाओल जाइत अछि जे भारतदेशक स्वतन्त्रताक बादसँ चलि पड़ल अछि। आब जागरूक मैथिल लोकनिक अधिक आकर्षण एहि पर्वमे देखैत छथि।

वटसावित्री व्रत (बड़िसाति)

ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्याकेँ ई व्रत अनुष्ठित होइत अछि। महिला लोकनि आजीवन सधवा रहबाक कामनासँ सावित्रीक व्रत करैत छथि। नव विवाहिता यथासम्भव वरक संग अथवा एकसरिओ वरिसाति अवश्य पूजैत छथि। बड़क गाछ वा ठाढ़िकेँ रोपि लाल डोरासँ बेढ़ देल जाइत अछि। बीअनि उसरगल जाइत अछि ओ सधवा भोजन कराओल जाइत अछि। सावित्री सत्यवानक कथा सुनल जाइत अछि।

धर्मशास्त्रमे ई व्रत अनुष्ठेय कहल गेल अछि। नक्तव्रत वा सविधि व्रत कए (एकभुक्त कए अहोरात्र निराहार रहि) प्रातः काल पारणाक विधान अछि।

सावित्री सत्यवानक पूजा ओ कथाश्रवण विहित अछि, मुदा व्यवहार केवल बड़क ठाढ़ि वा गाछ रोपि कए पूजैकटा रहि गेल अछि। आन प्रान्तमे ई जेठक पूर्णिमाके सम्पादित कएल जाइत अछि।

ई अमावास्या चतुर्दशी विद्धा करी यदि शुद्धा उपलब्ध नहि हो, आन अमावास्या प्रतिपद्युता विहित अछि। मुदा ओकर अपवाद शास्त्रवचन- *स्कन्द पुराण*क वचन-उपलब्ध रहने ई चतुर्दशीयुते करी।

सधवासँ अनुष्ठेय पूजामे प्रथमतः गौरीक पूजा तँ अवश्य कर्तव्य थिक। ओकर बादे सावित्रीक पूजाक विधान अछि। जहिना सावित्रीकेँ अक्षय सौभाग्य रहलैन्हि तहिना हमरहु रहए-एहि कामनासँ ई व्रत ओ पूजा कर्तव्य थिक।

पञ्चाग्निव्रत (पचाइक)

रम्भा तृतीया आ पञ्चाग्नि व्रत एके थिक। ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयाके रम्भा ई व्रत कएल तँ रम्भातृतीया एकर नाम पड़ल से रघुनन्दन भट्टाचार्य बंगाली धर्मशास्त्रकार कहल अछि आओर अन्वर्थक पञ्चाग्निव्रत (ऊपर कपार जरौनिहार सूर्य आओर चारूकात आगि जराए देह केँ पवित्र करबाक हेतु तपाएब) थिक, जकर अनुकल्प सधवा लोकनि अक्षय सौभाग्यक कामनासँ दिनभरि निराहार रहि साँझमे भोजन करैत छथि।

दूनू साँझ निराहार रहैत छथि वा फलाहार कए व्रतक अनुपालन करैत छथि। ई तृतीया शुद्ध यदि नहि भेटए तँ द्वितीयायुक्त करी, चतुर्थीयुक्त नहि, से स्पष्ट शास्त्र सबमे निर्दिष्ट अछि। ई गौरीक प्रीत्यर्थ अनुष्ठेय थिक।

गङ्गादशहरा

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी गङ्गादशहरा कहबैत अछि। एकर उल्लेख *ब्रह्मपुराण*, *ब्रह्मवैवर्तपुराण*, *भविष्यपुराण*मे तथा अन्यत्र भेटैत अछि। आजुक दिन गङ्गास्नान कएलासँ दश जन्मक दशो प्रकारक पाप कटि जाइत अछि। *पराशरभाष्य*मे यमक वचन उद्धृत अछि, जकर चर्चा प्रसङ्ग पाबि ननौर ग्रामवासी लक्ष्मणशर्मा *पर्वनिर्णय*मे कएल अछि –

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां हस्तयोगतः।
दशजन्माघहा गङ्गा दशपापहरा स्मृता।।

चोरि, हिंसा ओ आनक पत्नीक संग, ई तीनटा शारीरिक पाप कहबैत अछि। असंबद्ध प्रलाप, चुगली करब, कठोर वा कटु बाजब ओ झूठ (मिथ्या) बाजब–ई चारिटा वाचिक पाप थिक। आनक अनिष्टचिन्ता, आनक धनक लोभ, मिथ्या दोषोरोपण ई तीनटा मानसिक पाप थिक। सभक संकलन कएला पर दश प्रकारक पाप होइत अछि।

आजुक दिनमे कोनो नदीमे स्नान कए सन्ध्या तर्पण कएलासँ धर्म होइत छैक। काशीक दशाश्वमेध घाट पर स्नान कए विश्वनाथक दर्शन–पूजन तँ प्रसिद्ध अछिए। आजुक दिन मे सेतुबन्ध रामेश्वरक दर्शन मैथिल समाजमे प्रशस्त मानल गेल अछि।

रथयात्रा

आषाढ़ शुक्ल द्वितीयाके भगवान् जगन्नाथ रथपर चढ़ि यात्रा करैत छथि। पुनश्च एकादशीके अपन घर आबि जाइत छथि। एहिमे रथकें घीचब ओ रथारूढ़ भगवानक दर्शन करब विशेष फलद कहल गेल अछि। जगन्नाथपुरीमे ई आयोजन सबसँ अधिक होइत अछि। हेतु जे मूल ओएह स्थान एकर थिक। एकर अनुकरण देश भरिमे मिथिलहुमे हमर गाम लग सरिसब–पाहीमे सेहो होइत अछि। बेरू पहर सप्ताह भागवतक कथा श्रवण, प्रातःकाल भागवतक पारायणक संग श्रीभगवानक पूजा कएल जाइत अछि।

आर्द्राक पातरि

आषाढ़मे आद्रानक्षत्रमे कुलदेवता ओ विषहराकेँ पायस अर्पित कए ओहि प्रसादक खएलासँ सर्पविषक प्रभाव शरीरमे नहि हो से मान्यता छैक। *शास्त्र पुराण*मे कहल छैक जे अपना सभक व्यवहारहुमे अछि –

आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः।

अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति।।

एतए क्षीरक अर्थ खीर अर्थात् पायस थिक।

आब पुण्यजनक किछु योग ओ मासक कोनो कोनो विशेष करणीय विषयक प्रसङ्ग एतए किछु कहब आवश्यक बूझि पड़ैत अछि।

व्यासपूर्णिमा – गुरुपूजा

देवते जकाँ गुरुक पूजा आषाढक पूर्णिमाके शिष्य लोकनि करैत छथि। ई व्यासपूर्णिमा एवं गुरुपूर्णिमाक नामेँ प्रसिद्ध अछि। पुरान लोकक मुँहे सुनल अछि जे मिथिलामे प्राचीन कालमे श्रावणी पूर्णिमासँ आरब्ध वेद वा शास्त्रक अध्ययन गुरुपूर्णिमाकें सम्पन्न कए एक मासक अवकाश मनाओल जाइत छल। इएह कारण थिक जे मिथिलाक पतरा (पञ्चाङ्ग) साओनसँ आरम्भ कएल जाइत अछि।

ई सभटा पूजा अपन अपन विशेषताकेँ सुरक्षित रखने अछि, जे कथा, फलश्रुति ओ पूजाक प्रक्रिया एवं उपचारमे विद्यमान अछि।

हरिवासर योग

आषाढ़, भादव ओ कार्तिकक शुक्ल पक्षक द्वादशी यदि बुध दिनकें पड़ैक आओर क्रमशः अनुराधा, श्रवणा ओ रेवती नक्षत्रक योग होइक तँ ओ हरिवासर कहबैत अछि –

आ-भा-का सितपक्षे मैत्रश्रवणरेवती।
द्वादशी बुधवारेण हरेर्वासर उच्यते।।

एहि व्रतक अनुपालन एना होइत अछि। दशमीकेँ एकभुक्त करी, एकादशी ओ द्वादशी निराहार उपवास करी, त्रयोदशीके पारणा कए एकसाँझ दिनमे अन्न भोजन करी और राति मे किछु नहि खाइ। पारणा कए ब्राह्मण भोजन कराबी।

ग्रहण ओ चूड़ामणि योग

अमावास्यामे सूर्यग्रहण ओ पूर्णिमामे चन्द्रग्रहण लगैत अछि। एकर परिज्ञान देखलासँ होइत अछि। कहबी छैक 'गहन लगनहि परिचय'। ई ग्रहण क्रमशः रवि ओ सोमके यदि लगैत छैक तँ 'चूड़ामणि' योग कहल जाइत अछि। *गरुडपुराण*क वचन अछि –

सूर्यग्रहः सूर्यवारे सोमे सोमग्रहस्तथा।
चूड़ामणिरयं योगस्तत्रानन्तफलं स्मृतम्।।
अन्यस्माद् ग्रहात् कोटिगुणमत्र फलं भवेत्।

ग्रहणक समयमे स्नानक विधान अछि दान, जप, पुरश्चरण, पार्वण–श्राद्ध, दीक्षा आदिक सेहो विधान अछि। पुनश्च उगरास स्नान सेहो करी –

ग्रस्यमाने भवेत् स्नानं मध्ये होमसुरार्चनम्।
मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्ते स्नानं समाचरेत्।।

वृद्धगौतम कहैत छथि – सूर्य ग्रहणसँ चारि पहर पूर्व भोजन छोड़ि दी आओर चन्द्रग्रहणसँ तीनि पहर पूर्व। हेतु जे ग्रहण समयमे पेटमे भोजन रहला पर कुप्रभाव पड़ैत छैक, तर्पण, जप तथा दान आदिक अधिकार नष्ट भए जाइत छैक आ अशौच लागि जाइत छैक। बालक, वृद्ध ओ आतुरक हेतु ई नियम नहि लगैत अछि। ओ सब जतबे काल पूर्व पार लगैन्हि भोजन नहि करथि –

सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना।।

व्यवहार अछि जे सिद्ध अन्न ग्रहण भेलासँ छूति जाइत अछि। नहि खएबाक चाही। मुदा किछु वस्तु एहन अछि जाहिमे कुश ओ तिल दए देला पर नहि छुतैत अछि। यथा जल, तक्र, दही, दूध, घी, सूखा मधुर आदि। कुल्लूक भट्ट कहैत छथि –

अन्नं पक्वमिह त्याज्यं स्नानं सवसनं गृहे।
वारितक्रारनालादि तिलदर्भैर्न दुष्यति।।

मासक कृत्य

मास मासक माहात्म्य सेहो बुझबाक थिक। चैतमे नीम भाटाक खएने कोनो तरहक विषक प्रकोपसँ लोक बँचैत अछि। पेटमे चाली आदि नहि होइत छैक। इएह कारण छैक जे वैशाख धरि लोक सहिजन–मुनिगा–खाइत अछि। एकर खएलासँ पेटक चाली नष्ट होइछ, शीतलाक प्रकोप–कोदबा दामससँ लोक बँचैत अछि। मुनिगाक फूलक तरुआ खएलासँ बातरसमे लाभ होइत छैक। फागुनमे पाकड़िक टुस्साक तरकारी तरुआ लोक खाइत अछि। वैशाखमे सतुआ आ माघ मे गुड़ तिलक सेवन शरीर केँ स्वस्थ रखैत अछि। आश्विनमे खञ्जनक दर्शन, विजयादशमीक दिन नीलकण्ठ ओ जगदम्बाक दर्शन शुभकारक कहल गेल अछि।

हमरा सभक खानपान, आहार-विहार ओ आचार-विचार पर आयुर्वेदक खूब प्रभाव अछि, जाहिसँ दीर्घ जीवनक ओ स्वस्थ रहबाक प्रयासमे हमरा सभक पूर्वजक चिन्तन परिलक्षित होइत अछि। *चरकसंहिता*क दीर्घ जीविताध्यायक अनुसारहि पएर धोए आर्द्रपाद भए भोजनक आ शुष्कपाद भए शयनक विधान अछि। उत्तेजनावर्धक खानपानक त्याग ओ अनुत्तेजक पौष्टिक पदार्थक भोजन आयुर्वेदानुमते धर्मशास्त्रद्वारा मान्य अछि।

कार्तिक, माघ ओ वैशाख धर्ममास कहबैत अछि। एहि तीनू मासक पूर्णिमा ओ संक्रान्तिक विशेष महत्त्व शास्त्रमे कहल अछि। एहि समयमे मास भरि गङ्गाक निकट लोक रहबाक प्रयास करैत अछि। काशी वा सिमरियामे कार्तिक, प्रयागमे माघ ओ हरिद्वारमे वैशाखभरि लोक रहैत अछि। अथवा घरहुपर रहि प्रातः स्नान करैत अछि। प्रातःकालक निर्णय *तिथितत्वचिन्तामणि*मे उद्धृत वचनक अनुसार एना अछि – तरेगन देखाइते रहए, ओ उत्तमकल्प भेल; सूर्योदयसँ पूर्व और तारा नहि देखाए, ओ मध्यमकल्प भेल आओर सूर्योदय कालक स्नान अधमकल्प भेल –

उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्।
सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।।

एकर फल शास्त्रमे एना वर्णित अछि –

यो माघमास्युषसि सूर्यकराभिताम्रे
स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे।
उद्धृत्य सप्त पुरुषान् पितृमातृवंश्यान्
स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।।

उपसंहार

एहि समयमे पूजा, व्रत, उपवास तथा स्नान दान आदिक कएलासँ मैथिल आचार ओ संस्कारक संरक्षण संवर्द्धनक संग मोन अवदात (विशुद्ध) ओ विचार उदात्त होइत अछि। जे चतुर्वर्गक-धर्म, अर्थ, काम ओ मोक्षक एकटा साधन थिक। दार्शनिक चिन्तन ओ योगक अभ्यास आदिओ एही उद्देश्यक पूर्ति करैत अछि। विहित ओ अनुरूप जीविका द्वारा जीवनक यापन उपर्युक्त आचारक

परिपालन ओ आवश्यक पारिवारिक तथा सामाजिक दायित्वक पूर्तिमे लागल रहलासँ परद्रोह आदि कायिक, वाचिक तथा मानसिक अशुभ कर्म करबाक अवसरे कहाँ ककरहु भेटि सकैत छैक। स्थावर, जंगम, पशु, पक्षी, मानव ओ देव आदि सभक पूजासँ स्वतः अपन तथा सन्ततिक शुभ सम्भावित रहैत अछि। तें एहिमे लागल रहब उचितो आ आवश्यको।

दोसर विषय ई जे आधिभौतिक भय सर्प आदिसँ संभव रहैत छैक, तकर उपायसँ दीर्घजीवनक कामना तथा सहिष्णुताक बलें सब धर्मक समन्वय सम्भव छैक। तैं शिवरात्रिव्रत, प्रबोधनी एकादशी आ दुर्गापूजा एकहि भावें स्मार्त सब करैत छथि। एतए कोनो द्वैध नहि, कट्टरता नहि, तैं स्मार्त धर्मक उदार भावना सर्वथा श्लाघनीय अछि।

शास्त्रमे तँ देवलक वचन अछि जे व्रत, उपवास ओ नियम आदिक पालन ओ शरीरक उत्तापनसँ कोनो वर्णक लोक पापमुक्त होइत अछि अर्थात् मोनें शरीरें विशुद्ध रहैत अछि, वाणी विशुद्ध होइत छैक –

व्रतोपवासनियमैः शरीरोत्तापनैस्तथा।

सर्वे वर्णा विमुच्यन्ते पातकेभ्यो न संशयः।।

जहिना आगिमे सोना तपाओल जाइत अछि तँ निखार अबैत छैक तहिना एहि व्रत, उपवास, नियम ओ पूजासँ लोक पापमुक्त भए पवित्र होइत अछि। ऊर्जस्वी तेजस्वी सन्तान लाभक संग दीर्घजीवनमे सुख सुयश प्राप्त करैत अछि।

□□

चारिम परिच्छेद

संस्कार

जे कएलासँ अशुभक नाश ओ शुभक उदय हो से संस्कार कल्याणक खानि कहबैत अछि। व्यासक कहल अछि –

अशुभं नश्यते सम्यक् शुभं हि प्रतिपद्यते।

कल्याणनिधिराख्यातः संस्कारः सर्वकर्मसु।।

पूर्वहिँ कहि चुकल छी जे माजब आ साजब संस्कार थिक। शास्त्रीय भाषामे एकरहि मलापनयन आ गुणाधान कहल गेल अछि। उबटन ओ स्नानसँ मलापनयन तथा धुआओल वस्त्र, चानन, तिलक, अतर आ सुगन्धित तैल आदिसँ गुणाधान रूप संस्कार शरीरक कएल जाइत अछि। क्षेत्र, बीज, शरीर, आत्मा ओ पुरुषार्थकेँ माँजि साजि कए स्वच्छ रखबाक व्यवस्थाक रूपमे प्राचीन कालहिसँ सोलह संस्कार मानल गेल अछि। *व्यासस्मृति*मे उल्लिखित एहि संस्कारक नामनिर्देश पूर्व (पहिल परिच्छेदमे) भेल अछि। एहि मध्य गर्भाधान, पुंसवन ओ सीमन्तोन्नयनसँ क्षेत्र शुद्ध होइत अछि। जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन ओ मुण्डनसँ शरीर शुद्ध होइत अछि। कर्णवेध ओ उपनयनसँ आत्माक शुद्धि होइत अछि। शेष छह संस्कार वेदारम्भ आदि पुरुषार्थकेँ परिष्कृत करैत अछि – ई शास्त्रकारक मान्यता छैन्हि।

महिला लोकनिकें आरम्भक नौटा संस्कार बिना मन्त्रक होइत छैन्हि, केवल विवाह मन्त्रपूर्वक होइत छैन्हि। पुरुषार्थक परिष्कारक छह गोट संस्कार मे हुनक सहयोग अवश्य अपेक्षित होइत अछि। मुदा स्वतन्त्र रूपेँ हुनका सबसँ ओ सभ नहि कराओल जाइत अछि। सहयोग कएलहिँसँ ओ सब एहि संस्कार सभक भागिनी अर्थात् संस्कृता होइत छथि।

विवाह

शुभकर्मक दृष्टिएँ सभ वर्गमे विवाहक प्रधानता देखल जाइत अछि। उत्साहपूर्वक समाजक सहयोगें विवाह सम्पन्न होइत अछि। एतए विवाहे संस्कारसँ हम यथामति किछु कहब आरम्भ करैत छी। विवाहक पूर्णाङ्ग विवरण आ विवेचन ततेक विस्तृत होएत जे ओकरा प्रस्तुत करब स्थानाभाव ओ ज्ञानाभावक कारणे एतए संभव नहि अछि। तथापि किछु आवश्यक लोकाचार ओ वैदिक विधिक प्रसंग दिशा-प्रदर्शन प्रस्तुत अछि, जे कालान्तरें सहधर्मा कोनो समाजशास्त्री वा धर्मशास्त्री विद्यार्थी वा विद्वान् अपना दृष्टिएँ परिपूर्ण विचार प्रस्तुत कए सकताह। विवाहक पूर्णाङ्गता वैदिक विधि ओ लोकाचारसँ होइत देखल जाइत अछि। लोकाचारमे वैविध्य देशकालक अनुसार कुलपरम्पराक क्रमें मिथिलहु मध्य देखल जाइत अछि। कोनो लोकाचारकेँ निराधार नहि कहि सकैत छी, मुदा आधारक ज्ञान सबकें नहिएँ रहैत छैक। तेँ लोकाचार अज्ञानवश कदाचित् अनादृत आ उपेक्ष्यो भए जाइत अछि से उचित नहि। लोकाचारक आधार अन्वेषणीय, ज्ञातव्य ओ ज्ञापयितव्य थिक। एहिसँ लोकाचारक सादर अनुपालन होएत आओर ओकर सम्पादनसँ मोनमे सन्तोष होएत।

दू कुलक अपरिचित आत्माक दृढ़ सम्बन्ध करबाक वा करएबाक प्रयास स्वरूप विवाहमे समाजक प्रमुखता अनिवार्य, आवश्यक ओ मान्य अछि। वैवाहिक सम्बन्धक सूत्रपात दू तरहें होइत अछि-घरकथा ओ सभासँ। यद्यपि नीक पक्ष घरकथा थिक तथापि दूनू तरहें कथा करब समाजमे प्रचलित अछि। कथाक कोमलतेँ साक्षात् कथा करबामे ओकर टुटबाक भय रहैत छैक, तेँ समाजक प्रयोजन एहिमे होइत अछि। एकर बाद हथधरीक विधि होइत अछि जकर पूर्वमे अधिक आओर आब कम प्रचार अछि। एकर दूटा रूप देखैत छी।

सोतिपुरामे नीक मुहूर्त देखि प्रतिष्ठित व्यक्तिक घरपर वर ओ कन्या पक्षक मुख्यलोक-मातृक पैतृकक श्रेष्ठजन-वा हुनक प्रतिनिधि प्रबल सम्बन्धिक ओ आप्तमित्र एहिमे भाग लैत छथि। अमुक व्यक्तिक दैहित्री अमुक व्यक्तिक कन्याक संग अमुक व्यक्तिक दौहित्र अमुक व्यक्तिक बालकक विवाहक स्थिरता करैत छी-ई कहि मध्यस्थ दूनू पक्षक प्रमुखक हाथ धरबैत छथि। एहिमे द्रव्य दक्षिणाक कोनो व्यवहार नहि होइत अछि।

कुलाचारक अनुसार कतोक ठाम शुभ मुहूर्तमे कन्याक पिता वा अभिभावक

द्रव्य लए वा यथाविभव फल मधुर कपड़ा ओ द्रव्य लए वरक घरपर जाए वरक हाथ पकड़ैत छथि, मोनसँ वर हुनक कन्याक संग विवाहक हेतु प्रतिश्रुत होइत छथि।

एहिना 'अस्वजनपत्र' ताड़क पातपर लाल रंगसँ पञ्जिकारसँ लिखाओल जाइत अछि। जे सिद्धान्त लिखाइ कहबैत अछि। '**पञ्चमात् सप्तमात् उर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा**' एहि **याज्ञ्यवल्क्य**वचनक वा '**मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं भजेत्**' आदि वचनक अनुसार अस्वजनताक निर्णय कएल जाइत अछि। अमुक व्यक्तिक कन्याक अमुक व्यक्तिक दौहित्रीक अमुकव्यक्तिक बालक अमुक व्यक्तिक दौहित्र अस्वजन ओ असगोत्र थिकाह, तें विवाह भए सकैत अछि–ई लीखि कए पञ्जीकार दैत छथि। पञ्जीकारक निकट सभक पूर्व पुरुषाक विवरण ओ गोत्रक संग कुल मूलादि लिखल रहैत अछि, जे पञ्जी (समूहलेख्य, व्यक्तिपरिचयशास्त्र) कहबैत अछि।

सोतिपुरामे सिद्धान्त लिखाओल नहि जाइछ किन्तु पढ़ल जाइछ। वरपक्षक चारि व्यक्ति पूर्वाभिमुख भए कन्या पक्षक चारिगोटे पश्चिमाभिमुख भए ओ पञ्जीकार उत्तराभिमुख भए परतीपर बिनु आसनक बैसि पहिने दूनू पक्षक उतेढ़ पढ़ि अधिकार जँचैत छथि। पछाति परस्पर अस्वजनक निश्चय देखि कन्याक अभिभावक कन्यकोपस्थिति करैत छथि और वरपक्षक अभिभावक वरक दिशिसँ स्वीकृति प्रदान करैत छथि। आइसँ ओ कन्या हमरो भेलीह – एहि बुद्धिएँ वरपक्षक लोक कन्यापक्षकेँ साड़ी दैत छथि। एहि हेतु पञ्जीकारकें गतायातक सौविध्य ओ मानदेय यथाविभव सोत्साह दूनू पक्ष दैत छथि। घर आपस अएला पर दूनू पक्ष भगवतीकेँ शिरहर प्रणामी दए प्रणाम करैत छथि। वर–कनियाँ पीयर कपड़ा पहिरैत छथि, साँझमे दूनूक आङनमे 'कुमारगीत' गाओल जाइत अछि। धरफड़ीमे ई सब भेला पर किछु आचारक लोप स्वाभाविक, जकर प्रतिविधानो नहि अछि। सिद्धान्तहुक काल चाह पान वा जलपानक व्यवहार पूर्वसँ नहि छल आब कतौ कतौ भेल अछि। जे प्रशस्य नहि। व्यवहार तँ ओएह प्रशस्य थिक जे धनिक वा गरीब समाजक प्रत्येक सदस्य अनुपालन कए सकए, जाहिमे ककरहु बोझ बूझि पड़ैक से तँ सर्वथा उपेक्षणीये थिक।

सोतिपुरा आ योगपुराक लोक एकटा सुविधा आओर पञ्जीकारक माध्यमे लैत छथि। बालक वा कन्याक 'अधिकारमाला' हिनकासँ पारिश्रमिक दए बनबाए

अभिलषित वरक वा कन्याक तकबामे लगैत छथि।

विवाहसँ अव्यवहित पूर्वक दिनमे 'कुमरम' कुमारकर्म होइत छैक। कुलदेवताक आराधना ओ कन्याक आङ ओङारि पोखरि लए जाए स्नान कराएब आम-महु वियाहब (लाल तागसँ दूनूक गाछकेँ घेरि बेढ़ि देब) आदि लोकाचार सुवासिनी लोकनि करैत छथि। परिछनि केनिहारि एहिमे कन्याक संग रहैत छथि। कन्यादान केनिहार, परिछनि केनिहारि, कनियाँ ओ वर एकभुक्त करैत छथि। वर ओ कन्यादाता आजुक दिनमे केशो कटबैत छथि जाहिसँ शुचिताक अधिक पालन होइछ, मुदा आब क्रमशः एकर लोप भए रहल अछि। *ब्रह्मवैवर्त पुराण*क अनुसार व्रत, उपवास ओ दानविशेषक आदान-प्रदानमे केश कटाएब आवश्यक अछि। तेँ ई व्यवहार पूर्वमे प्रचलित भेल। कुमरम दिन खीर टिकरी ओ तेल परसबाक व्यवहार महिला लोकनिमे प्रचलित अछि।

कन्यापक्षमे साँझमे तीनटा कृत्य होइत अछि। परिछनि कएनिहारि मड़बाक नीचामे नव चूल्हि ओ नव माटिक वासनमे बड़ी भात सिद्ध कए कल्याण दाइक (कल्याणी देवीक) पूजा करैत छथि।

कल्याणदाइक पूजा

कुमारकर्म 'कुमरमक' साँझ बेटाक उपनयन ओ बेटीक विवाहमे जुटिका बन्धन वा सौंथ नोतबासँ पूर्व कल्याणदाइक (कल्याणी देवीक) पूजा कएल जाइत अछि। उपस्थित महिला समाजक मध्य घरक आदरणीय महिलाकेँ परिछनिक भार देल जाइत छैन्हि, ओएह ई कार्य सिद्ध अन्नसँ मँड़बाक (चौकीक) दक्षिण-पश्चिम कोन पर भात रान्हि करैत छथि। ई विवाह वा उपनयनक आवश्यक कृत्य मानल जाइत अछि, जे लोकाचार थिक।

कन्यादाता कन्याक सिउँथ चाननसँ अमन्त्रके नोतैत छथि ओ कन्याकेँ दूर्वाक्षत द्वारा वैदिक मन्त्रसँ सभ आशीर्वाद दैत छथि। आ तेसर कार्य वर ओ कन्या दूनूक घरपर होइत अछि जे लाजाहोम हेतु लाबा भूजल जाइत अछि। नववस्त्र पहिरि वरकें पाछाँमे बैसबाए सुवासिनी लाबा भुजैत छथि वर आ कनियाँ अपन-अपन आङनमे कोनियाँ लए धानक घानी खापड़िमे दैत छथि। एहि लाबासँ विवाह दिन वेदीपर लाजाहोम होइत अछि। विवाहक उल्लास उत्साहमे महिलावर्ग अपनामे हास परिहास करैत छथि। सुवासिनीकेँ प्रसन्नता

परितोष हेतु एक मोरि धान आ रुपैया इनाम देल जाइत अछि। नारक मोरि बनाए डेढ़-दू पसेरि धान बीआ आदि हेतु गृहस्थ लोकनि रखैत छथि जाहिमे धान सुरक्षित रहैत अछि से सुलभ रहने उत्साहसँ एकटा सुवासिनीकें देल जाइत अछि।

आज्ञा माँगबाक विधि

कुमरमक साँझ वा विवाह दिन भिनसर सुविधानुसार कन्याक पक्षसँ एक गोटे वरक घरपर अबैत छथि, असिद्ध भोजन कए यथाविभव किछु दक्षिणा पाबि कम्बलपर बैसल वरसँ पुछैत छथि जे अमुक व्यक्तिक घरपरसँ आएल छी, आज्ञा हो तँ मातृकापूजा ओ आभ्युदयिकविधि ओ आरम्भ करथि। वर अनुमति देवाक मुद्रामे मुड़ी डोलाए दैत छथि। आगत व्यक्ति यथास्थान जाए एकर सूचना दैत छथि, तखन ओहि शुभकार्यक आरम्भ होइछ ओ जमाए लिऔनिहार घरपरसँ चलैत छथि।

कुलाचारानुसार कतोक ठाम वर वरियातीकेँ दरवाजा पर पहुँचलापर गोवर पिठार डाँट लागल पान सौंस सुपारी जनौ धूप ओ दीप आदि मांगलिक वस्तु डाला वा चडेरामे राखि वरक समक्षमे देल जाइछ। वरक अभिभावक किछु द्रव्य-विधिक रुपैया ओहिमे राखि दैत छथि, तखन कन्यादानक कार्य आरम्भ होइत अछि।

जमाए लिआबक विधि

कन्याक भाइ जमाएकें लिआबए जाइत छथि। अधिकार कन्याक पिसिऔत (भागिन) क थिकैक, तखन सोदर, पितिऔत, मसिऔत, ममिऔत कियो जाए सकैत अछि, जे कन्याक अभिभावक द्वारा नियुक्त होथि। भगवतीकेँ प्रणाम कए तौनी पाग लए वर लेबा लेल सवारीक संग वरक घरपर जाइत छथि। वर पक्षसँ नव धोती, तौनी, पाग, फूलमाला तथा चानन आदिसँ हुनक स्वागत होइत अछि असिद्ध भोजन करैत छथि आओर वरकेँ संग कए अबैत छथि। बहुत ठाम एके गोटे ई विधि पूरा करैत छथि, बहुत ठाम अनेक गोटे जाइत छथि, सभक समाने स्वागत कएल जाइत अछि। वर पकड़बाक विधिओसँ इएह अभिप्रेत अछि केवल नामहिक भेद अछि।

पसाहनि

प्रसाधनक अपभ्रंश हमरा जनैत पसाहनि कहबैत अछि। सधबा महिलावर्गकेँ तीन अवसर पर मुख्यतः पसाहनि कएल जाइत अछि–विवाह, द्विरागमन आ बालकक उपनयनमे मातृभिक्षा देबाक अवसरमे। तीनू पसाहनि तीन तरहक होइत अछि। ई विधि अनुभवी महिलावर्ग जनैत छथि। स्व० पण्डित लक्ष्मीनाथ झा 'मिथिलाकी सांस्कृतिक लोक चित्रकला' पुस्तकमे पसाहनिक तीनू प्रकारक स्वरूप स्पष्टरूपसँ देखओने छथि। लील पिऔरी खड़ी तीसी व मेथी भिजाए ओकर छानल पानि तथा छोट पैघ नाना प्रकारक टिकुलिक प्रयोग कए महिलाक कपाड़कें सजाओल जाइत अछि।

अवसर पर यथा वरियाती लए जएबाक काल महाथु हाथीक एहिना पसाहनि कए सजबैत अछि। एहिमे टिकुलीक स्थान पर गेरुक व्यवहार कएल जाइत अछि।

मातृकापूजा

कन्यादानसँ पूर्व सजल–धजल पसाहनि कएल कन्याकेँ लगमे बैसाए कन्यादान केनिहार मातृकापूजा, आभ्युदायिक श्राद्ध ओ श्रीपरिछबाक विधिक संग वसुधारा अनुष्ठित करैत छथि। सोलहटा मातृकाक – गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, माता, लोकमाता, हृष्टि, पुष्टि, तुष्टि आ आत्मकुलदेवताक–पूजा होइत अछि, एहिसँ पूर्व गणेश ओ दुर्गाक आ अन्तमे परिछल श्रीक पूजासँ उन्नैस गोट देवताक पूजा होइत अछि। देबालपर भगवतीक शिरक उत्तर ई उन्नैसो गोटे आवाहित होइत छथि, गोबर दूबिसँ थोपी बनाए छोट–छोट सिन्दुरक गोल कएल स्थान पर ऊपर नीचाक क्रमसँ ओ थोप्पी थोपल जाइत छथि।

आभ्युदयिकमे कन्याक पिताक मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह एवं पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही ओ प्रपितामहीक आवाहन होइत अछि। जे जीबैत होथि हुनका छोड़ि उपरका खाढ़ीक लोककेँ एहिमे लेबाक थिक। कन्याक नहि, अपि तु हुनक पिताक ई सम्बन्धिक सभ लेल जाथि से शास्त्रमे स्पष्ट कहल अछि। लोकाचारहुसँ ई पुष्ट होइत अछि, जे कर्तव्यता कए रहल छथि से अपने पूर्वपुरुषकेँ अन्न वस्त्र देताह। हुनकासँ आशीर्वाद लेताह।

अन्यत्र पुरुष पितरक संग महिला पितरक अन्तर्भाव होइत अछि। मुदा आभ्युदायिक (वृद्धिश्राद्ध)मे पितृपक्षक महिलाक स्वतन्त्र आवाहन होइत अछि, ई विशेष आकलनीय अछि। **शातातप ऋषिक** उक्ति अछि –

मातृणां प्रथमं श्राद्धं पितृणां तदनन्तरम्।
ततो मातामहादीनां वृद्धौ श्राद्धत्रयं भवेत्।।

तीन पीढ़ीसँ ऊपरक पुरुषा विश्वेदेव कहबैत छथि से दूनू कुलक (मातृकक़ एक आ पैतृकक दू) तीन गोटे पृथक्-पृथक् पूज्य थिकाह। ज्ञातव्य ई जे अन्यत्र पितर आमिष आहार ओ मधुसँ तृप्त होइत छथि मुदा एतए मधु ओ आमिषक उपयोग नहि होइछ, ने स्वधा पदक प्रयोग। एतए नान्दीमुख विशेषण नामक आगाँमे जोड़ल जाइछ, जकर अर्थ होइछ समृद्ध ओ प्रसन्न आओर अन्तमे 'तुभ्यं वृद्धिः' कहल जाइछ, जकर तात्पर्य ई अछि जे अहाँ आशीर्वाद करी जे अहाँक वृद्धि हो, जाहिसँ हमर संग भावी पीढ़ीक अहाँक वंशधर बढ़ैत रहए। तावता बारहटा पितर एतए पूजित होइत छथि। विशेष विषय *संस्कारदीपक*, *पद्धति* ओ *धर्मशास्त्रक ग्रन्थ* सभसँ ज्ञातव्य अछि।

घरक सुवासिनी नव साड़ी पहिरि खोछिं लए नव साड़ी दूबि चाउर ओ द्रव्यकेँ नीचामे राखि काँच माटिक बनाओल श्रीकेँ परिछैत छथि, पछाति हिनक पूजा कएल जाइत अछि। तखन घृत काँच केरा लए वसुधारा देल जाइत अछि। ई कृत्य उपनयनहुमे होइत अछि।

कन्यादान

स्मृतिमे जे आठ प्रकारक विवाह कहल गेल अछि, ताहि मध्य प्राजापत्य विवाह मिथिलामे प्रचलित अछि। वरक सोलह उपचारसँ पूजा कए कन्या देल जाइत अछि। मध्यमे मँड़बापर जलपूर्ण अढिया वरुणदेवताक प्रतीकक साक्ष्य मानि कुश दूबि अक्षत सुपारी फूल ओ शंखस्थ जलसँ गोत्राध्याय पढ़ि वरक हाथ पर कन्याक हाथ राखि कन्यादान कएल जाइत अछि। एतए दानवाक्यमे पत्नीत्वेन पदक उल्लेख ओ बिनु तिलक दान विधिसँ ज्ञात होइत अछि जे वरकेँ एहि कन्याक दान, विक्रय ओ दासी बनाए रखबाक अधिकाररूपमे नहि देल जाइत अछि। अपि तु आजीवन सुरक्षाक भार, धर्माचरण ओ सन्तान उत्पादनक उद्देश्यसँ ओ देल जाइत अछि, जे दूनू कुलक वंशधर भेल। तिलकुश लएकेँ

कएल गेल गाए ओ सुवर्णादिक दानमे दान लेनिहारकेँ दान लेल वस्तुक दान करबाक ओ बेचबाक अधिकार रहैत छैन्हि। अतः ई फरक बुझबाक थिक। कोनो ठाम कन्यादानहुकें साधारण दान बूझि तिलसँ दान करबाक आग्रह देखैत छी, जे सर्वथा अज्ञानमूलक थिक। जँ शास्त्रमे कतहु कन्यादानमे तिलक निषेध नहि अछि तँ विधियो कहाँ देखैत छी। परम्परासँ तिलक स्थानमे अक्षत देल जाइछ, तिलक व्यवहार नहि होइछ – ई कथा *संस्कारदीपक*मे म०म० **हर्षनाथ झा** कहैत छथि।

वरक हाथ पर कन्याक हाथ राखबो परम्पराप्रयुक्ते पद्धतिमे अछि, शास्त्रीय निर्देश एहन नहि अछि। किन्तु दानक महत्त्वकें बुझबैत अछि दान देनिहार ओ लेनिहारक बैसबाक क्रम – देनिहार पश्चिमाभिमुख ओ वर-कन्या पूर्वाभिमुख भए दान दैत लैत छथि, जे शास्त्रीय निर्देश अछि। अन्य दानक अवसरमे दाता पूर्व वा उत्तराभिमुख ओ लेनिहार हुनक सम्मुख उत्तर वा पूर्वमुख भए रहैत छथि से देखैत छी। **आश्वलायनक** वचन अछि –

कन्यां वरयमाणानामेष धर्मोऽभिधीयते।
प्रत्यङ्मुखा वरयन्ति प्रतिगृह्णन्ति प्राङ्मुखाः।।

विघ्नबाधाक निवारणार्थ मँडबा पर कुम्हार भिनसरे हाथी बैसबैत अछि आओर विवाहे दिन कमसँ कम चारि हाथ लम्बा-चौड़ा 'वेदी' कमार गाड़ैत अछि। बाँसकें चारि फाँक कए टुरनी पर केराक कोशा गाँथि चारि गोट छोट बाँसक खुट्टा मे लगाए मन्दिरनुमा वेदी बनाओल जाइत अछि, जतए वैवाहिक वैदिक कृत्य कुशकण्डिका, प्राजापत्यहवन, लाजाहोम, अश्मारोहण, त्र्यायुष, लौकिक कृत्य सिन्दूरदान ओ दूर्वाक्षत, अलंकरण वा द्रव्य (रुपया) दए वर कनियाँकेँ आशीर्वादक संग सोहाग उपस्थित लोक दैत छथि। '**सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेत न**' एहिवाक्यक अनुपालन होइत अछि। ई वधू सुमङ्गली अछि एकरा अहाँ सब आबि कए देखिऔक एकरा आशीर्वादस्वरूप सौभाग्य दए अपन-अपन घर जाइत जाउ। लाजाहोममे भाइक हाथें कनियाँक हाथक कोनियाँमे लावा भरल जाइत अछि आओर ओकरा कनियाँ आगिमे छिड़िया दैत छथि आओर हवन होइत अछि। एतए जे वैदिक मन्त्र सब पढ़ल जाइछ तकर मोटामोटी अभिप्राय रहैत अछि दम्पतीक शुभकामना। देवताक आशीर्वादें बुढ़ारी धरि दूनू संग रहथि, दूनूक

सुखी जीवन रहओ, एक दोसराक मोन मिलैत रहए, सन्तान दीर्घजीवी होअए, कहियो कोनो तरहक दुःखक अनुभव नहि हो, समृद्ध रही आदि।

कन्यादानसँ पूर्व किछु लोकाचार अनुष्ठित होइत अछि। जेना 'गूआजनौ' अर्हणाक अंग फलदानक प्रतीक थिक। तौनी पाग लए कन्याक भाइ भरल पनबट्टी नीक सौंस सुपारी पानक ढोली जोड़भरि जनौ ओ किछु द्रव्य लए आङनमे वरक प्रवेश करितहिँ सम्मानपूर्वक हुनक हाथमे दैत छथि। ई हुनक स्वागतक आरम्भ भेल। कलसधारी जलाभिषेक करैत छथि, चानडाला देखाओल जाइछ। परिछनि कएल जाइछ, जाहिमे गोबर ओ पिठारक मुठरा निहुँछल जाइछ, कन्याक नाभी पर राखि कूर्मपृष्ठक दीपमे पाड़ल काजर (आरस काजर) वरकेँ लगाओल जाइछ, जे दम्पतीक परस्पर मोन मिलैत रहैक। कूर्मपृष्ठमे जराओल दीप देखाओल जाइछ, जे कुदृष्टिजन्य दोष दूर हो। कोबराघरमे 'नैना योगिनि' विधि होइछ। डोका, कौड़ी, गोबर ओ दूबि घरक चारू कोनमे साटल जाइछ। ई विधि सब तान्त्रिक आचारक प्रति मिथिलाक आस्थाकें व्यक्त करैत अछि। एहि विधिसँ कुदृष्टि वा आगत वा अएनिहार दुनू तरहक विघ्न निवृत्त होइत अछि। आब कोबरा घर जाए कन्या चीन्हि संग लए वर कन्यादान हेतु मण्डपपर अबैत छथि।

कोबराघर

संस्कृतमे एकरा कौतुकागार कहैत छैक। एहि घरक विशेषता ई छैक जे वरकनियाँ मिलि कए गौरीक पूजा एतहि करैत छथि। एहि घरक चारू कोनमे योगिनी (युवती महिलाक भित्ति चित्र) लिखल जाइछ। पुबरिया देबाल पर बाँस पुरैनि लिखल जाइत अछि जे वंशवृद्धिक प्रतीक थिक, यदर्थ विवाहक आयोजन होइछ। बाँस पुरैनिक जेना पसार होइत छैक तहिना हमरहु वंशक पसार हो, बाँसे जकाँ वंश ऊँच हो, ई अभिप्राय अन्तर्निहित अछि एहिमे। सूर्य-चन्द्रमा ओ नवग्रहक चित्र रहैत अछि, जे एहने सन्तति हो जे संसारक समक्ष देदीप्यमान रहए तथा नवग्रह ओकर सतत रक्षा करथि। सूर्य ओ चन्द्रमा तँ प्रत्यक्ष देवता थिकाह। एकटा पैघ हाथी विघ्नविनाशनक प्रतीक एहि घरमे रहैत अछि आओर एकटा छोट हाथी रहैत अछि, जाहिपरक सर्वामे राखल सिन्दूरसँ बोरल सुपारीक गौरीक रूपमे पूजा होइत अछि। 'हाथी चढि कए गौर पूजब' कहबी छैक। हमरा जनैत ओकर अर्थ थिक हाथी पर चढल गौरीक पूजा करब। आपाततः प्राप्त

शाब्दिक अर्थ लेला पर पूजकक अविनय विज्ञापित होएत जे हाथी पर चढल व्यक्ति गौरीक पूजा कए रहल अछि से कथमपि इष्ट नहि।

ओहि लिखित योगिनी ओ गौरीकें सर्वविध उपद्रवक प्रशमनमे उद्यता मानि वंशवृद्धिक उपायस्वरूप सुरतक हेतु उपयुक्त स्थानहुक रूपमे कोबराघरमे नव वर कनियाँकि राखल जाइत अछि। आस्तिकता, आत्मरक्षाक प्रति जागरूकता ओ माङ्गलिक विधिक प्रति आस्था एहि कोबाराघरमे हमरा सभक अन्तर्निहित अछि।

हिरण्यकेशीयसूत्र मे उक्त अछि–**त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौ**

अध:शायिनौ अलङ्कुर्वाणौ ब्रह्मचारिणौ वसतः।

विवाहे दम्पती स्यातां त्रिरात्रं ब्रह्मचारिणौ।

अलङ्कृतावधश्चैव सह शय्यासनासनौ।।

शास्त्रीय दृष्टिएँ तीन दिन धरि कन्या–वरकें हविष्य ओ अनोन भोजन करबाक थिकैन्हि। ब्रह्मचर्यक पालन करैत भूमिपर (अध:शय्या) एकशय्या पर सुतबाक चाहिऐन्हि। चतुर्थी कर्म कएला पर नोन खाथि ओ पतिपत्नी जकाँ रहथि। पालो पर विवाहदिनक कलसधारीक कलसक जलसँ स्नान कराओल जाइत अछि आ तकर बाद देवतासँ चतुर्थी कर्ममे हवन द्वारा प्रार्थना कएल जाइत अछि जे पति, सन्तति तथा पशुप्रभृतिक नाशक योग हमर पत्नीक शरीरसँ बाहर करी। शुभानुध्यानार्थ त्र्यायुष, कुशकण्डिका ओ प्राजापत्यहोमक संग सिन्दूरदान कएल जाइत अछि। आजुक दिन बेटी जमाएकेँ माछ भात खुआओल जाइत अछि। एहि बीचक तीन दिन दूनू साँझ गौरीक पूजा दम्पती करैत छथि ओ मौहक विधि अनुष्ठित होइत अछि।

एतए दू गोट विधिक प्रसङ्ग किछु कहब आवश्यक बूझि पड़ैत अछि। सिन्दूरदान लोकाचार थिक, मुदा एकर मान्यता *गृह्यसूत्रमे* भेटैत अछि। *पारस्करगृह्यसूत्रक* एकटा वचन अछि – '**ग्रामवचनं च कुर्युः**' – एकर संकेत एही दिशि बूझि पड़ैत अछि। सात सकारें सिन्दूरदान कहैत छैक ओ सात सकार थिक – सन, सनपत, शनिक पात, साँख, सोहगैली, सुवर्ण ओ सिन्दूर। रेशमी रुमालमे चानीक बाटीमे मटिया सिन्दूर (अधिक पवित्र मानल जाइछ) एहि सब वस्तुकें वरपक्ष अपन संग अनैत छथि। वरियातीक भोजन अनोन ओ असिद्ध

कराओल जाइत अछि। वरियातीमे सभक सभ सौजनियाँ नहि रहैत छथि ओ पंक्तिभेद भोजन सामग्रीमे विहित नहि। अत: अनोन भोजनक आयोजन कएल जाइछ। मुदा आब क्रमश: एकर उपेक्षा देखल जाइछ जे स्वाभाविको ओ व्यावहारिको। आब ई विचारे आलोचनाक दृष्टिसँ देखल जाइछ। वर ओ वरियातीक भोजनक समय गीत गएबाक प्रथा अछि जे डहकन कहबैत अछि। एहिमे पारस्परिक नव संबन्धक उल्लासमे व्यञ्जनाक द्वारा शिष्टपरिहास परस्परकुलक व्यक्त कएल जाइछ। जेना माघमासमे कुसुम फुलाएल ओहि कुसुमी रंगमे रँगल साड़ी पहिरि समधिन अबैत छलीह, हुनका बाटमे समधि हाथ पकड़ि लेल। एतबाक कथा डहकनमे कहल जाइछ। एही तरहक अनेक डहकन गीत 'माघहि मास कुसुम फुल' गीत तथा एकरे सदृश गाइनि लोकनि गबैत छथि। खबास भरिया कें सेहो 'डहकने' गाओल जाइत अछि, जाहिमे गारि वाच्य रहने परिहास स्पष्टे बूझि पड़ैत अछि।

वरकें विदा करबाक काल राइभेला दोपट्टामे बान्हल जएबाक लोकाचार अछि। जाहिमे कनियेँ धान ओ रुपैया पीयर कपड़ाक टुकरामे बान्हि देल जाइछ। ओ दोपट्टापर कनियाँक हाथक लाल रंगक छाप पीठ पर अंकित कएल जाइत अछि।

दशौत विधि

चानन, सिन्दूर, काजर, माला, ढकढकी, पंखा, ऐना (दर्पण) दीप ओ जलसँ नौ बेरि वरकेँ यथावस्तु लगाएब, पहिराएब, देखाएब ओ पोछब सम्पन्न करी, एक बेरि कनियाँकेँ। ई विधि सब किछु फकरानुमा मैथिलीक मन्त्र पढ़ि प्रबुद्ध ओ प्रौढ़ फररोस महिलाक नेतृत्वमे सभ मीलि चौकी (मँडबा) पर वर-कनियाँकेँ बैसाए सम्पादित करैत छथि, ई आवश्यक लोकाचारमे मानल जाइछ।

सौजन्य

चतुर्थीक बाद जे जमाए भोजन करैत छथि तखनहि धोती तौनी उपहृत कए ई विधि सम्पादित कएल जाइछ। सार सब हुनका संग भए भोजन करैत छथि। आब ओ एहि घरमे सिद्ध अन्न खएबाक अधिकारी ओ संबन्धक बलें अपनाओल गेलासँ आत्मीय भेलाह से तात्पर्य एहिमे निहित अछि। ई तँ विशेषरूपें कन्याक घरपरक विधि व्यवहार भेल। विवाहमे रमन-चमन बेटिएक घरपर

देखल जाइछ। किन्तु वरक घरहुपरक किछु विधि व्यवहारक परिज्ञान आवश्यक, से आगाँ कहैत छी।

वरक विवाहक सूचना भेटला पर वरक बहिनि दू गोटे लगहर भरैत छथि। हुनका सिन्दूर पिठार लागल घैल देल जाइछ तथा उत्साहमे साम्मानिक रूपमे इनाम द्रव्य, नव ओ सुन्दर साड़ी चूडी आदि देल जाइछ।

वर विवाहक हेतु विदा होएबासँ पूर्व अपन गुरुजन सम्बन्धीक समाज ओ मित्रक आशीर्वाद लैत छथि। भगवतीक घरमे महिलालोकनि मांगलिक कृत्य अनुष्ठित करबाक क्रममे चुमाओन करैत छथि, दूर्वाक्षत दिअबैत छथि। आ घरभरी, नागरोपण सरोवर सम्बन्ध करबैत छथि, शिरहर प्रणामी दिअबैत छथि। करची केराक पातलागल थम्ह, किछु द्रव्य, सौंस सुपारी, लाल धान आदि चारू कात माँटिमे गाड़ि भगवती घरक द्वारिक दहिना हाथ पर नवसाड़ी सँ घेरैत छथि ओहि मध्य पुरहर पातिल राखल जाइछ। एकरे पीठ भागमे देबाल पर सिन्दूरसँ चौकोर सरोवर ओ चारि घाट ओहिमे बनाए ओहिमे चित्ती कौड़ी डोका आरतक पात आ गोबर दूबि उड़ीदक बेसन लगाए साटल जाइछ। इएह भेल नाग आ सरोवर रूप लोकाचार। घरभरीमे लालधान, दूबि, सौंस हरदि, सौंस सुपारी, किछु द्रव्य आदि कोनियाँमे लए देहरि लग वर उनटा हाथें पूर्व दिशि घूरि हाथ पाछाँ कए माएकेँ खोंछि दैत छथि। घरहुपर हिनका अरिछि परिछि कए विदा कएल जाइत अछि जे कुदृष्टिजन्य दोष हिनक दूर हो।

सोतिपुरामे वैवाहिक विधिमे वैदिकी क्रियाक अनुष्ठानार्थ उपयोगी उपकरण वा सामग्री वरपक्ष अपन संग लबैत छथि, मुदा से अन्यत्र व्यवहार नहि अछि। ई कन्यागतक कर्तव्य होइछ। वरपक्ष एकट्ठे किछु द्रव्य कन्याक अभिभावककें दए दैत छथि, विधि कहि कए। सोतिओ लोकनि कुलक सम्मानकेँ दृष्टिमे राखि विधिमे रुपैया यथाविभव दैत छथि, मुदा ओकर तात्पर्य भिन्न रहैत अछि।

शाँकर पठेबाक रेवाज सोतिमे अछि। चीनीक शाँकर पैघ थारीमे शङ्करक प्रतीक (शिवलिङ्गाकार) बनाओल जाइछ आओर ओकरा संग रेशमी साड़ी, नौ वा सात प्रकारक मेवा, मसाला, धूप, कर्पूर, खैर (कथ) आदि देल जाइछ, वरसँ पहिने ओ कन्याक आङ्गनमे पहुँचैत अछि। हमरा सभ शैव छलहुँ तें शंकरक आराधनाक ई प्रतीक भेल। ई शांकर कनियाँ द्वारा फोराओल जाइछ और मांगलिक प्रसाद बूझि समाज संबन्धीकमे बाँटल जाइछ। एकर निर्माण कालमे

ओ अएबाक जएबाक कालमे मांगलिक गीत गाओल जाइछ। मुदा पछबारि पारमे एकर रेवाज नहि अछि। सोतिपुरामे एकर विकल्पमे दू वासन दही पठएबाक सेहो रेवाज अछि। दही शुभ सगुन मानल जाइछ।

चतुर्थीक भार जे अबैत अछि, ताहि संग फुलौकी पठाओल जाइछ। जाहिमे साड़ी कनियाँ ओ कनियाँक माइक तथा मधुर ओ नाना तरहक खेलौनाक वस्तु साँठल रहैत अछि।

सोतिपुरामे मासस्नान विहित अछि। एकर मुहूर्त पतरा पञ्चाङ्गमे लिखल रहैत छैक। एहि दिन वर उपहार दए कनियाँक संग प्रेमप्रसंग ओ वार्तालाप करैत छथि। ई कार्य योगपुरा वा भलमानुष समाजमे चतुर्थीएेक रातिमे सम्पन्न होइत अछि। दूनू शास्त्र विहित रहने प्रशस्ते बुझबाक थिक। *संस्कार-दीपक*मे दूनू पक्षक समर्थन शास्त्रवचनसँ देखैत छी।

उचिती

विवाहमे वरक विदा होएबाक काल ओ द्विरागमनमे कन्याक विदा भेला पर 'उचिती' कहबाक प्रथा सोतिपुरामे अछि। परस्पर वर ओ कन्यापक्षक प्रमुख लोक एक दोसराक कुल ओ व्यक्तित्वक प्रशंसा कए गौरवक अभिव्यक्ति करैत विनयक प्रदर्शन ओ एहि सम्बन्धजन्य अभ्युदयक कामनाक संग कृतज्ञताक ज्ञापन करैत छथि। संगहि अपन व्यवहारगत त्रुटिक मार्जनहेतु सविनय वैदग्धी भङ्गीभणितिसँ अनुनयो करैत छथि।

पहिने बहरीमे ई उचिती होइत अछि पछाति आङनमे वरपक्षक विज्ञलोक उचिती कहैत छथि, जकर उत्तर गीतक माध्यमसँ महिलालोकनि दैत छथि आओर एक पूड़ा पान पठबैत छथि, जे वरपक्षक सभ लोक खाइत बहराइत छथि वा हाथमे लए स्वीकार करैत छथि।

विज्ञ महिलालोकनि तीन प्रकारक उचितीक गीत जनैत छथि। अपनासँ श्रेष्ठकुलक हेतु, अपन समान कुलक हेतु, अपनासँ निम्न कुलक हेतु आओर तदनुसार व्यवहारो पूर्वमे कएल जाइत छल। मुदा आब एहि सूक्ष्मताक ज्ञान नहि रहने केवल औपचारिकताक निर्वाह होइत अछि। सौहार्द सौजन्यक पारस्परिक प्रदर्शन ओ शुभकामना जे सम्बन्ध सुदृढ़ हो - एकर अभिव्यक्ति एहि उचितीमे अन्तर्निहित भाव बूझि पड़ैत अछि।

जमाएकें विदा होएबाक काल सारक सम्बन्धमे जे व्यापक रहैत छथि से उचिती कहैत छथि आओर संकोच वश उत्तर नहि दए जमाए चुपचाप सूनि लैत छथि।

उचिती सिद्धान्तहुक अवसरपर होइत छलैक। यदि कुटुमैताक सम्बन्ध होइत छलैक तँ वरियाती कन्यागतक घरलग किछु दूरमे ठाढ रहैत छलाह आओर उभय पक्षक सम्मान पञ्जीकार दूनू कुलक विरुदावलीक गान-कीर्तन कए वरियातीकें कन्यागतक घरपर अनैत छलाह। एहिमे अनेक खेप दूनू पक्षक मध्य हुनका जाए आबए पड़ैत छलैन्हि तखन घरसँ किछु आगाँ आबि सरियाती ओ प्रमुखतः गृहपति वरियातीकें अरियाति कए लए जाइत छलाह। आब ई प्रथा श्रुते रहि गेल, दृष्ट कमे लोकक होएत।

यौतुक

विवाहक अवसर पर वरकेँ देल गेल वस्तु यौतुक कहबैत अछि। ओछाओन, अर्हणाक वस्तु, भार दौड़, वरक व्यक्तिगत उपयोगक वस्तु, स्नेहसँ देल गेल उपहार-सभटा यौतुक कहबैत अछि।

कहौत / दिनबन्ध

द्विरागमनक दिन पठाएब 'कहौत' कहल जाइत अछि। साड़ी, लड्डू ओ माँछ भारमे दए पातामे दिन पठाओल जाइत अछि। एकरा दिनबन्ध कहल जाइत अछि। अमुक मास अमुक पक्ष अमुक तिथिकें गृहश्रेष्ठक अएनिहारि जे सम्बन्धमे पड़ैत होथि तकर उल्लेखक संग संबोध्यक जे सम्बन्ध अएनिहारिसँ होइन्हि तकर उल्लेख कए जे अपन घर आबि कुलदेवताक पूजा करतीह, तकर अनुमति दिऐन्हि से एकटा संस्कृतक पद्यमे लीखि पठाओल जाइत अछि। एहिसँ पहिने समधि वा तत्कल्पक द्वारा पत्रक सम्बोध्यकें प्रशस्तिपद्य लीखि तान् श्री अमुकशर्मणो महाशयान् नत्वा निवेदयतिक संग दिनबन्ध लीखि पठाओल जाइत अछि।

दिनबन्धक नमूना पद्य एतए ककरहु प्रसंग लीखल गेल उद्धृत अछि –

वैशाखे धवले दले रवितिथौ चन्द्रात्मजे वासरे
मद्भ्रातुर्दयिता प्रशस्तकुलजा युष्मत्सुता सादरम्।

कुर्यान्मत्कुलदेवतार्चनविधिं प्राप्य स्वकीयं गृहं
तत्रौदार्यदयान्वितैरनुमतिर्देया भवद्भिर्बुधैः।।

प्रशस्तिक पद्य एना अछि –

उन्मीलत्सुकुलीनताकुमुदिनीमुद्भासयन्ती मुहुः
श्रौताचारविचारिताधिकतरप्रोद्यत्प्रभामण्डिता।
काचिल्लौकिकता धरातलगता चान्द्री कलेवोज्ज्वला
यानुच्चैरवलम्ब्य नित्यमुदयग्रावामिव द्योतते।।
एका कापि कुलीनतासुलतिका श्रुत्याख्यबीजोद्भवा
सिक्ता शीलसुशीतलाम्बुनिवहैर्नित्यं क्षमावर्धिता।
धैर्यौदार्यदला विवेकसुमना धत्तेतरां विस्तरा
यानालम्ब्य धरामरालिमहिता नानाफलानां चयम्।।
लौकिकतापङ्कजवनी-दिनकरशीलागार।
यशोनिशाकरचन्द्रिका धवलीकृतसंसार।।

तथा –

सौजन्यचन्दनमलय। यशोभिसुरभित भूवलय।।
औदार्यं वाक्पटुत्वं च गाम्भीर्यं चातुरी कला।
यानाश्रित्य गुणाः सर्वे वसन्त्यवनिमण्डले।।

ताञ्छ्री.......... शर्मणो नत्वा' आदि ऊहनीय अछि। मुदा आब द्विरागमनक व्यवहार कमेठाम होइत अछि। अस्सी ईसवीक बाद अर्थात् एहि शतकक चतुर्थचरणमे विवाहे दिन कन्याक सासुर गेलासँ एकर अवसरे नहि रहैत छैक।

खोंछि भरब

सासुरसँ नैहर जएबाक काल दूबि हरदिक ढेकी तथा चाउर आदि मांगलिक वस्तुसँ खोंछि भरि सधबा लोकनि यात्रा करैत छथि। घरक प्रमुख महिला भगवतीक (कुलदेवताक) समक्ष ई कार्य करैत छथि। नैहरसँ सासुर जएबाक काल चाउरक बदला धान देल जाइत अछि।

द्विरागमनक अवसरमे यदि बालक वा कन्या संग रहैक वा कल्याणक योग्यता (गर्भ) रहैक तँ तीन मुण्डक (वर, कनियाँ ओ बच्चाक यात्रा) कें उचित नहि मानि खोंछिमे नारिकेर राखि देल जाइत छैक। विश्वामित्री सृष्टिक अनुसार ओहो मानवैक प्रतीक मानल गेल अछि। सासुर गेला पर बुझनिहारि महिला बूझि जाइत छथि जे वधूकें कल्याणक योग्यता छैन्हि, जँ सन्तति संग रहलैक तखन तँ स्पष्टे छैक जे चारिम मुण्ड ई नारिकेर मानल गेल अछि।

चुमाओन

गुरु जनक द्वारा सामाजिक ओ पारिवारिक अभिनन्दन–आशीर्वादक आयोजन मिथिलामे 'चुमाओन' कहबैत अछि। मुण्डन, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, महिलालोकनिकें नवजात शिशुक संग नैहर–सासुर गेला पर, विद्याध्ययनक समाप्तिक अवसरपर, पिण्डदान कए गयासँ अएलाक बाद, तीर्थयात्रा सम्पन्न भेलापर वा आने कोनो उत्कर्ष भेलापर गुरुजन दूबि अक्षत लए वैदिक मन्त्रक उच्चारण कए आशीर्वाद करैत छथि आओर पल्लवयुक्त मङ्गलकलश आगाँमे राखि अड़िपन देल पीढी पर बैसाए महिलावर्ग डालामे धान, दही, केरा ओ पान राखि हुनका माँथक ऊपर गीत गाबि डाला घुमबैत छथि, जे चुमाओन कहबैत अछि।

गर्भाधान संस्कार

अज्ञानक कारणे ई महत्त्वपूर्ण संस्कार लुप्तप्राये अछि। प्रथम रजोदर्शनक अवसरपर उत्सव जकाँ एहि संस्कारविशेषक अनुपालन–अनुष्ठान एहि शताब्दीक पूर्वार्धधरि होइत रहल। कम वयसमे विवाह द्विरागमन भेलापर परस्पर नैहर वा सासुरमे रजोदर्शनक सूचना माङ्गलिक बूझि सोल्लास देल जाइत छल। नवमाटिक ढाकनमे आर्द्र (गील) सिन्दूर पिठार नव लाल कपड़ासँ बान्हि पठाओल जाइत छल, जकर स्वागत माङ्गलिक गीत गाबि गोसाँउनिक शिरमे राखिकए कएल जाइत छल। अइहवक फड़ सधवा सबमे बाँटल जाइत छल। एकरा 'प्रथम बालक' होएब कहल जाइत छल। झाँपल तोपल वा लाक्षणिक पद ई भेल। बालक होएबाक योग्यताक अर्जन तँ एहिसँ महिलाकेँ होइतहिँ अछि। रजस्वलाकें तीन दिन धरि विहित नियमक परिपालन कराए चारिम दिन बाँसक बीटमे स्नान कराओल जाइत छल, जे वंशवृद्धि बाँसैक वृद्धि जकाँ एहिसँ होउक। सन्ततिक

रक्षिका ओ सन्तति प्रदात्री षष्ठिका देवीक पूजा यथाविधि कराए आन आन कुलाचारक पालन होइत छल। एहिमे वरक उपस्थितिओ वाञ्छित रहैत छल मुदा अनिवार्य नहि। सन्ततिक प्रतीक नारिकेर ओ दूबि धानसँ खोछिं भरल जाइत छल। बालकक प्रतीक लमौन लोढी लए बालककेँ कोड़ामे रखबाक अभिनय कराओल जाइत छल।

वंशवृद्ध्यर्थ सन्तानप्राप्तिक प्रबल लालसा ओ ओहि सन्ततिक उत्कर्ष हेतु संस्काररूपमे अनुष्ठेय माङ्गलिक विधिक प्रति आग्रह आओर एहि हेतुक महिला समाजक आदर-मान अभिजात वर्गमे विशेष रूपसँ अनुपालनीय मानल जाइत छल। सिन्दूर पिठार पठाएब वंश वृद्ध्यर्थ शुभाचरण ओ शुभकामनाक प्रतीक रूपमे विहित छल। गर्भपात्रक प्रतीक ढाकनमे सिन्दूर पिठार प्रकृति ओ पुरुषक तेजस स्वरूप रजस् ओ वीर्यक अनुकल्पक स्थापनहिसँ सन्तति लाभ रूप अभीष्ट सिद्धि सम्भव छैक, एतदर्थ कुलदेवताक समक्ष ओहि प्रतीकक समर्पण, प्रार्थनाक एकटा प्रकाररूपमे अनुष्ठित होइत छल। प्रतीक द्वारा गूढ रहस्यक बोध कराएब मैथिलक अनेक आचारमे देखल जाइत अछि, जाहिमेसँ एकटा ईहो थिक। द्विरागमन भेला पर जे चारि दिन सासुरमे नागमे कनियाँकें राखल जाइत अछि, ओतहु पातिलमे अखण्ड दीप जरएबाक व्यवहार अछि। ओहो वंशवृद्ध्यर्थ भावी सन्तानक गर्भमे रक्षाक प्रतीके मानबाक थिक। जीव शिशुक प्रतीक-तेजःस्वरूप प्रदीप-गर्भक प्रतीक पातिलमे रहैत अछि।

प्रथम रजोदर्शनक स्थान ओ कालक ज्ञान रहलासँ शास्त्रमे एहि महिलाक आचरण, सौभाग्य ओ स्वभावक परिचय संभव छैक। *शास्त्र पुराण*मे एहन प्रक्रियाक निर्देश भेटैत अछि। *संस्कारदीपक*मे म०म० **हर्षनाथ झा** आ ओकर टिप्पणीमे **प० रामचन्द्र खनङ्ग** एकर विस्तारसँ विवरण यथास्थान प्रस्तुत कएल अछि।

प्रो० चिन्ताहरण चक्रवर्तीक *'हिन्दूर आचार ओ अनुष्ठान'* देखलासँ ज्ञात होइछ जे फलविवाह नामसँ पूर्वमे बङ्गालहुमे एहन अनुष्ठान होइत छल।

शास्त्रक अनुसार रजोदर्शनक चारिम दिनसँ पतिक हेतु ओ पाँचम दिनसँ देवकार्य-पूजा पाठादि-हेतु महिला शुद्ध मानल जाइत छथि। युग्मदिनमे संभोग कएला पर गर्भ रहने बालक ओ अयुग्म दिनमे संभोगजन्य गर्भधारणे कन्याक जन्म होइत अछि। संगहि शुक्रक आधिक्य ओ रजसक अल्पतासँ बालक ओ

व्यतिक्रमसँ कन्या होइत छैक। तेँ रजोदर्शनक बाद अल्पाहार कराए कन्याकेँ कमजोर राखल जाइत अछि ओ पौष्टिक आहारसँ पतिकेँ सबल कएल जाइछ।

हमर तँ एकटा धारणा ई अछि जे कार्यमात्रक प्रति अदृष्ट ओ ईश्वरेच्छा कारण होइत छैक। अतः ईश्वरक एहन विधान छैक जे सभ सामग्री ओ आयोजन एहन ओ प्रभु कए दैत छथि जे बालक वा कन्या पाबि लोक आह्लादित होइत अछि। रजोदर्शनक सोलह दिनक बाद संभोगकेँ अनठाबी। अन्यथा कुरूप, अङ्गविकल वा नपुंसक सन्तान होएबाक डर रहैत छैक।

ई संस्कार यद्यपि बड़ महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा आब ऊठि गेल। क्षेत्र संस्कारक समय स्वाभाविक संकोच, संस्कारक प्रति आस्थाक अभाव तथा एहन संस्कारकेँ अपन अज्ञानतेँ अन्धपरम्परा मानब आदिसँ आजुक प्रबुद्ध वर्ग एकर उपेक्षा कएने होथि। अधिक वयस भेलापर कन्याक विवाहोसँ ई बाधित भेल होएत।

पुंसवन

'पुमान् सूयते येन कर्मणा तत् पुंसवनम्' एहि व्युत्पतिक अनुसार गर्भक तेसर मासमे पुरुष सन्ततिक लाभार्थ एहि संस्कारक अनुपालन होइत छल, जे आब लुप्त अछि। हवन आदि कए देवतासँ प्रार्थना कएल जाइत छल जे पुत्रे सन्तान देथि। *गृह्यसूत्रक* अनुसार किछु औषधौक सेवन कराओल जाइत छल।

कतोक ठाम अभिभावक नवग्रह पञ्चदेवता ओ विष्णुक पूजा कए स्नान कराए पीयर वस्त्र पहिराए पवित्र स्थानमे गर्भवतीकेँ बैसाए संक्रान्तिक दिन ग्रहशान्ति करैत छथि, जे गर्भ ओ गर्भवती सुरक्षित रहथि। ई क्रिया जाधरि शिशुक जन्म नहि होइछ ताधरि अनुष्ठित होइत अछि। एकरा एकर अनुकल्प कहि सकैत छी।

अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकगोत्रायाः अमुकदेव्याः सगर्भायाः तृतीयमासस्थितगर्भस्य च नवग्रहसंसूचिताशेषारिष्टझटितिप्रशमनपूर्वक दीर्घायुष्टबलपुष्टिनैरुज्याप्राप्तिकामनया एतावद्द्रव्यमूल्यक हिरण्यदानमहं करिष्ये, करिष्यामि। एवं एकर दक्षिणा सोलहम भाग यथाविभव दान कएल जाइत अछि।

ई दान कएल द्रव्य गर्भवतीकेँ छुबाए परगोत्री ब्राह्मणकेँ देल जाइत अछि।

अगत्या पक्ष ईहो देखैत छी जे किछु रुपैया स्नाता गर्भवतीसँ छुबाए मानसिको दान कए ब्राह्मणकें देल जाइत अछि।

सीमन्तोन्नयन

सीमन्त सौंथ केँ कहैत छैक। शुभमुहूर्तमे पति एकर उन्नयन अर्थात् ऊपर लए जाइत छथि अर्थात् केश-प्रसाधन करैत छथि। प्रथम गर्भक समय छठम वा आठम मासमे एक महिलाकेँ एकहि बेरि ई अनुष्ठान कएल जएबाक विधान अछि। एहिसँ अर्थापत्त्या सिद्ध होइत अछि जे पछाति गर्भवती प्रायः प्रसाधन आदि आलस्यक कारणे नहि करैत छलीह। ईहो विधि सर्वथा लुप्ते अछि। अपन जीवनमे हम एहि संस्कारकेँ होइत नहि देखल अछि।

किछु ठाम ज्योतिषीसँ गर्भवती महिलाक जन्मकुण्डलीक अनुसार 'वर्षप्रवेश' बनबाए शुभ मुर्हूर्तमे उक्त वर्षप्रवेशानुसार दान आदि कएल करबाओल जाइत अछि। सम्भव थिक ओ एकरे अनुकल्प हो। सोलहम वर्षमे गर्भक धारण ओ प्रसव बहुत दोषावह मानल जाइत अछि। पन्द्रहम वर्षमे गर्भधारण आ' सोलहम वर्षमे प्रसव कम दोषावह आओर सोलहममे गर्भ धारण सत्रहममे प्रसव मध्यम कोटिक दोषावह शास्त्रमे कहल गेल अछि। अधिकवयसमे कन्याक विवाह भेलासँ आब एहि तरहक दोषक संभावना कमे रहैत अछि।

जातकर्म

प्रसवकाल शिरोदय भेलापर बेटाक जन्ममे घर पर बहिङा ओ बेटीक जन्ममे सहत फेकाओल जएबाक लोकाचार पूर्वमे अनुष्ठित होइत छल। आब केवल समय नोट कएल जाइछ, जे जन्मकुण्डली बनएबामे सहायक होएतैक। जन्म होइतहिँ पिता वा अभिभावक नवग्रहक शान्त्यर्थ द्रव्यदान करैत छथि। ओ प्रसूतीकेँ लालधान, दूबि, ढेकी हरदि तथा सुपारी दए खोंछि भरल जाइछ तथा भगवतीकेँ प्रणाम कराओल जाइत अछि। शिरहर प्रणामी देल जाइत अछि। सुखप्रसव हेतु औषध, जड़ी आ मन्त्रक प्रयोग घरक अभिभावक प्रसवकालमे करैत करबैत छलाह।

एहिसँ अधिक अभिभावक नान्दी श्राद्ध करैत छथि ओ ब्राह्मणकेँ पकवान ओ अन्य उपयोगी वस्तु दान करैत छथि। सोहर, बटगवनी ओ भगवतीक गीत उत्साहसँ महिलावर्ग बच्चाक (जन्म लेनिहारक) पैतृक मातृकमे सूचना पबितहिँ

गबैत छथि।

आन लोकाचार, नाभिसँ नाड़ पुरैन काटब, परिचर्या आदि करब आबहुँ अनुष्ठित होइतहिँ अछि। पहिने प्रसूतीके नागमे राखल जाइत छल। विवाह द्विरागमनहुँ मे नागक व्यवहार अछि। घरमे काँच करची, कररिक पातलागल थम्ह, चारि कोनपर दव्य, हरदि सुपारीक संग गाड़ि नव पीयर साड़ीसँ घेरल बेढ़ल नाग होइछ, जाहिमे पुरहर पातिल रहैछ, पातिलमे दीप जरैत रहैत अछि। सबरङ पटिया ओछाए ओछाओन देल जाइत छल। एहिमे छठियार भरि सूतब प्रसूतिक हेतु आवश्यक छल। बच्चाक सिरमामे कजरौटा राखल जाइत छल। प्रसूतीकेँ वरेरीक दोसर भाग जाएब वर्जित छल। एक आङनमे दू प्रसूतिक नहि रहबाक लोक आयोजन करैत छल। द्वारिपर प्रसूतिक घरमे सतत आगि जरैत रहब आवश्यक मानल जाइत छल। जन्मक दोसर दिन भूखल प्रसूतीकेँ तेल मरीच पीसि पिआओल जाइत छल। आदगूड़ खुआओल जाइत छल।

छठियारमे अरिपन दए साठि (षष्टिका) भगवतीक पूजा होइत अछि। अगहरी पातपर पूजा कए पीयर साड़ीसँ साठि झाँपल जाइछ, जे पछाति समधिनकेँ पठाओल जाइत अछि। नव वस्त्र प्रसूतीकेँ देल जाइछ। पनपथिया, पुरहर पातिल, दीप, कोहा, बीयनि, कजरौटी, साहीक काँट, अस्त्र, छुरी, चूड़ा, लाबा आदि, दुर्गापुस्तक, कागज, कलम मोसि राखल जाइछ। कहैत छैक जे विधाता आजुक राति बच्चाक भाग्य लिखैत छथि। राति भरि बच्चाकेँ कोड़हिमे रखबाक प्रयास कएल जाइछ।

दिन तकाए नह कटाओल जाइछ। सातम दिन जँ रवि, मंगल वा शनि नहि रहैक तँ नह कटाओल जाइत अछि। ओना आनो शुभ दिन ताकि ई कृत्य कएल जाइछ।

नानाभैयामे नीक भोजन प्रसूतीकेँ कराओल जाइत अछि। बच्चा प्रसूतीकेँ नव कपड़ा देल जाइत अछि। कौड़ी पाइ लुटाओल जाइछ। छठिहार ओ नानाभैयामे प्रसूतीकेँ नव लहठी पहिराओल जाइत अछि। काँसाक थारी नौ बेर बच्चा सब घर बाहर भए लकड़ीसँ बजबैत अछि।

प्रसूती नीक दिन तकाए स्नान करैत छथि। ई विधि सब क्रमशः ह्रासोन्मुख अछि। अस्पतालमे जन्म भेलासँ डाक्टरक अनुरोध, रहन-सहनक पद्धतिमे भेद ओ शीघ्रताक जीवन एकर ह्रास होएबाक मूल कारण अछि। मध्यमे नानाभैया

नवम दिन ओ छठियारी छठम दिन लोकाचार स्वरूप अनुष्ठित होइत अछि। महिला वर्ग धूमधामसँ उत्साह ओ उल्लासमे ई सब करैत छथि।

नामकरण

जन्माशौच बितला पर एगारहम वा बारहम दिन वा पछाति कोनो शुभ दिनमे नामकरण कएल जाइत अछि। कुलदेवताक पूजाक बाद पञ्चदेवताक, विष्णुक, नवग्रहक पूजा, नवग्रहक शान्त्यर्थ दान ओ पार्थिव शिवलिङ्गक पूजा कए जन्मकुण्डलीक अनुसार जाहि अक्षर ओ स्वरक अनुकूल नाम घटैत हो से मधु दूबि लए शिशुक ठोर पर लिखल जाइछ। माए बच्चा ओ नामकरण कएनिहारकेँ नव वस्त्र पहिरब आवश्यक। नवग्रहक शान्तिक वाक्यमे सभ ग्रहक स्थान मित्र शत्रु भाव, तनु धन भाव आ तज्जन्य मातृगत पितृगत ओ आत्मगत अरिष्ट संभावनाक प्रशमन शान्तिवाक्यमे जोड़ब आवश्यक। तेँ एहि समयमे ज्योतिषशास्त्रज्ञक उपस्थिति वा हुनक लिखल ग्रहदानक वचन अवश्य अपेक्षित होइत अछि। आजुक राखल नाम व्यवहारमे नहि आनल जाइछ। उपनयन विवाह आदिमे संकल्प करबाक काल एवं मुख्य अवसर सब पर एकर उपयोग कएल जाइछ। कहबाक नाम एहिसँ भिन्न होइत अछि। ई संस्कार एखन लुप्त नहि भेल अछि, जीबैत अछि। सोतिपुरामे घर घर देखैत छी। सभ देवताक निर्माल्य बच्चा-प्रसूतीक माथपर छीटल जाइछ। द्रव्यदान कएलाक बाद बच्चा-प्रसूतीसँ छुबाकए पुरोहित वा ककरहु देल जाइछ।

निष्क्रमण

चारि मासक भेलापर पूर्वमे बच्चाकेँ घरसँ शुभ मुहूर्तमे बाहर कए सूर्यकेँ प्रणाम कराओल जाइत छल। जे आब पहिनहि भए जाइत अछि। नीक मुहूर्तक प्रतीक्षा वा आवश्यकताक अनुभव लोक नहि करैत अछि। नैहर सासुर छोट बच्चा लए करब जे आवश्यक कहल जाइछ, ताहिमे एहि निष्क्रमण संस्कारक भाव निहित बूझि पड़ैए।

अन्नप्राशन

छठम वा आठम मासमे पुरुषक ओ सातम वा नवम मासमे महिलाक अन्नप्राशन शुभ मुहूर्तमे कराओल जाइत अछि। बच्चाकेँ सजाधजा कए नववस्त्र

पहिराए नव पात्रमे पायस ओ सुअन्न नोनगरो देल जाइत अछि। बच्चा अपनहुँ खाइत अछि ओ खुआओलो जाइत अछि। पूर्वमे हवन आदि कएकेँ ई विधि सम्पादित होइत छल।

एहि संग जीविकाक परीक्षो बच्चाक कएल जाइत अछि। अस्त्र, शस्त्र, खेलौना, पुस्तक तथा कलम आदि विविध वस्तु एकठाम राखि बच्चाकेँ ओतए लए जाइ, जे पहिने उठाबए बच्चा – ताहिसँ ओकर जीविकाक परिकल्पना अवधारणा करी।

चूड़ाकरण / मुण्डन

सम्प्रति एहि संस्कारक दू तरहें पालन होइत अछि। एकर पहिल प्रकार ई भेल जे पहिल, तेसर वा पाँचम वर्षमे माघसँ आषाढधरि चैत्रकें छोड़ि कोनो मासमे मुण्डनक हेतु विहित मुहूर्त ज्योतिषीसँ देखाए तदनुसार भगवतीक घरमे वा अन्यत्र जाहि ठाम अभिलषित हो वा कबुला हो, ओतए नापितकेँ प्रसन्न कए केश जन्मसँ जे माँथ पर रहैत छैक, से पुरुषके कैंचीसँ ओ माउगिकें अस्तूरासँ काटल जाइछ। भगवतीक आराधना ओ नापितक सम्मान कर्तव्य होइछ। गुरुजन दूर्वाक्षत दैत छथि, महिलावर्ग चुमाओन करैत छथि। गुरुजनक द्वारा सामाजिक ओ पारिवारिक अभिनन्दन–आशीर्वादक–आयोजन मिथिलामे 'चुमाओन' कहबैत अछि। पल्लवयुक्त मङ्गलकलश आगाँमे राखि अड़िपन देल पीढी पर बैसाए महिलावर्ग डालामे धान, दही, केरा ओ पान राखि हुनका माँथक ऊपर गीत गाबि डाला घुमबैत छथि, जे चुमाओन कहबैत अछि। उत्साहमे यथाविभव भोजोभात होइत अछि। संक्षेपमे भेला पर 'गौनौरा मूड़न' आ उत्साह उल्लाससँ भेलापर 'जगमूड़न' ई कहबैत अछि। मुदा भोजभातक हेतु मुण्डन छोट कार्य मानल जाइत अछि।

आओर एकरे दोसर प्रकार उपनयन दिन उपनयनसँ पूर्व मँड़बाक नीचामे अनुष्ठित होइत अछि। जाहिमे कुशकण्डिका, ब्रह्माक समक्ष हवन वरुआक अनेक वैदिक विधि आचार्यगुरु सम्पादन करैत छथि। उपनयनक पद्धतिमे विधि विधानसँ एकर विवरण उपलब्ध अछि।

मुण्डन कोनो हो मुदा काटल केश जहिँतहिँ नहि फेकल जाइछ। नव साड़ी पहिरि केओ केश संग्रह करैत छथि आओर ओहन बाँसक बीटमे साँझकें गीत गाबि ओहि केशकेँ फेकैत छथि जाहि बीटसँ बाँस काटल नहि गेल रहैत

छैक अर्थात् अखण्डवंशबीटमे फेकने हमरहु वंशक अखण्डता बरकरार रहत से भावना एहिमे निहित अछि। अथवा कल्पमे पवित्र स्थानमे गाइक घरमे ओ केश राखल जाइछ नदी वा पोखरिमे भसाओल जाइत अछि। भगवती कुलदेवताक पीड़ी लग नव आँचर आरत देल जाइत अछि। छाग बलि दए वा पायस उत्सर्ग कए हुनक नैमित्तिक विशेष पूजा करब आवश्यक। यथाविभव लड्डू चढाओल जाइत अछि, जकर जेहन कुलाचार रहए से अवश्य अनुपालनीय थिक।

कर्णवेध

मुण्डनक संग कर्णवेध संस्कार कएल जाइछ, हेतु जे एकरो काल ओएह पहिल, तेसर वा पाँचम वर्ष निर्धारित अछि। मुदा स्वतन्त्रो रूपसँ ई भए सकैत अछि आ कतोक ठाम होइतो अछि। एहि कार्यक हेतु कनौसी बनबाओल जाइछ आओर सोनारकें मानदेय दए कान छेदाओल जाइछ। वरुआक हाथमे गुड़ दए कानक बेध जन्य दुःख बिसरएबाक उपाय कएल जाइछ। एहि हेतु शुभ मुहूर्त तकाएब आवश्यक। दूनू कानक छेदबाक मन्त्र फूट फूट अछि से मन्त्र अभिभावक पढ़ि कए कानकें छेदबासँ पूर्व स्पर्शकए अभिमन्त्रित करैत छथि –

'भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

एहिसँ दहिनकान आओर

'वक्ष्यन्ती वेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाना।
योषेव शिङ्क्ते वितताधिधन्वं ज्या इयं समने पारयन्ती।।

एहिसँ वामकान अभिमन्त्रित कएल जाइत अछि। ई जँ पृथक् कालमे हो तँ भगवती कुलदेवताक मुण्डन जकाँ नैमित्तिक आराधना कुमारि भोजन, ब्राह्मण भोजन, दूर्वाक्षत ओ चुमाओन वरुआक कराओल जाइत अछि। ई संस्कार व्यवहारमे औखन देखैत छी।

अक्षरारम्भ / खड़ीपड़ब

बच्चाकेँ तेसर वा पाँचम वर्षमे पढबा-लिखबाक आरम्भ खड़ी धराए कराओल जाइत अछि, जे अक्षरारम्भ वा खड़ी पड़ब कहबैत अछि। ई लोकाचार प्रयुक्त संस्कार सर्वथा अनुपालनीय थिक, शिष्टानुमत रहने मिथिला आ बंगालमे

एकर प्रचार देखैत छी। कोनो कोनो कुल वा घरमे एकर दृढ़तासँ अनुपालनो होइत अछि।

पतरामे निर्दिष्ट मुहूर्त तकाए वरुआ ओ खड़ी देनिहार नव वस्त्र पहिरि कए खड़ी देथि।

पञ्च देवता, कुलदेवता, गणेश, सरस्वती, लक्ष्मी ओ विष्णुक पूजा कए महादेव आ ब्रह्माक पूजा करी। पातरि, कुमारिभोजन ओ ब्राह्मणभोजन कराबी।

तखन केराक सौंस पात पर पसारल पसेरी भरि चाउरपर 'ऽ **सिद्धिरस्तु**' हाथ पकड़ि बच्चासँ खड़ी लए लिखाबी पछाति पाथरपर - चनरोटापर ओएह लिखाबी। सभ देवताक विसर्जन करी। ओहि पातपरक चाउरक कहियो कहियो पायसमे उपयोग कए वरुआकें ओ स्वयं सकुटुम्ब खाइ-खुआबी। सुनैत छी जे एहि चाउरक खीर खएलासँ मेधा बढ़ैत छैक। किछु दिन पूर्व खड़ी बिना देलें बच्चाकें अक्षर नहि सिखाओल जाइत छल। आब ई ऐच्छिक भए गेल अछि। बहुत ठाम वसन्तपञ्चमीकें सरस्वतीक दिन मानि अक्षरारम्भ करएबाक व्यवहार अछि।

उपनयन

उपनयन संस्कार सबसँ अधिक महत्त्वक अछि। वेदक अध्ययनार्थ गुरुक समीप जाहि कर्मसँ लए गेल जाइत अछि से उपनयन कहबैत अछि –

'गृह्योक्तकर्मणा येन समीपं नीयते गुरोः।

बालो वेदाय तद्योगात् बालस्योपनयं विदुः।।'

उद्योग, माँटिमंगल, चरखकट्टी, चुरकुट्टी, मँडबा ठाठब, कुमरम आदि अनेक लोकाचारक अनुपालन एहिमे कएल जाइछ। गुरुशुद्धि भेलापर उपनयनक मुहूर्त बनैत अछि। दश बीस दिन पूर्व एकर उद्योग गृहपति-वरुआक अभिभावक -लाल मोसिसँ उपनयनक उपयोगी वस्तु सभक स्मारक बनाए वरुआक हाथें श्री १०८ कुलदेवताक समक्ष प्रणामपूर्वक रखबैत छथि। वरुआ आगत ओ उपस्थित गुरुजनकेँ प्रणाम कए आशीर्वाद लैत छथि। भगवतीकेँ नोत देब सेहो कतहु एकरा कहल जाइछ, अमुक दिन हम अपन बच्चाक उपनयन करए चाहैत छी से उपाय कए दी- एहि भावक पत्र चि० वरुआक हाथें श्री भगवतीक शिरमे रखबैत छथि। आजुक दिनसँ सुपारी भोंकल छुरी वरुआक हाथमे रहैत

अछि। उपनयनसँ पूर्वक मंगल दिनमे माटिमंगल होइत अछि अर्थात् माटि मङाओल जाइछ जे नववस्त्रसँ झाँपल रहैत अछि। एकर चूल्हा बनैत अछि, जाहि पर कुमरमक साँझ कल्याणी देवीक पूजाक हेतु अन्न सिद्ध कएल जाइत अछि। नीक मुहुर्तमे मडबा ठाठल जाइछ, बाँस काटल जाइछ, जाहिमे वरुआ बाँसक बीट जाए एक छह बाँसमे कुरहरिसँ लगाए दैत छथि ओ बाँस पहिने काटल जाइछ। एकर भोज उत्साहमे कएल जाइत अछि। सोति लोकनि बँसकट्टी नहि करैत छथि।

सातटा वा नौटा सधवा चरखा काटि जनौ तैयार करैत छथि। एतदर्थ हुनका दूबि चाउरसँ खोंछि भरल जाइत अछि आओर इएह जनौ वरुका मे दए आठ ब्राह्मणकेँ बाँटल जाइछ तथा उपनयनकालमे माणवक (बडुआ) पहिरैत छथि। सधवा लोकनि पवित्रतासँ चूड़ा कुटैत छथि, जाहिसँ मातृ-भिक्षा देल जाइत अछि। आ ओकर चुल्लौर आदि बनैत अछि, जे चारि दिन वरुआ खाइत छथि। कुमरम दिन वरुआकें तेल उबटनसँ आङ ओङारल जाइत अछि, एहिमे सुवासिनीवर्गकेँ इनाम भेटैत छैन्हि। विवाहमे बहिनिक आओर उपनयनमे पीसीक (पितृष्वसा-बापक बहिनिक) वर्चस्व रहैत छैक, जे एहि सभ कार्यकेँ सोत्साह सम्पादित करैत छथि। पोखरि जाए परिछनि केनिहारि ओ वरुआकें नहाओल जाइत अछि। भगवतीकेँ बलि प्रदान वा लड्डू पायसक भोग लगैत अछि। आचार्य, वरुआ, परिछनि केनिहारि ओ ब्रह्मा भेनिहार लोक एकभुक्त करैत छथि। बेरूपहर पुरोहित वैदिकी वस्तुक संघटन कए एकठाम ठेकना कए रखैत छथि। जाहिसँ प्रातःकाल कृत्य सभ अविलम्ब सम्पादित होइत अछि।

आजुक दिन अहल भोरे 'बम भड़ार' नोतल जाइत अछि, जकर उद्देश्य अछि आधिभौतिक उपद्रवक प्रशमनक उपाय स्वरूप पूर्वपुरुषक उपस्थिति ओ हुनक आशीर्वाद प्राप्त्यर्थ अभ्यर्थना। सिन्दुर पिठार लागल दूटा बाँसक कोनियाँ ओ लाल ताग भगवतीक शिरसँ लएकें गीत गबैत महिला वर्ग देहरिक टाट लग आङन जएबाक द्वारि तक जाइत छथि आओर ओतए एक कोनियाँमे राखल धान, डाँट लागल पान, दूबि आदि कनियेँ राखि दोसर कोनियाँसँ झाँपि लाल तागसँ विहारि-वसात बन्हैत छथि।

एहि हेतु कन्याक पितृपक्ष ओ मातृपक्षक पूर्वजसँ 'आरे हंसा' गीतक माध्यमे प्रार्थना कएल जाइछ जे ओ सभ एहि शुभ अवसरपर आबि शुभाशीर्वाद

करथि, विघ्नवारण करथि, जाहिसँ शुभकार्य सुखें सम्पन्न हो। एहि विधिसँ पितरक प्रति श्रद्धाक अभिव्यक्ति होइत अछि। साँझमे कल्याणदाइक पूजा होइत अछि, पुनः सहस्त्रशीर्षा (पुरुषसूक्त) सँ शिखाकेँ तीन भाग कए ओहिमे तीनटा जूटिका बान्हल जाइत अछि। सोतिपुरासँ भिन्नठाम आजुक दिनमे नीक भोजक आयोजन होइत अछि। सोतिपुरामे टोल परोसमे खीर टिकड़ी ओ तेल बाँटल परसल जाइत अछि। आगत सम्बन्धिक सभक स्वागत आ' भोजनादि सम्पादन तत्परतासँ कएल जाइछ।

उपनयन दिन मातृकापूजा, आभ्युदयिकश्राद्ध, श्रीकेँ परिछि कए पूजा ओ वसुधारा देबाक समय वरुआ लगमे बेसैत छथि तथा पितासँ भिन्नक आचार्य भेलापर वरुआ सर्वप्रथम आचार्यक वरण करैत छथि। पुनश्च चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ ओ समावर्तन यथाक्रम एकहि दिनमे अनुष्ठित होइत अछि। चारू कार्यक कुशकण्डिका हवन आ पूर्णाहुति फूट फूट होइत अछि केवल कर्मदक्षिणा, सकलारिष्ट ओ भूयसीदान एकहि बेरि कएल जाइछ। एहिमे सावित्रीदान ओ मातृभिक्षाक महत्त्व अधिक रहैत अछि। नैहरक लोक पसाहनि ओ वस्त्रालंकरणसँ वरुआक माएकेँ सजाए मातृभिक्षाक हेतु प्रस्तुत करैत छथि। बड़ भाग्यक विषय मानि वरुआक माईक ई प्रसाधन व्यवहृत अछि। उपनयन ओ विवाहमे पौनी–पसारीक खूब कार्य होइत अछि। डोम चुमाओनक डाला, सांकरक डाला ओ आन बाँसक वस्तु, चङेरा आदि दैत अछि। कमार वेदी गाड़ैत अछि, वरुआक खड़म, डंटी लागल पीढ़ी ओ कन्यादानक हेतु वरक बैसैंबाला पीढ़ी दैत अछि। सोनार उपनयनमे कारा, माठा, पिपरपत्ता, चौकठा आ यन्त्र दैत अछि। विवाहमे कन्याक अलङ्करण दैत अछि। कुम्हार मण्डपपर हाथी बैसबैत अछि, चमार ढोलढाक बजबैत अछि, ओ उपनयनमे जूता दैत अछि। धोबिनक सोहाग विवाहदिन भिनसरे कनियाँकेँ सौभाग्य समृद्ध्यर्थ दिआओल जाइत अछि। मलाह माछ देखाए विवाह आ द्विरागमनक गतायातक काल सगुन बनबैत अछि। वस्तुतः बेटाक उपनयन ओ बेटीक विवाहमे समाजहुक सक्रिय भागीदारी ओ उल्लास देखल जाइछ। बेटीक विवाहक चिन्ता समाज अपन कर्तव्य बूझि करैत अछि। तैं अनायास कोनो ने कोनो तरहें सहयोग समाजक अवश्य होइत छैक। ककर बेटासँ केहन विषम परिस्थितिमे कहिया ककरा अविस्मरणीय उपकार होएत –ई केओ नहि बुझैत छैक। मुदा एहि स्वार्थक अवचेतन मनमे रहलहि पर ककरहु बेटाक जन्मसँ समाजकेँ हर्ष ओ बेटाक उत्कर्षसँ समाजकेँ अपन उत्कर्षक बोध अवश्य होइत छैक। जीवनमे एहन अनुभव प्रायः सभकें होइत आएल छैक।

वेदारम्भ

एकर अर्थ होइत अछि जे वेद पढ़बाक हेतु गुरुकुल जाए ओतए ब्रह्मचर्यक पालन करैत शिक्षाक ग्रहण करब।

उपनीय गुरुः शिष्यं महाव्याहृतिपूर्वकम्।

वेदमध्यापयेदेनं शौचाचारांश्च शिक्षयेत्।।

ई शास्त्रक वचन अछि। तें दिनमे नहि सुतबाक ओ समिध संग्रह करबाक प्रतिज्ञा ब्रह्मचारीसँ कराओल जाइत अछि।

समावर्तन

एकर अर्थ होइत अछि ब्रह्मचर्यव्रत पूरा कए ओ अध्ययन समाप्त कए गृहस्थाश्रममे प्रवेश हेतु स्नान करब। '**वेदं समाप्य स्नायात्**' ई वेदक वचन अछि। ई स्नान कएने ब्रह्मचारी स्नातक कहल जाइत छथि। दातमनि करब, केश कटाएब, आठ कलशसँ स्नान करब, दर्पण देखब, काजर ओ अलङ्करण करब आदि ब्रह्मचर्याश्रम समाप्तिक प्रतीक थिक, जे समावर्तनमे कएल जाइत अछि।

जैं कि चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ ओ समावर्तन एकहि दिनमे सम्पन्न कएल जाइत अछि तैं वेदारम्भ ओ समावर्तन संस्कारक अन्तर्भाव उपनयनहिमे भए गेल जकाँ बूझि पड़ैत अछि। मुदा वेदारम्भ ओ समावर्तन पृथक् संस्काररूपमे परिगणित अछि। 'सामवेदीय' छन्दोगकें उपनयनक पहिने नामकरण संस्कार कएल जाइत छैन्हि, से विशेष हुनका हेतुक ज्ञातव्य थिक। वेदारम्भक अन्तर्भाव उपनयनहिमे मानि लेल गेल अछि।

दीक्षाग्रहण / मन्त्रग्रहण

शुद्धक समय शुभ मुहूर्तमे, ग्रहणकालमे, महाष्टमी, सुखरात्रि, अचला सप्तमी, वसन्तपञ्चमी, रामनवमी ओ अक्षयतृतीयाकेँ कौलिक मन्त्र वा शास्त्र निर्दिष्ट विधिसँ अँटाओल मन्त्र गुरुक मुँहसँ लेल जाइत अछि। पञ्चदेवताक, कुलदेवताक ओ विष्णुक पूजा कए गुरुक इष्टदेवता तथा जाहि देवताक मन्त्र लेल जाइछ, हुनक दशोपचार वा सोलह उपचारसँ पूजा कए दहिन कानमे पुरुषकेँ वाम कानमे महिलाकेँ तीन बेरि मन्त्र कहल जाइछ। पुनः ओहि देवताक पूजा ओ देल मन्त्रक कमसँ कम १०८ बेरि जप शिष्यसँ कराओल जाइत अछि।

पछाति गुरुकेँ दक्षिणा देल जाइत अछि। दक्षिणामे धोती, तौनी, पानक ढोली सौंस सुपारी, सूखा मेवा, पाकल केरा, आन फल सब, सोना, रुपैया तथा आन उपयोगी वस्तु यथाविभव देबाक थिक। एक दिन पूर्व एक भुक्त गुरु शिष्यकें करबाक निर्देश ओ व्यवहार अछि। प्रसन्न चित्तसँ उल्लास ओ उत्साहसँ मन्त्र लेल जाइत अछि। गुरु अपन शक्तिक हानि नहि हो तदर्थ एक सहस्र अपन इष्टक जप करथि से *प्रपञ्चसार*मे *शङ्करभगवत्पाद*क निर्देश अछि। एहिसँ बूझि पड़ैए जे मन्त्र देलापर अपन मन्त्रशक्तिक क्षय होइत छैक। पद्धतिमे *वर्षकृत्य*मे मन्त्र लेबाक विधि लिखल रहैत अछि। ओ अवसर पर अनुसरणीय अछि।

शारदातिलक, ईशानशिवगुरुदेवपद्धति ओ *प्रपञ्चसार*मे विस्तारसँ दीक्षाक विधि, प्रकार ओ स्वरूप वर्णित अछि। मोटामोटी मिथिलामे जेना मन्त्र लेल जाइछ से एतए यथामति कहल गेल अछि। गुरु ओ शिष्यकेँ नववस्त्र पहिरि ई कृत्य करबाक थिक। माए, सासु (महिलालेल), पितिआइनि, मौसी आदि गुरु प्रशस्त छथि। तखन जाहि व्यक्तिपर श्रद्धा हो, हुनकासँ मन्त्र लेल जाए सकैत छथि। पितासँ मन्त्र नहि लेल जाइत अछि। गुरु जतबे पूजापाठक आदेश देथि ओतबे करी। मन्त्र गुरुमुखसँ विधिवत् सुनलहि पर मन्त्र होइत अछि। तेँ पुस्तकमे लिखित मन्त्रक जप नहि करबाक निर्देश अछि। तन्त्रालोकक व्याख्यामे जयरथ कहने छथि –

'लिपिस्थितस्तु यो मन्त्रः निर्वीर्यः सोऽत्र कल्पितः'

महाकालसंहिता कहैत अछि –

'न शास्त्रमालोक्य वदेन्नाचरेन्न जपेदपि।
गुरूपदेशतो लब्धे जपन्यासार्चनादिके।।

इष्टदेवता ओ कुलदेवताक प्रीत्यर्थ आजुक दिन कुमारिभोजन करेबाक थिक।

अन्त्येष्टि / दाह संस्कार

आङनमे तुलसीक चौड़ा लग गाइक गोबरसँ ठाँव कए गङ्गाजलसँ स्थान केँ सींचि पवित्र करी। तखन कुश छीटि ओहिठाम आसन्न मरण भेनिहार व्यक्तिकेँ उत्तर शिर कए सुताए वैतरणीदान कराओल जाइत अछि। गाय साक्षात् वा यथाविभव ओकर मूल्य कमसँ कम एक रुपैया दान चारि आना दक्षिणा कएल जाइछ। दानक विधि पञ्चाङ्ग, पद्धति वा पुरोहितक मुँहे बुझबाक सुनबाक थिक। *वराहपुराण*क एहन वचन सुनैत छी –

कण्ठस्थानगतो जीवो भीतो विभ्रान्तमानसः।

ज्ञात्वा तु विह्वलं तत्र शीघ्रं निस्सार्यते गृहात्।

कुशास्तरणशायी स दिशः सर्वास्तु पश्यति।।

मरण भेलापर डाक्टर वा वैद्यसँ देखाए वा जेना मनःपूत हो बूढ़ पुरानक कथनानुसार ओकर निश्चय कए दाहसंस्कार हेतु उठएबाक हेतु सवा पहर – पौने चारि घण्टा–प्रतीक्षा करी। तावतमे चचरी बनब ओ दाह संस्कारक वस्तु जुटाएब आदि कार्यक संग लोकसंग्रह करी। एहि कार्य सभक हेतु एतबाक समय अधिक नहि होइत छैक। मृत व्यक्ति 'शव' नव कपड़ासँ झाँपल रहए। आगाँ कर्ता कोहामे आगि लए ओ पाछाँ अनुगमन कएनिहार मध्यमे चारि गोटा नव बाँसक चचरीपर शवकेँ उठाए श्मशान लए जाथि। उचित थिकैक जे शव मौन भए लए गेल जाए। शास्त्रमे सैह कहल अछि। मुदा बंगाल ओ मध्यप्रदेशक प्रभावसँ भगवन्नाम कीर्तन ओ 'राम नाम सत्य है' क उद्घोष एहि समयमे आब लोक करए लागल अछि तथा कान्हा लगेबाक होड़ लगाए लैत छथि। एहन समयमे ककरो भावनाकें ठेस नहि पहुँचैक, तँ एहि व्यवहार सबमे उचितक ज्ञान रहलहुँ पर गजनिमीलन कए लेबाक चाही। आमक लकड़ीसँ जराएब उचित, ताहूमे बीजू आमक काठ पवित्र मानल गेल अछि से ध्यान रखबाक थिक।

स्वयं कर्ता स्नान कए नववस्त्र पहिरि कोहामे जल आनि शवकें दक्षिणाभिमुख कए स्नान कराए गंगौट आदि, महिलाकें सिन्दूर आदि लगाबथि। नव वस्त्र–यदि संभव हो तँ रेशमी–पहिराबथि। ई स्नान मन्त्रपूर्वक कराओल जाइत अछि आओर तखन अछिया पर उत्तर शिर कए सुताओल जाइत अछि। शरीरक सभ छिद्रमे आँखि, नाक, कान, मुँहमे सोनक टुकरी रहला पर देबाक चाही से *छन्दोगपरिशिष्ट* कहैत अछि ओ व्यवहारो अछि। आब लकड़ी बोझि सात बान्हन बाला खढ़क ऊकमे आगि लगाए अछियाक तीन बेरि प्रदक्षिणा करैत शवक मुँहमे कर्ता आगि दैत छथि। आगि देबाक मन्त्र आछि जे विज्ञ वा पुरोहित वा पञ्चाङ्ग (पतरा) वा पद्धतिसँ बुझबाक सिखबाक थिक। जाधरि शवदाह होइक मौन भए कर्ता ओकरा देखैत रहथि। आन–आन गप्प करथि कर्ता मुदा कम बाजथि। कपोतक (पड़बाक) मांस बराबरि जखन शवक मांस जरब बाँकी रहैक तखन ठूठ प्रादेश भरिक–सातटा काठी (ठहुरी) तीनटा दहिना हाथमे आ चोरिटा बामा हाथ मे लए ओहिमे घृत चन्दन लगाए पाछाँसँ चितामे **क्रव्यादाय नमः** कहि कर्ता फेकैत छथि। पछाति संग पुरनिहार आनो लोक पाँचटा काठी फेकथि और स्नानार्थ विदा होथि। स्नान कए

तिलाञ्जलि देल जाइत अछि आओर भिजले कपड़ा पहिरने कर्ताक घरपर आबि पएर धोए दरबाजापर राखल चारि वस्तुमे सँ मन्त्रसँ तीन वस्तुकेँ छूबी आ चारिम वस्तु खाए केँ थुकरि दी। स्पर्श करी–लोह, पाथर, आगि ओ थुकरि दी सोहराए वा नीमक पात। इएह लोहपाथरकरब कहल जाइत अछि। अत एव अन्यथा लोह आ पाथर एकठाम नहि राखल जाइछ। ई मन्त्रसँ कएल जाइछ। लौहवद् दृढ़कायोऽस्तु, अश्मेव स्थिरो भूयासम्, अग्निः शोशुचदघम्। पछाति घर जाए पैर धोए कपड़ा बदली भोजनादि करी। बूढ पुरानक मुँहे सुनल अछि जे प्रेतयोनिमे गेला पर मृत व्यक्तिक स्वभाव क्रूर भए जाइत छैक। ओ अपन शरीरपर मोह रहबाक कारणें ओकरा जरौला पर क्रुद्ध भए जाइत अछि आओर कर्ताक अनिष्ट करबाक हेतु उद्यत भए जाइत अछि। अत एव कर्ताकेँ संगमे लोह राखब आवश्यक थिक। पहिने श्मशानसँ अएबाक काल कुरहरि आओर दस दिनधरि घरपर छुरी वा सरोता लोहक ओ रखैत देखल जाइत छथि। आजुक दिन जाहि घरमे मरण होइछ। ओहि दिनराति चूल्हि नहि जराओल जाइत अछि। आनठामसँ आनल वा आएल वस्तु घरक लोक खाइत छथि। सम्पूर्ण आङनक लोक स्नान कए तिलाञ्जलि दैछ। केवल कर्ता अर्घ आसन दए हविष्य भोजन करैत छथि। तदर्थ नव चूल्हि जराए पाक कएल जाइत अछि। कर्ताक भोजन रातिमे वर्जित अछि। कर्ता कम्बल पर बैसथि सुतथि, सेहो भूमिपर। घरक लोक साँझसँ पहिनहि भोजन करथि। आलयमे रातिमे केओ भोजन नहि करैत अछि। आलयक बाहर भोजन कएल जाए सकैत अछि – ई शास्त्रीय विधान अछि। साँझमे तीन दिनक वाद प्रेतघट टाङल गेला पर साँझमे प्रेतघटक नीचामे दूध, जल, माला आ दीप अर्पित कएल जाइत अछि। अस्थि सञ्चयक वाद गंगामे ओकर निक्षेप विहित अछि आओर गंगौट गंगा जल मंगाए श्राद्धमे उपयोग कएल जाइत अछि।

एहि तरहें भारतीय परम्परा गर्भाधानसँ लए श्मशान पहुँचबाक काल धरि संस्कारक अनुपालन करैत देखल जाइछ। जाहिमे वैदिक, पौराणिक ओ आगमिक मन्त्र ओ आचरणक अनुपालन देखैत छी आओर उद्देश्य एकर (आत्म) अपन, अभ्युदय रहल अछि। एहि संस्कृतिक ई विशेषता सर्वथा चिन्तनीय ओ मननीय थिक।

❑❑

पाँचम परिच्छेद

अशौचक संबन्धमे ज्ञातव्य सामान्य विषय

शुद्धि ओ श्राद्ध

(क) अशौचक अर्थ थिक अशुद्धि, ई मुख्यतः दू प्रकारक होइत अछि दियाद वा सम्बन्धिकमे ककरहु जन्म वा मरण भेला पर। एकटा शुभ आओर दोसर अशुभ स्वभावतः मानल जाइत अछि। एकटामे हर्षोल्लास ओ दोसरमे शोक रहैत अछि। ई दूनू प्रकारक अशौच – जन्माशौच ओ मरणाशौच–समाने रूपसँ अनुपालनीय होइत अछि।

(ख) *मनुस्मृतिक* अनुसार अशौच भेला पर ब्राह्मण दश दिन धरि, क्षत्रिय बारह दिन धरि, वैश्य पन्द्रह दिन धरि आओर शूद्र मास दिन धरि अशुद्ध रहैत अछि –

शुद्ध्येद् विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः।
वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति।।

दिनक गणना मरण दिनसँ कएल जाइत अछि। रातिमे मरण भेला पर जाहि दिनक ओ राति हो, ओहि दिनसँ दश दिन गनल जाइत अछि। तें दिनसँ अहोरात्र लेबाक थिक। मिथिलामे एहन कार्यमे सूर्योदयसँ दिन बदलैत अछि। सूर्यास्त वा मध्यरात्रिसँ नहि से ध्यान रखबाक थिक। **कश्यपक** वचन अछि–

उदिते तु यदा सूर्ये नारीणां दृश्यते रजः।
जननं वा विपत्तिर्वा यस्याहस्तस्य शर्वरी।।

मुदा आब एकर अनुपालनमे बहुत ठाम शिथिलता देखैत छी। एहि शताब्दीक उत्तरार्धमे प्रायः अधिक लोक दशे दिन अशौच मानि दशाही ओ तेरहा श्राद्ध करैत छथि। *कृत्यसारसमुच्चयमे* **अमृतनाथ झा गोकुलनाथ उपाध्यायक**

कथन लिखैत छथि जे परम्परासँ देश विशेषमे जाति विशेष यदि दशे वा बारहे दिन अशौच मानैत होथि तँ हुनका हेतु सैह मान्य ओ अनुसरणीय थिक। अशौचक सङ्कीर्णताक प्रसङ्ग दशदिना वा बारहदिना अशौचक संकीर्णता भेला पर जे शास्त्रीय निर्णय कहल गेल अछि सैह मान्य ओ हुनकहु हेतु अनुसरणीय थिक। तात्पर्य ई जे परम्पराक मान्यता शास्त्रे जकाँ बुझबाक थिक ओ मानबाक थिक।

(ग) अशौच भेला पर माछ-मांस भक्षण, सन्ध्यावन्दन, तर्पण, पूजा, पाठ, व्रत, उपवास, नह केश कटाएब, दाढ़ी मोछ बनाएब तथा पञ्च महायज्ञ – अध्यापन, तर्पण, श्राद्ध, एकोदिष्ट, हवन बलि ओ आतिथ्य-आदि वर्जित अछि। केवल दश बेरि गायत्रीक ओ १०८ बेरि इष्टक जप करबाक विधान अछि। जन्माशौचमे सभटा एहिना वर्जित अछि मुदा माछ-मांस खाएल जाइत अछि – ई कथा *कृत्यसारसमुच्चय*मे स्पष्ट कहल अछि –

सन्ध्यां पञ्च महायज्ञान् नैत्यकं स्मृतिकर्म च।

तन्मध्ये हापयेत् तेषां दशाहान्ते पुनः क्रिया।। (जाबालस्मृति)

(घ) अशौच नीक जकाँ अर्थात् प्रामाणिक रूपें निजगुत लोकक मुहें सुनलहि बुझलहि पर मानल जाइछ। *ब्रह्मपुराण*मे कहल अछि –

अपि दातृगृहीत्रोश्च सूतके मृतके तथा।

अविज्ञाते न दोषः स्याच्छ्राद्धादिषु कथञ्चन।।

(ङ) एतहि ई ज्ञातव्य अछि जे व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, नैमित्तिक वा काम्य पूजा तथा जप आदि यदि आरम्भ कएलेल जाए आओर पछाति अशौच ज्ञात हो तँ ई अशौच उक्त शुभकर्मक बाधक नहि होइत अछि। ई शुभकार्य सभ सम्पन्न भेलहि पर अशौच मानल जाइत अछि। यदि ई कार्य सब आरम्भ नहि भेल रहए तैखन अशौचक ज्ञान भेलासँ ई शुभकर्म सब बाधित होइत अछि।

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमे ऽर्चने जपे।

आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।।

यज्ञमे आचार्यक वरण, होम, जप, पूजा ओ व्रत मे कएल गेल संकल्प, उपनयन तथा विवाहमे मातृकापूजा नान्दीश्राद्धक आरम्भ भेला पर तथा श्राद्ध

ओ एकोद्दिष्टमे पाक आरम्भ कएला पर वा ब्राह्मणकेँ नोति देला पर कर्मक आरम्भ मानल जाइत अछि। अर्थात् एहन अवसरमे यदि अशौच ज्ञात हो तँ एहि कर्मसभक सम्पादन भेलहि पर अशौच होइत छैक।

आरम्भो वरणं यज्ञे, सङ्कल्पो व्रतजापयोः।

नान्दीश्राद्धं विवाहादौ, श्राद्धे पाकपरिक्रिया।।

निमन्त्रणं तु वा श्राद्धे प्रारम्भः स्यादिति स्मृतिः।

(च) एतहि इहो बुझबाक थिक जे देवकर्म पूजापाठ आदि ओ पितृकर्म श्राद्ध, पार्वण ओ एकोद्दिष्ट आदिक अधिकार दश दिन अशौच बितलो रहला पर शुभकर्मक उपनयन तथा विवाह आदिक अधिकार पिताक मृत्युमे एक वर्ष माइक मृत्युमे छहमास, पत्नीक मृत्युमे तीन मास आओर भाई भातिजक मृत्युमे डेढ़ मास धरि सन्तान, पति ओ साक्षात् सम्बन्धिककेँ वर्जित कहल गेल अछि।

पितुरब्दमशौचं स्यात् षण्मासं मातुरेव च।

त्रैमासिकं तु भार्यायास्तदर्धं भ्रातृपुत्रयोः।।

(कृत्यसारसमुच्चयक टिप्पणीमे उद्धृत)

एतए मासक गणना मृत्युक तिथिसँ कएल जाइत अछि से धर्मशास्त्रमे कहल अछि।

(छ) नोन, मधु, मांस, फूल, फल, शाक (साग), खढ़, काठ, दही, दूध, घी, तेल, औषध, मृगचर्म, सतुआ, लड्डू आदि घृतपक्व, चाउर, दालि तथा दोकानक हाट बाजारक वस्तु अशौचियाह सम्बन्धीकक हाथक नहि छुतैत अछि। साक्षात् अशौचियाहक (जनिक आङनमे मरण भेल छैक) स्पर्श एहि वस्तु सबसँ भेला पर छुतबे करैत छैक।

लवणं मधुमांसे च पुष्पमूलफलेषु च।

शाककाष्ठतृणेष्वेवं दधिसर्पिःपयस्सु च।।

तैलोषध्यजिने चैव पक्वापक्वे स्वयं गृहे।

पण्येषु चैव सर्वेषु नाशौचं मृतसूतके।।

ई मरीचिक कहल अछि।

(ज) अशौचक अधिकारी

अशौचक अधिकारी 'सपिण्ड' अर्थात् 'दायाद' होइत छथि। दायम् अवश्यप्राप्तव्यम् अंशमत्ति इति दायादः अंशहरः। जन्मतः अधिकृत सम्पत्ति दायपदक अर्थ होइत अछि आओर हथउठाइ 'देय' से बुझबाक थिक। बीजी पुरुषसँ सातम पुरुष धरिक मध्य मृतव्यक्ति यदि पड़ैत होथि अथवा हुनक सातम पीढ़ीक मध्य पड़ैत होइ तँ परस्पर सपिण्ड-दायाद-मानल जाइत अछि।

एकर हिसाब दोसर तरहें एना कएल जाए सकैत अछि जे अपनासँ ऊपर खाढीक सातम परुषकेँ देखि हुनक पुरुष सन्तानकें दायाद-दियाद-मानल जाए। एहिसँ ऊपरका खाढ़ीक सन्तान भेला पर 'सकुल्य' – समान कुल छैन्हि जनिक से सकुल्य थिकाह, इएह ज्ञाति कहबैत छथि। बीजी पुरुषसँ आठम, नवम ओ दशम पीढ़ीक लोक ज्ञाति-सकुल्य-थिकाह। हिनक मरण वा जन्म भेला पर तीन राति अशौच रहैत अछि। तेसर दिन नह केश कटाए लोक चारिम दिन शुद्ध होइत अछि। एहिसँ ऊपर अर्थात् अधिक पीढ़ीक लोक-जनिक प्रसंग ई बूझल हो जे ई हमरहि कुलक थिकाह 'गोत्रज' कहबैत छथि। हिनक जन्म वा मरण भेला पर स्नानमात्रसँ शुद्धि भए जाइत छैक। मुदा तीन साँझ-दू दिन एक राति वा दू राति एक दिन – 'पक्षिणी' विताए स्नानक विधान अछि।

'त्रिरात्रेण सकुल्यास्तु स्नात्वा शुद्ध्यन्ति गोत्रजाः' (बृहस्पति)।

दायाद वा सपिण्ड साते पीढ़ी धरि मानल जाए से *मनुस्मृति*मे तथा अन्यत्र स्पष्ट कहल गेल अछि – **'सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते'** (*मनुस्मृति*)। एतए सति सप्तमी थिक, जे निर्धारक होइत अछि। अतः अर्थ होइत अछि जे सातम पीढ़ीक बाद सापिण्ड्य नहि रहैत छैक किन्तु सातम पुस्तधरि ओ अवश्य रहैत अछि। आठम पीढीसँ दियादी टूटि जाइत अछि। **शङ्ख** ओ **लिखित** मुनि कहैत छथि – **'सपिण्डता तु सर्वेषां गोत्रतः साप्तपौरुषी'**। एतए गोत्र पदक अर्थ थिक सन्तति। बीजी पुरुषसँ आरम्भ कए गनला पर सातम पुरुष धरि सब 'सपिण्ड दिआद' कहबैत छथि खाहें ओ सन्तान होथि वा सन्तानी। सातम पुरुषसँ ऊपर भेला पर सन्तानीक संग सन्तानक सापिण्ड्य अर्थात् दियादी टूटि जाइत अछि। जैं कि सापिण्ड्य संबन्ध थिक आओर संबन्ध दूगोटेमे रहैत अछि। अतः आठम पीढीक सङ्ग छठम पीढ़ीक सापिण्ड्य नहि मानल जाइत अछि। एहि दूनूमे सकुल्यत्वे मानबाक थिक। एहि दूनूमे ककरो

जन्म वा मरण भेला पर परस्पर एक दोसराकें तीनिए दिन अशौच हो। ई निर्णय धर्मशास्त्री **वाचस्पतिमिश्रक** *द्वैतनिर्णय*मे तथा **केशवमिश्रक** *द्वैतपरिशिष्ट*मे नीक जकाँ विस्तारसँ विचारि कए कएल गेल अछि। सकुल्यक प्रसङ्ग **हारीतमुनि** कण्ठतः कहल अछि – '**अष्टमनवमदशमाः सकुल्याः**'। सापिण्ड्यक निवृत्त भेलापर सकुल्यत्व आओर एकर निवृत्तिक बाद गोत्रजत्व अबैत छैक। एक गोत्रक बहुत लोक रहैत अछि। तें गोत्रपदक एतए कुल अर्थ बुझबाक थिक आओर गोत्रजक अर्थ कुलज बुझबाक थिक।

अशौचमे दोसर अशौच भेला पर अर्थात् अशौचसङ्करक प्रसङ्ग

(अ) दशदिना अशौचक अवधिमे पाँच दिनक मध्य समान अशौच जँ दोसर उपस्थित भए जाए तँ पहिल अशौचक समाप्ति दिन अर्थात् दशम दिन दोसरो अशौच छुटि जाइत अछि। नहकेश कटाएब, कच्चा घर छछरबाएब, धोबीकें नहकेश कटौलहा वस्त्र धोबा लेल देब आदि कार्य कएल जाइत अछि।

(आ) यदि छओ दिनसँ नौ दिनक भीतर समान दोसर अशौच भए जाए तँ दोसर अशौचक दशम दिन, दोसर अशौचक संग पहिल अशौच छुटैत अछि।

(इ) दशमा दिन चारि बजे राति धरि दोसर समान अशौच पड़लापर दू दिन अशौचक अवधि बढ़ि जाइत अछि। पहिल अशौचक बारहम दिन दूनू अशौचीक नहकेश आदि कएल जाइत अछि। चौदहम दिन आद्य श्राद्ध पन्द्रहम दिन द्वादशाह होइत अछि से पितृकर्मनिर्णयमे ई कहल अछि।

(ई) दशम दिनक भोरमे चारि बजेक बाद आओर सूर्योदयसँ पूर्व दोसर समान अशौच पड़ला पर ब्राह्मणक तीन दिन अशौचक अवधि बढ़ि जाइत छैन्हि। आ दूनू अशौचीक अशौचक अन्त एके दिन होइछ। पहिल अशौचक तेरहम दिन पुनः नहकेश आदि कएल जाइत अछि। सूर्योदयक बाद दू मुहूर्तक मध्य यदि एगारहम दिन सम्पूर्ण अशौच उपस्थित भए जाए तँ श्राद्ध रुकि जाए दोसर अशौच बितला पर श्राद्ध हो। दू मुहूर्त बितला पर श्राद्धक संकल्प भए गेला पर (अर्थात् श्राद्धस्थला जाए तिलकुश लए श्राद्धक संकल्पवाक्य उच्चारण कएलाक बाद) जँ अशौच उपस्थित भए जाए तँ एकादशाह श्राद्ध भए जाएत किन्तु मासिक ओ सपिण्डीकरण आदि बारहम दिनक कृत्य रुकि जाए ओ अशौच छुटलापर कएल जाए। यदि एकादशाह दिन दू मुहूर्त बितलापर आओर षोडशश्राद्धक संकल्प नहि भेल रहैक अर्थात् संकल्प सँ पूर्व अशौच उपस्थित

भए जाइक तँ श्राद्ध नहि भए सकैत अछि। एहि श्राद्धपातदोषक समाधानार्थ गया जा कए श्राद्ध कएलापर पातित्यक निवृत्ति हो – ई कथा **कृष्णमोहन ठाकुर** उपपादन कए *कृत्यसारसमुच्चयक टिप्पणी*मे कहलैन्हि अछि।

(उ) क्षत्रियकें पूर्व मरणाशौचक छठम दिन दोसर ओहने अशौच भए जाइन्हि तँ पूर्व अशौचक शुद्धिसँ शुद्धि होइत छैन्हि। सातम दिनसँ एगारहम दिन धरि यदि एहन परिस्थिति भए जाइन्हि तँ दोसर अशौचक शुद्धिसँ शुद्धि होइत छैन्हि। यदि बारहम दिन चारि बजे भोर धरि एहन परिस्थिति भए जाइन्हि तँ दूदिन अशौच बढ़ि जाइत छैक। चौदहम दिन ओ सब शुद्ध होइत छथि, बारहम दिनक भोर चारि बजेसँ सूर्योदयक पूर्व धरि यदि एहन परिस्थिति भए जाइन्हि तँ तीन दिन अशौच बढ़ि जाइन्हि पन्द्रहम दिन ओ शुद्ध होथि।

वैश्यकेँ पूर्व मरणाशौचक सातम दिन समान मरणाशौच भेला पर पूर्वक मरणाशौचक शुद्धिएँ शुद्धि। एहिना आठमदिनसँ चौदहम दिन धरि समान अशौच भेलासँ दोसर अशौचक शुद्धिसँ शुद्धि होइत छैन्हि। मरणाशौचक पन्द्रहम दिन एहन परिस्थिति भेला पर दू दिन अशौचमे वृद्धि तें सत्रहम दिन शुद्धि होइन्हि। यदि पन्द्रहम दिनक भोरमे सूर्योदयसँ पूर्व एहन स्थिति होइक तँ तीन दिनक वृद्धि अशौचमे होइत अछि, अठारहम दिन शुद्धि होइत छैन्हि।

एहिना शूद्रकें पन्द्रह दिन धरि दोसर समान अशौच भेला पर पूर्वक अशौचक शुद्धिसँ शुद्धि हो आओर सोलहमसँ उनतीसम दिन धरि अशौच भेला पर दोसर अशौचक शुद्धिसँ शुद्धि होइन्हि। तीसम दिनक रात्रि शेष धरि एहन परिस्थिति भेला पर दूदिनक वृद्धि अशौचमे होइत छैक तेँ बत्तीसम दिन शुद्धि हो। आओर तीसम दिन चारि बजे भोरसँ सूर्योदयक पूर्वकाल धरि एहना स्थितिमे तीन दिनक वृद्धि हो। तैंतिसम दिनमे शुद्धि हो से बुझबाक चाही। समान वा सजातीय पदक तात्पर्य एतए मरणाशौचमे मरणाशौचसँ ओ जन्माशौचमे जन्माशौचसँ होइत अछि।

(ऊ) तिनदिना अशौच दशदिना अशौचसँ लघु होइत अछि एहिना जन्माशौच मरणाशौचसँ लघु होइत अछि। गुरु अशौचमे लघु अशौच नहि गनल जाए, ने मानल जाए, गुरु अशौचहिक शुद्धिसँ ओकरो शुद्धि बुझल जाइत अछि। एकरा सभक प्रमाण निम्न वचन अछि।

ब्रह्मपुराणक वचन छैक –

आद्यं भागद्वयं यावत् सुतकस्य तू सूतके।

द्वितीये पतिते चाद्यात् सूतकाच्छुद्धिरिष्यते।।

अत ऊर्ध्वं द्वितीयात्तु सूतकाद्विशुचिः स्मृता।।

*षट्त्रिंशन्मत*मे कहल छैक –

शावाशौचे समुत्पन्ने सूतकन्तु यदा भवेत्।

शावेन शुद्ध्यते सूतिर्न सूतिः शावशोधनी।।

प्रजापतिक कहल अछि –

यथा त्रिरात्रे प्रक्रान्ते दशाहं प्रविशेद् यदि।

अशौचं पुनरागच्छेत् तत्समाप्त्या विशुध्यति।।

अघानां यौगपद्ये तु शुद्धिर्ज्ञेया गरीयसी।

मरणोत्पत्तिसंयोगे गरीयो मरणं भवेत्।।

तिनदिना अशौच वा असगोत्रक अशौच

असगोत्र संबन्धिकक मरण वा जन्म भेला पर तीन दिन अशौच होइत छैक। मौसी, पीसी, मामा, नाना, मामी, नानी, ममिऔत, मसिऔत, पिसिऔत, दौहित्र, कन्या, बहिनि, भागिन, सासु, ससूर, सार, बहिनो, आदिक मरणमे योनिसम्बन्धक कारणे तीन दिन राति अशौच मानि नहकेश कएल जाइत अछि।

गुरु, गुरुआइनि, गुरुपुत्र ओ शिष्य आदिक मरणहुमे तीन दिन अशौच ओ नहकेश होइत अछि।

परगोत्रक दाहसंस्कारमे सम्मिलित भेला पर तीन दिन अशौच मानल जाए ओ नहकेश कटाओल जाए से स्पष्ट *पितृकर्मनिर्णय*मे गुरुकल्प **प० त्रिलोक नाथमिश्र** (गोसपुर) कहलैन्हि अछि।

'दहित्वा च वहित्वा च त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्'। (याज्ञवल्क्य)

(ट) तिनदिना अशौचक प्रसङ्ग सोतिपुरामे एकटा वचन प्रसिद्ध अछि आओर शिष्टसमाजमे एकर अनुपालनो देखैत छी। हमरहु सभ स्वयं परम्परासँ करैत आबि रहल छी। मुदा एकर मूल धर्मशास्त्रक ग्रन्थमे अन्वेषणीय अछि।

साधारण आयास कएलहुँ मतिमान्द्यक वा अनवधान वा अज्ञानक कारणे भेटल नहि अछि। हमरा सभ तँ कुलपरम्पराक वा देशक आचारहुक महत्त्व शास्त्रे जकाँ मानैत आएल छी। मङ्गलाचरण करबाक श्रुतिक अनुपलब्ध रहलहु पर शिष्टाचारक आधार पर लुप्त ओहन श्रुतिक सम्प्रति अनुमान करैत छी। तेँ ईहो वचन मानबाक थिक हेय नहि। वचन छैक –

'मातामहक पितामहक सन्तानमे रहे वा रहिऐक'

अर्थात् स्वयं मृत व्यक्तिक मातामह पितामहक सन्तानमे रहिऐक अथवा मृतव्यक्ति अहाँक मातामह वा पितामहक सन्तानमे रहए। एहनमे तिनदिना अशौच ओ नहकेश होइत छैक। एतए 'रहए' बाला अंशक मूल तँ योनिसम्बन्धक जे पूर्व विवरण देल अछि ताहिसँ भेटैत अछि मुदा 'रहिऐक' बाला अंशमे योनि सम्बन्धक अपलाप वा निषेध तँ नहि अछि, किन्तु ओ सम्बन्ध दूर भए जाइत छैक, तेँ एतेक दूरक सम्बन्ध सभ पकड़िओ नहि पबैत अछि, बुझिओ नहि सकैत अछि आओर शास्त्रीय आधारो नहि देखैत छी। एहिमे पितामह, पितामहीक मातृक, पैतृक पक्षक अर्थात् हुनका सभक मातामह पितामहक सन्तान एहिना मातामह, मातमहीक मातृक, पैतृक पक्षक अर्थात् हुनक मातामह पितामहक सन्तान तक सम्बन्ध चलैत छैक। सम्पूर्ण मिथिलामे ई वचन प्रायः मान्य नहि अछि। मुदा ई वचन विचारणीय अवश्य अछि।

पितृबान्धव / मातृबान्धव

पिताक पिसिऔत, मसिऔत ओ ममिऔत पितृबान्धव आओर माइक पिसिऔत, मसिऔत ओ ममिऔत मातृबान्धव कहबैत छथि –

पितामहस्वसुः पुत्राः पितुर्मातुः स्वसुः सुताः।
पितुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः।।
मातुर्मातुः स्वसुः पुत्राः मातुः पितुः स्वसुः सुताः।
मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः मातृबन्धवाः।।

(ई संस्कारदीपकमे उल्लिखित अछि।)

(ठ) मरणाशौचक मध्य जन्माशौच पड़ला पर मरणाशौचहिक संग जन्माशौचो छुटि जाइत अछि। मरणाशौच जन्माशौचक अपेक्षा अधिक सबल

वा गुरु होइत अछि। वचन छैक जे – '**मरणोत्पत्तियोगे तु गरीयो मरणं भवेत्**'। मरणाशौचक नवम दशम दिन धरि जन्माशौच भेला पर मरणाशौचहिक संग ओहो अशौच छूटि जाइत अछि। ई हमर पिता पण्डित कृष्णमाधव झा अनेक धर्मशास्त्र देखि सिद्धवत् कथा जकाँ अपन डायरीमे लिखने छथि। तिनदिना अशौचक मध्य यदि दशदिना जन्माशौच वा मरणाशौच पड़ए तँ अधिकदिन व्यापी अशौच बितलहि पर दूनू अशौचक शुद्धि बुझबाक थिक।

बालाशौच

(ड) जन्मसँ छओ मास धरिक बालक दिवङ्गत भेला पर सभकें सद्यः अशौच होइत अछि। ओही दिन नहकेश कए अगिला प्रातःकाल शुद्ध होइत अछि।

छओ माससँ ऊपर दू वर्ष धरिक बालक मरणमे ब्राह्मणकें एक दिन राति, क्षत्रियकें दू दिन राति, वैश्यकें तीन दिन राति ओ शूद्रकेँ पाँच दिन राति अशौच होइत अछि।

दू वर्षसँ कम वयसक बच्चाक मुइने ओ माँटिमे गाड़ल जाइत अछि।

यदि प्रमादसँ एहन शवक अग्नि संस्कार हो तँ तीन राति ब्राह्मणकें, छह राति क्षत्रियकें, नौ दिन वैश्यकें आओर बारह दिन शूद्रकें अशौच होइत अछि। ई *अशौचपञ्जिका*मे विद्यावाचस्पति **मधुसूदनझा** कहने छथि आओर एतए प्रमाण ई अछि –

दन्तजातेऽनुजाते च कृतचूडे च संस्थिते।
अग्निसंस्करणे तेषां त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्।। (पराशरस्मृति)
यत्र त्रिरात्रं विप्राणामशौचं सम्प्रदृश्यते।
तत्र शूद्रे द्वादशाहः षण्णव क्षत्रवैश्ययोः।। (ऋष्यशृङ्गस्मृति)

दू वर्षसँ ऊपर छओ वर्ष धरिक बालकक मुइने क्रमशः तीन राति, छओ राति, नओ दिन ओ बारह दिन चारूवर्णकें अशौच हो। पिण्डदान, अस्थिसञ्चय, नहकेश तेसर दिन कए चारिम दिन ब्राह्मण भोजन होइत अछि। एहिसँ अधिक वयस भेला पर दशदिना अशौच अर्थात् जाहि वर्णक जे सम्पूर्ण अशौचक अवधि विहित अछि से अनुपालनीय थिक। विवाहित शूद्रक वयस यदि आठ वर्षसँ अधिक हो तँ मास दिन अशौच हो। विन विआहल शूद्रक सोलह वर्ष

धरिक वयसमे मुइला पर बारह दिन अशौच हो, ओहिसँ अधिक वयस भेला पर मासिक अशौच हो। एहि अवधिमे विवाहादि बन्धनक रहब वा ओकर अभाव कोनो साधक बाधक नहि होइत अछि।

एहि प्रसङ्ग याज्ञवल्क्यक वचन उपलब्ध अछि –

आदन्तजननात् सद्यः आचूडान्नैशिकी स्मृता।

त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतः परम्।।

दन्तजनन आदि पद ओहि कालक उपलक्षण थिक। तँ उपर्युक्त कथाक एहिसँ पुष्टि होइत अछि। एहिना दशरात्र पद सम्पूर्ण अशौचक उपलक्षण रहने सभ वर्णक हेतु निर्धारित सम्पूर्ण अशौचक अवधि परिग्राह्य थिक।

अस्थिसञ्चयन, एकादशाह ओ द्वादशाह आदि क्रियाक संग ब्राह्मणभोजन करेबाक प्रथा अछि।

कुमारिकन्याक मरणसँ अशौच

यद्यपि कुमारि बेटी ओ बेटामे सपिण्डता समाने रहैत छैक तथापि सामान्यसँ विशेष बलवान् होइत अछि – एहि न्यायक अनुसार दूनूक मरणमे अशौचक व्यवस्थामे भिन्नता शास्त्रमे देखल जाइत अछि। तेइस मास धरिक कन्याक मुइने तत्काले अशौच आ दोसर दिन नहकेश कए शुद्धि होइत छैक। दोसर वर्ष पूरा भेलापर विवाह पर्यन्त मुइने तीन राति अशौच हो ओ पितृकुलक सभ सपिण्डकें अशौच लागए। तेसर दिन यथासम्भव नहकेश ओ घर आङनक परिष्कार कएल जाइत अछि, आओर चारिम दिन लोक शुद्ध होइत अछि। *ब्रह्मपुराण*मे कहल अछि –

'आजन्मनस्तु चूडान्तं यत्र कन्या विपद्यते।

सद्यः शौचं भवेत्तत्र सर्ववर्णेषु नित्यशः।।

अतः परं प्रवृद्धानां त्रिरात्रमिति निश्चयः।

दू वर्षसँ कम वयसक कन्याक मरण भेलापर माटिमे गाड़ल जएबाक विधान अछि। एहिसँ अधिक वयसक भेलापर मुइने अग्निसंस्कार होइत छैक। तिनराति अशौच मानलापर चारिम दिन एगारहटा ब्राह्मण भोजनो कराओल जाइत छैक, एहन परिपाटी देखैत छी। तेसर वा दोसर दिन अस्थिसञ्चय ओ तदङ्ग पिण्डदानादि पात्र बजाए कैं कराओल जाइत अछि।

एतए ज्ञातव्य अछि जे यदि कारणवश पूर्व दिन मृत व्यक्तिक संस्कार (मुखाग्नि) दोसर दिन हो तैयो अशौचक गणना मरण दिनहिसँ करबाक थिक।

विदेश वा दूरमे रहलापर अशौचक व्यवस्था

विदेश वा दूरमे रहला पर सपिण्डक मरण सुनला उत्तर देशमे जतबाक दिन अशौच बाँकी रहैक ओतेक दिन अशौच मानी ओ सम्बन्ध तथा अनुबन्धक आधारपर सुनलाक तत्काल बादे तिलाञ्जलि देबाक थिक।

अशौच बितला पर जँ छओ मासक भीतर अशौचक ज्ञान हो तँ तीन दिन धरि अशौच मानि नहकेश करी।

अशौच बितलाक नवम मास धरि जँ ओ बुझबाक योग्य हो तँ एक दिन-राति ओ दिनतीन साँझ (पक्षिणी) अशौच मानि नहकेश करी।

दशम माससँ वर्ष भरिक भीतर ओकर ज्ञान भेला पर एक दिन राति अशौच मानि ओही दिन वा प्रातः सुविधासँ नहकेश करी। वर्ष बितला पर यदि बुझबाक योग्य हो तँ स्नान कए तिलाञ्जलि टा कए दिऐन्हि, नहकेश नहि कर्तव्य। साधारण सपिण्डक मुइने ई नियम जानी –

विगतं तु विदेशस्थं शृणुयाद् यो ह्यनिर्दशम्।
यच्छेषं दशरात्रस्य तावदेवाशुचिर्भवेत्।
अतिक्रान्ते दशाहे तु त्रिरामशुचिर्भवेत्।
संवत्सरे व्यतीते तु स्पृष्ट्वैवापो विशुद्ध्यति।

(मनु आदिक वचन कहि *पितृकर्मनिर्णय*मे उल्लिखित अछि)।

माए बाप ओ गुरुक देहान्तक ज्ञान दशदिनक बाद भेला पर श्राद्धक अधिकार रहने तीन दिन बिताए श्राद्ध करबाक विधान कहल गेल छैक।

तिनदिना अशौच यदि बितला पर ज्ञात हो तँ स्नान तिलाञ्जलि मात्र शास्त्र विहित अछि। मुदा केश कटाएब एहू परिस्थितिमे मैथिलक व्यवहारमे देखल जाइत अछि।

दशदिना वा तिनदिना जन्माशौच यदि अवधि बीति गेला पर ज्ञात हो तँ अशौच नहि लगैत अछि।

प्रसूतीक अशौच

पुरुषक जन्म भेलापर बीस दिन ओ कन्याक जन्म भेलापर तीस दिन प्रसूतीकेँ अशौच कहल गेल अछि। मुदा एकर विचार यदि प्रसूतीकें श्राद्ध करबाक अवसर होइत छैक तैखन कएल जाइत अछि। अन्यथा स्नान ज्योतिषीसँ मुहूर्त तकाए नीकदिनमे (अयुग्म दिनमे) कएला पर ओ देवकार्य ओ गृहकार्य करैत छथि से देखैत छी।

गर्भस्त्रावक स्थितिमे तीन मासक बाद ब्राह्मणीकें तीन दिन राति, क्षत्रियाणी कें चारि दिन राति, वैश्य स्त्रीकें पाँच दिन राति ओ शूद्र स्त्रीकें आठ दिन राति अशौच होइत छैन्हि।

चारिम माससँ छठम मासधरि द्विजपत्नी ओ शूद्र पत्नीकें जतेक मासक गर्भ रहैक ओतेक दिन राति अशौच होइत छैन्हि।

सातम माससँ दशममासपर्यन्त प्रसूती कहबैत अछि। तें दशदिन, बारह दिन, पन्द्रह दिन ओ एक मास यथाक्रम चारू वर्णकें अशौच होइत छैन्हि।

गर्भस्त्रावे यथामासमचिरे तूत्तमे त्र्यहम्।

राजन्ये तु चतूरात्रं वैश्ये पञ्चाहमेव च।।

अष्टाहेन तु शूद्राया: शुद्धिरेषा प्रकीर्तिता।

(मरीचिक कथन *कृत्यसारसमुच्चयमे* उद्धृत)।

ब्रह्मपुराणक वचन अछि –

षण्मासाभ्यन्तरे यावद् गर्भस्त्रावो भवेद् यदि।

तदा माससमैस्तासां दिवसैः शुद्धिरिष्यते।।

अत ऊर्ध्वं स्वजात्युक्तमशौचं तासु विद्यते।

सद्यः शौचं सपिण्डानां गर्भस्य पतने सति।।

तें पति, पुत्र ओ दियाद(सपिण्ड) कें सद्यः अशौच ओ नहकेश गर्भस्त्रावहुक स्थितिमे लगैत अछि।

एतए ज्ञातव्य जे सब वर्णक प्रसूतीकें दश दिनक भीतर सन्तानक मरणमे दश दिन धरि अशौच होइत छैन्हि।

बालक जन्म भेला पर पतिक मरण भेलो पर बालकक जन्मसँ बीस दिन पुत्रजन्मनिमित्तक अशौचक छुटलहि पर पतिक श्राद्धक अधिकार होइत अछि। अतः बालकक जन्मसँ एकैसम दिन श्राद्ध कए सकैत छथि। कन्याक जन्ममे तीस दिन प्रसूतिजन्य अशौच रहने एकतीसम दिन श्राद्धक अधिकार होइत अछि। अतः भानसो भात ओ देवपूजा पुत्रजन्मक एकैसम दिन कन्या जन्मक एकतीसम दिनसँ करबाक अधिकार होइत छैक।

रजस्वलाक शुद्धि

रजस्वला स्त्री देवपितरक कार्य हेतु पाँचम दिन शुद्ध होइत छथि आओर पतिक हेतु चारिम दिन शुद्धि होइत छथि। *याज्ञवल्क्य स्मृति*क व्याख्या *मिताक्षरा*मे स्मृत्यन्तरक वचन एना उद्धृत अछि –

'दैवे कर्मणि पित्र्ये वा पञ्चमेऽहनि शुद्ध्यति'।

रजोदर्शन दिनसँ लएकेँ सत्रहम दिन धरि यदि पुनः रजोदर्शन हो तँ अशौच नहि मानल जाइत अछि। अठारहम दिनमे भेला पर एक दिन राति उनैसम दिनमे भेला पर दू दिन राति ओ बीसम दिन वा ओहिसँ ऊपर दिनमे भेला पर तीन दिन अशौच मानल जाइत अछि। एतहु दिनसँ अहोरात्र अभिप्रेत अछि –

रजस्वला यदि स्नाता पुनरेव रजस्वला।
अष्टादशदिनादर्वागशुचित्वं न विद्यते।।
एकोनविंशतेरर्वागेकाहं स्यातत्तो द्व्यहम्।
विंशत्प्रभृत्युत्तरेषु त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्।।

अठारहम दिनसँ पहिनहुँ नियमतः यदि रजोदर्शन होइन्हि तँ तीन दिन हुनका अशौच मानबाक थिक – ई सुनल अछि।

ज्वर आदि आतुरताक कारणें यदि रजस्वला स्नान नहि कए सकथि, – ओ दोसर स्त्रीकें स्पर्श करथि। ओ स्त्री स्नान करथि आचमन करथि पुनः रजस्वला स्त्री हुनका स्पर्श करथि, ओ पुनः स्नान आचमन करथि, ई दश बेरि कएला पर अन्तिम बेरि रजस्वला पहिरल वस्त्र छोड़थि, दोसरवस्त्र धारण करथि, यथाशक्ति दान करथि ओ पुण्याहवाचन स्वस्त्ययन पुरोहितसँ वा विज्ञलोकसँ कराबथि, तखन शुद्ध होथि –

ज्वराभिभूता या नारी रजसा च परिप्लुता।

कथं तस्या भवेच्छौचं शुद्धिः स्यात् केन कर्मणा।।

चतुर्थेऽहनि सम्प्राप्ते स्पृशेदन्यां तु सा स्त्रियम्।।

सा सचैलावगाह्यापः स्नात्वा स्नात्वा पुनः स्पृशेत्।।

दश द्वादशकृत्वो वा आचामेच्च पुनः पुनः।

अन्ते च वाससां त्यागस्ततः शुद्धा भवेच्च सा।।

दद्याच्छक्त्या ततो दानं पुण्याहेन विशुद्ध्यति।

श्राद्ध की थिक ओ कतेक प्रकारक होइत अछि

श्राद्ध पद यौगिक नहि, योगरूढ़ थिक। तेँ श्रद्धासँ देल गेल ओ श्राद्ध-लक्षणसँ युक्ते क्रियाकलाप 'श्राद्ध' पदार्थ थिक। जीबैत पिताक प्रति श्रद्धासँ किछु देब श्राद्ध नहि कहबैत अछि। **पराशर** कहैत छथि जे मृत पितरकेँ उदेश्य कएकें विहित स्थान ओ विहितकालमे विहित पात्रकें विधिपूर्वक तिलकुश लएकें मन्त्रक उच्चारणपूर्वक श्रद्धासँ कएल गेल वस्तुक दान 'श्राद्ध' थिक।

देशे काले च पात्रे च विधिना हविषा च यत्।

तिलैर्दर्भैश्च मन्त्रैश्च श्राद्धं स्याच्छ्रद्धया युतम्।।

मुनि **मरीचिओ** एकरे पुष्टि करैत छथि-मृत पितरकें उद्देश्य कए अपन प्रिय भोज्य श्रद्धा पूर्वक देबे 'श्राद्ध' थिक –

प्रेतान् पितृँश्च निर्दिश्य भोज्यं यत्प्रियमात्मनः।

श्रद्धया दीयते यत्र तच्छ्राद्धं परिकीर्तितम्।।

मनु तँ इहो कहैत छथि जे श्राद्धमे पितरकेँ उद्देश्य कए देल गेल वस्तु परलोकमे सर्वदा विद्यमान रहैत छैन्हि, हुनका घटैत नहि छैन्हि –

यद् यद् ददाति विधिवत् सम्यक् श्रद्धासमन्वितः।

तत् तत् पितृणां भवति परत्रानन्तमक्षयम्।।

भारतीय मुनि मनीषीक धारणा छैन्हि जे वायवीय शरीरसँ पितरलोकनि पिण्डकें देखि ग्रहण करैत छथि आओर निमन्त्रित ब्राह्मणक शरीरमे प्रवेश कए भोजन पाबि प्रसन्न होइत छथि। तें पिण्डदान ओ ब्राह्मण-भोजन दूनू टा श्राद्धमे

समाने महत्त्व ओ माहात्म्य रखैत अछि –

निमन्त्रितांस्तु पितर उपतिष्ठन्ति तान् द्विजान्।

वायुवच्चानुगच्छन्ति तथासीनानुपासते।। (मनुस्मृति)

ब्राह्मणैस्तैः सहाश्नन्ति पितरो ह्यन्तरिक्षगाः।

वायुभूताश्च तिष्ठन्ति भुक्ता यान्ति परां गतिम्।। (मत्स्यपुराण)

पिण्डं श्राद्धस्य पश्यन्ति वायुभूता न संशयः।। (वायुपुराण)

*धर्मप्रदीप*मे उल्लिखित अछि जे यजुर्वेदी लोकनि पिण्डदानकें, बह्वृचलोकनि द्विजपूजाकें आओर सामवेदी लोकनि दूनूकें श्राद्ध कहैत छथि –

यजुषां पिण्डदानं तु बह्वृचानां द्विजार्चनम्।

श्राद्धशब्दाभिधेयं स्यादुभयं सामवेदिनाम्।।

*श्राद्धविवेक*मे श्रीधरक उक्ति अछि जे 'श्राद्ध' क अर्थ थिक होम, पिण्डदान ओ ब्राह्मणभोजन –

होमश्च पिण्डदानं च तथा ब्राह्मणभोजनम्।

श्राद्धशब्दाभिधेयं स्यादेकस्मिन्नौपचारिकम्।।

श्राद्धमे पितरक उपस्थिति मानिए कए हम सब प्रार्थना करैत छी जे देवताक रास्तासँ आगिमे जराओल गेल पितर प्रसन्न भए आबथु आओर हमरा सभक द्वारा अर्पित अन्न स्वीकार कए प्रसन्न होथु, हमरा सभकें आशीर्वाद देथु ओ सतत रक्षा करथु –

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽनिष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।

(यजुर्वेद १९-५८)

याज्ञवल्क्य कहैत छथि जे श्राद्ध कएला पर प्रसन्न भए पितर सन्ततिकें आयु, प्रजा (सन्तति), धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष, सुख तथा राज्य सभ किछु दैत छथि –

आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च।

प्रयच्छन्ति तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः।।

व्यास कहैत छथि जे रतिक सामर्थ्य, सुन्दर पत्नी, नीक भोजन सामग्री, भोजनक सामर्थ्य, धन ओ दानशक्ति, शत्रुराहित्य तथा आरोग्य श्राद्धक पुष्प मानल जाइछ आओर ब्रह्म सायुज्यक प्राप्ति श्राद्धक फल कहल गेल अछि।

रतिशक्तिर्वरा कान्ता भोज्यं भोजनशक्तिता।

दानशक्तिः सविभवाऽरिपुमारोग्यमेव च।।

श्राद्धपुष्पमिदं प्रोक्तं फलं ब्रह्मसमागमः।

हुनका चर्मचक्षुसँ नहि ज्ञानचक्षुसँ देखल जाए सकैत अछि। जेना अन्धकारमे भकजोगनी एम्हर-ओम्हर नुकाएल रहैए,कौखनकें लोक ओकरा देखि पबैत अछि, तहिना सिद्ध ज्ञानिओ व्यक्ति दिव्यनेत्रसँ पितरकें देखि पबैत छथि – ई *महाभारतक अश्वमेध पर्व*मि कहल अछि –

यथान्धकारे खद्योतं लीयमानमितस्ततः।

चक्षुष्मन्तः प्रपश्यन्ति तथा च ज्ञानचक्षुषा।

पश्यन्त्येवंविधं सिद्धा जीवं दिव्येन चक्षुषा।

च्यवन्तं जायमानं च योनिञ्चानुप्रवेशिनम्।।

पद्मपुराणमे कहल अछि जे रामचन्द्र जखन दशरथक श्राद्ध करैत छलाह तखन सीता दशरथकें अबैत देखि संकोच करए लगलीह। जखन संकोचक कारण राम हुनकासँ पुछलखिन्ह तँ हुनक उत्तर भेलैन्हि जे एहि निमन्त्रित ब्राह्मण लोकनिमे अहाँक पिताक दर्शन भेलासँ हम संकोचमे पड़लहुँ –

'पिता तव मया दृष्टो ब्राह्मणाङ्गेषु राघव'।

भविष्यपुराण ओ *विश्वामित्रस्मृतिक* अनुसार ई श्राद्ध बारह प्रकारक होइत अछि – नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धिश्राद्ध, सपिण्डीकरण, गोष्ठीश्राद्ध, शुद्धिश्राद्ध, कर्माङ्गश्राद्ध, गर्भाधानादि अवसर पर सम्पाद्य श्राद्ध, दैविक श्राद्ध, तीर्थयात्राक काल ओ तीर्थप्राप्तिनिमित्तिक पुष्ट्यर्थ तथा औपचारिक श्राद्ध। *पितृकर्मनिर्णय*क पृ० १० तथा ११ मे एकर लक्षण स्पष्टतः कहल गेल अछि।

*कूर्मपुराण*क अनुसार पाँच गोट श्राद्ध होइत अछि नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धिश्राद्ध ओ पार्वण –

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धिश्राद्धं तथैव च।
पार्वणञ्चेति मनुना श्राद्धं पञ्चविधं स्मृतम्।।

मुदा आइ काल्हि जे व्यवहार अछि ताहिमे आद्यश्राद्ध, मासिकश्राद्ध, सपिण्डीकरण, वर्ष श्राद्ध (एकोद्दिष्ट), गयाक पिण्डदान, पार्वण ओ आभ्युदयिक श्राद्ध (एकरहि नान्दीश्राद्ध ओ वृद्धिश्राद्ध सेहो कहल जाइत अछि) प्रचलित अछि।

दशगात्रक पिण्ड दशदिन अशौचक मध्यहिमे कएल जाइत अछि। चारिम दिन अस्थिसंचयनक एकोद्दिष्ट होइत अछि, ओ चिता झाँपि सारा बनाओल जाइछ। आम तथा धात्री आदिक गाछ लगाओल जाइछ, जकर फल सगोत्र नहि खाइत छथि, आन गोत्रक लोक खाइत छथि। तीर्थमे पवित्र नदीक तटपर अन्त्येष्टि संस्कार भेलापर अस्थिसंचयनक एकोद्दिष्ट तँ होइत अछि मुदा साराक निर्माण नहि देखैत छी। महाराज दरभंगा आ आनो धनवान् व्यक्ति साराक स्थान पर कालक्रमे मन्दिर निर्माण कए दैत छथि।

आद्यश्राद्ध मरणक एगारहम दिन होइत अछि। मासिक श्राद्ध प्रतिमास चौदह गोट वा वर्षमे मलमासक सम्भावना रहने पन्द्रह गोट होइत अछि। बारहटा मासिक दूटा ऊनषाण्मासिक ओ ऊनवार्षिक क्रमशः पाँचम ओ एगारहम मासमे विहित अछि। मलमास भेलासँ एहिमे एक मासक वृद्धि स्वाभाविक।

सपिण्डीकरणमे पिताकें पितामह, प्रपितामह ओ वृद्धिप्रपितामहक संग मिलेबाक व्यवस्था अछि। एहिमे कर्ताक मातृकुल ओ पितृकुलक ऊपरक तीन पुरुषकें पिण्डदान होइत अछि। एहिसँ ऊपरक लोक विश्वेदेवक कोटिमे रहि मन्त्रक बलें उपस्थित कएल जाइत छथि। एहि सपिण्डीकरणमे पार्वण ओ एकोद्दिष्ट दूनूक स्वरूप भेटैत अछि। अतः एकरा शास्त्रकार लोकनि नरसिंहाकार मानैत छथि।

ई सपिण्डीकरण माइक सेहो कर्तव्य अर्थात् महिलो लोकनिक लेल कर्तव्ये थिक। जेना एकोद्दिष्ट माइक वा महिलामात्रक कएल जाइत अछि किन्तु पार्वणश्राद्ध हिनका सभक पतिएक सङ्ग होइत अछि, स्वतन्त्ररूपें नहि, से बुझबाक थिक।

एतए ज्ञातव्य जे परिस्थिति एहनो होइत छैक जे कर्ताक पिताक श्राद्धक समय पितामह जीबैत छैक, माइक श्राद्धक समय पिता जीबैत छैक, तखन

सामान्य जे नियम अछि, पिताकेँ पितामहक संग मिलाओल जाए वा माइकें हुनक पतिक अर्थात् कर्ताक पिताक संग से तँ सम्भव नहि छैक। अतः एहन परिस्थितिमे पिताकें प्रपितामहादिक संग ओ माइकें पितामहीक संग हुनक जीवनकालमे प्रपितामहीक संग मिलाएब विहित अछि। तात्पर्य ई जे जे जीवैत रहथि हुनका छोड़ि ओहिसँ उपरक खाढ़ीक दिवङ्गत लोकक संग सपिण्डीकरण कएल जाए।

पिता यस्य निवृत्तः स्यात् जीवेच्चापि पितामहः।
पितुः स नाम संकीर्त्य कीर्तयेत् प्रपितामहम्।।
मातर्यथ मृतायां च विद्यते च पितामही।
प्रपितामहीपूर्वस्तु कार्यस्तत्राप्ययं विधिः।।
स्वेन भर्त्रा सहैवास्याः सपिण्डीकरणं स्त्रियाः।
एकत्वं सा गता यस्माच्चरुमन्त्राहुतिव्रतैः।।
तस्मिन् सति सुताः कुर्युः पितामह्या सहैव तु।
तस्याञ्चैव जीवन्त्यां तस्याः श्वश्वेति निश्चयः।।

इत्यादि वचन *पितृकर्मनिर्णय*मे पण्डित त्रिलोकनाथमिश्र यथाप्रसङ्ग उल्लिखित कए हमरा सभक मार्गदर्शन कएने छथि।

मासिकश्राद्ध ओ सपिण्डीकरण द्वादशाहकृत्यक रूपमे मिथिलामे प्रचलित अछि। अन्यत्र कामचार देखैत छी। नियम पालनमे तत्पर लोकनि प्रत्येक मासमे मासिक श्राद्ध ओ से सम्पन्न भेला पर सपिण्डीकरण आओर पछाति वर्षी करैत छथि। बंगालमे औखन ई परम्परा देखल जाइत अछि। बहुत ठाम पुरोहितकेँ प्रार्थना कए वर्षभरिमे सम्पाद्य ई मासिक ओ सपिण्डीकरण मैथिले परम्पराक अनुसार द्वादशाहे दिन कए लेल जाइत अछि। गोरखपुर ओ देवरिया प्रान्तमे एहन व्यवहार सुनैत छी। पहिलवर्षी तथा षोडशश्राद्धक[१] रूपमे प्रसिद्ध एकादशाह

---

१. *आद्यश्राद्ध (एकादशाह) चौदहटा मासिक ओ सपिण्डीकरण सोलहटा (षोडश) श्राद्ध कहबैत अछि।*

द्वादश प्रतिमास्यानि आद्यं षाण्मासिके तथा।
सपिण्डीकरणं चैव प्रेतश्राद्धानि षोडश।।

(ई कात्यायनक वचन अछि)

ओ द्वादशाह कृत्य मलमासहुमे कएल जाइत अछि। आन सभ कार्य प्रायः मलमासमे वर्जिते अछि। एहि षोडशश्राद्धमे नामक संग प्रेतपदक उच्चारण कएल जाइछ। वर्षी भेलाक बाद आओर वर्षी-पार्वणमे नामक संग शर्मपद जोड़ल जाइछ।

गया जाए पिण्डदान करबाक महत्त्व शास्त्रमे वर्णित अछि। शास्त्रमे कहल छैक जे बहुत पुत्र रहबाक चाही। केयो गया जाएत (अर्थात् ओतए पिण्ड देत), केयो गौरीकन्यासँ विवाह करत, केयो वृषोत्सर्ग करत –

एष्टव्या बहवः पुत्रा, यद्येकोऽपि गयां व्रजेत्।

गौरीं वोद्वहेद् भार्यां नीलं वा वृषमुत्सृजेत्।।

गौरीकन्याक तात्पर्य धर्मशास्त्रमे परिभाषित आठ वर्षक कन्यामे अछि, गौरवर्णक कन्यामे नहि से बुझबाक थिक। वृषोत्सर्ग श्राद्धमे साँढ़ दागल जाइछ।

एकोद्दिष्ट वा वर्षीक अर्थ थिक क्षयतिथिमे सिद्ध अन्नसँ पिण्डदान कए ब्राह्मण-भोजन यथाविभव कराएब। केवल एक व्यक्तिक उद्देश्य कए ई कएल जाइत अछि तें एकोद्दिष्ट कहबैत अछि। जँ वर्ष पुरला पर मृत्युतिथिमे कएल जाइत अछि तें वर्षी कहबैत अछि। प्रत्येक पुत्रकें स्वतन्त्ररूपें वर्षी करबाक अधिकार छैक, श्राद्ध जकाँ केवल जेठे बालकटाकें नहि, से विशेष बात ज्ञातव्य अछि। संगहि सिद्धान्नहिसँ वर्षी हो, नवे पाकपात्रमे अन्न सिद्ध कएल जाए, असिद्धान्नसँ अगत्ये पक्षमे पिण्डदान कएल जाइत अछि।

यदि एकोद्दिष्टक दिन जन्मांशौच वा मरणाशौच भए जाए तँ अशौच बितलहि पर एकोद्दिष्ट होइत अछि।

यदि लगातार अशौचहिपरसँ अशौच होइत रहे तँ अशौच बितला पर कृष्ण पक्षक एकादशीमे एकोदिष्ट करी।

तिथि विसरि गेला पर ज्ञात पक्षक एकादशीमे एकोद्दिष्टक विधान कएल गेल अछि। तिथि ओ पक्षक अज्ञान रहने ओहि मासक एकादशीमे एकोद्दिष्ट करी। मास, पक्ष ओ तिथि किछु नहि बूझल रहए तँ जाहि तिथिकें मरण सूनी ओही तिथिमे एकोद्दिष्ट करी।

द्विजकें एकोद्दिष्ट अवश्य कर्तव्य रूपमे निर्दिष्ट अछि। यदि एकोद्दिष्ट नहि कए सकी तँ ओहिदिन उपवास करी। गाएकें अन्न खुआए ओकर बथान जाए

कानि ली आदि कहल गेल अछि।

पार्वण मुख्यतः चारिटा कएल जाइत अछि - नवान्न, यवान्न, नवोदक ओ पितृपक्षीय। ई श्राद्ध सिद्ध अन्नसँ नहि होइछ।

व्रीहिशालियवाम्बूनि देवेभ्यो नूतनानि च।
पितृभ्योऽप्यसमर्प्याथ न भुञ्जीत शुभेच्छुकः।। (स्मृतिसार)

नवोदके नवान्ने च गृहप्रच्छादने तथा।
पितरः स्पृहयन्त्यन्नमष्टकासु मघासु च।।

ई **शातातप** ऋषिक वचन अछि।

आश्विन अगहन पूष माघक कृष्ण पक्षक अष्टमी अष्टका थिक। ओ ओकर नवमी अन्वष्टका थिक। एहिमे नौ व्यक्तिक श्राद्ध कएल जाइत अछि। माता आदि तीन, तीन पुरुष पितृपक्षक ओ तीन पुरुष मातृपक्षक रहैत छथि - पिता, पितामह ओ प्रपितामह एवं मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामहकें पिण्डदान कएल जाइत अछि। एहिसँ अतिरिक्त तीनू पक्षक विश्वेदेवक पूजा पृथक् पृथक् कएल जाइत अछि।

बालकक उपनयन ओ बेटीक विवाहक दिनमे, नवगृहमे प्रवेश आदि शुभ अवसरमे सर्वप्रथम श्रीक परिछि कए मातृकापूजा, ओ वसुधाराक संग आभ्युदयिक श्राद्ध कएल जाइत अछि। एहिमे पितृपक्षक छह गोटेक-पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही आओर मातृपक्षक तीन गोटेक -मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहक श्राद्ध कएल जाइत अछि।

एतए ध्यान रखबाक थिक जे वरुआ वा कन्याक पिताक पिता, पितामह ओ मातामह प्रभृतिक श्राद्ध कएल जाइत अछि। वरुआ वा कन्याक पिता, पितामहादि एव मातामह आदिक नहि, एहिना पितासँ भिन्न कन्यादाता वा आचार्यक पिता, मातामहादिक श्राद्ध नहि होइत अछि। यदि पिता स्वर्गत रहथि तँ वरुआ वा कन्याक पिता आदिक वृद्धिश्राद्ध होइछ।

दोसर विषय ई जे एहिमे जे जे जीवैत रहैत छथि हुनका छोड़ि ऊपरक खाढ़ीक पितरकें आवाहन कए श्राद्ध कएल जाइत अछि। *विष्णुपुराण*मे कहल अछि -

कन्यापुत्रविवाहेषु प्रवेशे नववेश्मनः।
नामकर्मणि बालानां चूडाकर्मादिके तथा।।
सीमन्तोन्नयने चैव पुत्रादिमुखदर्शने।
नान्दीमुखं पितृगणं पूजयेत् प्रयतो गृही।।

ब्रह्मपुराणमे एकर संवाद देखैत छी

कर्मण्यथाभ्युदयिके माङ्गल्यवति शोभने।
जन्मन्यथोपनयने विवाहे पुत्रकस्य च।।
पितृन्नान्दीमुखान्नाम तर्पयेद् विधिपूर्वकम्।।
नान्दीमुखेभ्यः श्राद्धन्तु पितृभ्यः कार्यमृद्धये।
ततो विवाहः कर्तव्यः शुद्धः शुभसुतप्रदः।।

वृद्धिश्राद्ध वा आभ्युदयिक श्राद्धमे पिण्डदान नहि होइत अछि तथा माता, पिता ओ मातामहक तीन तीन पुरुषक श्राद्ध मीलि कए एक होइत अछि। विश्वदेवक पूजाक बाद हिनका सभक पूजा कर्तव्य थिक।

श्राद्धक अधिकारी

जेठ औरस पुत्रकें श्राद्धक अधिकारी मानल गेल अछि। यद्यपि धर्मशास्त्रक मूलग्रन्थ *मनुस्मृति* आदिमे बारह प्रकारक पुत्र कहल गेल अछि तथापि कलियुगमे औरस पुत्रक प्रतिनिधि रूपमे तीनिए प्रकारक पुत्र शास्त्रमान्य अछि–कन्यकापुत्र, दत्तक ओ कृत्रिम। एखन व्यवहारमे दुइए प्रकारक पुत्रकें श्राद्ध करैत देखैत छी–औरस ओ कृत्रिम। अपन जातिमे विवाह कएला पर जे पुत्र होथि से औरस कहबैत छथि। जाहि व्यक्तिकें से नहि छथिन्ह ओ जनिकाँ पुत्ररूपमे हाथ पकड़ि स्वीकार करथि से हुनक कृत्रिम पुत्र भेलाह। यद्यपि सोदर भाइक बालक अपुत्र व्यक्तिक हेतु पुत्रे मानल गेलाह अछि आओर एहिसँ हुनक अपुत्रत्व दोषो नष्ट होइत अछि–एहन वचन *मनुस्मृति*मे उपलब्ध अछि –

भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत् पुत्रवान् भवेत्।
सर्वे तेनैव पुत्रेण पुत्रिणो मनुरब्रवीत्।।

तथापि औरस पुत्र ओ नहि होइत छथि केवल अपुत्रत्वदोषक निराकरण हुनकासँ होइत अछि। हुनकासँ तात्त्विक विरोध नहि रहला पर हुनका अछैत अनका कृत्रिम पुत्र नहि बनाओल जाए–एहि तात्पर्यें ओ वचन कहल गेल अछि।

श्राद्धक अधिकारीक प्रसंग जे वचन *शंखस्मृति*मे कहल गेल अछि – **पुत्राभावे तु पत्नी स्यात् तदभावे सहोदरः**, एतए पुत्र पदक अर्थ पुत्र, पौत्र ओ प्रपौत्र धरि होइत अछि। हेतु जे एहि क्रममे साक्षात् आत्मसंबन्ध देखल जाइत अछि –

पुत्रेण लोकान् जयति पौत्रेणानन्त्यमश्नुते।
अथ पुत्रस्य पौत्रेण ब्रघ्नस्याप्नोति विष्टपम्।।

ई वचन **वसिष्ठ**, **हारीत** ओ **शंखलिखित**क उपलब्ध अछि। एतए ब्रघ्न पदक सूर्य ओ विष्टप पदक अर्थ स्थान होइत अछि। *याज्ञवल्क्यस्मृति*मे कहल गेल अछि जे –

लोकानन्त्यं दिवः प्राप्तिः पुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः।

एकर अभावमे कृत्रिम पुत्रक अधिकार होइत अछि। एकर अभावमे पत्नीकें अधिकार होइत अछि। एकर अभावमे सहोदर छोट भाइ, वैमात्रेय छोट भाइ, सहोदर जेठ भाइ, वैमात्रेय जेठ भाइ ओ पिता यथाक्रम श्राद्धक अधिकारी कहल गेल छथि। पिताक अभावमे दियादमे (सपिण्डमे) निकट सम्बन्धिककें श्राद्धक अधिकार शास्त्रमे कहल गेल अछि। दिआदहुमे पहिने जेठ सपिण्ड (जीवितमे सबसँ जेठ जे रहथि) अभावमे छोट सपिण्ड, अभावमे सकुल्य अभावमे कन्या (बेटी) कें श्राद्धक अधिकार होइत अछि।

यद्यपि **पुत्रो भ्राता पिता वापि** एहि **प्रचेता** ऋषिक वचनक आधार पर सहोदर ओ वैमात्रेय भाइक अभावमे पिताकें श्राद्धक अधिकारी कहल गेल अछि तथापि पिताकेँ श्राद्ध नहि करए पड़ैक-एहन स्वरस शास्त्रक एहि अधिकार प्रकरणमे बूझि पड़ैत अछि। अगत्ये पक्षमे पिताकें पुत्रक श्राद्धक अधिकार देल गेल अछि। जँ कोनो उपाय रहैक तँ एकरा अवश्य अनठाओल जाए से हमर अपन मन्तव्य विद्वज्जनक समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत अछि। जकर जन्म देल तकरहि श्राद्ध करए पड़ैक से बड़ अनसोहाँत लगैत छैक। **पुत्रः प्रौत्रो प्रपौत्रो वा तद्वद्वा भ्रातृसन्ततिः**' *विष्णुपुराण*क एहि वचनक स्वारस्यो एहने देखैत छी। अपरपातक स्थितिमे समाजक बुझनुक लोकक एहन चेष्टा होएबाक चाही जे अन्तिम समयमे नजदीक संबन्धिकमे छोटक हाथ पकराए कृत्रिम पुत्र बनबाए दैक, जँ अवसर रहैक, ई हमर वैयक्तिक मन्तव्य अछि। घरक लोकक साध्य ई कार्य नहि भए सकैत छैक, हेतु जे ओ तँ खाहें जीएबाक उपाय उपचार दिशि उन्मुख रहतैक खाहें शोकसँ सन्तप्त आर्तनादमे लागल रहतैक।

पुनश्च दूटा विषय एतए ज्ञातव्य अछि। अनेक औरस पुत्र रहलहुपर जेठे बालककें आद्य श्राद्ध द्वादशाह ओ सपिण्डीकरणक अधिकार होइत अछि सब पुत्र श्राद्धक अधिकारी नहि होइत छथि। यदि बालक लोकनि भिन्न रहथि, सभक पृथक् पाक होइत हो तँ सभ भाइ श्राद्धमे आर्थिक सहयोग यथाविभव करथि। मुख्य कर्तव्यता जेठे भाइक रहैत अछि। एकर प्रमाण एना अछि –

नव श्राद्धं सपिण्डत्वं श्राद्धान्यपि च षोडश।
एकेनैव तु कार्याणि संविभक्तधनेष्वपि।।

ई वचन *मिताक्षरा*मे उद्धृत अछि। **मरीचिक** वचन अछि –

बहवः स्युर्यदा पुत्राः पितुरेकत्र वासिनः।
सर्वेषां तु मतं कृत्वा ज्येष्ठेनैकेन यत्कृतम्।।
द्रव्येण चाविभक्तेन सर्वैरेव कृतं भवेत्।।

दोसर विषय ई जे बालक जँ अनुपनीतो रहथि तँ ओ श्राद्धक अधिकारी होइते छथि। ओ वैदिक मन्त्र नहि पढ़ि पौराणिक मन्त्र पढ़ैत छथि आओर अपूप 'पू' लए श्राद्ध करैत छथि सिद्धान्नसँ नहि।

उदाहरेत् स्वधाकारं न तु वेदाक्षराण्यसौ।

ई वचन एकर पुष्टिमे स्मृतिसंग्रहमे उपलब्ध अछि।

ई ज्ञाते अछि जे मृत व्यक्तिक तीन टा और्ध्वदेहिक क्रिया होइत छैक– पूर्व, मध्यम ओ उत्तर। दाहसँ लएकें दशम दिन धरिक पिण्डदानादिकृत्य पूर्वक्रिया कहबैत अछि। षोडश श्राद्ध एकादशाहसँ सपिण्डीकरणधरि मध्यम क्रिया कहबैत अछि आओर वर्षीमे एकोद्दिष्ट, ब्राह्मणभोजन तथा पार्वण आदि उत्तर क्रिया। उत्तर क्रियाक अधिकार सभ बालककें छैन्हि ओ साझी रहथि वा भिन्न। मुदा पार्वण जेठ भाइक अनुमति लए करबाक विधान अछि। पूर्व क्रिया जेठ बालकक नहि रहला पर अव्यवहित छोट बालक वा हुनक अभावमे उपस्थित नजदीक संबन्धिक कए सकैत छथि। किन्तु मध्यम क्रियाक अधिकार जेना ऊपर कहल गेल अछि तहिना होएत। संगहि दशगात्रक पिण्डदान जे आगि दैत छथि जेठ बालकसँ भिन्न लोक ओ आत्मशुद्ध्यर्थ अवश्य करथि किन्तु प्रेतक अंग निर्माण दशमा दिन श्राद्धाधिकारीक द्वारा दश गात्रक पिण्डदान कएले पर होइत अछि से शास्त्रक नियम अछि।

लोक उद्धार पएबाक लेल एगारह एगारह ब्राह्मण भोजनक महत्त्व एकादशाह ओ द्वादशाहकें निदान पक्षमे मानैत छथि। जेना समाजक मुहें सुनैत आएल छी। मुदा एकादशाह दिन तँ एगारह ब्राह्मणभोजनक संगति बैसैत अछि। हेतु जे पितरक कार्यमे अयुग्म ब्राह्मण भोजनक विधान शास्त्र कएने अछि। अतः दशदिनक दशगात्रक पिण्डदानक दशटा ब्राह्मणक भोजन ओ आद्य श्राद्धक एकटा ब्राह्मण भोजन जोड़ने एगारह संख्या ठीक बैसैत अछि। अयुग्ममे न्यूनतम संख्या एक कायम भेल अछि। मुदा द्वादशाह दिन तँ सपिण्डीकरण निमित्तक एक विश्वेदेव निमित्तक एक मुख्य निमित्तक एक ओ चौदह मासिकक चौदहटा कमसँ कम ब्राह्मणक भोजन जोड़ला पर बीस संख्यायुक्त ब्राह्मण भोजन आवश्यक अछि, जँ मलमास पड़ैक तँ एकटा मासिक श्राद्धक बढ़ने ब्राह्मणभोजनो एकटा बढ़ाएब आवशयक। फलतः द्वादशाहके बीसटा ब्राह्मण भोजन अवश्य आवश्यक ई बुझबाक चाही।

इएह बात ध्यानमे राखि देवकार्यमे युग्म ब्राह्मण–भोजन शास्त्रविहित रहलासँ उपनयनमे आठ गोट ब्राह्मणक भोजन कराओल जाएब आवश्यक मानल गेल अछि। हेतु जे चारिटा कर्म सम्पादित होइत अछि - चूडाकरण, उपनयन, वेदारम्भ ओ समावर्तन। छन्दोग लोकनिकें नामकरण चूड़ाकरण उपनयन तथा समावर्तन कर्म अनुष्ठित होइत छैन्हि।

स्त्रीवर्गक श्राद्धक अधिकार

जेठ औरस पुत्रक अधिकार माइक श्राद्धक हेतु सर्वप्रथम सुरक्षित अछि। हुनक अभावमे कोनो औरस पुत्र, हुनक अभावमे पौत्र, वा प्रपौत्र हुनक अभावमे पति, हुनक अभावमे सतौत, हुनक अभावमे कृत्रिम पुत्र, हुनक अभावमे पुतोहु, हुनक अभावमे निकटक दियाद, हिनक अभावमे दूरक दियाद ई *शुद्धिविवेका*नुमत निर्णय *पितृकर्मनिर्णय*मे कहल गेल अछि। मुदा *पितृकर्म निर्णय*क लेखकक विचार छैन्हि जै औरस पुत्रक अभावमे सतौत आओर सतौतक अभावमे पतिकें श्राद्धक अधिकार होइत अछि। हमर पिताक (पं० कृष्णमाधवझाक) कहब छैन्हि जे जहिना सहोदर तीन भाईमे यदि कोनो एक भाइ पुत्रवान् छथि तँ सब पुत्रवान् मानल जाइत छथि तहिना अनेक सौतिनमे कोनो एककें पुत्रवती भेलासँ सन्ततिराहित्य दोष तँ सौतिनक हँटैत अछि मुदा श्राद्धक अधिकार सतौतसँ पूर्व पतिएकें होइत छैक। सतौतक रहने आनक हाथ

पकड़ि कृत्रिम पुत्र नहि बनाओल जाए सकैत अछि से ओकर तात्पर्य थिक।

सर्वासा(बह्वीना)मेकपत्नीनामेका चेत् पुत्रिणी भवेत्।
सर्वास्तास्तेन पुत्रेण प्राह पुत्रवतीर्मनुः।।

ई *स्मृति* वचन एतए ओहिना प्रमाणसँ बलिष्ठ अछि जेना **भ्रातृणामेकजातानाम्** आदि पद्य बलिष्ठ अछि।

, हम सब तँ पुत्रपदक पौत्र प्रपौत्र धरि अर्थ कए महिलौक श्राद्ध पतिक अछैत नीक कुलशीलमे पौत्रद्वारा होइत देखैत आएल छी। जाहिमे एहि शताब्द मध्यवर्ती प्रतिष्ठित बूढ पुरान धर्मशास्त्रक जानकार विद्वानक सहमति देखल अछि। हमरा ई युक्तिसङ्गतो लगैत अछि जे पितामहक श्राद्धक अधिकार जाहि युक्तिएँ पौत्रकें देल गेल सैह युक्ति पितामहक अर्धाङ्गिनीक श्राद्धमे किएक नहि लागए अर्थात् अवश्य लागए। हेतु जे सपिण्डनक बाद तँ दूनूक ऐक्य मानितहिँ छी। जीवनकालमे जाहि बलें महिलाक पितृकुलक गोत्रक त्याग ओ पतिक गोत्रक ग्रहण ओ सन्तानार्थ शारीरिको ऐक्य संभव होइते अछि।

*मत्स्यपुराण*क अनुसार एहि श्राद्धमे सातटा वस्तु अधिक प्रशस्त मानल गेल अछि– गाइक दूध, गंगाजल, मधु, रेशमी वस्त्र, दौहित्र, कुतुपकाल (नेपालक कम्बल वा मध्याह्नसमय) ओ तिल –

उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तञ्च मृतकर्पटम्।
श्राद्धे सप्त प्रशस्तानि दौहित्रः कुतपस्तिलाः।।

बाछाक ऐंठ दूध होइत अछि। एहिना आनो बुझबाक थिक। एहिना कूष्माण्ड (कुम्हार ओ गोलका सजमनि), महीषक दूध, बेलपात ओ शाकद्वीपीय ब्राह्मण श्राद्धमे वर्जित कहल गेल छथि।

पितरो वाक्यमिच्छन्ति भावमिच्छन्ति देवताः। एहि वचनक अनुसार शुद्धवाक्यक उच्चारणक महत्त्व श्राद्धमे कहल गेल अछि।

श्राद्धमे भोजनकालमे वस्तु परसैत रही जे निमन्त्रित ब्राह्मण रुचिपूर्वक भोजन करथि। हुनका किछु भोज्य वस्तुक प्रसंग नीक अधलाह पुछिऐन्हि नहि। पुछलासँ पितर लोकनि भोजनपरसँ ऐंठिए मुँहे आपस भए जाइत छथि।

श्राद्धे नियुक्तान् भुञ्जानान् न पृच्छेल्लवणादिकम्।
उच्छिष्टाः पितरो यान्ति पृच्छतो नात्र संशयः।।

ई *मनुस्मृतिक* वचन अछि।

हविष्य

उजरा धानक आरब चाउर, खेरही, यव, तिल, केराव, काउनि, नीवार, (ओइरी) (ई बिना बागक एहिना पोखरि झाँखरिमे होइत छैक आओर अधपकुए भेला पर झरि जाइत छैक), बथुआ ओ सरहंची साग, गम्हरी, शतावरी, केउआँसँ भिन्न कन्द, आरु, खम्हारु, सैन्धव ओ सामुद्र नोन, गाइक दूध, दही, घी, आम, कटहर, हरीर, पीपड़ि, जीर, सोंठि, धन्नी, अरिकोंछ, तेतरि, केरा काँच ओ पाकल, हरफा, धात्री, गुडसँ भिन्न कुसियारक विकार चीनी, मिसरी, गाइक घी, दूधमे सिझाओल पायस ओ पकमान हविष्य कहबैत अछि –

हैमन्तिकं सितास्विन्नं धान्यं मुद्गास्तिला यवाः।
कलायं कङ्कुनीवाराः वास्तूकं हिलमोचिका।।

षष्टिका कालशाकं च मूलकं केमुकेरत्।
कन्दं सैन्धवसामुद्रे गव्ये च दधिसर्पिषी।।

पयोऽनुद्धतसारं च पनसाम्रहरीतकी।
पिप्पली जीरकं चैव नागरं कञ्चु तिन्तिणी।।

कदली लवली धात्री फलान्यगुडमैक्षवम्।
अतैलपक्वं मुनयो हविष्यान्नं प्रचक्षते।।

यद्यपि गहूमक चर्चा हविष्यमे नहि अछि तथापि आमिषहुमे उल्लेख ओकर नहि अछि तथा सत्यनारायणक पूजामे गहूमक प्रसाद बनेबाक विधान अछि। तें ओ हविष्यक अनुकल्प मानि लेल जाइत अछि से बुझबाक थिक।

प्रेतघटक नीचा साँझ परात पितृपूजा

मरणक तेसर दिन प्रेतघट टांगि साँझ परात ओतए दूध फूल आदिसँ पितृ पूजाक उद्देश्य थिक दाहजनित सन्तापक प्रशमन ओ स्वर्गक बाटमे चलबाक थाकनि दूर करबाक उपाय – ई कथा द्वितीय **वाचस्पति मिश्र** *पितृभक्तितरङ्गिणी*मे कहलैन्हि अछि।

सामान्योत्सर्ग आद्यश्राद्धदिनमे आङनमे जे होइछ

रामायणमे कहल छैक जे राजा दशरथक दिवङ्गत भेला पर पितरक

उद्देश्य कए ब्राह्मणकें धन, धान्य, दास, दासी, गाय, वाहन,घर, अलंकरण आदि देल गेलैन्हि, तेँ व्यवहारमे चल अबैत अछि। ई बहुत आवश्यक नहि थिक। गोदान मात्र कए आङनमे तुष्टि पाओल जाए सकैत अछि।

सप्त धान्य

जौ, गहूम, धान, तिल, काउन, साम ओ चीन सप्तधान्य कहबैत अछि।

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च।

श्यामाकं चीणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्।। (पद्मपुराण)

दानमे एकर उपयोग होइत अछि।

मुक्तिक पौराणिक उपाय

पद्मपुराणमे मुक्तिक उपायरूपमे पाँचगोट बाट देखाओल गेल अछि–गङ्गाद्वार (हरिद्वार), कुशावर्त, बिल्वक, नील पर्वत (पुरीक जगन्नाथ जी) क दर्शन ओ कनखल मे स्नान कएलासँ पुनर्जन्म नहि होइछ –

गङ्गाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नीलपर्वते।

स्नात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते।।

वायुपुराणमे चारिटा बाट देखाओल अछि–ब्रह्मज्ञान, गयामे श्राद्ध, गाइक घरमे मरण तथा कुरुक्षेत्रमे बास –

ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्धं गोगृहे मरणं तथा।

वासः पुंसां कुरुक्षेत्रे मुक्तिरेषा चतुर्विधा।।

(वायुपुराण उत्तरार्ध ४३।१४।)

❑❑

परिशिष्ट

१. उपाति

भोजनक हेतु आदर पूर्वक असिद्ध चाउर, दालि, आँटा, घृत, मसाला, तीमन, तरकारी, दही, मधुर, आदि खाद्य पदार्थ देब 'उपाति' कहबैत अछि। कोनो कारणसँ जनिकाँ सिद्ध अन्न नहि देल जाए सकैत अछि, हुनका उपाति चङेरामे साँठि घरपर पहुँचेबाक प्रथा अछि। ई प्रथा यद्यपि भारतव्यापी अछि मुदा अन्यत्र भोजनी कहल जाइत अछि आओर मिथिलामे उपाति।

बेटीक घर गेलापर पहुँचैत देरी महिलालोकनिकें धूपक संग पएर धुआए उपाति देबाक प्रथा अछि। एहिमे साड़ीओ विभव रहने देल जाइत अछि।

एतए बुझबाक थिक जे बेटीक घर साधारणतः माए पितिआइनि वा नैहरक गुरुजन तैखन जाइत छथि जखन बेटीक घरमे हुनक सन्ततिक शुभकर्म मुण्डन, उपनयन वा विवाह आदि उपस्थित होइत अछि।

२. कुल गोत्र प्रवर वंश लौकित पाँजि

पितृवंशपरम्परा जाहि ज्ञात बीजीपुरुषसँ आरम्भ भए चलैत अछि ओहि व्यक्तिक नामसँ कुलक प्रसिद्धि होइत अछि। तें पितृवंशपरम्परा कुल कहबैत अछि। जेना ओइनिवार लोकनिक कुल कामेश्वर ठाकुरसँ ओ खण्डबला (खरोड़े) कुल महाराज महेशठाकुरसँ प्रसिद्ध अछि। कुलक प्रसिद्ध व्यक्ति पूर्वपुरुष जाहि गामसँ जाहि गाम आबि बसलाह ओ मूलग्राम कहौलक। जेना सोदरपुरसँ शंकरमिश्र दार्शनिकक पूर्वज सरिसब आबि बसलाह तँ सोदरपुरिए सरिसब हुनक मूलग्राम कहौलक।

'गोत्र' क अर्थ हमरा जनैत जे पहिले पहिल अरण्य भूमिकें बासक योग्य बनाओल से थिकाह। गोत्रक प्रवर्तक आओर एहिठाम वास कएनिहार मध्य जे

अपना समयमे वासक काल अपन आचार-विचारसँ श्रेष्ठ मानल गेलाह ओ 'प्रवर' कहौलैन्हि। जेना गोत्रप्रवर्तक शाण्डिल्य आओर प्रवरमे असित तथा देवल मानल गेलाह। एहिना सभ गोत्रक प्रसंग बुझबाक चाही।

एकहि कुलक अनेक लोक अनेक ठाम बसलाह वा बसैत छथि जे पछाति अपन सन्तानक अभिवृद्धि पाबि वंशक श्रेष्ठ मानल जाइत छथि आओर सन्तान हुनक वंशधर। तें गोत्रसँ व्याप्य कुल आओर कुलसँ व्याप्य वंश मानल जाइत अछि।

सोतिमे लौकित ओ श्रेष्ठ मैथिल ब्राह्मणमे पाँजि हमरा जनैत एकहि अभिप्रायक बोधक थिक। मुदा दूनूक व्यवहार ओ निर्माणविधि अवश्य चिन्तनीय अछि। सोति लोकनि तँ अवदात छलाह तँ लौकित हुनक अपकर्षक बोधक जकाँ अछि। पुरान लौकित प्रशस्य ओ नव लौकित निन्द्य। हेतु जे पूर्वपीढ़ीमे आचार-विचारक त्रुटिक कारणे लौकित देल गैलेन्हि जे त्रुटि कएलैन्हि हुनक नामे, पछाति आचार-विचारक उत्कर्षे अगिला पीढ़ी ओकर यदि मार्जन कएलक तँ ओ कुल उत्कृष्ट भेल आओर जाहि कुलक अपकर्ष नव छैक से तँ तावत् निकृष्ट रहत यावत् समय पाबि उत्कर्षक आधान ओहि कुलक लोक नहि कएलक अछि।

पछबारि पारक मैथिल लोकनि उत्कृष्ट कार्य कए पाँजिमे परिगणित भेलाह। तँ एतए पाँजि हुनक उत्कर्षक बोधक थिक। ताहिमे तारतम्य उत्कृष्ट कार्यक तारतम्यसँ वा नव पुरान भेलहुँ ओहि पाँजिक रक्षार्थ लोकक तत्परतासँ मानल जाए सकैत अछि। तँ कतोक व्यक्ति आ कतोक गामक नामपर पाँजि चलाओल गेल जे सर्वथा उत्कर्षक बोधक थिक से बुझबाक चाही।

३. गुरुक माहात्म्य

अज्ञान रूप अन्धकारकेँ जे ज्ञानरूप आँजनक शलाकासँ हटाए आँखि खोलि देथि ओहि गुरुकेँ प्रणाम करैत छी –

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

एहि पद्यक अभिप्राय ई भेल जे गुरुक भूमिका लोकजीवनमे बड़ महत्त्व रखैत अछि। अन्हारसँ इजोतमे अननिहार गुरुए होइत छथि। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

गुरुओकें कहि लोक कृतार्थ भए सकैत अछि। महाभारत कहैत अछि जे माए बाप जन्म देनिहार अवश्य थिकाह मुदा असल जन्म आचार्ये दैत छथि, जे अजर, अमर जो पुण्यमयं होइत अछि –

शरीरमेतौ कुरुतः पिता माता च भारत।
आचार्यशास्ता या जातिः सा पुण्या साजरामरा।।

इएह कारण छैक जे अभिभावक आचार्यक निकट माणवककें लए जाए ज्ञानराशि वेदक अध्ययन करबैत छलाह – 'अष्टमे वर्षे माणवकमाचार्यस्य समीपमुपनयीत तं वेदमध्यापयीत' ई वचन सुनैत छी। उपनयनक अर्थ गुरुएक समीप लए जाएब होइत अछि। उपदेशक तात्पर्य थिक लगमे बैसाए किछु कहब से शास्त्रीय चिन्तन हो वा मन्त्र हो अर्थात् शिक्षा ओ दीक्षाक अधिकार गुरुएकें होइत छैन्हि। शास्त्रक शिक्षा ओ मन्त्रक दीक्षा तँ प्रसिद्धे अछि, जे बिनु गुरुक नहि होइत अछि। शास्त्रकेँ पूर्वमे गुरुमुख कएल जाइत छल। किछु अंश पढ़ाए प्रबुद्ध शिष्यकेँ गुरु कहैत छलाह जे एहि ग्रन्थमे अमुक अमुक विषय छैक से स्वयं देखि लेब तँ ओ देखलापर शिष्य कृतार्थ होइत छलाह। एहि गुरुमुखक अभावमे लोक तँ शास्त्र पढिए लैत अछि पदार्थक ज्ञानो होइत छैक मुदा पुण्यजनकत्व नहि आबि पबैत छैक।

शास्त्र ओ मन्त्र श्रुति – जे सुनल सुनाओल जाए – कहबैत अछि। ओकर गुरुक द्वारा उपदेश पाबिए कए इष्टसाधकता ओहिमे अबैत छैक। केवल पुस्तक पढ़ने ओकर नीक अवगति सम्भव नहि छैक। कर्णपरम्परेसँ श्रुतिक ज्ञान संभव अछि, तँ गुरुक माहात्म्य बुझबाक थिक। टीकासँ शास्त्रक अभिप्राय बूझल जाइत अछि तें टीकाकें गुरुओक गुरु कहल गेल अछि। टीका गुरूणां गुरुः। मन्त्रक मन्त्रत्व तैखन छैक यदि गुरुमुखसँ ओ उपदिष्ट हो, अन्यथा मन्त्रमे सामर्थ्य नहि रहैत छैक। 'लिपिस्थितस्तु यो मन्त्रः निर्वीर्यः सोऽत्र कल्पितः।' तन्त्रालोकक व्याख्यामे जयरथ स्पष्ट कहने छथि।

शाक्त आगममे गुरुक नहि भेटला पर साक्षात् भगवान् शिवकें गुरु कल्पित कए हुनका समक्षमे सविधि मन्त्रग्रहण करबाक अनुकल्प विहित अछि। द्विज ओ थिकाह जनिक दूबेर जन्म हो। एक बेरि माए बापसँ आ दोसर बेरि गुरुक निकट जाए विद्याभ्यास कएला पर। तें गुरुक महिमा अवश्य मान्य अछि।

४. जनौ पहिरबाक मन्त्र

वाजसनेयी लोकनि जनौ पहिरबाक पूर्व तीन बेरि जल लए ई निम्न मन्त्र पढ़थि पुनश्च हाथ दूनू जनौ सहित जोड़ि तीन बेरि गायत्री पढ़ि जनौ धारण करथि –

'यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

छन्दोगलोकनि ई मन्त्र पढ़थि –

ओम् यज्ञोपवीतमसि, यज्ञस्य त्वोपनीतेनोपनह्यामि।

सतत ई यज्ञोपवीत (जनौ) पहिरनहि रही ओ टीक बन्हले रहए से *कृत्यमहार्णव*मे वाचस्पतिमिश्र द्वितीय कहने छथि –

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च।
विशिखो व्युपवीती च यत्करोति न तत्कृतम्।।

५. जन्मदिनक अवसर पर कर्तव्य

जन्मदिनमे केक कटबाक ओ मोमबत्ती फुकबाक व्यवहार प्रायः सम्भ्रान्त परिवारमे देखल जाइत अछि। बच्चा सब आन बच्चाक घर जाए एहि विधिक देखाउसि करैत अछि आओर कतोक अभिभावक विवश भए ओ कतोक इच्छासँ ई करैत छथि। मुदा ई व्यवहार क्रिश्चियन धर्मानुकूल अछि, भारतीय धर्मानुकूल नहि। ई अवश्य जे किछु दिनमे ई व्यवहार भारतीय आत्मसात् कए लेताह।

अपन समाजमे जन्मदिनमे मार्कण्डेय ऋषिक संग प्रसिद्ध सात चिरजीवीक पूजाक विधान अछि। बच्चा अनोन खाइत अछि ओ नव कपड़ा पहिरैत अछि। पछाति जीवित माछ बच्चाक हाथें जलमे देल जाइत अछि ओ ओहि बाटमे तिल छिरिआओल जाइत अछि। बच्चाके तिलक लड्डू खुएबाक सेहो प्रथा अछि।

तिलक तेलसँ उद्वर्तन, तिल देल जलसँ स्नान, तिलसँ होम करब, तिलक दान, तिल बाग करब ओ तिलक लड्डूक भोजन जन्मदिनमे विहित अछिः

१ सात चिरञ्जीव ई सभ थिकाह जे प्रातःस्मरणीय मानल गेलाह अछि –

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।

तिलोद्वर्ती तिलस्नायी तिलहोता तिलप्रदः।
तिलभुक् तिलवापी च षट्तिली नावसीदति।।

जन्ममासमे केश कटाएब सेहो निषिद्ध अछि – से बुझबाक चाही।

एकर अनुपालन उठले जकाँ अछि। जनितहुँ कमे लोक अछि। हम कतहु कतहु देखने छी, ताही आधार पर लिखल अछि। ओहि दिन धर्माचरण करी जे अग्रिम वर्ष शुभमय कल्याणप्रद हो। क्रिश्चियन धर्महुमे शुभकामनहिमे केक काटल जएबाक प्रथा अछि।

६. द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ओ अष्टमूर्ति

शिवक बारहटा स्वयंभू ज्योतिर्लिङ्ग प्रसिद्ध अछि। हिनका सभक दर्शन ओ नामस्मरणसँ पुण्य होइत अछि। तें प्रातः स्मरणीय थिकाह तथा तीर्थयात्राक क्रममे दर्शनीय ओ पूजनीय। एहिसँ अतिरिक्त शिवक अष्टमूर्तिक काल्पनिक वा यथार्थ स्वरूपक उल्लेख महाकवि कालिदासक अभिज्ञानशाकुन्तलक नान्दी पद्यमे देखैत छी। हुनको लोकनिक मन्दिर दक्षिण भारतमे विद्यमान अछि आओर विधिविधानसँ सभठाम ओहि परमेश्वरक पूजा होइत अछि। यथा सौराष्ट्रमे सोमनाथ, श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, उज्जैनमे महाकाल, अमलेश्वरमे ओंकारेश्वर, हिमालयक पीठपर केदारनाथ, डाकिनीमे भीमशंकर, वाराणसीमे विश्वनाथ, गौतमीतटपर त्र्यम्बकेश्वर, चिताभूमिमे वैद्यनाथ, दारुकावनमे नागेश, सेतुबन्धमे रामेश्वर, ओ शिवालयमे घुश्मेश ज्योतिर्लिङ्गक रूपमे प्रसिद्ध छथि। शिवपुराणमे (४।१।२१।२३) एकर उल्लेख देखैत छी –

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरे।।

केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।।

वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने।
सेतुबन्धे तु रामेशं घुश्मेशं च शिवालये।।

कल्याणक शिवाङ्कमे शिवक अष्टमूर्तिक विवरण देखल जाए सकैत अछि। हम एतए पञ्चभूत लिङ्गक विवरण प्रस्तुत करैत छी, जे हमरा बूझल अछि। काञ्चीक आम्रनाथ पृथ्वीलिङ्ग थिकाह, श्रीरंगम्‌केर नजदीक जम्बुकेश

जललिङ्ग थिकाह, अरुणाचलेश तैजस लिङ्ग त्रिचनापल्लीक निकट छथि, तिरुपतिक निकट कालहस्तीमे वायुलिङ्ग विराजमान छथि आओर आकाश लिङ्ग नटराज एतए चिदम्बरेश थिकाह। दक्षिणभारतक गोकर्णस्थित शिवलिङ्ग तथा काठमाण्डूक पशुपतिनाथ यजमान मूर्ति मानल जाइत छथि। सूर्य ओ चन्द्र मूर्ति अन्वेषणीय छथि। हमरा ज्ञात नहि अछि। एकटा पद्यमे हिनका सभक विवरण एना उपलब्ध अछि –

मृल्लिङ्गरूपमभवत् शिव आम्रनाथः
अब्लिङ्गरूपमभवत् खलु जम्बुकेशः।
लिङ्गं च तैजसमभूत् त्वरुणाचलेशः
श्रीकालहस्त्यधिपतिः खलु वायुलिङ्गम्।
आकाशलिङ्गमभवत् स चिदम्बरेशः।।

(कालहस्तीसुप्रभातमे प्रत्यह पाठ होइत अछि)

७. दूर्वाक्षतक मन्त्र / आशीर्वाद देबाक / शुभकामना करबाक मन्त्र

ओँ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव। ओं दीर्घायुर्भव / सौभाग्यवती भव। (रातिमे – 'प्रातर्वचसा दीर्घायुर्भव')।

८. देवीभागवतक नवाहपारायणविधि

आदिसँ तेसर स्कन्धक तेसर अध्याय धरि पहिल दिन, चारिम स्कन्धक आठम अध्याय धरि दोसर दिन, पाँचम स्कन्धक अठारहम अध्याय धरि तेसर दिन, छठम स्कन्धक अठारहम अध्याय धरि चारिम दिन, सातम स्कन्धक अठारहम अध्याय धरि पाँचम दिन, आठम स्कन्धक सत्रहम अध्याय धरि छठम दिन, नवम स्कन्धक अट्ठाइसम अध्याय धरि सातम दिन, दशम स्कन्धक तेरहम अध्याय धरि आठम दिन आओर बारहम स्कन्धक अन्तिम अध्याय धरि नवमदिन पाठ कएल जाइत अछि। क्रमशः ३५, ३५, ३५, ३५, ३१, ३९, ३५,

३५, ओ ३८ अध्यायक पाठ कर्तव्य थिक।

९. नक्तव्रत मे की करी, की नहि करी

नक्तव्रतमे हविष्य भोजन, स्नान, सत्यक भाषण, कम भोजन (अल्प आहार), अग्निकार्य (हवन) ओ भूमिशयन करी अर्थात् पलङ्ग तखतपोश आदिक उपयोग नहि करी –

हविष्यभोजनं स्नानं सत्यमाहारलाघवम्।
अग्निकार्यमधःशय्या नक्तभोजी षडाचरेत्।।

अनेक बेरि जल पीलासँ एको बेरि पान खएलासँ दिनमे सूति रहलासँ ओ मैथुनक आचारणसँ व्रतभङ्ग भए जाइत अछि –

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलचर्वणात्।
उपवासः प्रणश्येत्तु दिवास्वापाच्च मैथुनात्।।

(ई बृहद्यमक वचन थिक।)

१०. पञ्चगव्य

गाइक गोबरक दूवर गोंत, ओकर दूना दूध, ओकर दूना दही, ओकर दूना घृत ओ कुशोदक मिलौला पर 'पञ्चगव्य' बनैत अछि। एकर पान ओ प्रक्षेपसँ शरीर तथा जाहि वस्तु पर छीटल जाइत अछि से शुद्ध होइत अछि। गाइक पाँच विकार पञ्चगव्यक अभिप्राय थिक –

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्।। (वशिष्ठसंहिता)

११. पञ्चपल्लव

पीपर, गूलरि, पाकडि, आम ओ बड़क पल्लव पञ्चपल्लव कहबैत अछि। ई मांगलिक मानल गेल अछि तथा पूर्णघटमे देल जाइत अछि –

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवान्।
पञ्च पल्लव इति प्रोक्तः कलसे निक्षिपेद् बुधः।।

(आदित्यपुराण)

१२. पञ्चरत्न

वज्र, मौक्तिक, वैदूर्य, पुष्पराग ओ इन्द्रनील नामक रत्न 'पञ्चरत्न' कहबैत अछि। एहि पाँचके मन्त्र पढ़ि कलसमे राखि माङ्गलिक कार्य करबाक विधान अछि –

वज्रमौक्तिकवैदूर्य-पुष्परागेन्द्रनीलकम्।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निक्षिपेत्।।

मुदा आब ई पद्धतिएमे लिखल रहैत अछि, व्यवहारमे ई सभक हेतु संभव नहि अछि। अनुकल्प कएल जाइत अछि।

१३. पञ्चामृत

चीनी, मधु, दूध, घी, दही मिला कए 'पञ्चामृत' बनाओल जाइत अछि। एहिमे सभ वस्तुक बराबरि मात्रा रहैत अछि, कम बेसी नहि –

शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते।। (महानिर्वाणतन्त्र)

१४. परान्न कोन नहि थिक

गुरुक, मामाक, ससूरक, पिताक ओ पुत्रक अन्न परान्न नहि कहबैत अछि –

गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वशुरान्नं तथैव च।
पितुः पुत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः।।

ई वचन शब्दकल्पद्रुममे कहल अछि।

१५. प्रदक्षिणा

देवदर्शन मन्दिरमे कएला पर तथा आनो अवसर पर प्रदक्षिणा करबाक व्यवहार सेहो अछि। चारू कात घूमि देवताकेँ एक बेरि, तीन बेरि वा चारि बेरि– जाहि देवताक प्रसंग जतेक बेरि विहित होइक–वेष्टित कए प्रणाम करबे प्रदक्षिणा विधि थिक। वाम भागसँ आरम्भ कए दक्षिण भाग धरि घूमल जाइत अछि। एक बेरि भगवतीक, सात बेरि सूर्यक, तीन बेरि गणेशक, चारि बेरि विष्णुक ओ आधा शिवक प्रदक्षिणा करबाक शास्त्रीय विधान अछि –

एकं चण्ड्याः रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके।

चत्वारि केशवे दद्याच्छिवस्यार्ध प्रदक्षिणम्।।

१६. बलि

देवीक पूजामे बलिक प्रधानता देखल जाइत अछि। ई बलि छागर आदि पशु हो वा पायस आदि भोज्यवस्तु से आराधकक रुचि ओ प्रवृत्ति पर निर्भर करैत अछि। जाहिसँ हुनक मनःपूत होइत छैन्हि से लए ओ बलि कए सकैत छथि। पूर्वजन्मक संस्कारक आधारे पर एहि जन्मक हुनक रुचि ओ प्रवृत्ति निर्भर करैत अछि। अभावमे लाल चानन मिश्रित फूलोसँ ई विधि पूरा कएल जाए सकैत अछि। ओना, एहि पूजामे हवन (होम), सप्तशतीपाठ वा स्तोत्रपाठ, बलि, वाद्य, गीत-नृत्य, सधवा-भोजन तथा कुमारी-पूजा प्रशस्त मानल गेल अछि।

१७. भारतीय संस्कृतिक सूत्र

(१) विचारक स्वातन्त्र्य, (२) आचारक परिपालन, (३) संस्कारक प्रधानता, सोलह संस्कार, (४) वर्ण-व्यवस्था, आश्रम-व्यवस्था (५) पुरुषार्थ प्राप्तिक प्रयत्न, (६) पातिव्रत्य – एकपत्नीव्रत, (७) कुलमर्यादाक परिपालन, (८) शीलक संरक्षण, (९) नारीक लज्जा, सुजनक श्रद्धा, विद्वानक विवेक, (१०) ज्ञानयोग, भक्तियोग ओ कर्मयोग, (११) त्यागक महत्त्व, धैर्यक अवलम्बन, तितिक्षा, सात्त्विक वृत्ति, व्रत, उपासना, प्रायश्चित्त ओ गुरुक कर्तव्य, (१२) सनातनधर्म ओ सनातन सिद्धान्तमे विश्वास ओ पक्षपात, (१३) श्रेयस ओ प्रेयसक समन्वय एवं ओकर प्राप्ति हेतु उद्योग, (१४) सत्यक प्रतिष्ठा, (१५) लक्ष्य प्राप्तिक हेतु पथ वैविध्यक सौविध्य, (१६) व्यवहारमे वैज्ञानिक ढंगसँ गम्भीर ओ हितकर रहस्यक निधान, लोक कल्याणक दृढ़ भावना, (१७) वैदिक, पौराणिक ओ आगमिक धर्म, आचार ओ सिद्धान्तक अनुपालनमे तत्परता तथा पारस्परिक समन्वयक भाव, (१८) स्वाभिमानक संरक्षण ओ आतिथ्यक प्रसाद, (१९) तीनू चारू प्रकारक ऋृणक बोध ओ ओकर उद्धार कए मुक्तिक कामना, (२०) रूपक, संगीत, खेल, वास्तुकला ओ चौंसठि कलाक प्रति अभिरुचि, एकरा मनोविनोदक रूपमे स्वीकार, (२१) अनुशासनानुवर्तिता, धर्मप्राणता ओ स्वात्मीकरण, (२२) दान, ज्ञानलिप्सा,

तपस्या, स्वाध्याय ओ यज्ञ-यागक संग इनार, पोखरि, बान्ह सेतुक निर्माण, बाटक कातमे गाछ रोपब आदि।

मैथिलोक संस्कृति ई सब थिके। एकर अतिरिक्त चूड़ा दहीक भोजन, अंकुरी, पान, मखानक व्यवहार (पारस्परिक आदान-प्रदान), साग, साना, भुजिया, लटपट, माछ-मांस भातक संग भोजन, दही, मधुर दूधसँ भोजनक परिपूर्णता, ताहूमे पहिने आमिल मरचाइ बाला पछाति घी मरीच बाला तीमनक परसब आदि, माछ मांसक संग दही मधुरक व्यवधान कए दूध वा पायस परसब सेहो देखैत छी। मुदा बहुत ठाम दूध माछ बाँतर बूझि निरामिषे भोजनमे दूध परसल जाइत अछि। बड़ आ बड़ी सूखा एवं झोराओल भोजमे प्रशस्त मानल गेल अछि। इरहर ओ रामरूचक व्यवहार मिथिलहिमे देखैत छी। सामिष भोजनमे दही मधुर मात्र परसल जाइत अछि। दहीसँ अन्त कएल जाइत अछि भोजनक, मुदा राजसभोजनमे पूर्वोक्तरीति देखल जाइत अछि।

करड़िक थम्हक पवित्र सुन्दर रजतपात्र सदृश पात बनाए ओहिमे विन्यस्त भोजन परसब-अपना ढंगक सौन्दर्य ओ समृद्धिक बोध करबैत अछि।

धोती, तौनी पागक परिधान मैथिलक वेशभूषा आकर्षक होइत अछि। ताहूमे भगाकार धोतीक साँची ओ अपराजित तथा करवीर फूलक पूजामे प्रशस्ति मैथिलक कट्टर शाक्तानुगामिताक परिचायक होइत अछि। सृष्टिक प्रतीक योनिपूजाक संकेत एहिमे भेटैत अछि।

१८. वास्तुपूजा

गृहारम्भ वा गृहप्रवेशक अवसर पर वासभूमिक अधिष्ठातृ देवता वास्तु पुरुष वा वास्तोष्पतिक (इन्द्रक) पूजा कएल जाइत अछि। मिथिला मे चानीक साँप बनाए हुनके वास्तु पुरुषक रूपमे मानि कए पूजा कएल जाइत अछि आओर वासडीह पर ओहि चानीक साँपकेँ गाड़ि देल जाइत अछि। हिनक बलि उसिनल उडीद ओ दही कहल गेल अछि। एहि पूजाक पद्धतिमे अनेक नागक पूजा विहित अछि।

१९. वाल्मीकि रामायणक नवाहपारायण

पहिल दिन आदिसँ अयोध्याकाण्डक पाँचमसर्गधरि ८२ सर्ग

दोसर दिन अयोध्याकाण्डक छठमसर्गसँ विरासीसर्ग धरि ७७ सर्ग

तेसर दिन अरण्यकाण्डक चौआलिससर्गधरि ८१ सर्ग

चारिम दिन किष्किन्धाकाण्डक एकतिसमसर्गधरि ७२ सर्ग

पाँचम दिन सुन्दरकाण्डक सत्ताइसमसर्गधरि ६३ सर्ग

छठम दिन युद्धकाण्डक बाइसमसर्गधरि ६३ सर्ग

सातम दिन युद्धकाण्डक सतहत्तरि सर्गधरि ५५ सर्ग

आठमदिन उत्तरकाण्डक छब्बीसम सर्गधरि ६६ सर्ग

नवमदिन उत्तरकाण्डक अवशिष्ट अंश ८५ सर्ग

मास पारायणमे अट्ठारह सर्ग प्रतिदिन पाठ कर्तव्य। प्रतिदिन बीस सर्गक पाठ कएलासँ पचीस दिन मे लंका-काण्ड धरिक पाठ सम्पन्न होइत अछि से स्वयं मुनि बाल्मिकि कहने छथि। सात सर्ग सुन्दरकाण्डक पाठ प्रतिदिन करबाक व्यवहार अछि, जाहिमे पहिल दिन किष्किन्धाकाण्डक दू सर्ग ६६-६७ (अन्तिम सर्ग युगल) जोड़ि देबाक छैक। सात सर्ग सभ दिन सुन्दरकाण्ड ओ पहिल दिन कुल नौ सर्ग पाठ कर्तव्य। प्रतिदिन सुन्दरकाण्ड सम्पूर्णहुक पाठ लोक करैत अछि।

१९. शील

कुल शीलक चर्चा बहुधा लोक करैत अछि। एतए शील वस्तु की थिक से जिज्ञासा स्वाभाविक। महाभारत कहैत अछि जे मोन वचन आ कर्मसँ प्राणिमात्रक प्रति द्रोह नहि करब सभक प्रति अनुग्रह करब तथा शास्त्रक ज्ञानमे लागल रहब शील थिक -

अद्रोहः सर्वभूतानां कर्मणा मनसा गिरा।
अनुग्रहश्च ज्ञानं च शीलमेतद् विदुर्बुधाः।।३।३८१।३४।

मोटा मोटी नीक स्वभाव ओ विनय शील कहबैत अछि।

२०. सप्तमृत्तिका

हथिसार, घोड़सार, दिवराकभीड़, गाइक बथान, नदीक संगम, राजद्वार ओ श्मशानक माँटि सप्तमृत्तिकासँ लेल जाइत अछि -

गजाश्वरथबल्मीकसंगमाद्ह्रदगोकुलात्।
राजद्वारश्मशानाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्।। (मत्स्यपुराण)

२१. साठिक पूजा (षष्टिकापूजा)

सन्तानक जन्म भेला पर जन्मक छठम दिनुक रातिमे छठियार विधि अनुष्ठित होइत अछि, एहि अवसर पर षष्टिका पूजा कएल जाइत अछि। जकर उद्देश्य सन्तानक रक्षा होइत अछि। देवीभागवतमे हिनक पूजाक विधान ओ स्तोत्र भेटैत अछि। प्रथम रजोदर्शनक समय सेहो हिनक पूजा धूमधामसँ महिला समाज द्वारा अनुष्ठित होइत छल, जे आब लुप्त भए गेल।

२२. सौजन्य ओ समधिभोज

वैवाहिक सम्बन्ध अस्वजनेसँ सम्भव छैक तें समधि ओ जमाएक संग सौजन्यक व्यवहार कएल जाइत अछि। फूलक माला, चानन ओ जोड़ भरि धोती दए यथाविभव विन्यस्त भोजन सार सभक संग बहिनोकेँ चतुर्थीक बाद जतेक जल्दी हो कराओल जाइत अछि आओर पौत्र-पौत्रीक मुण्डन, उपनयन वा विवाहक अवसर पर समधिकें एहि प्रकारें बसाओल जाइत अछि। इएह सौजन्य वा समधिभोज कहबैत अछि।

घरक वा कुलक सम्बन्धक परिचय रखनिहान व्यक्ति पैध भोजमे भातक आयोजन रहने समधि सभकें ताकि दू टाके पूड़ी (सोहारी) पात पर परसैत छथि, जे हुनक असौजन्यक प्रतीक रूपमे मानल जाइत अछि।

कौटुम्बिक सम्बन्धक प्रगाढताक हेतु आदान प्रदानक द्वारा स्नेहक प्रदर्शन एहिमे निहित अछि। तें असम्पन्न लोक फूलमाला दए चाननो कए यथाविभव विन्यस्त भोजन कराए ई व्यवहार पूरा करैत छथि। समाजमे एहने व्यवहार चलएबाक थिक, जकर अनुपालन सभ समान रूपसँ कए सकए। धनक अभावमे ककरहु संकोचक अनुभव करए पड़ैक एहन व्यवहार समाजमे नहि चलए बाक चाही। समाजमे धनिक कम ओ असम्पन्न अधिक लोक रहैत अछि। धनक प्राधान्य रहलापर ओकर अभाव्रमे अधिक लोक अवश्य संकोचमे पड़त तें एकर उपेक्षादिशि ध्यान देबाक थिक।

समधिनकें बसाएब वा भोजन कराएब एहिना आदरपूर्वक कएल जाइत अछि, जकरा 'खैक करब' कहैत छैक। दूनू पक्षसँ एकर आयोजन होइत अछि।

समधिभोजो दूनू पक्षसँ होइत अछि से बुझबाक थिक।

२३. श्रीमद्भागवतक सप्ताहपारायणविधि

आद्ये हिरण्याक्षवधं द्वितीये भरतावधि
तृतीये त्वब्धिमथनं चतुर्थे कृष्णजन्म च।
पञ्चमे रुक्मिणीग्राहं षष्ठे चोद्धववादकम्
सप्तमेऽह्नि समाप्तिः स्यात् सप्ताहं मुनिरब्रवीत्।।

आदिसँ तृतीय स्कन्धक उन्नैसम अध्याय धरि पहिल दिन, पञ्चम स्कन्धक पन्द्रहम अध्याय धरि दोसर दिन, अष्टम स्कन्धक नवम अध्याय धरि तेसर दिन, दशम स्कन्ध पूर्वार्धक तृतीयाध्याय धरि चारिम दिन, दशम स्कन्धक तिरपन अध्याय धरि पाँचम दिन, एकादश स्कन्धक सातम अध्याय धरि छठम दिन आओर अवशिष्ट बारहम स्कन्धक तेरहम अध्याय धरि सातम दिन पाठ कर्तव्य थिक।

फलतः ४० अ०, ६० अ०, ५४ अ०, ४२ अ०, ५० अ०, ४४ अ०, आओर ३६ अ० यथाक्रम पाठ कर्तव्य।

मास पारायणक निर्देश गीताप्रेससँ सम्पादित प्रकाशित पुस्तकमे देल गेल अछि।

रासपञ्चाध्यायीक वा गजेन्द्रमोक्षक पाठ प्रत्यह बहुत लोक करैत छथि। बहुत गोटे पाँच अध्याय भागवत प्रत्यह पाठ करैत छथि। बाइस अध्याय प्रत्यह पाठ कएलासँ पन्द्रह दिनमे भागवतक परायण होइत छैक। ई कल्प अधिक प्रशस्त मानल गेल अछि।

इति।।

□□



